# राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिल भारतीय तथा विशेषत' राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

*प्रधान सम्पादक*

**पद्मश्री जिनविजय मुनि, पुरातत्त्वाचार्य**

सम्मान्य सचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर,
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी,
निवृत्त सम्मान्य नियामक ( ऑनरेरि डायरेक्टर ),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई, प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

**ग्रन्थाङ्क ६७**

**कविया करणीदानजी चारण कृत**

# सूरजप्रकास

**भाग ३**


प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

**सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान**

जोधपुर ( राजस्थान )

कविया करणीदानजी चारण कृत

# सूरजप्रकास

## भाग ३


सम्पादक

श्री सीताराम लालस

वृहत् राजस्थानी शब्दकोशके कर्ता



प्रकाशनकर्त्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर ( राजस्थान )

| | | |
|---|---|---|
| विक्रमाब्द २०२० | भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८५ | खिस्ताब्द १९६३ |
| प्रथमावृत्ति १००० | | मूल्य– ९ ७५ |

मुद्रक– श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर ।

RAJASTHAN PURATANA GRNATHAMALA

PUBLISHED BY THE GOVERNMENT OF RAJASTHAN

A series devoted to the Publication of Samskrit, Prakrit, Apabhramsa, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular

* *

GENERAL EDITOR

PADMASHREE JINVIJAYA MUNI, PURATATTVACHARYA

Honorary Director, Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur; Honorary Member of the German Oriental Society, Germany; Retired Honorary Director, Bharatiya Vidya Bhawan, Bombay, General Editor, Singhi Jain Series etc. etc.

* *

NO. 67

# SOORAJPRAKAS

of

Kaviya Karnidanji

* * *

*Published*

*Under the Orders of the Government of Rajasthan*

*By*

The Hon Director, Rajasthan Prachya Vidya Pratisthana

( Rajasthan Oriental Research Institute )

JODHPUR ( RAJASTHAN )

# सञ्चालकीय वक्तव्य

कविया करणीदानजी कृत "सूरजप्रकास" नामक महाकाव्य के प्रथम और द्वितीय भाग क्रमश सन् १९६१ और १९६२ में राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के ५६वे एव ५७वे ग्रन्थाङ्को के रूप मे प्रकाशित किए जा चुके है। प्रस्तुत प्रकाशन के रूप मे "सूरजप्रकास" का तृतीय एव अन्तिम भाग उत्सुक पाठकों के सम्मुख पहुँच रहा है।

"सूरजप्रकास" के प्रस्तुत भाग मे जोधपुर के महाराजा अभयसिंह और सरबुलन्दखा के मध्य हुए अहमदाबाद के युद्ध का विस्तृत और काव्यात्मक वर्णन है। सरबुलन्द ने युद्ध के प्रारम्भ मे तीन दिन पर्यंत नगर में रहते हुए महाराजा की सेना पर भयकर गोलाबारी की। तदुपरान्त चौथे दिन वह मैदान मे आ कर महाराजा की सेना से लडा और उसी दिन अपनी पराजय जान कर पुन नगर की ओर भाग गया। महाराजा ने तुरन्त ही सरबुलन्द का दमन कर अपनी विजय-घोषणा की। कवि ने युद्ध मे भाग लेने वाले अनेक प्रमुख योद्धाओ का नामोल्लेख करते हुए उनकी वीरता का ओजस्वी वर्णन किया है जिससे काव्य का इतिहास की दृष्टि से भी महत्त्व हो गया है।

"सूरजप्रकास" के निम्नलिखित छन्द से प्रकट होता है कि महाराजा अभयसिंह की अहमदाबाद-विजय सवत् १७८७ की विजय-दशमी, शनिवार के दिन हुई थी और युद्ध मे प्रत्यक्ष दर्शन एव अनुभव के आधार पर महाकवि ने एक ही वर्ष मे इस महाकाव्य को पूर्ण कर लिया था और ग्रन्थ का परिमाण साढे सात हजार अनुष्टुप् श्लोकात्मक है।

सत्रैसै समत सत्यासियै, विजैदसमी सनि जीत।
वदि कातिक गुण वरणियौ, दसमी वार अदीत ॥
वणियौ गुण इक वरस विच, उकति अरथ अणपार।
छव अनुस्टुप करिउ जन, सत पच सात हजार ॥

'अभा'तणी सुभ नजर अति, वधि छक सुकवि विधान।
कुरव दांन लहियौ अधिक, कहियौ करणीदांन ॥

वृहत् राजस्थानी शब्द-कोष के कर्ता विद्वद्वर्य्य श्री सीतारामजी लाळस ने "सूरजप्रकास" जैसे महाकाव्य का सम्पादन विशेष मनोयोग एवं परिश्रमपूर्वक किया है। विद्वान् सम्पादकजी ने परिशिष्ट और भूमिका मे ग्रन्थ सम्बन्धी आवश्यक ज्ञातव्य भी विस्तार से पाठको की सुविधा के लिए लिखे हैं तदर्थ सम्पादकजी को हम हार्दिक धन्यवाद देते है।

राजस्थानी भाषा के प्रस्तुत महाकाव्य का प्रकाशन भारत सरकार के वैज्ञानिक और सास्कृतिक मन्त्रालय के आर्थिक सहयोग से आधुनिक भारतीय भाषा विकास योजना के अन्तर्गत हुआ है। तदर्थ हम भारत सरकार के प्रति आभार प्रकट करते है।

इस ग्रन्थ मे प्रकाशनार्थ कविया करणीदानजी का चित्र महाराजा साहिब जोधपुर के निजी ग्रन्थ-भण्डार पुस्तक-प्रकाश मे से ठाकुर श्री जयकृतसिहजी, एडमिनिस्ट्रेटर के सौजन्य से और महाराजा अभयसिंहजी का चित्र राजस्थानी-शोध-सस्थान जोधपुर, से इसके सञ्चालक श्री नारायणसिंहजी भाटी के सौजन्य से प्राप्त हुआ है जिसके लिए हम दोनो ही महानुभावों को धन्यवाद देते है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी,
स० २०२०, जोधपुर।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक,
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर।



# विषय - सूची



# भूमिका

"सूरज प्रकास" की रचना जोधपुर-नरेश महाराजा अभयसिह राठौड के दरबारी कवि कविराजा करणीदान ने ऐतिहासिक दृष्टिकोण से की। ग्रन्थ में भारत की प्राचीन परम्परा को ध्यान मे रखते हुए मध्यकालीन सस्कृति के अन्तर्गत वीरता आदि का राजस्थानी भापा के आकर्षक छदो मे अनूठा प्रदर्शन है। सपूर्ण ग्रथ मे वर्णन ऐसा धाराप्रवाह चलता है कि जिससे पाठको की उत्कण्ठा निरन्तर अग्रसर होती जाती है। कवि महोदय ने यत्र-तत्र अपने पाण्डित्य का प्रदर्शन ऐसी दक्षता से किया है कि प्राय कही पर भी मूल कथा से क्रम नही टूटा है।

### कथानक

सर्व प्रथम मगलाचरण मे गणेश, सरस्वती, शिव, सूर्य तथा विष्णु की स्तुति की है। चूंकि राठौड सूर्यवशी है, अत ग्रथारम्भ मे सूर्यवशी राजा इक्ष्वाकु से वशावली प्रारम्भ करके राजा दशरथ के पश्चात् रामायण का सक्षिप्त वर्णन किया तदनन्तर श्रीराम के पुत्र कुश से राजा पुज तक की वशावली का वर्णन करने के पश्चात् राजा पुज के तेरह पुत्रो का विवरण दिया है जिनसे राठौडो की तेरह शाखाएँ निकली हैं। पुज के ज्येष्ठ पुत्र धर्मबिम्ब की चौथी पीढ़ी मे कन्नौज के राजा जयचद राठौड का उल्लेख किया है जो इतिहास-प्रसिद्ध पृथ्वीराज चौहान का समकालीन था, तथा इसी जयचद की चौथी पीढी मे राव सीहा हुआ। सीहा के पुत्र आसथान ने गोहिलो को पराजित करके खेड (मारवाड) पर अधिकार कर लिया था।

तत्पश्चात् रचयिता ने आसथानजी के वशजो का क्रमश इतिवृत्त लिखा है जिसके अन्तर्गत कई वीरता की घटनायें हैं। इसी वश मे राव चूडा, राव रिडमल, राव जोधा (जोधपुर नगर का सस्थापक), राव सूजा, राव गाँगा, राव मालदेव तथा राजा उदयसिह के सक्षिप्त वर्णन के साथ उसके वशज सवाई राजा सूरसिह, महाराजा गजसिह तथा महाराजा जसवन्तसिह (प्रथम) का अपेक्षाकृत विस्तृत हाल दिया है।

काबुल मे महाराजा जसवन्तसिह (प्रथम) के देहान्त के उपरान्त उनकी गर्भवती रानी से महाराजा अजीतसिह का जन्म लाहौर मे होता है, किन्तु इस समय जोधपुर राज्य पर बादशाह औरगजेब का अधिकार हो जाता है। यहाँ पर ग्रन्थ मे स्वामि-भक्त दुर्गादास राठौड के सतत प्रयत्नो द्वारा महाराजा अजीतसिह

का गुप्त रूप से पालन-पोषण, रक्षा तथा पुन जोधपुर राज्य पर अधिकार करने का रोचक वर्णन है ।

ग्रथ के उत्तरार्द्ध मे महाराजा अभयसिंह के जीवन की दो प्रमुख युद्ध-घटनाओ का वर्णन है, जिसमे प्रथम नागौर के युद्ध का सक्षिप्त तथा दूसरा अहमदाबाद विजय का विस्तृत हाल है । इस युद्ध के वर्णन के साथ ही ग्रथ की समाप्ति हो जाती है ।

## चरित्र-चित्रण

कविराजा करणीदान जोधपुर-नरेश महाराजा अभयसिंह के आश्रित थे । उसका प्रस्तुत 'सूरजप्रकास' काव्य महाराजा की अहमदाबाद-विजय का युद्ध-वर्णन करने के ध्येय से लिखा गया था किन्तु कवि ने अपने इतिहास-ज्ञान का प्रदर्शन करने के लिये लगभग आधे ग्रथ मे महाराजा के पूर्वजो का वर्णन किया है । सूर्य-वश मे होने वाले प्रथम राजा इक्ष्वाकु से कन्नोज-नरेश जयचन्द राठौड तक की वशावली और रामायण तथा राजा पुज के तेरह पुत्रो का वर्णन इतना सक्षिप्त है कि किसी भी पात्र का चरित्र पूर्ण रूप से मुखरित नही हुआ है ।

जयचन्द राठौड से महाराजा अभयसिंह के पितामह महाराजा जसवतसिंह (प्रथम) तक का इतिवृत्त ऐतिहासिक दृष्टिकोण से लिखा गया है जिसमे कई पात्रो का सक्षिप्त तथा कई पात्रो का विस्तार से चित्रण किया है, किन्तु हम उन पात्रो के सर्वांगीण चरित्र-चित्रण पर विचार नही कर सकते । उसमे प्राय उनके युद्ध-चातुर्य, दान, वीरता आदि पर ही प्रकाश डाला गया है, यथा, महाराजा अजीतसिंह तथा कवि के आश्रयदाता महाराजा अभयसिंह के युद्ध-कौशल, राज-नीति, दान, वीरता आदि का विशिष्ट चित्रण है ।

प्रतिपक्षियो का चरित्र-चित्रण करते समय कवि ने शत्रुओ की शक्ति, राज-नीति, युद्ध-चातुर्य तथा अवसर पडने पर आत्म-समर्पण अथवा रण से भाग जाने का सजीव वर्णन किया है । कुछ पात्रो के चरित्र नीचे दिये जाते हैं ।

**महाराजा सूरसिंह :—**

कवि ने सूरसिंह का चरित्र एक कुशल और वीर राजा के रूप मे चित्रित किया है । बादशाह अकबर के दरबार मे जब गुजरात के शासक मुजफ्फर के ज्येष्ठ पुत्र बहादुर (इसने गुजरात मे लूट-मार शुरू कर दी थी) का दमन करने के लिये बीडा घुमाया जाता है तब किसी भी राजा की हिम्मत उस बीडे को ग्रहण करने की नही होती है, केवल महाराजा ही जोशीले शब्दो मे सम्राट अकबर को धैर्य देते हुए उस बीडे को उठा लेते हैं ।

भा सोह उमराव, अब दीवाण अनाही।
मीर त्रुजक ज्या माहि, पान फेरे पतिसाही।।
सब नटिया तिण समै, अवर उमराव अकाजा।
'सूर' पान साहरा, जुडण लीधा महाराजा।।
ग्रहि पान एम कहियौ अगज, झट खग वाँह बाहू झनू।
मोकळू पकडि मदफर मिलक, मुदफर रौ सिर मोकळू।

[ सू प्र भाग १, पृ. २६३ ]

इनकी वीरता के आगे गुजरात के लुटेरे भाग जाते हैं। इसी प्रकार दक्षिण मे अमर चम्पू की बढती हुई शक्ति से भयभीत होकर बादशाह अकबर महाराजा सूरसिंह को ही उसके विरुद्ध भेजते हैं और वे बडी कुशलता से अमर चम्पू को परास्त कर के स्वदेश लौटते है। सम्राट् अकबर के पश्चात् बादशाह जहाँगीर सिंहासनारूढ होते ही इन्हे अपने दरबार मे बुलाता है और इनके गुणो की प्रशसा करते हुए जालोर का परगना भेट करता है। इन सब घटनाओ से इनका वीर-श्रेष्ठ होना प्रकट होता है।

कवि ने सूरसिंह को एक श्रेष्ठ योद्धा के साथ कुशल राजनीतिज्ञ और प्रतिशोध की भावना रखने वाला भी बताया है। इसका उदाहरण हमे इनके गुजरात की ओर जाते समय सिरोही के राव सुरताण से चन्द्रसेन के पुत्र रायसिंह को धोखे से मारने का प्रतिशोध लेने से मिलता है। इसके विपरीत इनके प्रमुख अमात्य गोविन्ददास भाटी ने इनके भाई के लडके को मार डाला था, किन्तु गोविन्ददास के अत्यधिक गुणवान् होने के कारण उसको दण्ड नही देते और उसको प्रमुख अमात्य के पद पर बनाये रखते हैं। इस प्रकार उनमे अत्याचारियो और दुष्टो को दण्ड देने की और गुणवान की त्रुटि को भी क्षमा कर के उसके गुणो का सम्मान करने की भावना थी।

इन गुणो के साथ कवि ने महाराजा को दानवीर और उदार भी बताया है। जब वे गुजरात से लुटेरो का दमन कर के अतुल धन राशि के साथ लौटते है तो अपने आश्रित कवियो और सामन्तो को धन और जागीरे देकर पुरस्कृत करते हैं।

**महाराजा गजसिंह :**

ग्रथकर्ता ने महाराजा सूरसिंह के ज्येष्ठ पुत्र महाराजा गजसिंह को भी अपने पिता के समान श्रेष्ठ योद्धा, युद्धविद्या मे दक्ष और राजनीति-कुशल बताया है। इसके अतिरिक्त कवि ने महाराजा का एक पितृभक्त, महान् शक्तिशाली आत्माभिमानी, धैर्यवान्, सहनशील, आत्म-विश्वासी तथा शाही खानदान के प्रति स्वामि-भक्त के रूप मे भी चित्रण किया है।

**महाराजा की पितृ भक्ति :**

जब महाराजकुमार गजसिंह को यह सदेश मिला कि उनके पिता दक्षिण मे रोग-ग्रसित हो गये हैं तो उन्होने जोधपुर की शासनव्यवस्था, जो उस समय बडी जिम्मेदारी का कार्य था, छोड कर तुरन्त ही दक्षिण की ओर रवाना हो गये किन्तु दुर्भाग्यवश सवाई राजा सूरसिंह का देहावसान इनके वहा पहुँचने के पूर्व ही हो जाने के कारण ये पिता के अन्तिम दर्शन नही कर सके। इनका राज्याभिषेक भी उस समय दक्षिण मे ही हुआ ।

महाराजा गजसिंह अपने समय के सबसे शक्तिशाली राजा थे। बादशाह जहागीर ने सिंहासनारूढ होते ही जब महाराजा सूरसिंह का सम्मान करने के लिये उन्हे अपने दरबार मे बुलाया तो महाराज कुमार गजसिंह भी उनके साथ थे। बादशाह महाराज कुमार से बहुत प्रभावित हुआ और जालोर उन्हे इनायत कर दिया, अर्थात् जालोर पर अपना अधिकार करने की इनको छूट दे दी। जालोर पर उन दिनो बिहारी पठानो का अधिकार था। महाराजकुमार गजसिंह ने दिल्ली से लौटते ही जालोर पर धावा बोल दिया। जिस जालोर को फतह करने मे अल्लाउद्दीन को बारह वर्ष लगे थे तथा अत्यधिक सैन्य शक्ति व छल-कपट से काम लिया गया था उसी जालोर को महाराजकुमार गजसिह ने केवल तीन मास मे ही अपने अधिकार मे कर लिया। कवि ने निम्न पक्तियो मे इस बात को प्रकट किया है—

> लडि बारह बरस अलावदी, लखा दळा छळहू लियौ ।
> त्रण मास माय गजवध तिकौ, 'जालधर' गढ जीपियौ ।।

सू प्र. भाग १, पृ. २९६

यही नही, कई घटनाओ मे कवि ने इनके असाधारण शौर्य का भी चित्रण किया है। जहागीर के पुत्र शाहजादे खुर्रम ने, जो आगे चल कर शाहजहा के नाम से तख्त पर बैठा, विद्रोह कर दिया और उसने दक्षिण मे बडी भारी सेना तैयार की। उसने महान् शक्तिशाली भीम सीसोदिया को अपनी ओर मिला लिया और स्वय बादशाह बनने के लिये दिल्ली की ओर बढा। बादशाह जहागीर ने उसका मुकाबला करने के लिये शाहजादे परवेज के साथ आमेर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह को उनके पास अधिक सेना होने के कारण फौज मे आगे रखा गया। यह बात स्वाभिमानी गजसिंह को अपमानजनक लगी और वे अपनी टुकडी को अलग कर के एक ओर खडे हो गये, तथा दूर से ही युद्ध के परिणाम की प्रतीक्षा करने लगे। इस प्रकार कवि ने यह प्रकट किया है कि महाराजा कितने स्वाभिमानी थे ।

भीम सीसोदिया के पराक्रम से आमेर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह और शाहजादे परवेज की सयुक्त सेना मे भगदड मच गई। कवि कहता है—

जाडा थडा जियार, लोह आडा भड लागा।
जेण वार 'जैसाह' भिडै, हरवळ दळ भागा॥

सू. प्र. भाग २., पृ. ६

महाराणा प्रताप का पौत्र भीम भयकर मार-काट करता हुआ आगे बढा, शाहजादे खुर्रम की विजय निश्चित थी। उसी समय भीम सीसोदिया ने दूर से युद्ध का कौतुक देखने वाले रण-केसरी महाराजा गजसिंह को ललकारा। महाराजा ने बडे धैर्य और आत्म-विश्वास के साथ अपने तीन हजार राजपूतो से खुर्रम और भीम सीसोदिया की विशाल वाहिनी का मुकाबला किया। शाहजादे खुर्रम की विजय पराजय मे बदल गई और भीम सीसोदिया वीर गति को प्राप्त हुआ। इस विषय मे कवि की निम्न पक्तिया देखिये—

पाडियौ भीम खागा पछटि, गयौ खुरम लसि कुरग गति।
गहतत एम जीतौ 'गजण', पूरब धर जोधाण पति॥

सू. प्र भाग २, पृ. ७

इस प्रकार कवि ने महाराजा गजसिंह को महान् धैर्यवान, सहनशील और आत्म-विश्वासी प्रकट किया है, क्योकि भीम सीसोदिया के ललकारने पर ही उन्होने अपनी छोटी सी सेना से उसको पराजित किया—इसके विपरीत भीम शाहजादे परवेज और आमेर नरेश मिर्जा जयसिंह की विशाल सेना से भी पराजित नही हुआ था।

इसी प्रकार महाराजा गजसिंह ने दक्षिण मे अमर चम्पू को परास्त किया तथा दक्षिण के खिडकी गढ, गोलकुण्डा, आहोर, सितारा आदि को विजय कर के बादशाही राज्य मे मिला कर अपने पराक्रम और शाही खानदान के प्रति स्वामिभक्त होने का परिचय दिया तथा बादशाह द्वारा 'दळथभण' की उपाधि से सम्मानित हुए।

**महाराजा अजीतसिंह :—**

ग्रन्थ मे महाराजा अजीतसिंह का विशद वर्णन किया गया है, जो पुस्तक के सौ पृष्ठो से भी अधिक मे पाठको के समक्ष हैं। चूँकि बचपन मे इनका पालन-पोषण वीर दुर्गादास राठौड की देख-रेख मे गुप्त रूप से होता है, अत इनकी बाल्य-क्रीडाओ का चित्रण नही किया गया है।

जब महाराजा कुछ योग्य हुए तो राजपूतो ने इनको अपना अग्रणी बनाया, अत इससे इनका युद्ध विद्या मे चतुर होने का प्रमाण मिलता है। उस समय

जोधपुर पर औरगजेब का अधिकार था। महाराजा अपने सरदारो के साथ इधर-उधर लूट-खसोट करते थे। मुगलो को हर प्रकार से तग करते, उनकी रसद तक लूट लेते, गावो से कर आदि वसूल करते। औरगजेब के मरने पर इन्होने जोधपुर पर अधिकार कर लिया, किन्तु इनका मुगलो से जूझना जारी रहा। इन्होने अपने जीवन काल मे साभर, डीडवाना तथा कुछ दिनो के लिये अजमेर पर भी अधिकार कर लिया था। अत. कवि ने स्पष्ट कर दिया कि महाराजा आजीवन युद्ध करते रहे।

**मुगलो के प्रति तीव्र वैमनस्य :—**

इन पर मुगलो ने बहुत अत्याचार किये। महाराजा जसवन्तसिह (प्रथम) का काबुल मे देहावसान होने के लगभग तीन महीने बाद लाहौर मे इनका जन्म हुआ। औरगजेब ने जोधपुर राज्य को शाही सल्तनत मे मिलाने तथा इनको मुसलमान बनाने के लिये दिल्ली बुला लिया किन्तु स्वामिभक्त वीर राठौड दुर्गादास की चतुराई से ये बचा लिये गये। इस समय इज्जत बचाने के लिये दिल्ली मे दुर्गादास ने उनकी माताओ को तलवार के घाट उतरवा कर यमुना मे बहा दिया। गुप्त रूप से बडे होने के बाद कई लडाइयाँ लड कर उन्होने अपना पैतृक राज्य मुगलो से पुन प्राप्त किया। इन सब कारणो से वे मुगल सल्तनत को मटियामेट कर देना चाहते थे। सैयद बन्धुओ और बादशाह फर्रुखशियर में वैमनस्य हो जाने के कारण ये भी अपने सरदारो सहित दिल्ली पहुँचे। यहाँ पर कवि ने महाराजा की इस भावना का अच्छा चित्रण किया है। दिल्ली में प्रवेश करते समय इन्होने अपनी शैशवावस्था में रक्षा करने वाले उन वीरो के समाधि-स्थान देखे जो इनकी रक्षार्थ मुगलो से लडते हुए वीर गति को प्राप्त हुए थे तथा इन्हे अपनी जन्मदात्री मा का भी स्मरण हो आया जिनका समाधि स्थान भी यही पर था। इनके हृदय में प्रतिशोध की भावना भडक उठी और अपने मन मे मुगलो का नाश करने की ठान ली। देखिये —

समै जेण पतिसाह, दुगम बुद्धि काळ दवायौ।
'सैद' ग्रहण पतिसाह, आप भय चूक उठायौ।
खेध पडै चित खान, खोद उज्जीर हुवा खळ।
साभळि अलीहुमेन, दखिण हूँ आयौ सभै दळ।
पतिसाह ग्रहण जोधाण पति, पेखै मोसर पावियौ।
दइवाण 'अजौ' दळ सभि दिली, आप मुरादी आवियौ॥

सू प्र॰ भाग २, पृ ७६ ७७

आइ दिली ईखिया, जोध चीतरा 'जसारा'।
सुजि 'अवरग' सजी ( ·· ) इता खटकै उण वारा।
जूना भडा जियार, कहै इण भात हकीकत।
माति आदि जादम्म, मात अनि अठै खगा अत।
आइठाण देखि कथ सुणि 'अजै' धिखै क्रोध इम चित धरी।
असपति मारि माड़ू अठै, एक कवरि असपत्तिरी॥
धख इम चख( )धिखै, ताण मूछा खग तोलै।
भडा हूत भूपाळ वहसि नाहर जिम बोलै।
खत्री खाडा धार, एह वायक अबखाणै।
जिको विरद उजवाळि, खूद पलटो खुरसाणै।
महि वैर वस गोहरि मडप, अवरग' बहु कीधा इसा।
तावूत(रा) वैर भूलै तिकै, कहै 'अजो' राजा किसा।

सू प्र भाग २, पृ ७७, ७८

**अपने समय के सब से शक्तिशाली :—**

इनके दिल्ली पहुँचने पर सैयद बन्धुओ और बादशाह फर्रुखशियर ने इनका अलग-अलग स्वागत किया। वे जानते थे कि जिधर शक्तिशाली महाराजा झुक जायेंगे वही पक्ष मजबूत हो जायगा। किन्तु महाराजा मुगलो से कभी प्रसन्न न थे अतः उन्होने अप्रत्यक्ष रूप से सैयद बन्धुओ का ही पक्ष लिया जो हिन्दुओं के पक्षपाती थे। फलस्वरूप बादशाह फर्रुखशियर मारा गया। अत कवि ने यह प्रमाणित कर दिया कि महाराजा उस समय में सब से शक्तिशाली थे।

**धर्म रक्षक :—**

यवनो के समय मे राजपूत राजाओ ने जी जान से हिन्दू धर्म की रक्षा की थी। कवि ने महाराजा का एक कुशल धर्म-रक्षक के रूप मे चित्रण किया है। सैयद बन्धुओ का पक्ष उन्होने इस शर्त पर कर लिया कि बादशाह फर्रुखशियर को हटाते ही हिन्दुओ पर से जजिया कर हट जाना चाहिये, हिन्दू तीर्थ-स्थानो पर से कर हट जाना चाहिये, गो-वध बन्द होना चाहिये तथा मन्दिरो मे होने वाली नियमित पूजा मे किसी प्रकार की बाधा नही पडनी चाहिये।

हम रहै नोकर होय, दिल आप बांधव दोय।
पलटा न वायक पेस, नहिं तजा हुकम नरेस।
महाराज विच रहमाण, करि सौंस छिवी कुराण।
तदि धरै दिल परतीत, इम वोलियो 'अगजीत'।
हिंदवाण तीरथ होय, कर जठै न लगै कोय।
साळगराम सिलाह, दै नही आसुर दाह।
जिग होय दुज जप जाप, आसुर करै न उथाप।
जिण मोह महि दुर जाय, ग्रहै तठै मन ह्वै गाय।

असुराण सीस उपाडि, परसाद न सकै पाडि ।
प्रासाद नव नवा प्रमेस, हिंदवाण सझै हमेस ।
आगै जु दियौ छुडाय, जेजियौ सुज मिट जाय ।
अर साह दरगह आइ, मह पूजहूँ महमाय ।
मिळ लाल कोट मझार, झालरा ह्वै झणकार ।
परमळा धूप प्रकास, उदियात रवि अव-खास ।—सू प्र भाग २, पृ ८१, ८२

× × ×

आ मिटण न दू अनादि, मो थका हिंदु अजादि ।

× × ×

सुणि कहै इम सयदाण, पर हुकम सरव प्रमाण ।
सझि एम तरह सलाह, दहु गये 'सयद' दुवाह ।—सू प्र. भाग २, पृ ८२

इसी प्रकार अपने पैतृक राज्य जोधपुर पर अधिकार करते ही उन्होने उन मसजिदो को तुडवा डाला जो मदिरो के स्थान पर बनाई गई थी और वहाँ पुन मदिर बनवा दिये ।

जब उन्होने अजमेर पर अधिकार किया तो वहाँ पर गो-वध रोक दिया हिन्दू धर्मग्रन्थो के पाठ शुरू करवा दिये तथा मदिरो मे नियमित पूजा शुरू करवा दी।

**राजस्थान के तत्कालीन नरेशो के सहायक :—**

बादशाह बहादुरशाह ने आमेर नरेश जयसिंह से राज्य छीन लिया था । महाराजा अजीतसिंह ने अपने पैतृक राज्य मारवाड पर अधिकार करते ही तुरन्त साभर और डीडवाना को विजय करते हुए आमेर पर अधिकार कर लिया और जयसिंह को पुन वहाँ का राजा बना दिया ।

बादशाह मुहम्मदशाह के समय मे आमेर नरेश जयसिंह ने ईरानी यवनो को प्रेरणा देकर आगरे मे अपनी ओर से निकोशियर को बादशाह घोषित कर दिया था। इस पर सैयद बन्धु और महाराजा अजीतसिंह ने दिल्ली से आगरे जा कर ईरानी मुगलो को मार भगाया और निकोशियर को कैद कर लिया। सैयद बन्धु जयसिंह से बहुत नाराज थे। उन्होने आमेर पर चढाई करने की ठान ली।

गढ लीध करि गज गाह, सुजि गहै नेकह साह' ।
'जैसाह' दिस जमराण, खळ चढै दळ खुरसाण ॥—सू प्र भाग २, पृ ८५

राजा जयसिंह ने अपनी लज्जा बचाने के लिये महाराजा अजीतसिंह को पहले से ही पत्र लिख दिया—

सझि थाट कुरब सुथाळ, मो राखियौ 'अजमाल' ।
वरियाम तीजी बार, अव नको अवर अधार ॥—सू प्र भाग २, पृ ८६

यद्यपि सैयद बन्धु बदला लेना चाहते थे किन्तु महाराजा अजीतसिंह की सलाह के कारण वे उधर नही बढ सके—

सुण बयण इम सयदाण, उर धिखै क्रोध उफाण।
दिल माहि लागो दाह, 'अजमाल' कुरब उथाह।
सो लोप न सकै सैद, कथ कीध पहला कैद।
कथ कहै तजै करूर, जो हुकम पह मनजूर।

सू प्र. भाग २, पृ ८७, ८८

मेवाड के महाराणा जयसिह और उनके पुत्र अमरसिंह में परस्पर गृह-कलह होने के कारण महाराणा भयभीत होकर मारवाड की ओर आ गये और महाराजा अजीतसिंह के पास सहायता का पत्र भेजा। उस समय जोधपुर पर औरगजेब का अधिकार था और महाराजा अपने पैतृक राज्य के लिए जूझ रहे थे, किन्तु राणा की सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझ कर दुर्गादास राठौड की अध्यक्षता मे २५ हजार सशक्त सेना भेज कर पिता-पुत्र में सधि करवा दी और महाराणा को पुन मेवाड के सिंहासन पर आसीन किया।

राण राज तिण वार, जुगति धर वेध लगे जदि।
'अमर' कुमर मुरडियो, तंत ऊथपै दियो तदि।
जदि आयो जैसिंघ, सरण कमधा तदि सब्बळ।
राण मदति महाराज, दीध 'अगजीत' सबळ दळ।
तदि राण 'जसो' चाढै तखति, कवर नमे बाघै करा।
'जसराज' तणै कीधो 'अजै', आक एह उदिया पुरा।

सू प्र. भाग २; पृ. ३९

इस प्रकार कवि ने महाराजा को किसी के सकट के समय मे सहायता देने वाला बताया है।

**कुशल राजनीतिज्ञ —**

नागौर के राव इन्द्रसिंह का पुत्र मोहकमसिंह महाराजा अजीतसिंह के विरुद्ध बादशाह फर्रुखशियर को बहकाता था, अत. महाराजा ने भाटी अमरसिह के साथ कुछ सरदारो को गुप्त रूप से मारवाड से दिल्ली भेजा और मोहकम-सिंह को मरवा डाला। इसके अतिरिक्त दिल्ली के तख्त पर जितने भी बादशाह सैयद भाइयो ने बैठाये, उनके लिए उन्होने महाराजा की मत्रणा ली, अत ये कुशल राजनीतिज्ञ सिद्ध होते हैं।

स्पष्ट है कि कवि ने महाराजा अजीतसिंह का चित्रण अपेक्षाकृत अधिक सफलता के साथ किया है।

## महाराजा अभयसिंह

इस ग्रन्थ की रचना महाराजा अभयसिंह के समय मे ही हुई थी, अतः कवि ने महाराजा के जन्म-काल से लेकर अहमदाबाद की विजय तक इनके जीवन की विभिन्न घटनाओ का चित्रण बडी कुशलता से किया है। जन्म-कुडली, नक्षत्रो, हस्तरेखाओ तथा अन्य ज्योतिष-सम्बन्धी विषयो का वर्णन करके महाराजा के भावी जीवन पर अच्छा प्रकाश डाला गया है।

**बाल-चरित्रः —**

चूकि इनके पिता महाराजा अजीतसिंहजी ने अपने समय मे कई बादशाहो को बदल दिया था, अत बालक अभयसिंह भी इन बातो से प्रभावित हुआ। कवि ने इनके द्वारा खेले जाने वाले खेलो मे इनका बादशाह बनाना, फिर हटाना, किले जीतना, युद्ध करना आदि बातो का वर्णन करके इनके बाल-चरित्र मे उदीयमानता के लक्षण व्यक्त किए हैं। इसके लिए निम्न पक्तिया देखिये—

तेजपुज नृप सुतरण, हुवौ जस वेस झळाहळ।
साईना साथिया, मिळै खेलै मझि मडळ।
हुवै बाळ हेक सा', विखम गढ कोट बरणावै।
ओप साह ऊपरा, 'अभौ' दळ बळ सझि आवै।
सझियास कोट गढ साहरा, घूम लूटि धन ऊधमै।
ऊगतो भाण बाळक 'अभौ' राय आगण इण विध रमै।

सू.प्र. भाग २, पृ. ४६, ५०

सिसु उथापि इक साह, साह सिसु अवर सथप्पै।
सिसु सुभडा हित सझै, पटै गढ देस समप्पै।
सिसु इक मत्री सरूप, धार दफतर भर धारै।
सिसु दुज करै सरूप, एक सिसु कथा उचारै।
कवि होय एक सिसु गुण कहै, सासण गज दै तिण समै।
ससि वेस 'अभौ' 'अगजीत' सुत, राय आगण इण विध रमै॥

सू प्र भाग २, पृ ५१

**युवावस्था के प्रारम्भ मे पराक्रम दिखाना :—**

बादशाह मुहम्मदशाह महाराजा अजीतसिंह की बढती हुई शक्ति से बहुत घबराया, क्योकि उन्होने अजमेर पर भी अपना अधिकार कर लिया था। अत बादशाह ने उनका दमन करने के लिए तीस हजार यवन-दल के साथ मुदफर खां को भेजा। महाराजा अजीतसिंह ने राजकुमार को उसका सामना

करने के लिए भेजा। वे अपने पिता को पूर्ण विश्वास दिला कर रवाना हुए। कवि ने यहाँ पर अभयसिंह के शौर्य का सुन्दर चित्रण किया है—

रहौ अठै महाराज, आप आणद उपाए।
बीडौ मो बगसिजै, जडू मुदफर हूँ जाए।
जुडै त मारू जवन, भांति बळ काय भजाऊ।
करि झट खड कराळ, चाक खड खड चढाऊ।

पुर नारनौळ साहिजा पुरा, दळि लूटू दस देसनू।
अजमेर सोच दियू उवर, दिल्ली सोच दिलेसनूं।

सू.प्र. भाग २, पृ ६८

राजकुमार अभयसिंह अपनी सेना के साथ तूफान की भाँति आगे बढते हैं और मुदफर खा यवन दल के साथ भाग जाता है।

भजि गया बिण गज भार, हय थाट तीस हजार।
मिट लाज छाडि गुमान, खडि गयौ मुदफर खान॥

सू.प्र. भाग २, पृ १०२

महाराज कुमार ने बादशाही गावो को लूट लिया और उनमे आग लगा दी। लोग भय से घबराने लगे—

आवैस धकै अमास, उडि जाय गढ असि हास।
लूटत सपति लाख, सरदाण ह्वै घण साख॥

सू.प्र भाग २, पृ १०३

× ×

अै सहर की ऊफाण, 'अभमाल' घेरे आण।
चहु तरफ थाट चलाय, लगाय वळ वळ लाय॥

धुवि झाळ झळ हळ धोम, हणमत लक जिम होम।
जाळीस सवळ पट जागि, आलीस आलिय आगि॥

सू.प्र भाग २, पृ १०३

यहाँ पर कवि ने महाराज कुमार की युवावस्था मे होने वाली अपरिपक्व वुद्धि की ओर सकेत किया है, क्योकि लूट-खसोट करना, गाव जला डालना आदि वीरोचित कार्य नही हैं। इस प्रकार के कार्यों के कारण उनका नाम धोकळसिह पड़ा। सवको भयभीत करके तथा वहुत धन-माल लेकर ये अपने पिता से आकर मिले—

धन लूट कीधौ धाण, वधि नारनौळ विनाण।
मढ नयररा परचंड, दो नगर अै भुजदंड॥

भाजिया जिकै भुजाळ, 'अभमाल' विरद उजाळ ।
मांडियो न धकै मुगळळ, इम जीपियौ अभमल्ल ।।

घर साह धोकळ धीग, सो कहै धोकळ सीग ।
सझि साह मुलक सरद्द, मोसरा पहल मरद्द ।।

कुळ भाण विरद कहाय, जुध जीस तवल वजाय ।
इम हलै थाट अथाह, छिल उरस छिव 'अभसाह'।।

गाजता गयद गहीर, वाजता नोबत वीर ।
आवियौ थाट अथाग, रग हुवा उच्छब राग ।।

'अजमाल' सजि उच्छाह, गह-महत भड दरगाह ।
उणवार 'अभमल' आय, पह कीध वदण पाय ।।

सुत तात मिळै सनेह, दो जाणि सूरज देह ।
अति पूर छक अमराव, पति करत वदण पाव ।।

सू प्र० भाग २, पृ० ११०, १११

**अपने समय के सबसे शक्तिशाली राजा —**

महाराजा अभयसिह भी सवाई राजा सूरसिह, गजसिह आदि अपने पूर्वजों के समान ही शक्तिशाली राजा थे। बादशाह मुहम्मदशाह ने सर बुलन्द को गुजरात का सूबेदार बना कर भेजा था। उसने वहाँ जाकर अपनी शक्ति बढाई और स्वय वहाँ का अधीश्वर बन बैठा। बादशाह बहुत चिंतित हुआ और उसने एक बहुत बडा दरबार किया—जिसमे बडे-बड़े राजा, महाराजा, सामन्त, नवाब, अमीर आदि उपस्थित थे। बादशाह ने सर बुलन्द का दमन करने के लिये सभा मे पान का बीडा घुमाया। सर बुलन्द की शक्ति का मुकाबिला करने के लिये कोई भी तैयार नही हुआ, आखिर महाराजा अभयसिह ने ही बीडा उठा कर यह प्रतिज्ञा की कि मैं सर बुलन्द को झुका कर रहूँगा। इस आशय को कवि ने निम्न पक्तियो मे चित्रित किया है—

फिरै पान साहरा, किता ह्वै ज्यान थरत्थर।
फिरै पान साहरा, किता निजरा न धरै कर।
तुजक मीर कर तान, केइक मसतान कहावै।
आन आन कथ कहै, पान नह कोय उठावै।
'अभमाल' विना हिंदू असुर, दिल अव खास दबावियौ,
मेर गिर भार पाना मही, उण दिन निजरा आवियौ।,

× ×

नी लियै खान निवाव, आंन न लियै अवपत्ती।
तुजक मीर कर हूत, पान लीधा असपत्ती।

गहे पांन निज करग, नजर कमधज्ज निहारै ।
रहै एक औसरा, एम पतिसाह उचारै ।
तद मुसलमान हिंदू तणी, आसग किणहि न आविया ।
दईवाण देखि असपति दुचित, 'अभमल' पान उठाविया ।

सू.प्र. भाग २, पृ· २४५, २४६

बीडा लै बोलियौ, कमध घातै मूछा कर ।
उछब करौ असपती, सोच मति धरौ दिलेसुर ।
मारि सीस मोकळू, काय पकडै पोहचाऊं ।
अजळ भाजि ऊबरै, मुगळ दळ गिरद मिळाऊं ।

अहमदाबाद हूंता असुर, एक दिवस मझि ऊथलू ।
विण पत्र रूख जिम सिर विलंद, करै दिली दिस मोकळू ।

सू.प्र. भाग २, पृ २४७

स्वाभिमानी :—

यद्यपि महाराजा अजीतसिह ने बादशाह मुहम्मदशाह से सधि कर ली थी और उसके अनुसार महाराजकुमार अभयसिंह दिल्ली गए थे । किन्तु वे पूर्ण-रूप से स्वाभिमानी थे । एक समय जब ये बादशाह मुहम्मदशाह के दरबार मे गये और बादशाह के बिलकुल समीप पहुँचे तो बादशाह के एक अमीर ने इन्हें रोक दिया, इस पर इन्होने अति क्रोधित होकर अपने स्वाभिमान की रक्षक कटार निकाली । उसी समय बादशाह ने तुरन्त आगे बढ कर अपने गले का मोतियो का हार इन्हें पहना दिया और बडी कठिनाई से इनके क्रोध को शान्त करने मे सफल हुआ । यदि वह ऐसा नही करता तो वही दृश्य उपस्थित होता जो बादशाह शाहजहाँ के दरबार मे अमरसिंह राठौड द्वारा हुआ था । कवि ने उनके इस गुण का चित्रण इस प्रकार किया है—

एक समै 'अभमाल', एम आवियौ पुजाए ।
दुझल वार दूसरी, चढण कटहडै चलाए ।
अनवह चढै अमीर, साहजादा नह मौसर ।
उठै चढै धर धोम, वहसि 'अभमाल' बहादर ।
गज तजै डांण अन पह गुमर, तेज साह इसडौ तठै ।
अटकियौ असुर तिण पर 'अभै', जमदढकर धरियौ जठै ।।

पेखि रोस पतिसाह, माळ मोतिया समप्पै ।
खगसी भेजि मताब, आंणि माळा सुज अप्पै ।।
मीर सुजक मारिवा, धिखै जमदढ कर धारै ।
दुझल खान दौरास, पटाझर जिम पूतारै ।।

असतूत करै वह करि अरज, जोडे हाथ जुहारियौ।
असपती मोहर आरणै 'अभौ' इरण विध क्रोध उतारियौ॥

सू प्र. भाग २, पृ १२६

**महाराजा की भाषरण-शक्ति :—**

सर बुलन्द पर आक्रमण करने के लिए महाराजा ने सरस्वती के किनारे अपने सुभटो के समक्ष बडा जोशीला भाषण दिया। उन्होने बताया कि ऋषि-महात्माओ को अपेक्षा वीरो को सहज ही मे मोक्ष मिल जाता है। अपने लम्वे भाषण मे उन्होने कई ज्ञान की बाते बताईं और युद्ध मे जीत की वाजी लगाने के लिए सरदारो को प्रोत्साहित किया। अतः कवि ने यह प्रमाणित कर दिया कि महाराजा भाषण-शक्ति मे दक्ष होने के साथ साथ विद्वान भी थे—

इम रिख सिख हू ताम उचारा।
धुर खत्र मारग खांडा धारा।
विधि सिख मुणि रिज कहै करूं विध।
सूर जोड न हुवै तपसी सिध॥

सू प्र भाग २, पृ. ३३९

× × ×

कळहणि सूर सामरै कारण।
ऽवै सुख तजै पलक मझि आरण।
सूरा तेज इसौ दरसावै।
इरण विध तपसी जोड न पावै॥

सू प्र. भाग २, पृ ३४०

× × ×

इम सूरौ पति धरम इरादा।
जोगेसरा सिधा हूँ जादा।
लडै नचित लोह नह लागै।
जिकौ सूर तपसी सम जागै॥

सू प्र भाग २, पृ ३४३

**शरणागतवत्सल और क्षमाशील :—**

सर वुलन्द को परास्त करने मे महाराजा के कई राजपूत योद्धा वीरगति को प्राप्त हुए, जिनका उन्हे बहुत शोक था, फिर भी सर वुलन्द महाराजा की शरण मे आ गया तो उन्होने क्षमा करके उसे छोड दिया और वह करारी हार से लज्जित होकर आगरा की ओर रवाना हो गया—

पडै पाय सिर विलद, जांणै सरणाय सधारा।
म्हैं वदा हुकम का, एम कहियौ उण वारा।

अवर रखत अ रबा, किले वचिया अधिकारा।
जिकै किया सहो निजर, किला सहित कोठारा।
जदि होय रूख पतभड़ जिही, सुभडा विरिण दुख सालियो।
आगरा दिसि सिर विलद इम, हीरण मारण होय हालियो ॥

सू प्र भाग ३, पृ० २६४

इस प्रकार कवि ने महाराजा अभयसिंह का एक आदर्श राजा के रूप मे चित्रण करने का सफल प्रयत्न किया है।

**प्रति नायक :—**

नायक की श्रेष्ठता प्रति नायक के बल का यथेष्ट वर्णन कर उस पर विजय प्रदर्शित करने से ही सिद्ध होती है। कवि ने अपने इस उत्तरदायित्व को ग्रथ मे यत्र तत्र पूर्ण रूप से निभाया है।

**सर बुलन्द :—**

अहमदाबाद का स्वत.सृष्ट नृपति सर बुलन्द, जिसको बादशाह ने गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया था, बहुत शक्तिशाली था। उसने विद्रोहियो से मिल कर गुजरात मे बहुत अत्याचार किये, लूट-मार की जिससे कि वहाँ की प्रजा बहुत दुखी हो गई। बादशाह के दरबार में गुजरात के एक सदेशवाहक की आर्तनाद को कवि ने निम्न कवित्त मे प्रकट किया है—

ईरानी अतपाक, दखिरण मिळ किया दुवाहा।
मडिया जठै गनीम, जठै सहनक पतिसाहा।
आठ पहर रइयत्त, जहर पीधा समजावै।
लूट कहर करि लियै, सहर विवराळा गावै।
धन लियै मारि नाखै धरणी, साथ होरण न दियै सती।
असपती सोच वधियो अधिक, इसडी सुणै अजाजती ॥

सू प्र भाग २, पृ. २४२

सर बुलन्द का दमन करने के लिए बादशाह के दरबार मे पान का बीड़ा घुमाया जाना और वहाँ पर उपस्थित सभी राजा, महाराजा, सामन्त, नवाब, अमीरो आदि का सर बुलन्द के विरुद्ध बीडा उठाने की हिम्मत नही करने का वर्णन कर के ग्रथकर्ता ने उसके अत्यन्त शक्तिशाली होने की ओर सकेत किया है। इसके लिए पुस्तक के द्वितीय भाग पृष्ठ २४५-२४६ तथा २४७ के कवित्त दृष्टव्य हैं। इसके अतिरिक्त ग्रथ की निम्न पक्तियाँ भी देखिये—

विहूं ताम बोलिया, साह अपखास सभावो।
नरिंद खान करि निजर, फिजर बीडा फिरवावो।
फटै निसा फजरान, अव - दीवारण वरणाया।
तखत बैठ सुरतारण, पान हाजर पधराया।

सिर विलद खान 'साहू' सहित, आसंग हुवै सु आवसी ।
असमान पडै थाभै अडर, औ नर पान उठावसी ।

सू प्र भाग २, पृ २४२

सर बुलन्द की सेना मे बारह हजार सैनिक तो यूरोपियनो की देख-रेख मे ही थे तथा तोपे दागने का काम भी यूरोपियन करते थे । चार हजार 'सुतर नाले', तीन हजार 'रेहकले', तथा शक्तिशाली सेना के वर्णन से उसका बहुत चतुर और विजयाकाक्षी होने का प्रमाण मिलता है ।

पहले तीन दिन तक सर बुलन्द राठौड-वाहिनी के समक्ष नही आया और गोलाबारी करता रहा । अत वह युद्ध-विद्या मे दक्ष सिद्ध होता है ।

नगर के प्रत्येक द्वार पर तोपे और सैनिको का प्रबन्ध करके उसने अपनी नगर-रक्षा की भावना को प्रमाणित किया है ।

अवसर पडने पर वह युद्ध-स्थल से भाग जाता था। इस प्रकार वह हिन्दुओ की तरह एक ही स्थान पर लड़ते-लडते प्राण गवा देना बुद्धिमानी नही समझता था । अपनी हार होते हुए देख कर उसने महाराजा अभयसिंह से संधि कर ली तथा उनकी शरण मे आ कर आत्मसमर्पण कर दिया । तत्पश्चात् वह आगरे की ओर रवाना हो गया । इस भाव का चित्रण कवि ने निम्न पक्तियो मे किया है —

पडै पाय सिर विलद, जाणँ सरणाय सधारा ।
म्हैं बदा हुकम का, एम कहियो उणवारा ।
अवर रखत आरबा, किलै वचिया 'अधिकारा' ।
जिकै किया सहो निजर, किला सहित कोठारा ।
जदि होय रूख पतभड जिही, सुभडा विणिदुख सालियो ।
आगरा दिसी सिर विलद इम, हीण माण होय हालियो ।

सू प्र भाग ३, पृ २६४

अतः सर बुलन्द इतना शक्तिशाली और स्वाभिमानी होने के साथ-साथ अवसरवादी भी था ।

**अन्य चरित्रः—**

कवि ने राजनीतिज्ञ, युद्ध-विद्या मे चतुर और रणक्षेत्र मे वीरगति प्राप्त करने वाले अनेक वीरो का परिचय भी ग्रथ के अन्तर्गत यथा-स्थान यत्र-तत्र दे दिया है । पाठकों की सुविधा के लिये उनमे से कुछ का उल्लेख सूरजप्रकास की ऐतिहासिकता के अन्तर्गत करने का प्रयत्न किया गया है। सम्पूर्ण ग्रन्थ मे स्त्री-पात्रो का अभाव ही है । केवल महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) की रानियो

का प्रसंगवश उल्लेख मात्र है जिनकी इज्जत बचाने के लिये दिल्ली मे वीर दुर्गादास राठौड ने उन्हें तलवार के घाट उतरवा कर यमुना मे बहा दी थी।

**रस**

कवि ने अपनी काव्यगत परम्परा के अनुसार सम्पूर्ण ग्रथ मे वीर रस तथा इसके मित्र वीभत्स, भयानक तथा रौद्र का अच्छा चित्रण किया है। वीर रस के अन्तर्गत युद्धवीर, दानवीर, दयावीर, धर्मवीर तथा प्रणवीर सभी का निर्वाह हुआ है।

वीर रस का निम्न उदाहरण देखिए—

बीडा लै बोलियौ, कमध घातै मूंछा कर।
उछब करौ असपती, सौच मति करौ दिलेसुर।
मारि सीस मोकळू, काय पकडे पौहचाऊ।
अहमदाबाद हूता असुर, एक दिवस मझि ऊथळू।
विण पत्रा रूख जिम सिर विलद,करे दिलीदिस मोकळू।

सू प्र. भाग २, पृ २४७

यत्र-तत्र प्रसगवश शृगार, शान्त तथा करुण रस का भी वर्णन मिलता है। साहित्यिक दृष्टि से कवि का ध्यान रसो की ओर न जा कर ग्रथ मे ऐतिहासिकता को ध्यान मे रखते हुए वर्णनात्मक इतिवृत्त लिखने की ओर ही रहा है। अत· सभी रस पूर्ण रूप से परिपाक नही हुए हैं।

शृगार रस का निम्न उदाहरण देखिये—

सोळह मझि सिणगार, सोळह वीस आभरण सुदरि।
वाजंत्र सझि विसतार, गान सगीत करण मिळ गाइण।
मुगधा वेस प्रमाणै, लखि अति रूप उर-वसी लज्यत।
पय घूघर बध पाणै, सझिया नमसकार सारदा।
ताल मृदग तवूर सुर वीणा, वीणा धरि सुदरि।
हरखत नृपत हजूर, सझै सलाम अलाप कीध सुर॥

सू प्र भाग २, पृ १५०

**अलंकार**

कवि ने जान-वूझ कर अलकारो को लादने की चेष्टा नही की है, किन्तु स्वाभाविक रूप से अलकारो का प्रयोग होता रहा है। अत. ग्रथ मे अलकारो का अभाव भी नही है। कवि की वश-परम्परा के अनुसार समूचे ग्रथ मे 'वयण सगाई' का भली भाँति निर्वाह हुआ है। इसी प्रकार अनुप्रास की झलक भी प्राय मिल ही जाती है। वीप्सा भी यत्र-तत्र मिल जाता है। अर्थालंकारो के अन्तर्गत—उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि का प्रयोग ग्रन्थ मे होता रहा है। अत स्पष्ट है कि ऐतिहासिक ग्रथ होते हुए भी कवि द्वारा अलंकारो का प्रयोग

स्वाभाविक रूप से बराबर होता रहा है। निम्न उदाहरणो से उक्त कथन की पुष्टि करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

शब्दालकार —

**वीप्सा** – लघु-लघु सर कर धनक लघु, लघु वय बाळक लार।

सू.प्र. भाग १, पृ २३

**वयण सगाई** – सम्पूर्ण ग्रथ मे इसका निर्वाह हुआ है।

**अनुप्रास** – ग्रन्थ मे प्राय सभी जगह किसी न किसी रूप मे मिल जाता है।

अर्थालकार —

**उपमा** – क्रीडा विलास विध-विध करै, 'अभौ' इद आडबरा।

**उत्प्रेक्षा** – 'अजमल' जुहार वैठो 'अभौ', सनमुख तेज समीपियौ।
रघुनाथ जाणि रवि वस रवि, दसरथि आगळ दीपियौ॥

## छद

ग्रथ मे सस्कृत, प्राकृत, राजस्थानी तथा हिन्दी के विभिन्न छदो का प्रयोग प्राय प्रसगानुकूल किया गया है। युद्ध के लम्बे वर्णन के लिये त्रोटक, मोतीदाम, पद्धरी और कवित्त (छप्पय) को अधिक अपनाया गया है। निम्न छदो का प्रयोग ग्रथ मे किया गया है—

१. **अम्रत गति (अमृत गति)** – यह राजस्थानी और हिन्दी दोनो मे प्रयुक्त होने वाला छद है। राजस्थानी के छदशास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'रघुवरजसप्रकास' व हिन्दी के 'छदप्रभाकर' के अनुसार इसके प्रत्येक चरण मे नगण, जगण, नगण तथा अत मे गुरु होता है। समूचे ग्रन्थ मे केवल एक स्थान पर ही इस छद का प्रयोग हुआ है जिसकी सख्या भी एक ही है, किन्तु इसमे उक्त लक्षण पूर्ण रूप से लागू नही होते है। इस छद का दूसरा नाम त्वरित गति (त्वरित गति) है।

२. **अरध नाराच (अर्द्ध नाराच)** – ग्रन्थ के प्रथम भाग मे इसकी सख्या १४ है।

३. **इकतीसौ** – समूचे ग्रन्थ मे इसकी सख्या एक है जो ग्रन्थ के दूसरे भाग मे आया हुआ है।

४ **कलहस** – इस छद के लक्षण भिन्न-भिन्न आचार्यों ने भिन्न-भिन्न दिये हैं। ग्रन्थ के प्रथम भाग मे इसकी सख्या सात है।

५ **कवित्त कुडलियौ** – यह एक मात्रिक छद है। रघुवरजसप्रकास के अनुसार इसमे प्रथम कुडळिया की छ पक्तिया जो क्रमश. १३-११, १३-११, ११-१३, ११-१३, ११-१३, ११-१३ मात्राओ की होती हैं। अतिम दो पक्तियां

उल्लाला की होती है जिनमे क्रमश १५-१३, १५-१३ मात्राएँ होती हैं। कुड-ळिया के प्रथम चरण को उलट कर उल्लाला के अतिम चरण मे रखा जाता है किन्तु ग्रथकर्त्ता ने कुडळिया के प्रथम चरण को उल्लाला के अतिम चरण मे नही रखा है। ग्रथ मे इसकी सख्या एक है जो ग्रथ के दूसरे भाग मे है।

६. **कवित्त दौढौ** – केवल राजस्थानी का ही एक मात्रिक छद है। राजस्थानी के प्राप्य छदशास्त्रो मे लक्षण नही देखे गये हैं किन्तु स्वर्गीय श्री हरिनारायणजी पुरोहित, जयपुर के मतानुसार इसमे छ पद रोला के तथा अतिम दो पद उल्लाला के होते हैं। अत इसमे साधारण छप्पय (कवित्त) से दो चरण अधिक होने के कारण यह कवित्त दौढौ कहलाता है। समूचे ग्रथ मे इसकी सख्या आठ है।

७. **कुस विचित्रा** – यह एक अनिश्चित छद है। छदप्रभाकर मे कुसुम-विचित्रा छद दिया हुआ है किन्तु उससे इसके लक्षण मेल नही खाते हैं। समूचे ग्रथ मे इसकी सख्या केवल एक है।

८. **गाथा (गाहा)** – यह सस्कृत का आर्या छद है। समूचे ग्रथ मे इसकी सख्या १२ है।

९ **गाथा चौसर (गाहा चौसर)** – यह राजस्थानी का एक मात्रिक छद है। समूचे ग्रन्थ मे इसकी सख्या केवल एक है जो ग्रन्थ के पहले भाग मे है।

१० **गीत त्रकुटबध** – डिंगल (राजस्थानी) का एक गीत (छद) विशेष। समूचे ग्रथ मे आठ द्वालो का एक गीत है जो ग्रन्थ के पहले भाग मे है।

११ **गीत सांणोर** – राजस्थानी का एक गीत (छद) विशेष। समूचे ग्रथ मे चार द्वालो का एक गीत है जो ग्रथ के दूसरे भाग मे है।

१२ **चचली (चंचला)** – एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, जगण, रगण, जगण, रगण व लघु के क्रम से १६ अक्षर होते हैं। इसका दूसरा नाम चित्रा है। ग्रन्थ मे उक्त लक्षण नही मिलने के कारण छदोभग दोष है। यथा—

SSS ISI SI S S I S I I S I
सपेखे झळाळ सूज पूजै भुजः पतिसाह
ISSI I I S S S I S I S I S I
दिलीहूत घर दावौ, ऊससे पठाण एक ।।

समूचे ग्रथ मे इसकी सख्या ५ है जो ग्रन्थ के प्रथम भाग मे है।

१३ **छप्पय (षट्पद)** – इसको राजस्थानी मे कवित्त कहते हैं समूचे ग्रन्थ मे इसकी सख्या ३९४ है।

१४ **झपताळ (झपताल)** – एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राए होती हैं और अत मे गुरु होता है। समूचे ग्रन्थ मे इसकी सख्या १८ है जो ग्रन्थ के प्रथम भाग मे है।

१५ **झूलणा** – यह एक मात्रिक छद है। यह कई प्रकार का होता है। ग्रन्थ मे प्रयुक्त छद के अनुसार इसके प्रत्येक चरण मे (१३+१०)=२३ मात्राये होती हैं। ग्रन्थ मे इसकी सख्या २४ है जो ग्रन्थ के प्रथम भाग मे है।

१६ **तारक** – यह एक वर्ण वृत्त है। रघुवरजसप्रकास के अनुसार इसके प्रत्येक पद मे चार सगण और अत मे गुरु होता है। ग्रथ मे प्रयुक्त इस छद मे छदोभग दोप है। यथा—

। । ऽ । ऽ । । । । । ऽऽ
वर वधिय कुभ घरा तिरा वारा

ग्रथ मे इसकी सख्या चार है जो ग्रन्थ के प्रथम भाग मे है।

१७ **त्रोटक** – प्रत्येक पद मे चार सगण वाला एक वर्णवृत्त है। समूचे ग्रन्थ मे इसकी सख्या १४५ है।

१८. **दग** – इस छद के लक्षण अस्पष्ट हैं। ग्रथ मे इसकी सख्या २५ है।

१९. **दवावैत** – यह एक प्रकार का गद्य है जो दो प्रकार का होता है— एक शुद्ध-वध अर्थात् पद-वध जिसमें अनुप्रास मिलाया जाता है और दूसरा गद्य-वध जिसमें अनुप्रास नही मिलाया जाता है।

२० **दूहा** – समूचे ग्रन्थ मे इसकी सख्या ९४ है।

२१. **नाराच** – एक वर्णवृत्त। इसका दूसरा नाम पचचामर भी है। ग्रथ मे इसकी सख्या ५७ है।

२२. **निसिपालिका** – यह एक वर्णवृत्त है। समूचे ग्रथ मे इसकी सख्या ८ है।

२३ **नीसाणी** – राजस्थानी का एक मात्रिक छद जिसका दूसरा नाम शुद्ध जागडी गरवत नीसाणी भी है। ग्रन्थ मे इसकी सख्या २६ है।

२४ **नीसांणी हसगति** – राजस्थानी का एक मात्रिक छद जिसका दूसरा नाम रूपमाला है। ग्रथ मे इसकी सख्या १४ है।

२५. **पद्धरी** – एक मात्रिक छद। ग्रथ में इसकी सख्या २०० है।

२६ **वे-अक्खरी (द्वैक्षरी)** – एक मात्रिक छद जिसका प्रयोग कवि ने अन्य छदो की अपेक्षा अधिक किया है। ग्रथ मे इसकी सख्या ६५४ है।

२७ **भुजगी** – सस्कृत का भुजंगप्रयात वर्णवृत्त जिसकी सख्या ग्रन्थ में १५५ है।

२८ **मछिक, मछिका** – सस्कृत का मल्लिका वर्णवृत्त जिसकी संख्या ग्रन्थ मे २० है।

२९ **मत-मातग लीलाकर दडक** – एक वर्णवृत्त जिसकी सख्या समूचे ग्रथ मे एक है।

३० **मालती** – सस्कृत का एक वर्णवृत्त जिसकी सख्या ग्रन्थ मे ११ है।

३१ **मोतीदाम** – चार जगण का एक सम वर्णवृत्त जिसको सख्या ग्रथ मे ५८२ है।

३२. **रसावला** – एक मात्रिक छद जिसकी सख्या समूचे ग्रथ में १५ है।

३३ **रूपमाला** – यह एक मात्रिक छद है। इसमे १४ और १० की यति से कुल २४ मात्राएँ होती हैं और अन्त मे गुरु लघु होता है।

यह निसाणी हसगति से भिन्न है। इसकी सख्या ग्रन्थ में तीन है।

३४. **रोमकद** – डिंगल (राजस्थानी) का एक वर्णवृत्त। इसके प्रत्येक चरण मे ८ सगण होते हैं जिसमे ९, ९, ८ और ६ वर्णों की यति से कुल ३२ वर्ण होते हैं। इसका प्रत्येक चौथा चरण समान होता है जिसके अतिम आधे भाग की पुनरावृत्ति होती रहती है। राजस्थानी के प्राप्त छद-शास्त्र के ग्रन्थो मे इसका उल्लेख नही मिला है। ग्रथ में इसकी सख्या ९ है।

३५ **विरवेखक** – एक वर्णवृत्त जिसको हिन्दी मे विशेषक, नील, अश्वगति और लीला भी कहते हैं। समूचे ग्रन्थ में इसकी सख्या एक है।

३६ **विराज** – एक वर्णवृत्त जिसको हिन्दी मे शखनारी और सोमराजी भी कहते हैं। ग्रथ मे इसकी सख्या २५ है।

३७. **वैताळ** – एक मात्रिक छद जिसको हिन्दी मे कामरूप कहते हैं। ग्रथ मे इसकी सख्या एक ही है।

३८ **सवैया** – एक वर्णवृत्त जो समूचे ग्रथ मे एक ही है।

३९. **सारसी** – प्रत्येक चरण मे १६ और १२ की यति के कुल २८ मात्राओ का एक राजस्थानी मात्रिक छद जिसके मध्य मे तीन वार अनुप्रास की आवृत्ति होती है तथा चरण के प्रारम्भ मे और अत मे चार मात्राएँ होती हैं किन्तु ग्रथ में प्रयुक्त छद के चरण के आरम्भ मे और अत में प्राय ५ मात्राएँ है। ग्रथ मे इसकी ३९ सख्या है।

४० **सोरठा** – यह एक मात्रिक छद है। समूचे ग्रथ मे इसकी सख्या १२ है।

४१ **हणूफाल** – यह एक मात्रिक छद है। ग्रथ मे इसकी सख्या २५५ है।

## प्रकृति - चित्रण

मध्य युग मे कवियो का ध्यान प्रवन्ध काव्यो के रचने की ओर नही गया। वीर काव्य-धारा के जो नाम मात्र प्रबन्ध काव्य रचे गये उनमे प्रकृति प्राय. उपेक्षित रही है। इन ग्रन्थो मे इतिवृत्तात्मकता, युद्ध-वर्णन, युद्धसामग्री, शौर्य-चित्रण, योद्धाओ तथा अन्य वस्तुओ की लम्बी सूचियाँ ही अधिक मिलती हैं। साज-सज्जा, राजसी ठाठ-बाट आदि की ओर ही कवियो का झुकाव अधिक रहा है। प्रकृति का थोडा बहुत रूप मिलता है, वह एक परम्परागत शैली का अनुकरण मात्र है। इस ग्रन्थ के रचयिता कविराज करणीदान भी प्रकृति का बिम्ब ग्रहण करने मे असमर्थ रहे हैं।

उद्यानो का वर्णन करते हुए कवि ने अनेक वृक्षो के नाम दिये हैं। निम्न उदाहरण से स्पष्ट है—

> अगूर सरदूं फळी अनेक बेलि। वेदानै दाखा बेदानै अनार।
> चिलकौचे वेह और सेवूका विस्तार। स्रीफळ विदाम।
> और नीवू के लूब। कमळा रेसमी नारगी पैवदूका हूनर अदभूत।

उक्त वर्णन से कवि की असावधानी प्रकट होती है। सेव, नारियल, बादाम आदि का जोधपुर के उद्यानो मे होना असम्भव था और इस समय भी ये वृक्ष यहा नही पाये जाते हैं। अतः यह परम्परागत शैली के अनुकरण करने का परिचायक है। यहा पर कवि वृक्षो की नामावली न देकर प्रकृति के स्वाभाविक दृश्य अकित कर सकता था।

कई स्थानो पर कवि ने अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण भी किया है। यथा—

> अभै सागर, वाळ समद दोऊ, मान सरोवर जैसे।
> अम्रित के समुद्र तैसे लहरू के प्रवाह छाजै॥
> जिनका रूप देखे से छीर समुद्र का गुमर भाजै।

इन छोटे तालावो की तुलना क्षीर सागर से करदी है जो अतिशयोक्तिपूर्ण है। यह सब होते हुए भी कवि ने कही-कही प्रकृति का स्वाभाविक चित्रण भी किया है। यथा—

> सघन गभीर आरामू का पार नही आवै।
> आफताफ का तेज जिसकी छाह भेद जमीन लग न जावै।

ऐसे ही जोधाण तैसे वगीचे । मडोवर के बीच निवास !
जहा स्री महाराज के खडग जैतकारी,
काळै गौरे महाबीरू भेरू का वास ।
ऐसे वगीचू का सिंगार सोभा का अथाग ।

यहा पर वृक्षो की सघनता के कारण सूर्य की किरणो का जमीन तक नही पहुँचना, उद्यानो की सुन्दरता आदि का वर्णन कर के कवि ने वास्तविकता को प्रकट करने का प्रयत्न किया है जो सराहनीय है। अत. यह स्पष्ट है कि कवि मे बहुत सूझ-बूझ थी। यदि वह यथास्थान इस ओर बढने का थोडा-सा यत्न और करता तो इस दृष्टि से भी ग्रथ महत्वपूर्ण हो सकता था। कवि का मुख्य विषय इतिहास लिखना व महाराजा का युद्ध-वर्णन करना था, किन्तु ग्रथ मे कई स्थान ऐसे भी है जहा परम्परागत शैली को न अपना कर स्वाभाविक चित्रण किया जा सकता था।

## शैली और भाषा

कवि ने ग्रथ मे वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है, क्योकि उसका प्रधान लक्ष्य ही महाराजा अभयसिंह के पूर्वजो का इतिवृत्त लिखना और महाराजा द्वारा अहमदाबाद-विजय के युद्ध का वर्णन करना था। पात्रो के सवादो का समावेश कर के तथा विभिन्न प्रकार के छदो व गद्यवत दवावैत का प्रयोग कर के ग्रथ को रोचक बनाने का प्रयत्न किया है।

ग्रथ मे नादात्मक एव सयुक्ताक्षर-शैली का प्राय बहिष्कार हुआ है। भाषा मे अलकारो को लादने का प्रयास नही किया गया है। अलकार स्वाभाविक रूप से काव्य-प्रवाह मे आते गये हैं। अत नीरसता नही आ पाई है। ओज गुण की प्रधानता के साथ प्रसाद और माधुर्य का भी आभास होता है। कवि ने पात्रो के अनुरूप भाषा का रूप वदलने का प्रयत्न किया है, जैसे मुगल बादशाह का वर्णन या उसके द्वारा कुछ सवाद कहलाना है तो उसमे फारसी, अरबी और तुर्की के शब्दो का प्रायः प्रयोग किया गया है जो प्रशसनीय है। निम्न उदाहरण हैं—

दसकत करै न मिळै दिवाण, अरजी फरज मतालब ऊपर।
×
रबिल आल मीना रहै।
×
मुनसफ खावौ मुलक, उतन जावौ सब रावत।
×
ईसफहा आसफा इलम फातमा उचारै।
महमद इमांम कहि कहि मुगळ।

दूसरी कई भाषाओ का प्रयोग भी अलग-अलग उदाहरण के रूप मे किया है, जो कवि के पाण्डित्य-प्रदर्शन का द्योतक है। मुख्यत ग्रथ की भाषा राजस्थानी ही है, जिसमे सस्कृत के तत्सम और तद्भव दोनो प्रकार के शब्दो का प्रयोग हुआ है। साथ ही राजस्थान के समीपवर्ती क्षेत्रो जैसे पजाबी, सिंधी, मराठी आदि के शब्द भी यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होते है।

जिस खडी बोली का परिमार्जित रूप आज हमारे समक्ष है, चारण कवि ने उसकी झलक दवावैत के अन्तर्गत दे दी है जो महत्त्वपूर्ण है। निम्न उदाहरण देखिये—

सिकार की चढाई।
जिस वखत हवालगीरू नै सलाम बजाय असवारी का सराजाम सब हाजर किया।
किस किस तवह के कहि बताय।
घोड-वहलि माफे इक्के खासे सुखपाळ, मेघाडवर होदू सै गजराज।
साकू मै झळूस अनेक खास-वरदारू नै धारि परिपखी सजि आए।
मीर-सिकारी तिस वखत स्री महाराज सबज पोसाक पहरि।
आखेट व्रत के आवध धारे तीसरे नगारे के डके रकेव पाव धारे।
वाज राज आरोह कैसे दरसावै।
सूरज सपतास का सा सरूप नजर आवै।

कवि ने प्रसगानुसार वस्तुओ की लम्बी सूची तथा नामो की आवृत्ति भी की है। कही-कही ग्रथ मे पात्रो के नामो के स्थान पर उनके नाम के पर्यायवाची रख दिये गये हैं, जैसे समुद्रसिह के नाम के स्थान पर समुद्र के पर्यायवाची रतनागर (रत्नाकर) शब्द रख दिया गया है—

जुडै 'रतनागर' भीम सुजाव,

सुमेरसिंह के लिये सुमेरु पर्वत का पर्याय 'गिरमेर' शब्द का प्रयोग कर दिया है—

विढै 'गिरमेर' समोभ्रम 'वैण'

इसी प्रकार चन्दनसिह के लिये मलियागिर (मलियागिरी) प्रयुक्त हुआ है।

सुत 'मलियागिर' 'ऊदल' साह

कई स्थानो पर नाम के केवल आधे भाग का ही प्रयोग किया है, या नाम उलट कर रख दिया गया है जैसे उदयभाण नाम के स्थान पर केवल भाण शब्द ही लिख दिया है—

भटी इम 'भाण' वखाणत भाण

---

सू प्र, भाग २, पृष्ठ १९६ से २०४ तक

निम्न उदाहरण मे सुरताणसिंह के लिये केवल 'सुरतान' और पदमसिह के लिये केवल 'पदम' ही रख दिया है—

'जुडे 'सुरताण' 'पदम' सुजाव'

सू प्र.भाग ३, पृ १४५

निम्न उदाहरण मे 'उमेदसिंघ' के स्थान पर उसका उलटा 'सीघ उमेद' प्रयुक्त हुआ है—

जुडे खग गेंद जही तळ जोड ।
'अनावत' 'सीघ उमेद' अरोड ।।

सू. प्र भाग ३, पृ १२२

अल्पार्थ का प्रयोग अवज्ञा, मान-प्रतिष्ठा व प्रेम-प्रदर्शन के लिये होता है, जिसका प्रयोग कवि ने बाहुल्यता से किया है, जैसे केसरीसिंह पुरोहित के लिये कवि ने 'केहरियौ' लिख दिया है जो अवज्ञासूचक नही है—

सजै सिवडा पति दारण सूर,
पिरोहित 'केहरियौ' रस पूर ।

सू प्र भाग ३, पृ १६१

अल्पार्थ के साथ ही महत्त्ववाची नामो का प्रयोग भी बराबर मिलता है, जैसे इसी केसरीसिंह के लिये ही 'केहर' महत्त्ववाची के रूप मे प्रयुक्त हुआ है—

ददो इण 'केहर' रो दइवाण ।

सू. प्र भाग ३, पृ १६१

इसी प्रकार अन्य व्यक्तिवाचक शब्द के भी महत्त्ववाची शब्द प्रयुक्त हुए है, जैसे राजसिह-राजड, कुसळसिंह-कुसळेस, पृथ्वीसिंह-पीथल, प्रतापसिंह-पातल आदि ।

ग्रथ मे नामो की अत्यधिक तोड-मरोड हुई है, चाहे वे किसी मनुष्य के नाम हो अथवा किसी स्थान विशेष के । एक ही नाम के अनेक रूपभेद प्रयुक्त हुये है, जैसे महाराजा अजीतसिंह के लिये कवि ने निम्न रूपभेदो का प्रयोग किया है—

अगजीत, अजण, अजन, अजन्न, अजमल, अजमलि,
अजमल्ल, अजमाल, अजा, अजीत, अजै अजो ।

इसी प्रकार महाराजा अभयसिंह के लिये—

अभपत, अभपति, अभयपती, अभमल, अभमल्ल, अभमाल, अभरज, अभसाह, अभा, अभियौ, अभै, अभैपति, अभैमल, अभैमाल, अभैयसिंह, अभैसाह अभैसिंघ, अभैसीघ, अभो ।

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि ऐसे स्थलो को राजस्थानी भाषा-विज्ञान, व्याकरण, राजस्थानी सस्कृति आदि के पूर्ण ज्ञान के विना समझना दुरूह हो जाता है ।

पादपूर्ति के लिये ग्रथ मे प्राय: 'ह', 'स', 'क' और 'य' अक्षरो का प्रयोग हुआ है। वेदो एव सस्कृत साहित्य मे भो 'ह' पादपूर्ति के रूप मे प्रचुर मात्रा मे आया है[1]। ग्रथानुसार निम्न उदाहरण मे 'क' अक्षर पादपूर्ति के लिये प्रयुक्त हुआ है –

'उमेदक आगळि पांण अछेह'

सू. प्र भाग ३, पृ १२०

निम्न उदाहरण मे 'य' अक्षर प्रयुक्त हुआ है—

'पतावत' गोपिय नाथ प्रचड।

सू प्र भाग ३, पृ १४७

इसी प्रकार निम्न उदाहरण मे 'ह' अक्षर प्रयुक्त हुआ है—

'उमेदहवार लडै भड ओप'

सू प्र भाग २, पृ १६१

कवि ने यथास्थान मुहावरो व लोकोक्तियो का प्रयोग कर के भाव को अधिक स्पष्ट और भाषा को सरस बनाया है—

जिकौ करू ऊजळौ, जग करि लूण 'जसा' रौ।

सू प्र भाग २, पृ २७

यहा पर 'लूण ऊजळौ करणौ' मुहावरा है।

'दिली झोला खाए दळ।'

सू प्र. भाग २, पृ. ४८

यहाँ पर 'झोला खाणौ' मुहावरा है।

'दीवौ कर देखजे इसी नह लाय अकारी'

सू प्र भाग २, पृ २४१

यहाँ पर 'लायनै दीवौ कर देखणौ' लोकोक्ति है।

अत मे यह कहना होगा कि ग्रथ मे वर्णन की विशदता है। प्राय सरल और स्वाभाविक शैली द्वारा भावो का समुचित उत्कर्ष दिखलाने मे कवि महोदय पूर्ण रूप से सफल हुए हैं। ग्रथ मे राजस्थानी भाषा का अधिक निखरा हुआ तथा सरस रूप दिखलाई देता है।

---

[1] (अ) नैव चक्रे मन स्थाने वीक्षमाणो महाबलो।
कपे परमभीतस्य चित्त व्यवससाद ह॥
सुग्रीवस्तु शुभ वाक्य श्रुत्वा सर्वं हनूमत।
तत शुभतर वाक्य हनूमन्तमुवाच ह॥
—वाल्मीकि रामायण, किष्किन्धा काण्ड, द्वितीय सर्ग, श्लोक ३ १९।

(आ) अमरकोश मे भी इसका उल्लेख है—

तु हि च स्म ह वै पादपूरणे 'इत्यमरः'।

वाल्मीकि रामायण के बाद सस्कृत ग्रथो में प्राय इस प्रकार के प्रयोग नही मिलते।

## सूरजप्रकास का ऐतिहासिक महत्त्व

कवि ने ग्रथारम्भ मे सूर्य वश के प्रारभिक राजा इक्ष्वाकु से महाराजा अभय-सिह के वंशसम्बन्ध को पुष्ट करने के लिये लम्बी कुल-तालिका दे दी है। इसके अन्तर्गत सक्षिप्त रामायण का वर्णन भी कर दिया है। तत्पश्चात् क्रम से चलते हुए आगे राजा पुंज के तेरह पुत्रो का वर्णन किया है और उसके बडे पुत्र की चौथी पीढी मे कन्नौज नरेश जयचन्द राठौड का वर्णन किया है।

उक्त कुल-तालिका को ऐतिहासिक दृष्टि से देखने से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि कवि ने केवल पुराणो का आश्रय लेकर ही यह सब कुछ लिख डाला है। अत. यह वर्णन सत्य है अथवा असत्य इसका निर्णय करना उक्त घट-नाओ की पूर्ण ऐतिहासिक सामग्री के प्राप्त हुए बिना कठिन है। कवि ने कन्नौज के राजा जयचन्द राठौड का जो वर्णन किया है वह ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्राय ठीक है। इसी जयचन्द राठौड का समकालीन पृथ्वीराज चौहान था।

यहाँ पहले हमे ग्रन्थ मे दी हुई तिथियो की सत्यता के बारे मे विचार करना है, यद्यपि कवि ने तिथियो का उल्लेख बहुत कम किया है।

सर्व प्रथम कवि ने राव जोधाजी द्वारा जोधपुर के किले के निर्माण की तिथि (श्रावणादि) वि० स० १५१५ की ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी (१२ मई १४५९ ई०) का उल्लेख किया है जो ऐतिहासिक दृष्टि से ठीक है।

तत्पश्चात् कवि ने महाराजा अजीतसिंह के जीवन-चरित्र के अन्तर्गत जालोर मे (श्रावणादि) वि० स० १७५९ मार्गशीर्ष वदि १४ शनिवार ( ७ नवम्बर १७०२ ई०) को महाराजा अभयसिंह का जन्म होना लिखा है। यह तिथि भी सत्य है।

अहमदाबाद-युद्ध के अन्तर्गत कवि ने एक स्थान पर केवल सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी का उल्लेख किया है। इनके साथ मास एव सवत् नही दिया है किंतु आगे युद्ध विजय करने की तिथि से इनका सही अनुमान लगाया जा सकता है। सर बुलन्द ने पहले तीन दिन तक गोलाबारी की, उसने चौथे दिन मैदान मे आ कर युद्ध किया और सायकाल तक बहुत वीरता से लडा, फिर भी उसकी हार निश्चित हो गई। अत वह युद्ध-स्थल छोड कर शहर की ओर चला गया। यह महाराजा की विजय का दिन था। इस तिथि को कवि ने स्पष्टतया ग्र थ मे अकित किया है, यथा—

'सम्रैसे समत सत्यासियै विजै दसमी सनि जीत'

सू. प्र. भाग ३, पृ २७३

स्पष्ट है कि (श्रावणादि) वि० स० १७८७ की विजयादशमी शनिवार (१० अक्टूबर सन् १७३० ई०) को महाराजा विजयी हुए। अत यह भी स्पष्ट हो गया कि उक्त तीन तिथिया वि० स० १७८७ की आश्विन शुक्ला सप्तमी, अष्टमी और नवमी ७, ८ और ९ अक्टूबर सन् १७३० ई० हैं अर्थात् दोनो ओर से इन तीन दिनो मे गोलाबारी हुई। चौथे दिन विजयादशमी थी। उसी दिन खुल्लमखुल्ला लडाई हुई और महाराजा विजयी हुए।

डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा[1] और प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ[2] ने महाराजा की विजय कार्तिक वदि ५ वि० सं १७८७ तदनुसार २० अक्टूबर सन् १७३० ई० लिखा है, किन्तु 'सूरजप्रकास' के ही समकालीन ग्रथ 'राजरूपक' मे महाराजा द्वारा अहमदावाद विजय की तिथि विजयादशमी वि० स० १७८७ (१० अक्टूबर सन् १७३० ई०) दी है। यथा--

"सतरै समत सत्यासियौ, आसू उज्जळ पक्ख।
विजै दसम भागा विचित्र, अभै प्रतिग्या अक्ख ॥"

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'राजरूपक'[3] की उक्त पक्तिया 'सूरजप्रकास' मे दी हुई महाराजा के विजय के दिन की तिथि को सत्य प्रमाणित करती है।

'राज-रूपक' के रचयिता कवि वीरभाण रतनू और 'सूरजप्रकास' के रचयिता कविराजा करणीदान दोनो युद्ध मे मौजूद थे और उन्होने आखो देखा हाल लिखा है, अत डॉ० ओझा और रेऊ की अपेक्षा यह तिथि अधिक विश्वसनीय है। इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध इतिहासकार कविराजा बाँकीदास[4] ने भी वि० स० १७८७ की विजयादशमी (१० अक्टूबर सन् १७३० ई०) को ही महाराजा अभयसिंह की अहमदावाद पर विजय होना लिखा है, अतः अब इस तिथि की सत्यता के बारे मे किसी प्रकार के सन्देह को स्थान नही दिया जा सकता है।

महाराजा द्वारा अहमदावाद विजय के एक वर्ष बाद कवि ने इस ग्रथ को सम्पूर्ण कर दिया था। इस ग्रथ-पूर्णता की तिथि को भी कवि ने महाराजा की

---

[1] डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित 'जोधपुर राज्य का इतिहास' भाग २, पृष्ठ ६१५ तथा पृष्ठ ६१७ का फुटनोट।

[2] प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित 'मारवाड का इतिहास' भाग १, पृष्ठ ३३८।

[3] देखो राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर मे सग्रहीत हस्तलिखित 'राजरूपक' की प्रति सख्या १५६३० पृष्ठ ३६३ तथा गुटका सख्या १३७७९ पत्र स २७४।

[4] राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मदिर जयपुर के ग्रन्थाक २१ 'बाकीदास री ख्यात' पृष्ठ ३९।

विजय की तिथि के साथ ही अकित कर दिया है। यथा—

सत्रैसै समत सत्यासियै, विजै दसमी सनि जीत।
वदि कातिक गुण वरणियौ, दसमी वार अदीत।
वणियौ गुण इक वरस विच, उकति अरथ अणपार।
छद अनुस्टुप करिउ जन, सत पच सात हजार।
'अभा' तणी सुभ नजर अति, वधि छक सुकवि विधान।
कुरव दान लहियौ अधिक, कहियौ करणीदान॥

मू. प्र भाग ३, पृ २७३

उक्त छप्पय से स्पष्ट है कि कवि ने महाराजा के विजय-सवत् १७८७ की विजयादशमी (ई० सन् १० अक्तूबर १७३०) से लगभग एक वर्ष बाद कार्तिक कृष्णा दशमी रविवार को ग्रथ लिख कर सम्पूर्ण किया। अत यह वि० स० १७८८ तदनुसार ई० सन् १७३१ ही हो सकता है।

## घटनाओ की ऐतिहासिक प्रामाणिकता

जयचन्द के वशज सीहा के पुत्र आसथान (जिसने मारवाड मे राज्य स्थापित किया था) से लेकर कवि ने अपने आश्रयदाता महाराजा अभयसिंह के पिता महाराजा अजीतसिंह तक की वश-तालिका के अन्तर्गत कई राजाओ का विस्तार से वर्णन किया है, जिसमे अजीतसिंह का वर्णन बहुत विस्तृत है।

यह वर्णन ऐतिहासिक दृष्टि से प्राय ठीक जान पडता है। किन्तु, कुछ छोटी-मोटी घटनाओ के बारे मे कही कही कवि की असावधानी भी प्रकट होती है। जैसे, राव जोधा के बाद उसका पुत्र राव सातल गद्दी पर बैठा। उसने (श्रावणादि) वि० स० १५४५ से १५४८ तदनुसार ई० स० १४८९ से १४९२ तक तीन वर्ष राज्य किया। वि० स० १५४८ (ई० स० १४९२) मे मुसलमानो ने गाव पीपाड से कुछ औरतो (तीजणियो)[१] का अपहरण किया। जब राव सातल को पता चला तो उसने गाँव कोसाणे मे उन मुसलमानो को परास्त करके 'तीजणियो' को छुडाया। इस युद्ध मे मीर घडूला नामक मुसलमान मारा गया। युद्ध मे राव सातल बहुत घायल हो गया था। अत कुछ दिन बाद वह भी मर गया और उसके कोई पुत्र नही होने के कारण जोधाजी का एक पुत्र राव सूजा गद्दी पर बैठा। यद्यपि राव सूजा ने राव सातल के साथ मुसलमानो से युद्ध किया[२] किन्तु मीर घडूला को मारने की घटना का सम्बन्ध राव सातल के राज्य

[१] डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित 'जोधपुर राज्य का इतिहास', भाग १, पृष्ठ २६१ का तीसरा फुट नोट।

[२] डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित 'जोधपुर राज्य का इतिहास', भाग १, पृष्ठ २६१–२६२।

काल से ही है। इस मे कवि ने जोधाजी के बाद राव सूजा का ही राजा होना लिखा है और मीर घडूला[1] के मारे जाने की घटना का सम्बन्ध उसी से जोड दिया है। ग्रंथ मे राव सातल का बिलकुल उल्लेख नही किया गया है, जिसका कारण कवि की असावधानी ही हो सकती है। आगे महाराजा अजीतसिंह तक का वर्णन इतिहास से प्राय ठीक मेल खाता है।

महाराजा अभयसिंह के राज्याभिषेक के बाद से उनके द्वारा अहमदाबाद विजय तक का वर्णन करना ही कवि का मुख्य उद्देश्य था। अत हम आगे इन्ही घटनाओ की ऐतिहासिक विवेचना करने का प्रयत्न करेंगे।

## महाराजकुमार अभयसिंह को दिल्ली भेजना

जब महाराजा अजीतसिंह ने नागौर के राव इन्द्रसिंह के पुत्र मोहकमसिंह को दिल्ली मे मरवा डाला तो बादशाह फर्रुखशियर ने हुसेनअली के साथ महाराजा के विरुद्ध बहुत बडा यवन-दल भेजा। महाराजा ने हुसेनअली से सधि करली, जिसके अनुसार महाराजकुमार अभयसिंह को उसके साथ दिल्ली भेजा गया। बादशाह ने महाराजकुमार का समुचित स्वागत किया। यह घटना इतिहास-सम्मत है।

## महाराजकुमार अभयसिंह को मुजफ्फरअली खां का सामना करने भेजना

ग्रन्थानुसार महाराजा अजीतसिंह की बढती हुई शक्ति को दबाने के लिये बादशाह मुहम्मद शाह ने मुजफ्फरअली खा को शाही सेना के साथ भेजा। उस समय महाराजा अजीतसिंह अजमेर मे बादशाह की तरह शान से रहते थे। महाराजा ने मुजफ्फरअली खाँ का सामना करने के लिये राजकुमार अभयसिंह को राठौडवाहिनी के साथ भेजा। राठौडो के भय से मुजफ्फर खा भाग गया।

ऐतिहासिक प्रमाणो के अनुसार वि० स० १७७८ (ई० स० १७२१ मे बादशाह मुहम्मदशाह ने मुजफ्फरअली खाँ को अजमेर की सूबेदारी दी। महाराजा अजीतसिंह का दमन करने के लिये छ लाख रुपये सेना के व्यय स्वरूप तय हुए, किन्तु उस समय उसे दो लाख ही मिले। बादशाह ने सोचा कि शाही सेना का अपने विरुद्ध आना सुन कर अजीतसिंह अजमेर छोड देगा किन्तु जब महाराजा ने ऐसा नही किया तो बादशाह ने मुजफ्फरअली खाँ को मनोहरपुर मे ही ठहर जाने का फरमान भेजा। वहाँ वह तीन मास तक पडा रहा और उसके पास सेना आदि पर किया जाने वाला व्यय समाप्त हो गया। बादशाह

---

[1] देखो सूरजप्रकास भाग १, पृष्ठ २५२ का फुटनोट।

की ओर से भी सैनिको के लिये वेतन वगैरह नही पहुँच सका। उसके सिपाही उसे छोड कर जाने लगे। आमेर नरेश जयसिंह ने उसे अपने पास बुला लिया। कुछ दिनो बाद उसने अजमेर की सूबेदारी का फरमान बादशाह के पास लौटा कर स्वय फकीर बन गया।[1]

ग्रथ मे कवि ने महाराजकुमार अभयसिंह के भय से उसके भाग जाने का उल्लेख किया है। 'सूरजप्रकास' के साथ ही बने ग्रन्थ 'राजरूपक'[2] से भी इस कथन की पुष्टि होती है, किन्तु इस घटना के कुछ ही दिनो बाद महाराजा अजीतसिंह ने बादशाह के पास एक अर्जी[3] भेजी जिसमे उन्होने लिखा "मुजफ्फरअली खाँ मेरे पास पहुँचा ही नही, मैं उसे अजमेर सौंप देता तथा राजकुमार अभयसिंह को मेवातियो से झगडा हो जाने के कारण नारनौल आदि पर भेजा था" अत स्पष्ट है कि मुजफ्फरअली खाँ अभयसिंह के भय से नही भागा था।

महाराजा अजीतसिंह बहुत बडे राजनीतिज्ञ थे। अत यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्होने बादशाह को खुश करने के लिए ही ऐसी अर्जी लिखी हो। मुजफ्फरअली खाँ के सामने धनाभाव की समस्या के साथ ही मुख्य कारण राठौडो का भय था। अत 'सूरजप्रकास' और 'राजरूपक' पर अधिक विश्वास किया जा सकता है।

तत्पश्चात् महाराजकुमार अभयसिंह द्वारा नारनौल और शाहजहाँपुर आदि लूटे जाने की घटनायें इतिहास-सम्मत हैं।

### महाराजकुमार अभयसिंह का दिल्ली जाना

नाहर खाँ के मारे जाने पर वि०स० १७८० (ई०स० १७२३ मे बादशाह ने शरफुद्दौला इरादतमद खाँ के साथ आमेर नरेश जयसिंह तथा अन्य कई अमीरो का एक बहुत बडा यवन-दल महाराजा के विरुद्ध भेजा। इसमे लगभग बाईस बड़े-बडे अमीर और राजा थे। महाराजा अजमेर के किले की रक्षा का भार नीबाज ठाकुर ऊदावत अमरसिंह पर छोड कर स्वय जोधपुर आ गये। अमरसिंह ने कई दिन तक सामना किया। बाद मे आमेर नरेश सवाई जयसिंह ने महाराजा और शाही सेनाध्यक्ष के बीच सधि करवा दी जिसमे महाराजकुमार

---

[1] डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित 'राजपूताने का इतिहास', भाग २, पृष्ठ ५९३

[2] 'राजरूपक' पृष्ठ ५३४

[3] डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित 'राजपूताने का इतिहास', भाग २, पृष्ठ ५९४–५९५

अभयसिंह का दिल्ली जाना तय हुआ। यह घटना भी इतिहास-सम्मत है।

## महाराजकुमार अभयसिंह का बादशाह के दरबार में कुपित होना

एक समय दिल्ली मे महाराजकुमार अभयसिह बादशाह मुहम्मदशाह के दरबार मे गये। वहाँ बैठे हुए सभी बडे बडे उमरावो और अमीरो को पीछे छोडते हुए वे बादशाह के बिलकुल निकट पहुँच गये। उस समय वहाँ के एक अमीर ने इन्हे रोक दिया। इस पर उन्होने क्रोधित होकर कटार निकाल ली। बादशाह मुहम्मदशाह, जो यह सब कुछ देख रहा था, तुरन्त सिंहासन पर से उठा और उसने तुरन्त अपने गले मे पहना हुआ हीरो का हार इनको पहना दिया तथा अनुनय-विनय करके बडी कठिनाई से इनका क्रोध शान्त किया।

इस घटना का उल्लेख टॉड साहब ने भी किया है।[1] यद्यपि बहुत कम इतिहासकारो ने इस घटना का उल्लेख किया है किन्तु यह घटना असत्य प्रतीत नही होती है। राठौड राजकुमार के इस कार्य से हमे राठौड अमरसिंह द्वारा घटित बादशाह शाहजहाँ के दरबार की घटना का स्मरण हो जाता है।

## महाराजा अजीतसिंह का मारा जाना

टॉड[2], ओझा[3], रेउ[4] तथा अन्य इतिहासकारो के अनुसार दिल्ली में महाराजकुमार अभयसिंह ने बादशाह के षडयत्र में फस कर तथा आमेर नरेश जयसिंह के सिखाने से अपने पिता महाराजा अजीतसिह को मारने के लिये अपने भाई बखतसिंह को लिखा। उसने (चैत्रादि) वि० स० १७८१ आषाढ सुदि १३ तदनुसार २३ जून १७२४ ई० को जनाने मे सोते हुए महाराजा को मार डाला।

'सूरजप्रकास' और 'राजरूपक' मे केवल महाराजा के देहावसान का ही उल्लेख करके कवि मौन हो गये हैं। सम्भवतया राज्याश्रित होने के कारण इन ग्रथो मे ये कवि अपने इस कर्तव्य का पूर्ण रूप से पालन न कर के निष्पक्षता से पराङ्मुख रहे।

## महाराजा अभयसिंह का राजतिलक

महाराजा अजीतसिंह की मृत्यु के समय राजकुमार अभयसिंह दिल्ली मे थे। उनका राजतिलक भी दिल्ली मे ही हुआ। इस अवसर पर बादशाह

---

[1] टॉड राजस्थान, अनुवादित, प० बलदेवप्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, भाग २, पृष्ठ १५७–१५८

[2] टॉड राजस्थान, अनुवादित, प० बलदेवप्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, भाग २, पृष्ठ १५८–१५९

[3] डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृष्ठ ६००

[4] मारवाड का इतिहास, भाग १, पृष्ठ ३२७, प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ।



चरित्रनायक महाराजा अभयसिंहजी (वि० स १७८१ से १८०६)

(राजस्थानी शोध-संस्थान, जोधपुर के सचालक श्री नारायणसिंह भाटी के सौजन्य से प्राप्त चित्र)

मुहम्मद शाह ने इन्हे उपहार भेट किये और नागौर आदि परगने, जो महाराजा अजीतसिंह से ले लिये थे, इन्हे पुन लौटा दिये। ऐतिहासिक दृष्टि से यह घटना ठीक है।

## महाराजा अभयसिंह का नागौर पर आक्रमण करना और अपने अनुज बखतसिंह को वहाँ का स्वामी बनाना

नागौर पर उस समय राव इन्द्रसिंह का अधिकार था। महाराजा अभयसिंह ने उसको हरा कर अपने अनुज बखतसिंह को वहाँ का राजा बनाया।

ऐतिहासिक दृष्टि से महाराजकुमार अभयसिह ने दिल्ली से जो पत्र लिखा था उसमे अपने अनुज बखतसिह को यह प्रलोभन दिया था कि यदि तुम अपने पिता महाराजा अजीतसिह को मार डालो तो मैं तुम्हे नागौर दे दूगा। उसी के अनुसार बखतसिह को वि० स० १७८२ (ई० स० १७२५) मे 'राजाधिराज' के खिताब के साथ नागौर का स्वामी बनाया गया[1]।

## महाराजा का बादशाह के दरबार में पान का बीड़ा उठाना

जब बादशाह मुहम्मद शाह को यह मालूम हुआ कि सर बुलन्द गुजरात में दक्षिणियो से मिल गया है और स्वय गुजरात का अधीश्वर बन गया है तो वह बडा भयभीत हुआ और एक दरबार किया जिसमे उस समय के बडे-बडे उमराव, नवाब, अमीर, राजा-महाराजा उपस्थित थे। बादशाह ने सर बुलन्द के विरुद्ध अपने दरबार मे पान का बीडा घुमाया। सर बुलन्द की शक्ति का मुकाबिला करने के लिये किसी की भी हिम्मत बीडे को छूने की नही हुई। महाराजा अभयसिह ने बडे उत्साह से बादशाह को धैर्य बँधाते हुए बीडे को ग्रहण किया।

'राजरूपक'[2] से भी इस घटना की पुष्टि होती है। टॉड[3] साहब के अतिरिक्त किसी अन्य इतिहासवेत्ता ने इस घटना का उल्लेख किया हो, ऐसा देखने मे नही आया है। यद्यपि टॉड साहब ने 'सूरजप्रकास' और 'राजरूपक' के आधार पर ही लिखा है, किन्तु यह घटना सत्य प्रतीत होती है, क्योकि उस समय पान का बीडा घुमाये जाने की प्रथा थी।

---

[1] टॉड राजस्थान, अनुवादित, पं० बलदेवप्रसाद मिश्र, भाग २, पृष्ठ १७१

[2] राजरूपक, पृष्ठ ६५८,६५९

[3] टॉड राजस्थान, अनुवादित, प० वलदेवप्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, भाग २, पृष्ठ १७४,१७५, १७६।

## महाराजा का बादशाह से बिदाई लेकर जोधपुर लौटना

दिल्ली से विदा होते समय बादशाह ने इन्हे कीमती उपहारो के साथ सेना के लिये व्यय आदि भी दिया ।[१] महाराजा वहाँ से जयपुर आये । जयपुर नरेश सवाई जयसिह ने इनका समुचित स्वागत किया । कुछ दिन जयपुर मे ठहरने के पश्चात् ये मेडते आये और अपने अनुज बखतसिह से मिले । तत्पश्चात् बखतसिह को साथ लेकर जोधपुर आये ।

इस बात की पुष्टि 'राजरूपक'[२] से भी होती है किन्तु कुछ इतिहासकारो ने महाराजा का दिल्ली से अलवर होते हुए अजमेर जाना और वहाँ का प्रबन्ध करके मेडते होते हुए जोधपुर जाना लिखा है ।[३] अधिकाश इतिहासकारो ने इनका वि० स० १७८६ मे दिल्ली से जयपुर और वहाँ से मेडते होते हुए जोधपुर जाना ही लिखा है । अत कवि का यह कथन इतिहाससम्मत है ।

## महाराजा का जोधपुर से गुजरात की ओर प्रयाण

दिल्ली से लौटने के पश्चात् महाराजा अभयसिह अपने अनुज बखतसिह के साथ जोधपुर मे युद्ध की तैयारी करने मे लग गये । सभी सामन्तो को फरमान भेज कर बुलाया गया । अश्वारोही सेना तैयार की गई । जब युद्ध की पूर्ण सामग्री के साथ सेना तैयार हो गई तो जोधपुर से रवाना हो कर कुछ विद्रोही जागीरदारो को दण्ड देते हुए सिरोही आये । सिरोही के राव उम्मेदसिह देवडा ने महाराजा की अधीनता स्वीकार नही की थी, अत महाराजा ने सिरोही को लूटने की आज्ञा दे दी । अन्त मे राव उम्मेद ने अपनी पुत्री का डोला भेज कर सधि की । वहाँ से महाराजा सेना सहित पालनपुर आये । वहाँ का अधिकारी करीमदाद खा इनसे मिल गया । ये सब घटनाये इतिहाससम्मत हैं ।

## महाराजा का सर बुलन्द के पास पत्र भेजना

पालनपुर से महाराजा ने सर बुलन्द को एक पत्र लिखा जिसमे उसे समझाया कि बादशाह ने अहमदाबाद के सूबे पर मुझे नियुक्त किया है । अत तुम शाही आज्ञा के अनुसार मुझसे मिलो, सारी शाही सम्पत्ति मेरे हवाले करो और किले तथा शहर से अपने डेरे उठा लो, यथा—

---

[१] बादशाह ने महाराजा को सेना के व्यय स्वरूप कितना रुपया दिया इसकी विवेचना हम आगे सेना के आकडो के अन्तर्गत करेंगे ।

[२] राजरुपक, पृष्ठ ६५६ से ६६४ ।

[३] प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित मारवाड का इतिहास, भाग १, पृष्ठ ३३६ ।

खत लिखिया दिस खान, हकर धारै वजराई।
कहर गरीबो करण, मकर छाडो मुगळाई।
काम फैल मति करो, स्याम भ्रम धरो सिपाही।
सराजाम दो सरब, तोपखाना पतिसाही।
अहमदाबाद दीधो अम्हा, सुणो हुकम पतिसाह रो।
मामलो तजो आवो मिळो, किलो सहर खाली करो॥

सू प्र भाग २, पृ २७९

टॉड साहब के अतिरिक्त किसी भी इतिहासवेत्ता ने इस पत्र का उल्लेख किया हो ऐसा देखने मे नही आया है। अन्य इतिहासकारो के रुपये की हुण्डी व उसको नायब हाकमी की आज्ञा के साथ लिख दिया कि सम्भव हो सके तो अहमदाबाद पर अधिकार करलो। इस पर मुहम्मद खा ने गुजरातियो की सेना इकट्ठी की और मौका देखने लगा, किन्तु सर बुलन्द के आदमी नगर रक्षा के लिये अधिक सतर्क रहने लगे। उन्होने दरवाजे वगैरह ईंटो से चुनवा दिये। अत मुहम्मद खा सफल नही हो सका।[1] इस पत्र का उल्लेख कवि ने ग्रथ में नही किया है।

### महाराजा अभयसिह का सर बुलन्द से युद्ध, सर बुलन्द का आत्म-समर्पण

युद्ध का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है कि पहले तीन दिन तक दोनो ओर से गोलाबारी होती रही, यथा—

मोरचा राड त्रण दिन मडै, सूरा धरम सबाब रा।
आम सम्हा कठठि चोडै उरडि, नरियंद भूळ नबाब रा।

सू. प्र भाग ३, पृ २९

तत्पश्चात् मैदान मे लडाई हुई। दोनो तरफ के सुभट जम कर लडे। आखिर सर बुलन्द की सेना के पाव उखड गये। दूसरे दिन सर बुलन्द ने महाराजा अभयसिह के डेरे मे उपस्थित होकर आत्म-समर्पण कर दिया। नीबाज ठाकुर अमरसिह ने इस सधि मे विशेष भाग लिया।

उपरोक्त वर्णन कुछ प्रशसात्मक अवश्य है परन्तु ऐतिहासिक प्रमाणो के अनुसार सर बुलन्द को महाराजा अभयसिह के सामने आत्म-समर्पण करना पडा

---

[1] (अ) प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित मारवाड का इतिहास, भाग १, पृ० ३३७।
(आ) डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृ० ६१३।

था। वहुत से इतिहासकारो ने इस अवसर पर महाराजा और सर बुलन्द का परस्पर पगडी-बदल भाई वनने का उल्लेख किया है।

### महाराजा द्वारा कथाजी आदि मरहठों को परास्त करना

उज्जैन, सूरत आदि के शासक कथाजी, पीलूजी आदि गुजरात मे चौथ वसूल करने के लिये अहमदावाद की ओर बढे, किन्तु महाराजा की सेना से परास्त होकर कथाजो भाग गया।

ऐतिहासिक प्रमाणो के अनुसार कवि के इस कथन की पुष्टि होती है और यह जाना जाता है कि महाराजा ने पीलूजी को, जो कथाजी के स्थान पर चौथ वसूल करने के लिये अहमदावाद की ओर वढ रहा था, अपने एक योद्धा लखधीर ईंदा को भेज कर धोखे से मरवा डाला।

### वादशाह की ओर से महाराजा को उपहार भेजना

वादशाह मुहम्मदशाह के दरवार मे महाराजा का वकील अमरसिंह भडारी रहता था। उसने वादशाह को सर बुलन्द के परास्त होने और गुजरात पर महाराजा द्वारा पुन शाही हुकूमत कायम करने की खबर सुनाई। इस पर वादशाह वहुत प्रसन्न हुआ और उसने भरे दरबार मे वाह-वाह शव्दो के साथ महाराजा की प्रशसा की तथा महाराजा का मनसव आदि बढाने के साथ उनके राज्य की वृद्धि की।

कवि के उक्त कथन की पुष्टि भी ऐतिहासिक दृष्टि से होती है। वादशाह ने असदुल्ला खा गुर्जवर्दार के साथ महाराजा के लिये उपहार-स्वरूप रत्नजटित सिरपेच, कलगी, एक हाथी तथा खिलअत आदि भेजे।[1]

### सेनाएँ

कविराजा करणीदान ने ग्रथ मे सेनाओ के आकडे वहुत कम दिये हैं। महाराजा अभयसिंह और उनसे सम्वन्वित पात्रो की सेनाओ के आकडे यत्र-तत्र दिये हैं। उनकी ऐतिहासिक प्रामाणिकता के वारे मे आगे विचार किया जायगा।

### मुजफ्फरअली खां की सेना

वि० स० १७७८ (ई० स १७२१) मे महाराजा अजीतसिंह वादशाह के समान शाही ठाट-वाट से अजमेर मे रहने लगे, यथा—

---

[1] डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृष्ठ ६२८।

गजसिंघ हरी भारी गुमर, सरब करै असपक सुरग ।
पतिसाह हुवो 'अजमाल' पह, दिली जेम तारा दुरंग ॥

सू प्र. भाग २, पृ ९६

कवि के कथनानुसार बादशाह मुहम्मदशाह ने मुजफ्फरअली खा को तीस हजार शाही सेना के साथ महाराजा का दमन करने के लिये अजमेर की ओर भेजा था, यथा—

मगळ क्रोध महमद, साह प्रजळै दळ सव्बळ ।
खेधक मुदफरखान, मुगळ तेडियौ महाबळ ।
तोरा फील तुरग, वगसि आरबा खजाना ।
तीस सहस ताबिन, असुर दळ दीध अमानां ।
मुरतबौ हजारी हफत महि, पान ग्रहता पावियौ ।
इम विदा होय मुदफरअली, 'अजण' भूप दिस आवियौ ॥

सू प्र. भाग २. पृ. ९७

कवि ने आगे फिर सकेत किया है कि मुजफ्फरअली खा के साथ तीस हजार की सेना थी, यथा—

भजि गया विण गज भार, हय थाट तीस हजार ।
मिट लाज छाडि गुमान, खडि गयौ मुदफरखान ॥

सू प्र भाग २, पृ १०२

इतिहासकारो के मतानुसार मनोहरपुर पहुँचते-पहुँचते मुजफ्फरअली खा के पास केवल बीस हजार सेना जमा हो पाई थी ।[1]

**बादशाह द्वारा महाराजा अभयसिंह को सेना के लिये व्यय आदि देना**

ग्रथानुसार महाराजा अभयसिंह को सर बुलन्द के विरुद्ध दिल्ली से विदा होते समय बादशाह मुहम्मदशाह ने उन्हें ताज, खजर, तलवार, घोडा, हाथी तथा तोपखाने के साथ सेना के व्यय के लिये इकतीस लाख रुपये दिये ।

अन्य इतिहासकारो के अनुसार वि० स० १७८६ मे बादशाह मुहम्मदशाह ने महाराजा को अन्य उपहारो के अतिरिक्त सेना के व्यय के लिये १८ लाख रुपये और छोटी-बडी पचास तोपें दी ।[2]

---

[1] (अ) डॉ० गौरीशकर हीराचद ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृष्ठ ५९३ ।
(आ) प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित मारवाड का इतिहास, भाग १, पृष्ठ ३२१ ।

[2] (अ) Orient Longman : History of Gujrat (Commassariat).

[शेष टिप्पणी पृष्ठ ३८ पर]

टॉड साहब ने 'सूरजप्रकास' के ही आधार पर इकतीस लाख रुपये दिये जाने का उल्लेख किया है।[1]

यहा पर यह विचार करना है कि कवि का ३१ लाख रुपये दिये जाने का कथन वास्तविक है या अतिशयोक्तिपूर्ण ।

ग्रथ मे कवि ने पहले गुजरात के सूबेदार हमीद खा के विद्रोही होने का उल्लेख किया है। बादशाह मुहम्मदशाह ने सर बुलन्द खा को गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया और पचास हजार शाही सेना के साथ उसे हमीदखा के विरुद्ध भेजा । उस समय उसे सेना के व्यय-स्वरूप एक करोड रुपये दिये जाने का हुक्म हुआ, यथा—

> वाका सुणि असपती, कहर कोपियो भयकर ।
> विदा कीध सिरविलद, दूठ समसेर बहादर ।
> दीध कीड हिक दरब, दीध पच्चास सहस दळ।
> सुजड खाग सिरपाव, 'मुसक' असि दीध मदग्गळ ।।

सू प्र॰ भाग २, पृ॰ २३८,२३९

इतिहासवेत्ताओ के अनुसार भी सर बुलन्द को शाही सेना के साथ एक करोड रुपये दिये जाने का हुक्म मिलता है।[2] अत सर बुलन्द को हमीद खा के विरुद्ध सेना के व्ययस्वरूप एक करोड रुपये का कवि का कथन अतिशयोक्तिपूर्ण नही है। जब यह बात ठीक है तो सर बुलन्द के गुजरात मे विद्रोही हो जाने पर महाराजा अभयसिह को उसके विरुद्ध सेना के व्यय-स्वरूप इकतीस लाख रुपये दिये जाने का कथन अतिशयोक्तिपूर्ण कैसे हो सकता है।[3] अत इस दृष्टि से कवि का कथन ठीक प्रतीत होता है ।

---

(आ) इविन, लेटर मुगल्स, पृष्ठ २०५ ।
(इ) डॉ॰ गौरीशकर हीराचद ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृष्ठ ६१२ ।
(ई) प॰ विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित मारवाड का इतिहास, भाग १, पृष्ठ ३३६ ।
(उ) जोधपुर की ख्यात के अनुसार १५ लाख रुपये सेना के व्यय स्वरूप मिले ।

[1] टॉड राजस्थान, अनुवादित, प॰ बलदेवप्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, भाग २, पृष्ठ १७६ ।

[2] (अ) Orient Longman · History of Gujrat (Commassariat)
(आ) इविन लेटर मुगल्स, पृष्ठ १८५-१८७ ।
(इ) टॉड राजस्थान, अनुवादित, प॰ बलदेवप्रसाद मिश्र, मुरादाबाद, भाग २, पृष्ठ १७३ ।

[3] प॰ गौरीशकर हीराचद ओझा द्वारा लिखित राजपूताने का इतिहास, भाग २, पृष्ठ ६१२ का प्रथम फुटनोट जिसमे 'सूरजप्रकास' के कथन को अतिशयोक्तिपूर्ण बताया है ।

## महाराजा अभयसिंह की सेना

बादशाह ने व्यय के अतिरिक्त महाराजा के साथ कुछ शाही सेना भेजी या नही इसका पूर्ण स्पष्टीकरण ग्रथ से नही होता है, यथा—

ताज कुलह सिरपेच, जगी तोरा जर कवर।
खजर जमदढ खडग, पमग सिर पाव पटाभर।
'तई लोक तावीन', तोपखाना गजवाणा।
सभ साह बगसीस, लाख इकतीस खजाना।
अहमदाबाद दीधो उतन, असपति सोच उथालियो।
ईखता दोई राहां 'अभो', होय विदा इम हालियो।।

सू प्र. भाग २, पृ २४८

उक्त छप्पय मे 'तई लोक तावीन' से सेना के दिये जाने की कुछ ध्वनि अवश्य निकलती है किन्तु अस्पष्ट है।

सर बुलन्द खां से युद्ध करते समय महाराजा के पास कितनी सेना थी, ग्रथ मे इसका आकडा नही मिलता है किन्तु कवि ने महाराजा की सेना का विस्तृत वर्णन किया है जिसके अन्तर्गत विभिन्न स्थानो की सेनाओ का महाराजा की सेना के साथ होना पाया जाता है। बादशाह से विदा होते समय महाराजा कुछ शाही सेना लेकर चले होगे इसकी अस्पष्ट ध्वनि उक्त वर्णन के अनुसार ग्रथ मे निकलती है। महाराजा के भाई बखतसिंह और मारवाड के लगभग सभी सामन्तो की सेनाएँ भी महाराजा की सेना के रूप मे साथ थी। सिरोही के राव की भी एक टुकडी महाराजा के साथ हो गई थी। पालनपुर का अधिकारी करीमदाद खा भी महाराजा से मिल गया था। सिद्धपुर के निकट पहुँचने पर जवामर्द खा और सफदर खा बाबी भी सर बुलन्द की कृपाओ को भुला कर महाराजा से मिल गये थे। वही पर 'कसबातो' मुसलमान और स्वर्गीय मोमिन खा का पुत्र मोहम्मद बाकिर भी गुप्त रूप से इनसे मिल गया था। सरदार मोहम्मद खा गोरनी को गुजरातियो की सेना भी बाद मे इनके साथ शामिल हो गई थी। इन सब का उल्लेख कवि ने यथास्थान किया है किन्तु इनकी सेनाओ की सख्या नही दी गई है।

इर्विन 'लेटर मुगल्स' और लोगमेन्स 'हिस्ट्री ऑफ गुजरात' के अनुसार महाराजा अभयसिंह ने जोधपुर और नागौर से बीस हजार कुशल अश्वारोही लेकर अहमदाबाद की ओर प्रयाण किया था। ग्रथ मे भी महाराजा की सेना के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के अश्वो का अलग-अलग वर्णन मिलता है। 'सह्रुल-

मुताखरीन' के अनुसार अभयसिंह ४०-५० हजार सेना लेकर गुजरात की ओर चले थे ।[१]

अत अनुमान लगाया जा सकता है कि महाराजा बीस सहस्र अश्वारोही लेकर चले होगे । कुछ सहस्र अन्य सैनिक भी होगे तथा अहमदाबाद पहुँचते-पहुँचते उनके पास लगभग ४०-५० सहस्र सेना हो गई होगी ।

महाराजा की सेना के १२० बडे-बडे योद्धा और ५०० अश्वारोही सैनिक मारे गये तथा ७०० सिपाही घायल हुए, यथा—

भड पयदळ गज भिडज, पडै 'विलद' रा अपारा ।
न को पार घायला, हुवा लोह मे सुमारा ।
उला भड एक सौ वीस, पडिया जिण वारा ।
पमग पडै पंचसै, घमक सेला खग धारा ।
सात सै हुवा घायल सुभट, लडै 'अभै' जस ग्रद लियौ ।
आजरा वार मभि पौहो अवर, जुध इम किणै न जीपियौ ।।

सू प्र भाग ३, पृ. २६१

## सर बुलन्द की सेना

ग्रथ मे सर बुलन्द की सेना के आकडे कई स्थानो पर भिन्न-भिन्न दिये हुए हैं किन्तु उनसे स्पष्ट नही कहा जा सकता कि सर बुलन्द के पास कुल कितनी सेना थी ?

सर्व प्रथम कवि ने सर बुलन्द की सेना का उल्लेख उस स्थान पर किया है जब बादशाह मुहम्मदशाह द्वारा विद्रोही हमीद खा का दमन करने के लिये पचास सहस्र सेना और उसके व्यय के लिये एक करोड रुपया देना तय कर के सर बुलन्द को गुजरात भेजा गया, यथा—

वाका सुणि असपती, कहर कोपियो भयकर ।
विदा कीध सिरविलद, दूठ समसेर वहादर ।
दीध कोड हिक दरब, दीध पच्चास सहस दळ ।
मुजड खाग सिरपाव, मुमक असि दीध मद्दगळ ।
कत्तावम मुरजल-मुलकका, दीध अरावा घण मुदित ।
ईरान विरद उजवाळनूं पान दीध तूरानपति ।।

सू. प्र. भाग ३, पृ २३८,२३९

---

[१] प० विश्वेश्वरनाथ रेउ द्वारा लिखित मारवाड का इतिहास, भाग १, पृ. ३४१ का फुटनोट ।

एक स्थान पर कवि ने बारह हजार सेना का उल्लेख किया है जिसके अन्त-र्गत अलग-अलग टुकडियो के साथ यूरोपियन भी थे, यथा—

जुदा मिसल जग हूंत, असल्ल विल्लायत वाळा।
इसडा बार हजार, चूच चढिया कळिचाळा॥

सू. प्र भाग ३, पृ २७

एक स्थान पर कवि ने लिखा है कि सर बुलन्द की सेना मे शीशा, बारूद, दो हजार तोपे आदि युद्ध की सामग्री के साथ चार हजार सुतर नाले, तीन हजार रेहकले, बारह हजार बदूके अथवा बदूकधारी तथा तोपे चलाने वाले अगरेज थे, यथा—

सीसा जामग सोर, भार गाडा बाणा भर।
चव हजार सुत्रनाळ, हबस उसताज बहादर।
त्रण हजार रहकळा, अरब उसताज अचूका।
सुकर नरा बगसरा, बार हज्जार बदूका।
बि हजार तोप कठठी बडी, गोळमदाज फिरगरा।
करि अजर क्रोध कीधा किलम, जबर मसाला जगरा॥

सू प्र भाग ३, पृ २८

ग्रथ में एक स्थान पर पाया जाता है कि सर बुलन्द ने नगर के बारह दर-वाजो के प्रत्येक द्वार पर दो-दो हजार बदूकधारी तथा दस-दस तोपे रख दी थी। इनके अतिरिक्त प्रत्येक बुर्ज और कगूरे पर सैनिक तैनात कर दिये, यथा—

दुय दुय सहँस बँदूक, सहति बगसरा सकाजा।
तै दस दस भरि तोप, डहै बारह दरवाजा।
भुरज भुरज आरबा, दुगम जुथ गोळ दाजा।
मतिवाळा मेलिया, कगुरे कगुरे सकाजा।
फिरणिया चहू तरफां फिरै, काळ रूप अरवा चका।
काढिया खगा किलका करै, डका ढोल तबला डका॥

सू प्र भाग २, पृ ३५०

उक्त छप्पय के अनुसार प्रत्येक द्वार पर दो-दो हजार के हिसाब से बारह दरवाजो पर २४ हजार तो बदूकधारी ही थे तथा तोपें चलाने वाले, बुर्जो व कगूरो पर तैनात सैनिक उनसे अलग थे।

कवि के कथनानुसार सर बुलन्द के एक सौ पालकीनशीन, आठ हाथी-नशीन और तीन सौ ऐसे जो दीवाने-आम नामक सभा मे जाते समय सम्मान के अधिकारी थे, मारे गये। साथ ही ४४९३ सैनिक भी मारे गये। इनके अतिरिक्त युद्ध मे कितने ही घायल हुए। यथा—

इम जीतौ 'अभमाल' वार नव ढ्जाए।
लूटि आरबा लिया लूटि, असि गज वही लाए।
'विलद' तणा वाढिया, रूक झाटा रवदायण।
च्यार सहस च्यारसै, असी तेरा असुरायण।
जिण मझि विवरौ जुदौ, मुगळ पडि रूप मयदा।
सौ पालखीनसीन आठ असवार गयदा।
अै पडै साह जाणै इसा, आवै आम दीवाणमे।
ताजीमतणा भड तीनसै, घणा अवर घमसाणमे ।।

भड पयदळ गज भिडज, पडै विलद रा अपारा।
न को पार घायला, हुवा लोह मे सुमारा।

सू प्र भाग ३, पृ २६१

महाराजा द्वारा वि० स० १७८७ को कार्तिक वदि २ को शाही दरबार मे स्थित अपने वकील के नाम लिखे गये पत्र से प्रकट होता है कि सर बुलन्द के हजार-बारह सौ आदमी मारे गये और सात-आठ सौ घायल हुए ।

इसी पत्र मे पहले यह भी उल्लेख है कि सर बुलन्द ने दशमी के दिन ८ हजार सवारो और १० हजार पैदल सिपाहियो से अर्थात् कुल १८ हजार से महाराजा की सेना पर हमला किया था ।[1]

अत हम इस नतीजे पर पहुँचते है कि सर बुलन्द के पास लगभग ५० सहस्र सेना होगी । २४ हजार तो उसने केवल दरवाजो पर ही तैनात कर दी । कुछ सहस्र बुर्जों और कगूरो पर तथा १८ सहस्र से महाराजा पर आक्रमण किया । अत इस प्रकार कुल ५० सहस्र के लगभग सेना हो जाती है । कवि ने भी सर्व प्रथम यही उल्लेख किया है कि सर बुलन्द पचास सहस्र सेना लेकर हमीद खा के विरुद्ध दिल्ली से गुजरात की ओर चला था । इस प्रकार ग्रथ मे दिये हुए आकडे विश्वसनीय जान पडते हैं ।

'सूरजप्रकास' ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टि से अपने ढग का एक महत्त्वपूर्ण ग्रथ है । जोधपुरनरेश महाराजा मानसिंह इस ग्रथ से इतने प्रभावित हुए कि उन्होने इस ग्रथ मे उल्लिखित सभी घटनाओ के चित्र बनवा दिए, जिनमे से अधिकाश जोधपुर महाराजा साहिब के 'पुस्तकप्रकाश' मे आज भी उपलब्ध होते है ।

---

[1] प० विश्वेश्वरनाथ रेऊ द्वारा लिखित, मारवाड का इतिहास, भाग १, पृष्ठ ३३९-३४० का फुटनोट ।

इस ग्रंथ का इतना प्रचार हुआ कि मारवाड के अधिकांश जागीरदारों और चारणों के पास तथा जैनसग्रहालयो मे इसकी अनेक हस्तलिखित प्रतियां मिलती हैं ।

महत्त्वपूर्ण वात यह है कि इस ग्रंथ का रचयिता कविराजा करणीदान महाराजा अभयसिंह का राज-कवि था । उसने अहमदाबाद युद्ध मे स्वय भी भाग लिया था ।

हम कह सकते हैं कि पाठको को सही इतिहासज्ञान कराने में यह ग्रथ बहुत उपयोगी सिद्ध होगा ।

## सूरजप्रकास के ऐतिहासिक पात्र

पात्रो की दृष्टि से जब ग्रथ की जाच की जाती है तो ज्ञात होता है कि कवि ने ग्रंथ मे अत्यधिक पात्रो का उल्लेख किया है । कई मुख्य पात्र तो ऐसे हैं जिनका सम्पूर्ण विवरण इतिहास मे प्राप्त होता है किन्तु कई ऐसे भी हैं जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, किन्तु उनकी जानकारी अभी तक प्राप्त नही हो सकी है । युद्ध के अन्तर्गत कवि ने कई योद्धाओ के केवल नाम गिना दिये हैं, उनमे से कई ऐसे हैं जो उस समय अवश्य प्रसिद्ध होगे किन्तु इस समय उनके बारे मे प्रकाश डालना तब तक दुर्लभ हो गया है जब तक उनसे सम्बन्धित ऐतिहासिक सामग्री प्रकाश मे नही आ जावे । इतना अवश्य कहा जा सकता है कि पौराणिक वश-तालिका के अलावा कवि ने जितने भी पात्रो का उल्लेख किया है वे ऐतिहासिक दृष्टि से ठीक ज्ञान पडते हैं । स्त्री पात्र सम्पूर्ण ग्रथ मे नही के बराबर हैं । नीचे ग्रथ मे आये हुए खास-खास पात्रो का सक्षिप्त परिचय दिया जाता है—

### अम्बर चपू

यह बडा पराक्रमी शासक हुआ । इसका पूरा नाम मलिक अम्बर था । यह जाति का हब्शी था । यह अहमद नगर राज्य का प्रधान मन्त्री था । अहमद नगर का राज्य मुगल सम्राट अकबर के अधिकार मे जाने पर यह उस राज्य के बहुत से भाग का स्वतन्त्र शासक बन बैठा और उपद्रव करने लगा । ग्रथानुसार बादशाह अकबर ने जोधपुर नरेश सवाई राजा सूरसिंह को इसका दमन करने के लिये दक्षिण मे भेजा और इन्हे अपने कार्य मे सफलता मिली ।

जहागीर के शासन-काल मे अम्बर को दबाने के लिये पुनः महाराजा गजसिंह को भेजा गया । उन्होने भी इसका दमन कर के शान्ति स्थापित की । वृद्धावस्था

मे इसने मुगलो से लिये हुए प्रदेश शाहजहाँ को सौप दिये । यह वि सं. १६८३ (ई स. १६२६) मे अस्सी वर्ष की अवस्था मे मृत्यु को प्राप्त हुआ ।

## अकबर (बादशाह)

जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर का जन्म ई.स २३ नवम्बर १५४२ को हुमायू की पत्नी हमीदाबानू के गर्भ से अमरकोट मे हुआ था और ई स. १५५६ मे कालानूर मे इसका राज्याभिषेक हुआ। उस समय भारत की स्थिति सोचनीय थी और अकबर के अधिकार मे पजाब का थोडा सा भाग था । इसने अपनी बुद्धिमानी से बैरामखाँ के पजे से निकल कर अपने राज्य की स्थिति को दृढ बनाने का प्रयत्न किया । ई स. १५५६ मे पानीपत के दूसरे युद्ध के बाद हेमू का अत हो गया और दिल्ली मे मुगल सत्ता स्थापित हो गई । उसके बाद ही आगरे पर भी अकबर का आधिपत्य हो गया । अकबर एक महत्त्वाकाक्षी सम्राट था और सम्पूर्ण भारत मे अपनी सत्ता कायम करने की कामना करता था । इसी कामना से अकबर ने राजपूतों के साथ अपना सम्बन्ध जोडा और जोधपुर के स्वामी सवाई राजा सूरसिह को गुजरात की रक्षा का भार सौपा । गुजरात पहुँच कर इन्होने मुजफ्फर के उपद्रव को दबाया और वह गुजरात छोड कर भाग गया । दक्षिण के उपद्रवो को भी दबाने के लिये अकबर ने सवाई राजा सूरसिह को भेजा था । इन्होने अम्बरचम्पू को भगा कर दक्षिण में शान्ति स्थापित की थी । अकवर विद्वानो का आदर करता था । इसकी सभा के नवरत्न इतिहास-प्रसिद्ध हैं । सम्राट अकबर अपनी योग्यता के कारण ही इतिहास मे अकबर महान् के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

## अकबर (शाहजादा)

औरगजेब उत्तरकालीन मुगल सम्राट था । उसके कुल पाँच पुत्र थे । इन्ही पुत्रो मे सवसे वडा सुल्तानमुहम्मद था । अकबर औरगजेब का चौथा पुत्र था । यह मारवाड पर आक्रमण करने वाली शाही सेना का सेनापति था । दुर्गादास ने मारवाड के उद्धार के लिये अपनी चतुराई से शाहजादा अकबर को अपनी ओर मिला लिया और नाडोल मे राठौड सरदारो ने उसका बादशाह होना घोपित कर दिया । किन्तु बाद में औरगजेब की चालाकी से वह असफल रहा और अपने कुटुम्व और माल असबाव को लेकर राठौडो की शरण में चला गया । कई दिन मारवाड में रहने के वाद अकवर अपने परिवार सहित हज करने चला गया । हज करके ईरान आ गया और वही पर ईस्वी सन् १७०६ मे उसका देहान्त हो गया ।

**अज–**

राव सीहाजी का सबसे छोटा पुत्र और सोनग का छोटा भाई था। अज ने अपनी सेना सहित द्वारिका की यात्रा की, वहाँ पहुँचने पर शखोद्धार के चावडा राजा ने इसका बहुत स्वागत किया और अमूल्य वस्तुएँ भेट की।

**अजौ (अर्जुन गौड़)–**

यह मारोठ के स्वामी विठ्ठलदास गौड का पुत्र था और बादशाह शाहजहाँ के प्रमुख दरबारियो में था। वि स. १७०१ मे राव अमरसिंह राठौड ने बादशाह के प्रमुख दरबारी सलावत खाँ को अपशब्द कहने पर आम दरबार मे कटार से मार डाला। उसी समय अर्जुन गौड ने तथा अन्य व्यक्तियो ने अमरसिंह पर आक्रमण कर उसे मार दिया किन्तु अमरसिंह ने भी वार कर के इसका कान काट लिया। धरमत के युद्ध मे महाराजा जसवन्तसिंह के साथ रह कर इसने अपने अतुल शौर्य का परिचय दिया और वीरता के साथ युद्ध करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ।

**अनोपसिंह (भण्डारी अनोपसिंह)–**

यह राय भण्डारी रघुनाथसिंह का पुत्र था। यह बडा बहादुर, रण-कुशल तथा नीतिज्ञ था। सवत् १७६७ मे महाराजा अजीतसिंह द्वारा जोधपुर का हाकिम नियुक्त किया गया। उस समय हाकिम पर सिविल और मिलिटरी (Civil and Military) दोनो कामो का उत्तरदायित्व रहता था, जिसको इसने पूरी तरह से निभाया। वि स. १७७२ में इसको नागौर का मनसब मिला, तब महाराज ने इसको व मेडते हाकिम भण्डारी पेमसिंह को नागौर पर अमल करने के लिये भेजा। राठौड इन्द्रसिंह दोनो हाकिमो का मुकाबिला करने के लिये आगे बढा। घमासान युद्ध हुआ। फलस्वरूप इन्द्रसिंह की फौज भाग गई और भण्डारी अनोपसिंह की विजय हुई। इन्द्रसिंह को अब नागौर खाली कर बादशाह के पास दिल्ली जाना पडा। वि.सं. १७७६ मे फर्रुखशियर के मारे जाने के बाद फौज के साथ अहमदाबाद भी इसको भेजा था। वहाँ भी इसने बडी बहादुरी दिखलाई थी।

**अफगान खां–**

यह बादशाह मुहम्मद शाह की राज्य सभा के अमीर-उमरावो मे था। इसके पूर्व शाही सेना का सेनापति था। मुगल साम्राज्य के शत्रुओ का दमन करने के लिये यह अनेक युद्धो मे भाग ले चुका था। नादिरशाह के आक्रमण के समय

अफगान खा सिन्ध का सूवेदार था । तदनन्तर बादशाह की राजसभा के राज-मन्त्रियो मे सम्मिलित कर लिया गया था । सर बुलन्द खां के विरुद्ध अहमदाबाद के युद्ध मे जाने का निमन्त्रण इसे भी दिया गया था, किन्तु इसने स्वीकार नही किया ।

**अभयकरण–**

यह राठौड वीर दुर्गादास का पुत्र था और सर बुलन्द खाँ के विरुद्ध अह-मदाबाद के युद्ध मे महाराजा अभयसिंह के साथ था । यह सेना की एक टुकडी का नायक था । भद्र के किले पर लगाये गये पाँच मोर्चों मे से एक मोर्चे पर अभयकरण (कर्णोत) चाँपावत महासिंह तथा भागीरथदास आदि थे । ई सन् १७३० ता. १० अक्टोबर को शेरसिंह मेडतिया (सरदारसिंहोत) के मोर्चे पर भयंकर आक्रमण होने पर अभयकरण उसकी सहायता को गया था और इसने अतुल साहस और वीरता का परिचय दिया था । इसी मोर्चे पर यह घायल हो गया था किन्तु बचा लिया गया था ।

**अभरांमकुली (इब्राहीमकुली खां)–**

यह शाही सेना के मुख्य सेनापति सुजात खाँ का भाई था, और महाराजा अभयसिंह के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे से एक था । यह मालवा, सूरत और अहमदपुर का सूबेदार (गवर्नर) था । बडा योग्य राजनीतिज्ञ तथा रणकुशल व्यक्ति था, किन्तु किन्ही आन्तरिक कारणो से हमीद खाँ इससे शत्रुता रखता था ।

पेशवा ने अपनी छ हजार सेना के साथ मालवा पर आक्रमण कर दिया तो इब्राहीम कुली खाँ ने वडी वीरता से पेशवा की सेना से मुकाविला किया । किन्तु हमीद खाँ की चालाकी से इसी युद्ध मे पेशवा व हमीद खाँ के व्यक्तियो ने इब्रा-हीमकुली खाँ की हत्या कर डाली ।

**अमरसिंह (महाराणा अमरसिंह द्वितीय)–**

यह अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् वि स. १७५५ मे गद्दी पर वैठा । इसका जन्म वि स. १७२९ मे हुआ था । यह वहुत तेज स्वभाव का था । गद्दी-नशीनी के समय डूगरपुर, वासवाडा और प्रतापगढ के राजाओ ने महाराणा को नजरे नही भेजी । अत कुपित होकर महाराणा ने उन पर चढाई करके १ लाख ७५ हजार रुपया वसूल किया । यह आवू पर कब्जा करना चाहता था परन्तु जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह की मदद से यह स्थान देवडो से नही ले सका । पिता-

पुत्र की अनबन हो जाने से यह अपने पिता से अलग रहता था। पहले ये एक-दूसरे के विरोधी थे किन्तु महाराजा अजीतसिंह ने पिता-पुत्र का मेल करवा दिया।

इसने अपने राज्य मे अनेक सुधार किये। इसके एक राजकुमार और एक राजकुमारी थी। इसकी मृत्यु वि.स. १७६७ मे हुई।

**अमरसिंह (राव अमरसिंह राठौड़)–**

यह जोधपुर के महाराजा गजसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था। इसका जन्म वि.स. १६७० पौष सुदि ११ (ई.स १६१३ ता १२ दिसम्बर) को राणी सोनगरी के गर्भ से हुआ था। हठी और उद्दण्ड होने के कारण महाराजा इससे अप्रसन्न रहता था और अपने छोटे पुत्र जसवन्तसिंह पर अधिक प्रेम रखता था। महाराजा अपने छोटे पुत्र को ही राज्य का उत्तराधिकारी बनाना चाहता था। इसलिये वकील भगवानशाह जसकरण ने बादशाह को कह कर अमरसिंह के नाम मनसब और नागौर की जागीर लिखवा ली। इस पर वह राजसिंह कूपावत और पन्द्रहसौ सवारो के साथ बादशाह की सेवा मे चला गया। बादशाह शाहजहाँ के समय मे इसने अनेक युद्धो मे शाही सेना के साथ रह कर अपनी वीरता का परिचय दिया, किन्तु वि.स १७०१ मे इसने बादशाह के प्रमुख दरबारी सलावत खा को मार डाला और उसी समय इसे भी अर्जुन गौड तथा बादशाह के अन्य व्यक्तियो ने आक्रमण कर के मार डाला।

**अमरसिंह (ऊदावत ठाकुर अमरसिंह)–**

यह वि.स. १७६७ मे गद्दी पर बैठा। यह महाराजा अजीतसिंह के समय मे महावीर पुरुषो की गणना मे था। बादशाह मुहम्मदशाह को भी इसके सामने मुह की खानी पडी। इसी बीच अहमदाबाद का सूबेदार सर बुलन्द खां स्वतन्त्रता से शासन करने लगा और बादशाह की आज्ञा की अवहेलना करने लगा। उसका दमन करने के लिए बादशाह ने महाराजा अभयसिंह को गुजरात का सूबेदार नियत किया। अत. महाराजा ने अहमदाबाद के लिये प्रस्थान कर दिया और ठाकुर अमरसिंह पीछे सेना लेकर पहुँचा। रास्ते मे ईडर विजय किया। अहमदाबाद पहुँचते ही भयकर युद्ध हुआ। सर बुलन्द के बहुत से मनुष्य मारे गये, बहुत से पकडे गये, इससे नबाब का बल घट गया और उसने अपना प्रतिनिधि भेज कर महाराजा से अमरसिंह को अपने पास भेजने के लिए कहा। अमरसिंह सर बुलन्द से मिला और महाराजा से उसकी सधि करवा दी।

**अमरसिंह (भडारी)**

इसके पिता का नाम खीवसी भडारी था जो कि महाराजा श्री अजीतसिंह

तथा महाराजा श्री अभयसिंह के समय जोधपुर का दीवान था। यह भी महाराजा अभयसिंह के शासनकाल मे (वि.स. १७६६ से १८०१ तक) जोधपुर का दीवान रहा था। अहमदाबाद के युद्ध के समय यह दिल्ली मे महाराजा अभयसिंह का वकील था। यह बहुत बुद्धिमान, चतुर और अपने समय का महान् राजनीतिज्ञ था।

**अमीर उलउमरा–**

यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे से था और जोधपुर के महाराजा अभयसिंह का मित्र था तथा बादशाह के बारह हजारी मनसबदारो मे था। इसने महाराजा अभयसिंह को सर बुलन्द खा के विरुद्ध अहमदाबाद पर आक्रमण करने के लिये उत्साहित किया था और गुजरात (अहमदाबाद) की सूबेदारी की सनद महाराजा अभयसिंह के नाम लिखवा दी गई थी।

**अली मोहम्मद खां–**

यह अहमदाबाद के सूबेदार सर बुलन्द खा के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे था। यह एक अनुभवी योद्धा तथा सेना के प्रमुख सेना-नायको मे था। सर बुलन्द ने इसे शहर के रेशम के प्रमुख व्यापारी गगादास के पास एक लाख रुपया वसूल करने के लिये भेजा। इसने गगादास से १ लाख और कुशालचन्द से साठ हजार रुपया वसूल किया। इस प्रकार अली मोहम्मद खा ने सर बुलन्द के लिये रकम वसूल की। यह महाराजा अभयसिंहजी के साथ युद्ध होने के समय पश्चिमी भाग की सेना का प्रमुख योद्धा था और उसी युद्ध मे काम आया।

**अली वरदी खां–**

यह बादशाह मुहम्मदशाह के दरबार के प्रमुख उमरावो मे से एक था। यह बडा बहादुर, रण-कुशल एव कुशल राजनीतिज्ञ था। इसकी वीरता और नीतिज्ञता से प्रसन्न होकर बादशाह बहादुरशाह ने इसको लाहौर का सूबेदार बना दिया था। बाद मे बगाल की व्यवस्था सुधारने के लिये इसे बगाल का गवर्नर (सूबेदार) बना दिया गया था। इसके पूर्व यह शाही सेना का सेनापति था और अनेको युद्धो मे भाग लेकर अपनी वीरता का परिचय दे चुका था।

यह जोधपुर के महाराजा अभयसिंह का मित्र था। इसने बगाल मे अपना स्वतन्त्र शासन स्थापित कर लिया था।

**आविद अली खा (आबद अली खां)**

यह अहमदावाद के सूबेदार सर बुलन्द खा के विश्वासपात्र सेना-नायको मे

था। यह घुड-सवार सेना की एक टुकडी का सेनापति था। यह हाथी पर सवार हो कर अपने भाई जमाल खा के साथ युद्ध-भूमि मे बडो वीरता से लड़ा। इसने युद्ध मे ऐसी बहादुरी दिखाई कि मारवाड़ी सेना पीछे हटने लगी। किन्तु समय ने पलटा खाया और इन दोनो भाइयो को, जो एक ही हाथी पर सवार थे, घेर लिया गया और आबिद अली खा को मार डाला।

**इतमादुल्ल (इतमादुद्दौला)**–

यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे था। रफीउद्दौला की मृत्यु के उपरान्त सैयद बन्धुओ की सहायता से रोशनअख्तर मुहम्मदशाह के नाम से ई स. १७१६ मे दिल्ली का बादशाह बना। सिहासन पर बैठते ही इसने सैयद भाइयो के चगुल से निकलने का प्रयास आरभ कर दिया और इतमादुद्दौला की मदद से षडयन्त्रकारियो द्वारा हुसेनअली का वध करवा दिया व उसके भाई अब्दुल्ला को युद्ध मे परास्त कर इसने बन्दी बना लिया। इसके बाद इसको बादशाह ने अपना वजीर बनाया। परन्तु वह अधिक दिनो तक जीवित नही रहा और ई स १७२२ मे मृत्यु को प्राप्त हो गया।

**इरादतमद खां**–

इसका पूरा नाम शर्फुद्दौला इरादतमद खा था। यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र सेवको मे था। बादशाह ने इसको महाराजा अजीतसिह पर चढाई करने के लिये नियुक्त किया। इसको प्रसन्न करने के लिये इसका मनसब ७००० जात और ६००० सवार का कर दिया। ई स १७२३ में इसको प्रस्थान की आज्ञा मिल गई और शाही खजाने से खर्च के लिये दो लाख रुपये दिये गये।

महाराजा जयसिह, मुहम्मद खा बगस, राजा गिरधारी आदि शाही अमीरो को भी इसके साथ शरीक होने की आज्ञा मिली। शाही सेना के आगमन से पूर्व ही महाराजा अजीतसिह अजमेर से रवाना होकर साभर होते हुए जोधपुर चले गये। जून सन् १७२३ में इरादतमद खा ने अजमेर में प्रवेश किया।

**इन्द्रसिह (राव इन्द्रसिह, नागौर)**–

इसका जन्म वि स १७०७ की जेठ सुदि १२ को दक्षिण मे बुरहानपुर मे हुआ था। वि.स १७३३ मे अपने पिता रायसिह की मृत्यु के बाद यह नागौर का अधिकारी बना। बादशाह औरगजेब ने इसको पाँच हजारी जात और दो हजार सवारो का मनसब दिया था। महाराजा जसवतसिह की मृत्यु के बाद अपने पुराने बैर का बदला लेने के लिये राव इन्द्रसिह को बादशाह ने राजा के खिताब

के साथ जोधपुर का शासन-भार सौंप दिया था। परन्तु महाराजा के स्वामि-भक्त नौकरो व सरदारो के आगे इन्द्रसिंह की एक न चली। वि सं. १७७३ मे महाराजा अजीतसिंह ने इन्द्रसिंह से नागौर छीन लिया। किन्तु वि स. १७८० मे बादशाह ने नागौर का अधिकार पुन. इन्द्रसिंह को दे दिया। महाराजा अभयसिंह ने वि.स १७८२ मे इन्द्रसिंह पर हमला कर के नागौर अपने छोटे भाई बखतसिंह को दे दिया। इन्द्रसिंह दिल्ली चला गया, जहाँ बादशाह ने उसे सिरसा, भटनेर, पूनिया और बैहणी-वाल के परगने जागीर मे दिये। वि.स. १७८९ मे दिल्ली नगर मे इन्द्रसिंह का देहान्त हो गया।

**उम्मेदसिंह–**

राव छत्रसाल के बाद मानसिंह सिरोही का राजा बना। गद्दी पर बैठते ही इसने अपना नाम उम्मेदसिंह रख लिया। अहमदाबाद विजय को जाते हुए महाराजा अभयसिंह सिरोही ठहरा और सिरोही को लूटने की आज्ञा दे दी। इसके सिपाही सिरोही को लूटने लगे तब सिरोही के राव उम्मेदसिंह ने अपनी पुत्री का विवाह महाराजा से कर उससे संधि कर ली और अपनी फौज महाराजा के साथ भेज दी।

**औरंगजेब (बादशाह)–**

यह बादशाह शाहजहाँ का पुत्र था। इसका जन्म २४ अक्टूबर १६१८ ई को मुमताज महल के गर्भ से दाहद मे हुआ था। इसने उज्जैन के युद्ध मे महाराजा जसवन्तसिंह राठौड को पराजित किया, धौलपुर के पास शाहशुजा को हराया, ईश्वर को साक्षी कर के मुराद से मित्रता की और उसे मरवा डाला, पिता को बन्दीघर मे डाल दिया और ऐसे ही अनेक काम कर के बादशाही प्राप्त की। यह आतकवादी बादशाह था। इसने हिन्दुओ पर मनमाना अत्याचार किया। जजिया कर लगाया। मन्दिर तुडवाये। हिन्दूओ को मुसलमान बनाया। महाराजा जसवन्तसिंह को मरवाने के लिये षडयत्र रचे। इसने महाराजा जसवन्तसिंह के पुत्र अजीतसिंह के साथ दुर्व्यवहार किया। इसी के कारण अजीतसिंह को लम्बे समय तक इधर-उधर भटकना पडा। यह जोधपुर राज्य पर अधिकार करना चाहता था। किन्तु उसकी यह इच्छा पूर्ण नही हुई। ई स १७०७, ३ मार्च मे इसका देहावसान हो गया।

**कठराज (कथाजी)–**

यह मरहठो की सेना का सेनानायक था। इसका पूरा नाम कथाजी कदम बांडे था। मरहठो द्वारा गुजरात पर आक्रमण करने के समय इसने साहसपूर्ण भाग

लिया था। महाराजा अभयसिंह का अहमदाबाद पर अधिकार होने के समय कठ चांपानेर (उज्जैन) का शासक था। इसने विजय की कामना से अहमदाबाद पर आक्रमण किया। इसके साथ पीलू और आनदराव की सेनाए भी थी। किन्तु महाराजा अभयसिंह की विजय हुई और कंठा भाग कर दक्षिण मे निजामुलमुल्क के पास चला गया।

**कनीराम (कूपावत ठाकुर कनीराम)-**

यह ठाकुर रामसिंह के बाद अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ। बागी चांदावत दौलतसिंह को मार कर महाराजा अभयसिंह द्वारा आसोप बहाल करवाई। वि स १७८७ मे अहमदाबाद मे सर बुलद खा से युद्ध हुआ जिसमे कूपावत कनीराम साथ था। महाराजा अभयसिंह की इस पर पूर्ण कृपा थी। महाराजा अभयसिंह की मृत्यु के बाद रामसिंह गद्दी पर बैठा किन्तु इनमे छिछोरपन होने के कारण कनीराम जोधपुर से आसोप चला गया। वि स १८०८ में बखतसिंह ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया। वि स १८०९ मे ही महाराजा बखतसिंह का विष-प्रयोग से जयपुर राज्य के गाँव सीघोली मे देहान्त हो गया। तब उनका पुत्र विजयसिंह जोधपुर के राज्यसिंहासन पर बैठा। इसी वर्ष इन्ही महाराजा ने ठाकुर कनीराम को बीकानेर से बुलाया। कनीराम ने आजन्म महाराजा विजयसिंह की सेवा की। वि स १८३२ मे जोधपुर मे ही इसका स्वर्गवास हो गया। दाह-सस्कार कागा बाग मे हुआ। कागा मे इसकी छत्री बनी हुई है।

**कमरुद्दीन खां-**

यह बादशाह मुहम्मदशाह के प्रधान सलाहकारो मे से एक था। यह बादशाह के प्रधान वजीर निजामुल-मुल्क का विश्वासपात्र व्यक्ति था। यह योग्य तथा अनुभवी व्यक्ति था। बादशाह ने जिस समय सर बुलन्द खा के विद्रोही हो जाने पर उसके विरुद्ध विद्रोह को दबाने और उसको पदच्युत करने का प्रस्ताव रक्खा उस समय कमरुद्दीन खा भी राजसभा मे मौजूद था। यह जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के हितैषियो मे था और उनसे मित्रता का व्यवहार रखता था।

**करण (महाराणा करणसिंह)-**

यह महाराणा अमरसिंह का पुत्र और राणा प्रताप का पौत्र था। इसका जन्म वि.स १६४० श्रावण शुक्ला १२ (ई.स. १५८३ ता० १ अगस्त को) हुआ था। उस समय दिल्ली का बादशाह जहाँगीर था। उसने शाहजादे खुर्रम को मेवाड विजय के लिये सवाई राजा सूरसिंह के साथ भेजा और राजकुमार गजसिंह को सादडी का थाना सौंपा गया। शाही सेना ने मेवाड को चारो तरफ से घेर

लिया, राणा ने विजयी होना असभव जान कर सधि प्रस्ताव रखा। इस पर वि० स० १६७१ (ई० सन् १६१४) में महाराजकुमार गजसिंह राजकुमार करण को लेकर अजमेर आये। बादशाह जहागीर, जो उस समय अजमेर मे ही था, से मिला दिया और सुलह करवा दी। महाराणा करणसिंह वि०स० १६७६ (ई० सन् १५२०) मे गद्दी पर बैठा और वि० स० १६८४ (ई० सन् १६२७) मे इसका देहान्त हो गया।

**करणसिंह (चांपावत)**

यह पाली के ठाकुर राजसिह का पुत्र बडा वीर, पराक्रमी तथा युद्ध कुशल व्यक्ति था। यह महाराजा अभयसिंह की सेना की एक टुकडी का सेनानायक था। महाराजा ने अहमदाबाद के युद्ध के समय शहर पर गोलाबारी करने के लिये ५ मोर्चे कायम किये थे, जिनमे पहले मोर्चे पर यह था। वि० स० १७८७ आश्विन सुदि १० (ई० स० १७३० ता० १० अक्टूबर) शनिवार को सर बुलन्द ने शेरसिंह (सरदारसिंहोत के मोर्चे पर आक्रमण किया। अभयकरण और चापावत करण उसकी (शेरसिंह) सहायता को गये। घमासान युद्ध हुआ जिसमे मुसलमानो के ३०० आदमी और महाराजा की सेना के चापावत करण, मेडतिया भोपसिंह, जोधा हठीसिंह, धाधल भगवानदास और पुरोहित केसरीसिंह लडते हुए वीर गति को प्राप्त हुए।

**करणीदान (बारहठ करनीदान)—**

यह बारहठ केसरीसिंह का छोटा पुत्र था। यह बडा बुद्धिमान था। जब महाराजा अभयसिंह ने नागौर का राज्य राव अमरसिंह के पोते इन्द्रसिंह से छीन कर अपने भाई बखतसिंह को दे दिया तब यह अवसर पाकर महाराजा बखतसिंह के पास चला गया। कुछ दिनो बाद गुजरात के नबाब सर बुलद खा पर महाराजा अभयसिंह ने चढाई की तो उस समय करनीदान महाराजा बखतसिंह के साथ था। युद्ध मे अत्यधिक पराक्रम दिखाने पर महाराजा बखतसिंह ने इसको रामस्या गाव दे दिया। वि०स० १८०८ मे जब महाराजा बखतसिंह महाराजा रामसिंह को जोधपुर से निकाल कर मारवाड के अधिपति हो गये तब करनीदान को मूंदियाड का पट्टा दिया और सिरायत सरदारो के बराबर मान दिया।

**करीमदाद खां—**

यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे था। इसे पहले पालनपुर का फौजदार बना कर भेजा गया था। इसकी महाराजा

अभयसिंह से मित्रता थी। महाराजा अभयसिंह ने अहमदाबाद पर चढाई करने के लिये अपनी सेना सहित जोधपुर से कूच किया, जिस समय वे पालनपुर के पास पहुँचे तो इसने उनका खूब स्वागत किया। यही करीमदाद खां बाद मे पालनपुर का स्वतत्र शासक बन कर नबाब बन गया। इसने महाराजा अभयसिंह की सहायता के लिए अहमदाबाद के युद्ध मे अपनी सेना को सर बुलद खा के विरुद्ध लडने के लिए भेजी थी।

**किशनसिंह (महाराजा किशनसिंह)—**

यह मोटा राजा उदयसिह का ८ वा पुत्र था। इसने ई० सन् १६६६ मे अपने नाम से किशनगढ राज्य की स्थापना की। यह बडा वीर, रणकुशल और अपनी धुन का पक्का थ। इसके तीन पुत्रो मे से भारमल के पुत्र रूपसिह ने रूपनगर बसाया था। भाटी 'गोयन्ददास' ने, जो महाराजा सूरसिंह का विश्वासपात्र था व जोधपुर राज्य का दीवान था, किशनसिंह के भतीजे गोपालदास का वध कर दिया था। उसका बदला लेने के लिए किशनसिंह ने अजमेर की हवेली पर हमला कर के भाटी गोयददास को मार दिया। इससे नाराज होकर राजकुमार गजसिंह ने भी पीछा कर के किशनसिंह को उसके साथियो सहित मार डाला।

**कु भा (महाराणा कु भा)—**

यह महाराणा मोकल का पुत्र था और उसकी मृत्यु के बाद वि०स० १४९० मे राजगद्दी पर बैठा। इसके बालिग होने तक राज्य-कार्य की देखभाल मडोवर के स्वामी रणमल्ल राठौड करता था। यह महाराणा बड़ा यशस्वी, वीर, विद्वान् और प्रतापी हुआ जिसने कुभलगढ और आबू पर अचलगढ नामक स्थान बनवाये और मालवा के बादशाह मुहम्मद तुगलक को युद्ध मे पराजित कर के पकड लिया व ६ मास कैद मे रख कर उससे दड लेकर छोडा। इसका स्मारक चित्तौड के किले मे विद्यमान है। वि०सं० १५२५ मे यह अपने ज्येष्ठ पुत्र ऊदा के हाथ से मारा गया।

**कुसलसिंह (ऊदावत कु वर कुशलसिंह)—**

इसका स्वर्गवास पिता की मौजूदगी मे ही हो गया था। यह अपने पिता के साथ महाराजा अजीतसिंह की सेवा मे रहा करता था। कु वर कुशलसिंह दिल्ली मे भी महाराजा के साथ था। इसने कु वर पद मे ही अनेको वीरता के काम किये थे। जब अजमेर का सूबेदार जगरामगढ और ब्यावर पर कब्जा करने को नियत से सेना लेकर आया तो कु वर कुशलसिंह ने उसका सामना किया।

महा घोर सग्राम हुग्रा जिसमे ग्रनेक मुगल वीरो को मार कर बडी वीरता से लडता हुग्रा वह वीरगति को प्राप्त हुग्रा ।

**केशरीसिंह पुरोहित–**

यह जोधपुर राज्य के खेडापा का महापराक्रमी जागीरदार था। इसने ग्रपनी योग्यता से ही यह जागीर प्राप्त की थी । इसके पूर्वज तिवरी के जागीरदार थे। यह पुरोहित दलपत का पौत्र था जो महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) के साथ धरमत (उज्जैन) के युद्ध मे ग्रौरगजेब के विरुद्ध लडता हुग्रा वीरगति को प्राप्त हुग्रा था। इसके पिता का नाम ग्रखैसिंह था। पुरोहित केशरीसिंह गुजरात (ग्रहमदाबाद) के युद्ध मे महाराजा ग्रभयसिंह के साथ था । ग्रहमदाबाद नगर तथा भद्र के किले पर पाच मोर्चे लगाये गये। केसरीसिंह दूसरे मोर्चे पर था। सर बुलन्द खा ने ई० स० १७३० ता० १० ग्रक्टूबर को दूसरे मोर्चे पर ग्राक्रमण किया। घमासान लडाई हुई जिसमे सर बुलन्द के ३०० ग्रादमी ग्रौर महाराजा की सेना के पुरोहित केसरीसिंह, हठीसिंह, भोमसिंह, करण, भगवान ग्रादि वीर युद्ध मे वीरगति को प्राप्त हुए ।

**केशरीसिंह बारहठ–**

यह गुरडाई का जागीरदार था। यह गाव इसको महाराजा जसवन्तसिंह प्रथम द्वारा प्राप्त हुग्रा था। महाराजा जसवन्तसिंह की मृत्यु के बाद जब मारवाड पर मुगलो का ग्राधिपत्य हो गया तब इसका गाँव भी मुगलो के ग्रधिकार मे चला गया। यह महाराजा ग्रजीतसिंह के दल मे शामिल हो गया तथा ग्राजन्म महाराजा की सेवा करता रहा। जब जोधपुर पर महाराजा का ग्रधिकार हो गया तब इसको अपना गाँव गुरड़ाई भी वापिस मिल गया। इसके गोरखदान ग्रौर करणीदान दो पुत्र थे जो महाराजा ग्रभयसिंह के साथ ग्रहमदाबाद के युद्ध में शामिल हुए थे।

**खान दौरान–**

यह बादशाह मुहम्मद शाह के समय मे मीर बक्शी के उच्च पद पर आसीन था ग्रौर महाराजा ग्रभयसिंह के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे था। इसने दिल्ली मे महाराजा का शानदार स्वागत किया था। इसी की सलाह से बाहशाह ने महाराजा को गुजरात का सूबेदार बनाया था। नादिरशाह के आक्रमण के समय खानदौरान अपनी सेना सहित कर्नाल के युद्ध मे शरीक हुग्रा। भीषण सग्राम हुग्रा जिसमे मुगल सेना बुरी तरह पराजित हुई ग्रौर यह ग्रपने ८००० सैनिको सहित वीरगति को प्राप्त हुग्रा।

**खींवसी भंडारी–**

यह महाराजा अजीतसिंह के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे से था। मुगल सम्राट फर्रुखसियर पर इसका बडा प्रभाव था। ग्रन्थ सूरजप्रकास के अनुसार हिन्दुओ पर मे जजिया कर छुडवाने मे इसने महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया था। यह जोधपुर राज्य की तरफ से वर्षों तक मुगल दरबार मे रहा था। फर्रुखसियर की हत्या के बाद इसने दिल्ली पहुँच कर नबाब अब्दुला खा की सम्मति से मुहम्मदशाह को दिल्ली के तख्त पर बैठाया। महाराजा अभयसिंह के शासनकाल मे भी यह जोधपुर का दीवान रहा था। इसका पुत्र अमरसिंह अहमदाबाद के युद्ध के समय दिल्ली मे जोधपुर महाराजा की ओर से वकील था।

**खुरम (शाहजादा खुर्रम)–**

यह जहाँगोर का तीसरा पुत्र था। इसका जन्म १५९२ ई० मे लाहौर मे हुआ था। खुर्रम बडा ही योग्य तथा प्रभावशाली व्यक्ति था। जहाँगीर उसे प्राणो से अधिक प्रिय समझता था। जब ई० स० १६०६ में जहाँगीर खुसरो के विद्रोह को शान्त करने के लिए गया तब खुर्रम को ही राजधानी की सुरक्षा का भार सौपा गया। खुर्रम ने अनेक अच्छे कार्य किये। उसी के परिणामस्वरूप जहाँगीर ने इसे शाहजहाँ की उपाधि दी। शाहजहाँ ने दक्षिण की स्थिति को, जो बिगड चुकी थी, सम्भालने मे सफलता प्राप्त की। इससे प्रसन्न होकर उसे उच्चतम शाही सेना का सेनापति बना दिया। उसे बहुत उत्तम जागीर प्रदान की। इसने महावत खा को अपनी ओर मिला लिया और शहरयार का अन्त कर के बादशाह बन गया। बादशाह बनते ही इसने संदिग्ध व्यक्तियो को हटा दिया और अपने विश्वसनीय व्यक्तियो को राजसेवा मे नियुक्त किया। ऐसे योग्य शासक की मृत्यु ७४ वर्ष का होने के बाद १६६६ ई० मे हो गई।

**गोयददास (भाटी गोविंददास)–**

मारवाड के इतिहास मे इसका नाम उल्लेखनीय है। यह नागार के पास गाव भाडवे के भाटी मानसिंह का पुत्र था। सुरताण मानावत इसका सहोदर था। भाटी गोविंददास ने प्रधान के पद पर आसीन होकर राज्य का प्रबन्ध शाही ढग पर कर दिया। इससे मारवाड के नरेशो और सरदारो का सबध स्वामी-सेवक सा हो गया। शादी-गमी के समय ठकुरानियो के अत पुर मे आने-जाने की प्रथा उठ गई। इन्होने रणमल्ल के वश के जागीरदारो के लिये दाईं तरफ और जोधाजी के वश के जागीरदारो के लिए बाईं तरफ का स्थान नियुक्त किया। राज कार्य के लिए दीवान, बख्शी, हाकिम, दरोगा और पोतेदार आदि नियुक्त किये। मेवाड-दमन के समय राजकुमार गजसिंहजी के साथ जा कर

भाटो ने महाराणा को बादशाह से संधि करवाई। एक समय भाटी गोविंददास अजमेर मे महाराजा सूरसिंहजी के साथ था जहाँ किशनसिंहजी ने अपने भतीजे गोपालदास का बदला लेने के लिए इसकी हवेली मे घुस कर इसको मार डाला।

**गोरखदान (बारहठ गोरखदान)–**

यह बारहठ केसरीसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था। पिता की मृत्यु के बाद यह रूपावास मे रहा। यह महाराजा अभयसिंह के कृपापात्रो मे था और अहमदाबाद के युद्ध के समय महाराज के साथ था। इसकी सेवाओ से प्रसन्न होकर महाराजा अभयसिंह ने इसको पाली परगने का केरला गाव प्रदान किया। इसके एक ही पुत्र अमरसिंह था जो महान् प्रतिभासपन्न व्यक्ति था।

**गोरधनसिंह (कूंपावत राठौड़ गोरधनसिंह)–**

यह चडावल ठाकुर चांदसिंह का पुत्र था। यह ठिकाना महाराजा सूरसिंह ने इसके पिता चांदसिंह को वि० स० १६५२ मे इनायत किया था। जिस समय महाराजा गजसिंह ने भोमसिंह सीसोदिया को युद्ध मे मारा था उस समय यह महाराजा गजसिंह का प्रमुख योद्धा था। वि० स० १७१४ मे उज्जैन के पास फतियाबाद के मुकाम पर शाहजादा मुराद और औरगजेब बादशाहत के लोभ से आ खडे हुए। उस समय शाही सेना के सेनापति कासिम खा और महाराजा जसवन्तसिंह थे। कासिम खा बदल कर औरगजेब के पक्ष मे हो गया। इस पर भी महाराजा जसवन्तसिंह ने औरगजेब के साथ घोर सग्राम किया जिससे शत्रुओ के नाको दम हो गया। इस युद्ध मे कूंपावत राठौड गोरधनसिंह चांदसिंहोत ने घोर सग्राम किया और कई शत्रुओ को मार गिराया और अपनी सेना की रक्षा की। अन्त मे यह स्वय भी इसी युद्ध मे लडते-लडते वीरगति को प्राप्त हुआ।

**चाचा और मेरा–**

ये दोनो भाई महाराणा खेता की पासवान एक खातण के गर्भ से पैदा हुए थे। ये दोनो भाई बडे वीर, पराक्रमी और रणकुशल योद्धा थे। एक बार महाराणा मोकल द्वारा किसी वृक्ष का नाम और गुण पूछने पर बहुत क्रोधित हो गये, और अवसर पाकर महाराणा मोकल को मार डाला। उस समय राव रणमल्ल मडोवर मे थे। मोकल के मारे जाने का समाचार सुनते ही राव ने पगडी उतार कर साफा बाँध लिया और प्रतिज्ञा की कि चाचा और मेरा को मार कर ही पगडी बाँधूंगा। इसके बाद ५०० सवारो के साथ पई के पहाड़ो पर आक्रमण किया किन्तु उनको काबू मे नही ला सका। बाद मे गमेती भील के

पुत्रो की सहायता से इन पर आक्रमण किया। चाचा और मेरा मारे गये और चाचा का पुत्र इक्का भाग कर माँडू के बादशाह महमूद की शरण मे चला गया।

**जगरामसिंह (ऊदावत)**

इसका जन्म वि० स० १६९९ मे रास ठिकाने म हुआ था। इसका पिता विजयराम सवाई राजा सूरसिंह की सेवा मे रहता था। यह बडा महत्त्वाकांक्षी था। युवावस्था मे इसे नया ठिकाना स्थापित करने की प्रबल आकाक्षा हुई। विक्रमी स० १७३५ मे बर के पूर्व में जगरामगढ नामक दुर्ग बनाया और अजमेर के शाही खालसे को तग करने लगा। इससे तग होकर अजमेर के सूबेदार ने सधि कर के अपने पास बुला लिया। अजमेर मे रह कर इसने मेरो व मेवो के उपद्रव को शान्त किया। तत्पश्चात् दिल्ली चला गया। वहा कुछ दिन रहने के बाद मयूर के मारने की शिकायत मे एक यवन का हाथ काट डाला और दिल्ली को छोड कर उदयपुर चला आया। तत्कालीन महाराणा ने इसको जागीर देनी चाही परन्तु इसका ध्यान मारवाड के बालक महाराजा अजीतसिंह की तरफ आया, अत यह मारवाड मे आ गया और महाराजा अजीतसिंह की सेवा में रहते हुए अनेक युद्धो में भाग लिया। वि० स० १७६५ मे महाराजा अजीतसिंह ने इसको नीमाज का ठिकाना इनायत किया। वि० स० १७६७ मे इसका देहावसान हो गया।

**जफरजग (खानखाना जफरजग)-**

यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे था और उस समय पजाब और लाहौर का सूबेदार था। सर बुलन्द खा के विरुद्ध गुजरात (अहमदाबाद) पर आक्रमण करने का प्रस्ताव बादशाह ने इसके सम्मुख भी रखा था किन्तु इसने अपनी असमर्थता प्रकट कर अस्वीकार कर दिया।

**जफरयारबर खां-**

यह शाही दरबार का मुखिया था। जिस समय सर बुलन्द खा के विद्रोह को दबाने की वार्ता खास दरबार मे चली, यह भी खास दरोगा के पद पर था और दरबार मे उपस्थित था। बादशाह ने सर बुलन्द खा के विरुद्ध अहमदाबाद पर आक्रमण करने का इसको आदेश दिया, किन्तु इसने अस्वीकार कर दिया।

**जमालअली खां (जमाल खां)-**

यह सर बुलन्द की सेना का सेनापति था। अहमदाबाद के युद्ध मे, जो महाराजा अभयसिंह के साथ हुआ था, इसने बडी वीरता दिखाई थी। यह

इतनी वीरता से लडा कि मुसलमानो का पलडा भारी दिखने लगा तथा महाराजा की सेना पीछे हटने लगी और सर बुलन्द खा की सेना उन्हे पीछे ढकेलती गई। परन्तु कुछ समय बाद महाराजा अभयसिंह की सेना आगे बढने लगी और सेनापति जमाल खा के हाथी को घेर लिया, जहाँ वह लडता-लडता वीर गति को प्राप्त हुआ।

**जयसिंह (मिर्जा राजा)-**

यह जयपुराधीश राजा मानसिंह का प्रपौत्र था। इसका जन्म ई० स० १६११ मे हुआ था और ई० स० १६२१ मे केवल १० वर्ष की अवस्था मे राज्याभिषेक हुआ। ई० स० १६२८ मे सम्राट शाहजहाँ ने इसका विशेष आदर किया। मुगल साम्राज्य की वृद्धि के लिये विविध स्थानो पर युद्धो मे अपनी वीरता का परिचय दिया। शाहजहाँ ने खुर्रम के विरुद्ध परवेज के साथ मिर्जा राजा जयसिंह को सेनापति बना कर भेजा था। यह बात स्वाभिमानी महाराजा गजसिंह को बुरी लगी। अत वह एक ओर खडे होकर युद्ध का परिणाम देखने लगे। जयसिंह की सेना भीम सीसोदिया के सामने टिक नही सकी और भाग गई। उस समय गजसिंह ने उसका मुकाबला करके भीम सीसोदिया को मार डाला। ई० स० १६६७ ई० मे बुरहानपुर मे इसकी मृत्यु हुई।

**जयसिंह (महाराणा)-**

इसका जन्म वि० स० १७१० पौष वदि ११ को हुआ था। यह अपने पिता की मृत्यु के बाद वि० स० १७३७ मे मेवाड का स्वामी हुआ। महाराणा राजसिंह की मृत्यु के समय से मेवाड मुगल दल से घिरा हुआ था। महाराणा जयसिंह ने मारवाड के महाराजा अजीतसिंह से मिल कर भेद नीति का अनुसरण किया और शाहजादा मुअज्जम को अपनी ओर मिला लेना चाहा किन्तु सफलता नही मिली। इसके बाद इसने अकबर को अपनी ओर मिलाया। शाहजादा अकबर ने जब महाराणा से मिल कर अपने को बादशाह घोषित किया तब महाराणा ने माडलगढ को पुन अपने अधिकार मे कर लिया। वि० स० १७३८ में महाराणा ने बादशाह औरगजेब से सधि करली। इसके बाद औरगजेब दक्षिण मे चला गया और लगातार २५ वर्ष मरहठो से लडता रहा। इसी बीच महाराणा जयसिंह और उनके पुत्र अमरसिंह द्वितीय मे गृह-कलह हो गया। उस समय महाराजा अजीतसिंह ने बीच-बचाव कर के पितापुत्र मे परस्पर मेल करवा दिया। ठीक इसी समय महाराणा जयसिंह ने अपने छोटे भाई गजसिंह की पुत्री का विवाह मारवाड के महाराजा अजीतसिंह से

कर दिया। महाराणा ने कई तालाब आदि बनवाये, जिनमे जयसमुद्र उल्लेखनीय है। ऐसे सुयोग्य राणा की मृत्यु वि० स० १७५५ मे हुई।

**जयसिंह (महाराजा सवाई जयसिंह)-**

यह आमेर का राजा बडा यशस्वी और भाग्यशाली हुआ है। इसका जन्म वि० स० १७४५ और राज्याभिषेक वि० स० १७५६ मे विष्णुसिंह के मरने के पश्चात् काबुल मे हुआ था। यह काबुल मे राज्य-सिंहासन-सस्कार से सम्पन्न होने के पश्चात् भारत मे आकर दक्षिण मे बादशाह औरगजेब के पास गया तो औरगजेब ने इसके दोनो हाथ पकड लिए और इससे कहा कि तू अब क्या कर सकता है ? उस समय यह बाल्यावस्था मे ही था, फिर भी अपनी प्रत्युत्पन्न बुद्धि से बादशाह से कहा कि मैं अब सब कुछ करने मे समर्थ हू, क्योकि मर्द जब स्त्री का एक हाथ पाणिग्रहण के समय पकडता है तो वह उसे जीवन भर निभाता है और उसे बहुत से अधिकार देता है, और जहापनाह ने मेरे दोनो हाथ पकड लिए हैं, इससे मुझे पूर्ण विश्वास है कि मैं अब अन्य राजा-महाराजाओ से बढ कर हूं। इस पर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और इसको सवाई राजा की उपाधि से विभूषित किया।

इसी सवाई राजा जयसिंह की पुत्री से महाराजा अभयसिंह ने अपना विवाह मथुरा मे जाकर किया था जिससे जोधपुर के सामन्त-गण महाराजा से नाराज होकर जोधपुर की तरफ आ गये थे। जिस समय महाराजा अभयसिंह ने सर बुलन्द को परास्त करने का बीडा बादशाह के दरबार मे उठाया था और बाद मे जब मारवाड की तरफ रवाना हुए थे तो मारवाड आते समय ये जयपुर होकर सवाई जयसिंह से मिल कर आये थे।

महाराजा सवाई जयसिंह ने अपने नाम से वि० स० १७८४ मे जयपुर नगर बसाया। हिन्दी का प्रसिद्ध कवि बिहारी इसी के दरबार का रत्न था। इस महाराजा का देहावसान खून के बिगड जाने के कारण वि० स० १८०० को हुआ।

**जहांगीर (बादशाह)-**

इसका जन्म वि० स० १६२६ तदनुसार ई० सन् १५६९ मे आमेर के राजा भारमलजी की पुत्री के गर्भ से फतहपुर सीकरी मे महात्मा शेखसलीम चिश्ती के मकान पर हुआ। कहते है कि बादशाह अकबर को यह पुत्र महात्मा शेखसलीम चिश्ती के आशीर्वाद से ही प्राप्त हुआ था, अतएव महात्मा शेखसलीम चिश्ती के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए शाहजादे का नाम

मुहम्मद सुल्तान सलीम रखा गया। इसकी शिक्षा बैराम खा के पुत्र अब्दुल-रहीम खानखाना के द्वारा हुई।

यह न्यायप्रिय, उदार तथा वीर था परन्तु साथ ही इसमे क्रूरता, भीरुपन आदि विरोधी गुण भी थे। ई० स० १६०५ मे यह ३६ वर्ष की अवस्था मे नूरुद्दीन मुहम्मद जहागीर बादशाह गाजी की उपाधि को धारण कर के आगरे मे सिहासनारूढ हुआ।

दक्षिण मे जब मलिक अम्बर स्वतत्र हो गया था तब बादशाह जहाँगीर ने जोधपुर के महाराजा गजसिह को अम्बर के बढते हुए प्रभाव को दबाने के लिए भेजा था। उसमे महाराजा गजसिहजी विजयी हुए। मलिक अम्बर पराजित हुआ। इस विजय से प्रसन्न होकर बादशाह जहागीर ने महाराजा गजसिह को दल-थभन का उपाधि से विभूपित किया।

**जहाँदारा शाह–**

ई० स० १७१२ मे मुईजुद्दीन बहादुर शाह का सबसे बडा पुत्र जहाँदारा शाह के नाम से जुलफिकार खा व महाराजा अजीतसिंह की सहायता से गद्दी पर बैठा। यह बडा ही अयोग्य, आरामतलब, विलासी तथा व्यभिचारी शासक था। इसने जुलफिकार खा को अपना प्रधान बनाया। बादशाह लाहौर से दिल्ली पहुँच कर लाल कुवर के प्रेम मे अनुरक्त हो गया। नूरजहाँ की तरह लालकुवर ने भी शासन की बागडोर अपने हाथ मे रखने का प्रयास किया। किन्तु उसी समय बगाल के गवर्नर फर्रुखसियर ने महाराजा अजीतसिंह व सैयद बन्धुओ की सहायता से जहाँदाराशाह व जुलफिकार खा की हत्या करवा कर दिल्ली का शासन अपने हाथ मे ले लिया और सिंहासन पर बैठ गया।

**जाफर खां–**

यह बादशाह मुहम्मद शाह की राज्यसभा का उमराव था। बादशाह ने इसे सर बुलन्द खा के विरुद्ध अहमदाबाद की सूबेदारी देने के लिए कहा, किन्तु इसने मजूर नही किया। इसने महाराजा अभयसिह से अनुनय-विनय कर के अहमदाबाद की सूबेदारी का परवाना महाराजा के नाम लिखवा दिया। यह लाहौर का सूबेदार भी रह चुका था। यह महाराजा अभयसिंह का विश्वासपात्र मित्र था, किन्तु महाराजा की वीरता व निर्भयता के कारण उससे सशकित भी रहता था।

**जुलफगार (जुलफिकार खां)–**

यह बादशाह जहादारा शाह का विश्वासपात्र व्यक्ति था। यह ईरानी था। बादशाह जहादार शाह धन और सेना के अभाव मे भी महाराजा अजीतसिंह

जोधपुर तथा इस जूलफिकार खा की सहायता तथा सहानुभूति के कारण अजीमुश्शान को युद्ध मे पराजित कर सका और बाद मे अजीमुश्शान को मार कर दिल्ली के तख्त पर बैठा। इसने जुलफिकार खा को अपना मत्री बनाया किन्तु कुछ दिनो के बाद ही सैयद भाइयो की सहायता से जहादार शाह और जुलफिकार खा मारे गए और फर्रुखसियर बादशाह बना जो बगाल का गवर्नर था।

**तरीन खां (तरियन खां)–**

यह अफगान सरदार था और इसके साथ ही एक अफगान सरदार और था जिसका नाम सैयद कयूम था। ये दोनो वडे वीर तथा रण-कुशल थे। ये दोनो अपने अरबी घोडो पर सवार हो कर अहमदाबाद के युद्ध मे लड रहे थे जहाँ वीर गति को प्राप्त हुए। जमालअली खा इनके शवो को शहर मे ले आया। तरीन खा महाराजा अभयसिंह के विरुद्ध अहमदाबाद मे फौज की एक टुकडी का सेनापति था। इसने अहमदाबाद के युद्ध मे अपनी प्रबल वीरता का परिचय दिया था।

**तुरराबाज खां (तुराबाज बख्श)–**

यह बादशाह मुहम्मद शाह के बारहहजारी मनसबदारो मे था और बडा वीर, उत्साही, नीतिज्ञ तथा कुशल व्यक्ति था। यह शाही सेना का सेनापति था और अनेक युद्धो मे अपना रण-कौशल दिखा चुका था, फिर भी सर बुलन्द खा की शक्ति के सन्मुख यह भयभीत हो गया और अहमदाबाद पर आक्रमण करने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

**दलेल खां–**

यह लाहौर का सूबेदार था तथा शाही दरबार के मीर उमरावो मे यह मुख्य था। बादशाह ने सर बुलन्द खा के विरुद्ध अहमदाबाद पर जाने का प्रस्ताव इसके सम्मुख रखा पर इसने अस्वीकार कर दिया।

**दांनयाल (शाहजादा)**

यहसम्राट अकबर का छोटा पुत्र था। शाहजादा मुराद की मृत्यु के बाद इसे दक्षिण का सूबेदार बना कर भेजा था और उसकी सहायता के लिये सवाई राजा सूरसिंह को साथ भेजा था, किन्तु थोडे ही समय बाद इसकी मृत्यु हो गई।

**दारासाह (दारा शुकोह)–**

यह बादशाह शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र तथा उत्तराधिकारी था। यह इलाहाबाद, पजाब, मुलतान आदि सूबो का शासक रह चुका था। अनेको प्राती

का शासन कर उसने पर्याप्त अनुभव प्राप्त कर लिया था और अधिकतर शाहजहाँ के पास ही रहता था। ई० स० १६५८ के उत्तराधिकार युद्ध मे पराजित होकर भागा किन्तु औरगजेब के सहयोगियो द्वारा पकडा जाकर कैद कर दिया गया और अन्त मे उसकी हत्या कर दी गई।

**दुरगादास (राठौड़ वीर दुर्गादास)–**

राठोड वश के इतिहास मे वीर दुर्गादास का नाम अमर रहेगा। इस वीर ने मुगल सम्राट औरगजेब के द्वारा मारवाड का राज्य खालसे किये जाने पर औरगजेब से कई युद्ध कर मारवाड का राज्य सुरक्षित रख कर अपनी असामान्य वीरता और रण-चातुरी के अतिरिक्त आदर्श स्वामिभक्ति और देश-प्रेम का परिचय दिया। इसका पिता आसकरण महाराजा जसवन्तसिह की नौकरी करता था। इसकी माता से प्रेम न होने के कारण दोनो मा-बेटे आसकरण से पृथक् लुणावा गाव मे रहते थे। कुछ दिन बाद महाराजा ने दुर्गादास को भी अपनी सेवा मे रख लिया। यह जसवन्तसिह की मृत्यु के बाद उसके पुत्र अजीत-सिह को शाही सेना के घेरे से निकाल कर मारवाड ले आया और समय आने पर अजीतसिह को मारवाड राज्य का अधिकारी बनाया।

वीर दुर्गादास की मृत्यु उज्जैन मे क्षिप्रा नदी के किनारे पर हुई।

**दौलत खां–**

यह नागौर का शासक (नबाब) था। राव गाँगा के चाचा शेखा ने इसकी (खाँजादा दौलत खा) सहायता से वि स १५८५ (ई० सन् १५२६) मे जोधपुर पर चढाई की। इसका समाचार मिलते ही गागा ने सेवकी (गाव) तक आगे बढ कर उसका सामना किया। युद्ध होने पर 'शेखा' मारा गया और दौलत खा भाग कर नागौर चला गया।

**द्वारकादास दधवाड़ियो–**

प्रसिद्ध कवि माधोदास दधवाडिया का पुत्र तथा जोधपुर के महाराजा अजीत-सिह का कृपा-पात्र और राज्य में प्रतिष्ठित मुसाहिब भी था। इसने पिता की भाति डिंगल के श्रेष्ठ कवियो मे स्थान प्राप्त किया था। इसने महाराजा अजीत-सिंह के जीवनकाल मे ही वि स १७७२ मे 'महाराजा अजीतसिंह री दवावैत' नामक ग्रथ की रचना की। इससे प्रसन्न होकर महाराजा ने इसको जैतारण तहसील का बासनी गाव प्रदान किया। इसकी अन्य फुटकर रचनाएँ भी प्राप्त होती हैं। यह जैसा कवि था वैसा ही वीर भी। यह अहमदाबाद के युद्ध मे महा-राजा अभयसिह के साथ था और वहा युद्ध मे बडी बहादुरी के साथ लडा और घायल हो कर बच गया।

**नाहर खान—**

यह बादशाह मुहम्मद शाह के विश्वासपात्र आदमियो मे से था। फर्रुख-सियर के समय मे यह साधारण व्यक्ति था। किन्तु परिश्रम के बल से यह दीवानगी के पद तक पहुँच गया था। ई स १७२१ मे यह सर्व प्रथम साभर का फौजदार बना कर भेजा गया था। इसके बाद ई स. १७२२ के अन्त मे साभर को फौजदारी के साथ ही अजमेर का दीवान नियुक्त कर दिया गया। भडारी खीवसी इसको साथ लेकर अजमेर गया। नाहर खा के साथ इसका भाई रुहेल्ला खा भी था। इन्होने अजमेर के निकट पहुँच कर राठौडो के डेरो के निकट ही अपना डेरा दिया। ये राठौडो को अपना मित्र समझते थे। दूसरे दिन ही राठौडो ने आक्रमण कर दोनो भाइयो को मार डाला और उनका बहुत-सा सामान लूट लिया।

**निकोसियर—**

यह औरगजेब का पौत्र और अकबर का पुत्र था और आगरे के किले मे कैद था। रफीउद्दौला की मृत्यु के बाद महाराजा अजीतसिंह और सैयद भाइयो की सहायता से दिल्ली मे मुहम्मद शाह बादशाह बना दिया गया। उस समय आगरे मे सेन नामक नागर ब्राह्मण ने निकोसियर को कैद से निकाल कर महाराजा जयसिह, राजा भीम हाडा, चूडमन जाट, छबीलेराम नागर आदि की सहायता से ई० सन् १७१६ मे आगरे मे बादशाह घोषित कर दिया और उसके नाम का सिक्का जारी किया। इसके कुछ दिन बाद हुसेनअली खा ने इसके विरुद्ध आगरे की तरफ प्रस्थान किया। वहाँ पहुँच कर उसने घेरा डाल कर मोर्चे लगाये और कुछ ही दिनो के बाद निकोसियर को पकड कर कैद कर लिया गया।

**निजामुल-मुल्क—**

यह बादशाह मुहम्मद शाह के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे प्रमुख था। ई० सन् १७२० मे बालापुर के निकट होने वाले युद्ध मे इसने अपनी वीरता का अच्छा परिचय दिया था, इसीसे इसको निजामुलमुल्क की उपाधि मिली। उस समय सैयद भाइयो का पतन आरम्भ हो गया था और उनके स्थान पर निजामुलमुल्क की धाक स्थापित हो गयी थी। वह दक्षिण के ६ सूबो का शासक बना दिया गया। वह बडा ही चालाक तथा उच्चकोटि का कूटनीतिज्ञ था। यह मरहठो मे फूट उत्पन्न करना चाहता था। ऐसे व्यक्ति की चालो को निष्फल बनाने की क्षमता बाजीराव पेशवा मे ही थी। जब महीपतराव को चौथ वसूल करने से मना कर दिया तब बाजीराव ने नये मुगल सम्राट से चौथ

वसूल करने का अधिकार प्राप्त कर लिया। इस प्रकार निजाम की सारी चाल विफल हो गई। बाद मे मराठा सरदारो को शाहू के विरुद्ध भडकाना शुरू किया पर इसमे भी निराश होना पडा। इसने धीरे-धीरे दक्षिण मे अपना राज्य स्थापित कर लिया।

**पिलु (पिलाजी)-**

यह मरहठो की सेना का सेनापति था और खाडेराव दाभाडे का प्रनिनिधि था। यह सोनगढ का शासक और भीलो एव कोलियो का मददगार था। इसने बडौदा और डमोई पर भी अपना अधिकार कर लिया था। खाडेराव की विधवा पत्नी उमाबाई ने चौथ उगाहने के लिए पीलाजी को नियुक्त किया। यह बडी भारी सेना लेकर चौथ उगाहने के लिए डाकोर नामक स्थान मे पहुँचा। यह सुन कर महाराजा अभयसिंह भी सेना के साथ उससे लडने के लिए चला किन्तु प्रकट रूप से छल-कपट करने मे प्रवीण व्यक्तियो को सन्देश देने के बहाने पीलाजी के पास भेजा और अवसर पाकर मारने की आज्ञा दी। इसी के अनुसार इंदा लखधीर ने डाकोर पहुँच कर पीलाजी को धोखे से मार डाला।

**फरखसेर (फर्रुखसियर)-**

बहादुरशाह के बाद उसका पुत्र मुईजुद्दीन जहादारशाह के नाम से दिल्ली के तख्त पर बैठा। इसके केवल ग्यारह माह के निन्दनीय शासन के बाद फर्रुख-सियर, जो बहादुरशाह के पुत्रो मे मुईजुद्दीन जहादारशाह के छोटे भाई अजीमुश्शान का पुत्र था तथा बहादुरशाह के शासनकाल मे बगाल का गवर्नर था, सैयद बन्धुओ की मदद से जहादारशाह की हत्या करवा कर दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। यह भी बडा अयोग्य निकला। इसमे न बुद्धि थी न चरित्र-बल। यह बडा भीरु तथा दुर्बल शासक था। दृढ सकल्प का इसमे सर्वथा अभाव था। यह सैयद बन्धुओ के परामर्श पर कार्य करता था और इन्ही के हाथ की कठपुतली हुआ था। राजपूतो, सिखो, मरहठो, जाटो और मुसलमानो के साथ भी इसका सम्बन्ध ठीक नही था। यहाँ तक कि कालान्तर मे सैयद बन्धुओ से भी इसका सबध खराब हो गया और वे एक दूसरे के शत्रु बन गये। फलस्वरूप मरहठो की सेना के साथ सैयद हुसेनअली का दिल्ली पर आक्रमण हुआ और फर्रुखसियर कैद कर लिया गया। ई० स० १७१९ मे उसकी हत्या करवा दी गई। इस प्रकार फर्रुखसियर की जीवनलीला समाप्त हुई।

**बखतसिंह (महाराजा)-**

यह महाराजा अजीतसिंह का पुत्र और महाराजा अभयसिंह का छोटा भाई था। इसका जन्म वि० स० १७६३ की भादो वदि ७ को हुआ था। वि० स०

१७८२ में महाराजा अभयसिंह ने इसको 'राजाधिराज' की पदवी देकर नागौर का स्वामी बना दिया। इसने मारवाड मे उत्पात करने वाले आनन्दसिंह, रायसिंह और किशोरसिंह आदि का दमन किया था। अपने भ्राता अभयसिंह को गुजरात अहमदाबाद की सूबेदारी मिलने पर सर बुलन्द खाँ के विरुद्ध २० हजार की सेना के साथ अहमदाबाद के युद्ध मे सम्मिलित हुआ और युद्ध मे अतुल शौर्य का परिचय दिया। यह बडौदा युद्ध मे महाराजा अभयसिंह के साथ था। इसके अलावा बीकानेर, मेडता, जयपुर आदि के अनेक युद्धो मे भाग लेकर इसने अपनी वीरता का परिचय दिया था। वि० स० १८०६ मे अपने भ्राता महाराज अभयसिह की मृत्यु के बाद वि० स० १८०८ मे अपने भतीजे महाराजा रामसिंह को हरा कर जोधपुर की गद्दी पर अधिकार कर लिया।

### बलू (वीरवर बलू चांपावत)

यह पाली ठाकुर गोपालदास का पुत्र था। इसके ८ पुत्र थे। भिन्न-भिन्न स्थानो पर आठों भाई जाति, मान-मर्यादा, स्वधर्म और स्वदेश-रक्षा के लिए युद्धो मे काम आये। राव अमरसिंह को देश-निकाला होने पर यह उनके साथ रहा। बाद मे नागौर और नागौर से बीकानेरनरेश कर्णसिह के पास आ गया। यहाँ भी दुष्ट पुरुषो के कारण टिक नही सका और उदयपुर चला गया। वहाँ से यह दिल्ली आ गया। बादशाह ने इसका खूब आदर किया और इसको पाच सौ घोडो का नायक बना दिया और वहा सुख से रहने लगा। कुछ समय बाद आगरे मे राव अमरसिंह के शव को लाने के लिए अपने ५०० सवारो को लेकर पहुँचा और अमरसिंह का शव लाकर हाडी रानी को दिया व उसे सती होने मे सहायता दी। इसी युद्ध मे यह काम आया।

### बुधसिंह (राव बुधसिंह)

यह बूदी के राव अनिरुद्धसिंह का ज्येष्ठ पुत्र था। लाहौर मे अनिरुद्धसिंह की मृत्यु हो जाने के बाद बुधसिंह को बूदी का राज्य सिंहासन प्राप्त हुआ। बुधसिंह कुछ दिन बादशाह औरगजेब के बीमार पडने पर औरगाबाद चला गया। बादशाह औरगजेब की इच्छानुसार इसने बहादुरशाह को बादशाह बनाने का विचार कर के उसका पक्ष लिया। राव बुधसिह शाह आलम की प्रधान सेना का नेता था। धौलपुर के युद्ध मे इसने अतुलनीय साहस और शूरवीरता का परिचय दिया। उसी के फलस्वरूप बादशाह ने इसको रावराजा की पदवी के साथ अपना परम मित्र बना लिया। अन्त तक यह मित्रता अचल रही। बादशाह बहादुर शाह की मृत्यु के बाद आमेर का महाराजा जयसिह, जोधपुर का

महाराजा अजीतसिंह और सैयद वन्धुओ की चाल से वुधसिंह को गद्दी से उतारने का प्रयत्न रहा और वे सफल हुए।

वीरविनोद के अनुसार वुधसिंह का वि० स० १७९६ वैशाख कृष्णा तृतिया को वेगू से तीन कोस की दूरी पर वाघपुरा मे देहावसान हो गया।

**वुरहानुलमुल्क–**

यह बादशाह मुहम्मद शाह के खास व्यक्तियो मे था और शाही दरवार का खास दरोगा था। यह वडा वीर, नीति-कुशल व्यक्ति था। वीरम गांव (झालावाड) के युद्ध मे यह शाही सेना का प्रधान सेनापति था। वीरम गाव का परगना खालसा होने पर वुरहानुल-मुल्क की सिफारिश से ही यह परगना इसके प्रीति-भाजन वहराम खाँ के नाम कर दिया गया। यह अनेको युद्धो मे भाग ले चुका था।

**भाऊ कूंपावत–**

यह कान्हसिंह (किसनसिंह) का पुत्र और गजसिंहपुरा के ठाकुर मुकनसिंह का छोटा भाई था। कूपावत भावसिंह राव अमरसिंह राठोड के विश्वासपात्र सेवकों मे था। राव अमरसिंह की मृत्यु के वाद इसके सैनिको ने बादशाही सेना से मुकावला किया, जिसमे मुख्य तीन थे—

(१) कूपावत राठोड भावसिंह। (२) चापावत वलू राठोड। (३) व्यास गिरधर पोहकरणा ब्राह्मण जिनमे से वलू राठोड और व्यास गिरधर तो काम आ गये और कूँपावत भावसिंह घायल होकर वच गया। अमरसिंह का सारा सामान इसके पास रहता था। इसने सारा सामान राव अमरसिंह के छोटे वेटे ईसरसिंह के पास पहुँचा दिया। इसी भावसिंह का पुत्र इन्द्रभाण वि० स० १७३७ मे अजमेर से ७ मील दूर पुष्कर मे तहवरखान की सेना के साथ राठोडो के युद्ध मे वीर गति को प्राप्त हुआ।

**भीम सीसोदिया–**

यह महाराणा प्रताप का पोता था। इसके पिता राणा अमरसिंह के हाथ से उदयपुर निकल जाने के कारण चावड के अभेद्य पहाडो मे परिवार सहित यह विपत्ति के दिन विता रहा था। एक दिन राणा ने शत्रु को हाथ वताने की वात भीम से कही। सुनते ही आज्ञाकारी भीम उसी दिन अपने दो हजार सवारो को लेकर ठीक अर्द्ध रात्रि के समय शत्रु सेना को चीरता हुआ सदर ड्योढी पर जा पहुँचा और ऐसी तलवार वजाई कि सैकडो तुर्कों को घास की तरह काट डाला। जहाँ शाही थाने लगते वही पर सग्राम करता। जव राणा की

बादशाह से सधि हो गई तब भीम शाही दरबार मे रहने लगा। जहाँगीर ने खुश होकर इसको टोडे का परगना जागीर मे देकर 'राजा' की उपाधि दी। भीम शाहजादा खुर्रम के साथ रहने लगा। खुर्रम से बादशाह के नाराज हो जाने पर भीम खुर्रम की सेना के हरावल मे रहता था। वि० स० १६८१ मे हाजीपुर मे खुर्रम और परवेज के बीच भयकर युद्ध हुआ। इसमे भीम शत्रु दल को चीरता हुआ परवेज के हाथी तक पहुँच गया। परवेज की सेना मे भगदड़-सी मच गई, किन्तु उसी समय जोधपुर नरेश महाराजा गजसिह से इसका युद्ध हुआ और यह वीर गति को प्राप्त हुआ।

**महासिह चांपावत (माहवसिह)–**

यह पोकरण का ठाकुर था। अहमदाबाद के युद्ध के समय वि० स० १७८७ आश्विन सुदि ७ को महाराजा अभयसिह ने अहमदाबाद तथा भद्र के किले पर पाँच मोर्चे लगाए। उनमे से एक मोर्चे पर अभयकरण (कर्णोत) चापावत महासिह (पोकरण का) तथा भागीरथदास आदि थे। इसने इस मोर्चे पर महान् वीरता का परिचय दिया और शत्रुसेना के छक्के छुडा दिये। यह महान् वीर, साहसी और रण-कुशल व्यक्ति था।

**मुकनदान दधवाड़ियौ–**

'सूरजप्रकास' के रचयिता के कथनानुसार यह केसोदास दधवाडिया का पुत्र था। यह महाराजा अभयसिहजी का कृपा-पात्र था। यह कवि भी था और महान् वीर भी। सर बुलन्द खा के साथ जो अहमदाबाद का युद्ध हुआ उसमे मुकनदान महाराजा अभयसिह के साथ था। इसने उस युद्ध मे अपनी महान् वीरता का परिचय दिया जिससे प्रसन्न होकर महाराजा अभयसिहजी ने इसको बिलाडा तहसील का कूपडावास गाव दिया जो अब भी इसके वशजो के अधिकार मे है।

**मुजफर खां–**

यह पराक्रमी, नीतिज्ञ और रणकुशल व्यक्ति था। मुजफ्फर खाँ अनेको बार युद्धो मे अपनी वीरता का परिचय दे चुका था। यह बारह हजारी मनसबदार था। बादशाह ने इसके सामने सर बुलन्द के विरुद्ध जाने का प्रस्ताव रक्खा किन्तु इसने अस्वीकार कर दिया। मुजफ्फर खाँ अजमेर का शासक भी रह चुका था। यह पहले तो जोधपुर के महाराजा अभयसिह से नाराज सा रहता था किन्तु फिर महाराजा की वीरता व रण-कुशलता के कारण मित्र बन गया था।

**मुजफ्फरअली खां–**

यह बादशाह मुहम्मदशाह के योग्य सेनापतियो मे था। जब महाराजा अजीतसिंह से अजमेर का सूबा हटाया गया तब सर्व प्रथम यही सूबेदार बनाया गया। उसने अजमेर आने का विचार किया किन्तु धन की कमी के कारण नही आ मका। इसको छ लाख रुपये मिलने की आज्ञा हुई किन्तु उम समय दो लाख से अधिक नही मिल सके। पर इसने उतने ही मे २०००० सैनिक एकत्रित कर लिये। इसी मे रुपया समाप्त हो गया। महाराजा अजीतसिंह ने अजमेर खाली नही किया और अपने ज्येष्ठ पुत्र अभयसिंह को मुजफ्फरअली खा का सामना करने के लिए भेजा। इसी समय ई० स० १७२१ मे दिल्ली से यह आज्ञा पहुँची कि यह मनोहरपुर से आगे न बढे। यह यहाँ तीन मास पडा रहा। रुपया न मिलने से सिपाही भाग खडे हुए। मुजफ्फरअली खा आवेर पहुँच कर सारे शाही फरमान व खिलअत आदि लौटा कर फकीर हो गया।

**मुरशिदकुली खां–**

यह बडा वीर, साहसी तथा नीति-कुशल व्यक्ति था। यह शाही सेना का सेनापति तथा लाहौर का सूबेदार रह चुका था। बादशाह मुहम्मदशाह ने इसके सामने सर बुलन्द के विरुद्ध अहमदाबाद पर आक्रमण करने का प्रस्ताव रक्खा, किन्तु इसकी हिम्मत नही हुई।

**मुराद (शाहजादा)–**

यह शाहजहाँ का सबसे छोटा पुत्र था। इसका जन्म ई० स० १६२४ मे हुआ। यह गुजरात तथा मालवे का सूबेदार रहा। यह बडा वीर तथा साहसी था। इसमे सिंहासन प्राप्त करने की इच्छा तो थी किन्तु उसको पूर्ण करने के लिये कूटनीतिज्ञता तथा सतर्कता न थी। इमने भी उत्ताराधिकार के लिये प्रयत्न प्रारम्भ किया और ई० स० १६५७ मे अहमदाबाद मे अपने आपको सम्राट घोपित कर दिया। उस समय औरगजेब बडी सावधानी तथा सतर्कता से कार्य कर रहा था। उसने मुराद के पास एक पत्र भेज कर उसको अपनी ओर मिला लिया। उसने लिखा कि पजाव, अफगानिस्तान, काश्मीर तथा सिन्ध के प्रान्त तुम्हे मिलेगे और शेप पर औरगजेब शासन करेगा। धरमत के युद्ध ने मुराद और औरगजेब की शक्ति को दृढ बना दिया। औरगजेब ने मुराद को बादशाह बनाने का लालच दिया। सामूगढ के युद्ध के उपरान्त मुराद बादशाह घोपित कर दिया गया। किन्तु ई० सन् १६६० मे मुराद को एक दावत मे शराब पिला कर कैद कर लिया और ग्वालियर के दुर्ग मे भेज दिया जहा उसका वध करवा दिया।

**मुहम्मदशाह (बादशाह)—**

इसने १७१९ से १७४८ ई० तक शासन का कार्य किया। यह सैयद भाइयों और महाराजा अजीतसिंह की सहायता से गद्दी पर बैठा। इसका पूर्व का नाम रोशन अख्तर था। इसे मुगलसाम्राज्य का विनाश अपनी आखो से देखना पडा। सिंहासन पर बैठते ही इसने षडयंत्र रच कर सैयद भाइयो का वध करवा दिया। निजामुलमुल्क जैसे योग्य दीवान को पद से हटा कर अयोग्य व्यक्तियो को अपना दीवान बनाया। यह अनुभवशून्य, विलासप्रिय तथा निकम्मा शासक था। यह अपने योग्य तथा अनुभवी सेवको के परामर्श की उपेक्षा कर चाटुकारो तथा चापलूसो की बातो का विश्वास करता था। इसके समय मे शासन का कार्य इस प्रकार चलने लगा मानो यह बच्चों का खेल हो। साधारण जनता भूखो मरने लगी। इसके कुशासन से सूबो के गवर्नर अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने लगे। मुगलसाम्राज्य पर चारो ओर से विपत्तियो के बादल उमडने लगे। विदेशी आक्रमणो की आँधियाँ चलने लगी। मुगलसाम्राज्य का दीपक बुझने लगा। ई० स० १७४८ मे मुहम्मदशाह की मृत्यु हो गई।

**मोकल (महाराणा)—**

यह वि० स० १४५४ मे गद्दी पर बैठाया गया। कुछ समय तक राज्य का प्रबन्ध चूडा करता रहा किन्तु चूडा के मेवाड से चले जाने पर राज्य का समस्त कार्य राव रिडमल (रणमल्ल) राठौड को सौंप दिया गया। रावजी ने वहाँ राठौडो को सभी उच्च पद प्रदान कर दिये। बालिग होने पर राज्य का कार्य मोकल ने अपने हाथ मे लिया और जहाजपुर (मेवाड) के पास फीरोजशाह से युद्ध हुआ जिसमे फिरोजशाह पराजित होकर भागना पडा यह महाराणा वि० स० १४९० मे महाराणा लाखा के पासवानिये पुत्रो चाचा और मेरा के द्वारा धोखे से मारा गया।

**मोहकमसिंह—**

यह नागौर के राव इन्द्रसिंह का पुत्र था। यह बादशाह फर्रुखसियर के पास उसके सिंहासनारूढ होने पर दिल्ली गया और महाराजा अजीतसिंह के विरुद्ध उसको भडकाया। इसने जोधपुर का राज्य प्राप्त करने के लिये ही यह प्रयत्न किया था। इसकी सूचना दिल्ली रहने वाले जोधपुर के वकीलो ने महाराजा को दी। महाराजा ने अपने विश्वासपात्र सामन्तो को भेष बदलवा कर मोहकमसिंह को मारने के लिये दिल्ली भेजा। वे दिल्ली पहुँचे और अवसर की प्रतीक्षा करने लगे। एक दिन सायकाल को मोहकमसिंह किसी नवाब के यहां

से मातमपुर्सी कर के लौट रहा था तो रास्ते मे ही उसे मार डाला। यह घटना वि० स० १७७० भाद्रपद सुदि ५ की है।

**मोहम्मद खां बगस–**

यह बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र सेवको मे था। यह मालवा का गवर्नर था। यह योग्य व्यक्ति था और कुशल राजनीतिज्ञ था। निजाम के लिखने के अनुसार यह नरबदा के किनारे अपने सेनापति के साथ मरहठो का मुकाबिला करने के लिए अपनी सेना सहित आ डटा। जब महाराजा अजीतसिंह ने आमेर पर अधिकार कर लिया और शाही शान-शौकत से रहने लगा तो बादशाह मुहम्मदशाह ने इरादतमद खां को शाही फौज देकर महाराजा का दमन करने भेजा। उसके साथ कई अमीरो को भी भेजा जिसमे मोहम्मद खा बगस भी शामिल था। इसने अहमदाबाद के युद्ध मे भी अपनी सेना सहित महाराजा अभयसिंह के साथ भाग लिया था।

**रघुनाथसिंह (भडारी)–**

यह महाराजा अजीतसिंह के शासनकाल मे एक महाशक्तिशाली पुरुष हो गया है। यह दीवानगी के उच्च पद पर प्रतिष्ठित था। इसमे शासन-कुशलता और रण-चातुर्य का अद्भुत सयोग था। इसने गुजरात मे महाराजा की ओर से अनेक युद्धो मे भाग लिया था और बडी कुशलता से सेना का सचालन किया था। महाराजा अजीतसिह ने इसकी सेवाओ से प्रसन्न होकर इसे कई प्रमाणपत्र प्रदान किये थे। इसके अतिरिक्त इसने शाही दरबार मे महाराजा की ओर से बडे-बडे कार्य किये। महाराजा अजीतसिंह को इसकी योग्यता पर बडा विश्वास था। इसने महाराजा की अनुपस्थिति मे कुछ समय तक मारवाड का शासन भी किया था जो निम्न दोहे से प्रकट होता है—

करोडां द्रव्य लुटायो, हौदा ऊपर हाथ।
अजौ दिली रौ पातसा, राजा तू रघुनाथ॥

**रतनसी भण्डारी–**

यह महाराजा अभयसिंह के विश्वासपात्र सेनानायको मे था। यह बडा वीर, राजनीतिज्ञ, व्यवहारकुशल और कर्तव्यपरायण सेनापति था। मारवाड राज्य के हित के लिये इसने बडे-बडे कार्य किये। वि० स० १७९३ मे महाराजा अभयसिंह रतनसी भडारी को गुजरात की गवर्नरी का कार्यभार सौंप कर दिल्ली चले गये थे। तब इसने बडी योग्यता के साथ इस कार्य को किया। इसको अनेक युद्ध करने पडे थे। देश मे चारो ओर अशान्ति छाई हुई थी।

मरहठों का जोर दिन पर दिन बढता जा रहा था। ऐसी विकट परिस्थिति मे सफलता प्राप्त करना रतनसिंह जैसे चतुर और वीर योद्धा ही का काम था।

**रफीउद्दाराजात–**

बादशाह फर्रुखसियर की हत्या करवा देने के बाद महाराजा अजीतसिंह और सैयद भाइयो की सहायता से इसको दिल्ली के सिहासन पर बैठा दिया गया। यह शाही खानदान का साधारण व्यक्ति था और सैयद भाइयो के हाथ की कठपुतली बना हुआ था। सिहासनारूढ होने से पूर्व ही राजयक्ष्मा रोग से पीडित था। ई० स० १७१६ मे केवल दो मास शासन करने के बाद ही यह गद्दी से उतार दिया गया और इसके एक सप्ताह बाद ही इसका देहान्त हो गया।

**रफी-उद-दौला–**

यह रफी-उद-दाराजात का बडा भाई था। उसको सिंहासन से उतार देने के बाद सैयद भाइयो और महाराजा अजीतसिंह की सलाह से रफी-उद-दौला को शाहजहाँ द्वितीय के नाम से सिंहासन पर बैठा दिया गया। यह नाम मात्र का ही बादशाह था। राज्य की वास्तविक सत्ता सैयद भाइयो के हाथ मे थी। सिंहासन पर बैठने के कुछ ही दिन बाद पेचिश की बीमारी से इसका भी परलोकवास हो गया परन्तु सैयद भाइयो की मिलावट से सम्राट की मृत्यु को नौ दिनो तक गुप्त रखा गया।

**राजसिंह बारहठ–**

यह रूपावास का जागीरदार था। यह महाराजा गजसिंह की सेवा मे रहता था। वि० स० १६७४ मे जिस समय जालोर का किला बिहारी पठानो से फतह किया था उस समय यह भी साथ था। इसकी वीरता से प्रसन्न होकर महाराजा ने इसको गाव रूपावास प्रदान किया था। इसके बाद नागौर के राव अमरसिंह ने भी एक गाव, जिसका नाम वाइली था, अपनी जागीर नागौर मे से दिया था परन्तु यह गाव थोडे दिन तक ही रहा। बारहठ राजसिंह के चार बेटे थे—(१) नाराजी (२) भीमसिंह (३) मुकददास और (४) विजैराम।

**रायसिह–**

यह जोधपुर नरेश राव चन्द्रसेन का ज्येष्ठ पुत्र था। इसका जन्म वि० स० १६१४ की भादो सुदि १३ (ई० स० १५५७ की ६ सितम्बर) को हुआ था। पिता की मृत्यु के समय यह काबुल मे था। इसके अनुज उग्रसेन और आसकरण चौसर खेलते हुए मारे गए, तब सरदारो ने इसको पैतृक राज्य

सम्भालने के लिए लिखा। राव रायसिह बादशाह की आज्ञा पाकर वि० स० १६३६ (ई० स० १५८२) मे सोजत पहुँच कर गद्दी पर बैठा। साल भर बाद वि० स० १६४० मे बादशाह अकबर की आज्ञा से सिरोही के राव सुरतान पर आक्रमण कर दिया। सुरतान भाग कर आबू के पहाडो मे चला गया, परन्तु कुछ दिन के बाद शाही सेना के गुजरात की ओर चले जाने पर राव सुरतान ने बची हुई सेना पर रात को अचानक आक्रमण कर दिया और निशस्त्र राव रायसिह चारो ओर से घिर जाने के कारण युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुआ। इसका बदला सवाई राजा सूरसिह ने गुजरात की ओर जाते हुए सिरोही के गावो को लूट कर और सुरतान से बहुत-सा रुपया वसूल कर के लिया।

**रुस्तमअली खां–**

यह बादशाह मुहम्मदशाह का छोटा भाई था और बडा ही वीर और नीतिज्ञ था। यह सूरत का शासक तथा बडौदा व पीपलाद का फौजदार था। हमीद खा के बागी होने पर उसको काबू मे लाने के लिए सेना तैयार करने का बादशाह ने हुक्म दिया। हुक्म पाते ही रुस्तमअली खा ने १५००० घुड सवार और २०००० अन्य सेना तैयार की। उसी समय मरहठो का हमला गुजरात पर हो गया। पिलाजी हमीद खा से मिल गया। किन्तु रुस्तमअली खा ने ४००० पैदल सेना के साथ आक्रमण कर दिया। हमीद खा बुरी तरह से हारा। उसकी सारी जायदाद रुस्तमअली खा ने अपने कब्जे मे करली। शान्ति स्थापित करने व शहर की देखभाल हेतु एक टुकडी मुहम्मद बाकिर के आधिपत्य मे लगा दी। किन्तु मरहठो की मदद से हमीद खा ने पुन रुस्तमअली खा को घेर लिया। यही बसू गाव के पास लडता हुआ यह मारा गया। रुस्तमअली खा का सिर अहमदाबाद ले जाया गया और धड बसु गाव में ही जला दिया गया।

**रुस्तम जग–**

यह दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह के उच्चकोटि के उमरावो मे से एक था। जिस समय महाराजा अभयसिह को अहमदाबाद की सूबेदारी मिली थी उस समय यह शाही अफसर था और वही बादशाह की सभा मे मौजूद था। इससे भी बादशाह ने सर बुलन्द के विरुद्ध अहमदाबाद जाने का अनुरोध किया था पर इसकी हिम्मत नही हुई और इसने उस बात को टाल दिया। तब महाराजा अभयसिह ने सर बुलन्द को बादशाह के चरणो मे झुकाने का प्रण कर वहा से प्रस्थान किया।

**रोशनउद्दौला–**

यह एक शाही अफसर था। कारणवश महाराजा अभयसिंह पर इसकी नाराजगी हो गई थी, जिससे उसने महाराजा को मारने का निश्चय किया, किन्तु बादशाह ने महाराजा को बुला कर समझा दिया था। यह वीर, बुद्धिमान, चतुर और राजनीतिज्ञ था। अहमदाबाद की सूबेदारी के समय हैदर-कुली खाँ के मनमाने आचरण से बादशाह नाराज हो गया था। उस समय रोशनउद्दौला ने बादशाह को समझा कर हैदरकुली खाँ को माफी दिलवा दी और उसे अजमेर की सूबेदारी तथा साभर की फौजदारी दिलवा दी।

**रोहिल्ला खाँ–**

यह अजमेर के नये सूबेदार नाहर खा का भाई था। नाहर खा बादशाह मुहम्मदशाह की सेना की एक टुकडी का फौजदार था। यह महाराजा अजीत-सिंह के विरुद्ध फौज लेकर अजमेर पर आया था। किन्तु महाराजा के दीवान भडारी खीवसी की चतुराई से इसने राठौडो के डेरो के पास ही अपना डेरा लगाया जहाँ अचानक राठौडो ने आक्रमण कर इसे ई० स० १७२३ के जनवरी मास मे नाहर खां के साथ मार डाला।

**विजयराज (भण्डारी)–**

यह भण्डारी खेतसी का पुत्र था। यह उन ओसवाल मुत्सद्दियो मे विशेष स्थान रखता है जिन्होने जोधपुर राज्य के इतिहास को अपनी सेवाओ द्वारा गौरवान्वित किया। पहले-पहल यह जोधपुर नरेश महाराजा अजीतसिंह द्वारा मेडते का हाकिम नियुक्त किया गया। दिल्ली के उत्तराधिकारयुद्ध मे इसने महाराजा की आज्ञा से जोधपुर से ससैन्य जाकर शाहजादे फर्रुखसियर का पक्ष लिया था।

बादशाह मुहम्मदशाह ने महाराजा अभयसिंह को गुजरात का सूबेदार बना कर सर बुलन्द का दमन करने के लिए भेजा। महाराजा अपने दल-बल सहित जोधपुर से रवाना हुआ। उस समय महाराजा की फौज के तीन भाग किए हुए थे। एक महाराजा अभयसिंह के अधिकार मे, दूसरा महाराजा के भाई राजा-धिराज बखतसिंहजी के अधिकार मे और तीसरा भण्डारी विजयराज के अधि-कार मे था। इसने अहमदाबाद के युद्ध मे अपनी बुद्धि और रणकुशलता का अच्छा परिचय दिया। यह हमेशा महाराजा का कृपा-पात्र रहा।

**विजयसिंह–**

यह आबेर के महाराजा वि० [illegible] तीय पुत्र और आमेरपति सवाई

जयसिंह का सौतेला भाई था। महाराजा सवाई जयसिंह ने अत्यन्त उपजाऊ बसवा का प्रदेश अपने भाई विजयसिंह को दे दिया था। किन्तु सौतिया डाह के कारण विजयसिंह की माता अपने पुत्र को राजा बनाना चाहती थी, अत उसने बादशाह के प्रधान मत्री कमरुद्दीन खाँ को अपनी ओर मिला लिया। इसने बादशाह को समझा-बुझा कर आमेर की सनद विजयसिंह के नाम लिखवा दी। परन्तु खान दौरान के द्वारा यह सूचना जयसिंह को मिल गई। इस पर सवाई जयसिंह ने अपनी चतुराई से विजयसिंह को आमेर के किले मे बुला कर कैद कर लिया।

**विष्णुसिंह (महाराजा)–**

राजा रामसिंह की मृत्यु के पश्चात् उसका पौत्र विष्णुसिंह आमेर की गद्दी पर बैठा। इसके पिता कृष्णसिंह की मृत्यु दक्षिण के युद्ध मे पहले ही हो चुकी थी। इसका जन्म वि० स० १७२८ मे और राज्याभिषेक वि० स० १७४६ मे हुआ था। उस समय यह अपने दादा रामसिंह के साथ काबुल में था। वहाँ से यह बादशाह की आज्ञा पर अपने देश को लौट आया। कुछ दिन यहाँ रहने के बाद यह पुन वि० स० १७५५ को शाहजादा मुअज्जम के साथ काबुल गया। वहाँ पहुँचने पर पठानो के साथ भयकर युद्ध हुआ। इसने युद्ध मे बडी बहादुरी दिखलाई। वि० स० १७५६ मे काबुल में ही इसका देहावसान हो गया। इसके दो पुत्र थे—बडा जयसिंह और छोटा विजयसिंह।

**वीकमसी–**

यह राव सीहा का पौत्र और अज का पुत्र था। यह अपने पिता के साथ द्वारिका की ओर गया। वहाँ का स्वामी चावडा विक्रमसेन था। ग्रथ सूरज-प्रकास के अनुसार जलदेवी ने वीकमसी को स्वप्न दिया कि मैं यहाँ की भूमि तुझे देती हूँ, तूं चावडा विक्रमसेन का सिर काट कर मुझे चढा। इसके अनुसार वीकमसी ने चावड़ा राजा वीक्रमसेन का सिर काट कर देवी को चढा दिया और उस प्रदेश पर अपना अधिकार कर लिया। उसका सिर काटने के कारण इसके वशज वाढेल राठौड कहलाये।

**सआदत खाँ–**

यह बादशाह मुहम्मद शाह के समय मे गोलन्दाज दल का सेनापति था। महाराजा अभयसिंह ने जिस समय सर बुलन्द को हरा कर बादशाह के चरणो मे झुकाने की प्रतिज्ञा की थी उस समय यह सआदत खा सभा-स्थान पर मौजूद था। इसने ही महाराजा को अहमदाबाद की चढाई के समय शाही

तोपखाना से तोपे और गोलन्दाज दिये थे। यही बाद मे अवध का सूबेदार बना कर भेज दिया गया। सआदत खाँ ने मुहम्मदशाह के समय मे ही पूर्व मे अपनी स्वतन्त्र सल्तनत कायम कर ली थी और अवध का नबाब बन गया।

**सफदर जग–**

नादिरशाह के आक्रमण के बाद अमीरों तथा सरदारो में पारस्परिक सघर्ष आरभ हो गया था। उस समय बुरहानुलमुल्क बादशाह के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे था। यह महाराजा अभयसिंह से भयभीत रहता था और उसकी खिलाफत भी करता था। यह बुरहानुलमुल्क नादिरशाह के आक्रमण के समय मारा गया और इसके स्थान पर इसका पुत्र सफदर जग अवध का सूबेदार घोषित कर दिया गया। यह बडा योग्य व्यक्ति था। बाद मे यही सफदर जग अवध का स्वतन्त्र शासक बन गया और मुहम्मदशाह की आज्ञाओ का उल्लघन करने लगा।

**सम-साम-उद्दौला (शम्सामुद्दौला)–**

यह बादशाह के विशेष विश्वासपात्रो में था। यही राज्य का मीरबक्सी था जो कि समस्त राजकीय कर्मचारियो और सैनिको को वेतन बाटता था। यह स्वय भी बड़ा ही वीर, नीतिकुशल व कट्टर मुसलमान था। जोधपुर के महाराजा अभयसिंह से उसकी वीरता के कारण मित्रता रखता था। जिस समय महाराजा ने सर बुलन्द के विरुद्ध पान का बीड़ा उठाया उस समय बादशाह की आज्ञा के अनुसार जो रकम महाराजा को देनी निश्चित हुई थी वह अठारह लाख रुपये इसी सम-साम-उद्दौला द्वारा दिये गये थे। यह महाराजा की प्रतिज्ञा के समय सभा-स्थान पर मौजूद था।

**सर बुलन्द खाँ–**

यह बादशाह मुहम्मद शाह के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे था। इसकी वीरता से प्रसन्न होकर बादशाह ने इसे मुबारिजुमुल्क की उपाधि दी और उसी समय गुजरात (अहमदाबाद) की सूबेदारी निजामुलमुल्क से हटा कर सर बुलन्द खाँ के नाम लिख दी। उस समय निजामुलमुल्क का चाचा हमीद खाँ सहायक के रूप मे अहमदाबाद मे कार्य करता था। सर बुलन्द वीर, राजनीतिज्ञ और चतुर व्यक्ति था। कुछ समय के बाद यह अहमदाबाद का स्वतन्त्र शासक बन बैठा और धन एकत्रित करने के लिय मनमाना अत्याचार करने लगा जिसकी खबर फरियाद के रूप मे बादशाह के पास पहुँची। इस पर बादशाह ने अहमदाबाद का सूबा सर बुलन्द से हटा कर महाराजा अभयसिंह को दे

दिया। महाराजा अपने दल-बल सहित अहमदाबाद पहुँचा। घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध मे सर बुलन्द ने अपनी पराजय का अनुमान लगा कर आत्म-समर्पण कर दिया और आगरे की ओर रवाना हो गया। गुजरात से जाने के साथ ही इसका जगत मे नाम लुप्त हो गया। यह चुस्त और साहसी भी था किन्तु उसे हमेशा अपने मे कमी महसूस होती थी। वह खर्चे के मामले मे बहुत लापरवाह तथा अधिक खर्चीला था। इसीलिये दिल्ली पहुँचने पर इसे अपने कर्जदाताओ से बचने के लिये मकान की चहारदीवारी मे ही बन्द रहना पडा। इसकी मृत्यु १९ जनवरी १७४७ को ६९ वर्ष की आयु में हो गई।

**सलावत खाँ**

यह बादशाह शाहजहाँ का प्रमुख दरबारी था और बादशाह के विश्वास-पात्र व्यक्तियो मे से था। यह नागौर के राव अमरसिंह राठौड से द्वेष रखता था। इसने राव अमरसिंह को आम दरबार मे 'गवार' कहा था। अमरसिंह जैसे स्वाभिमानी और सत्यप्रिय राठौड को यह शब्द अप्रिय लगा जिससे उसने तत्क्षण ही 'सलावत' पर कटार का वार कर मार डाला।

**साहजहाँ (शाहजहाँ)-**

यह बादशाह जहांगीर के पुत्रो मे सब से अधिक बुद्धिमान, चतुर और योग्य था। इसका पितामह सम्राट अकबर महान् इसको सब से अधिक प्यार करता था तथा सदा अपने पास रखता था। उत्तराधिकार के लिये इसको भी अपने भाइयो से सघर्ष करना पडा था।

शाहजहा ६ फरवरी १६२८ ई० में आगरे में अबुलमुजफ्फर शिहाबउद्दीन मुहम्मदसाहिब-ए-किरान शाहजहा बादशाह गाजी के नाम से सिंहासनारूढ हुआ।

इसके समय में पूर्ण शान्ति थी। कई इतिहासकार इसके समय को मुगल साम्राज्य का स्वर्णकाल मानते हैं। शाहजहाँ को इमारतें बनवाने का बहुत ही शौक था। इसने कई सुन्दर इमारते बनवाईं जिनमे ताजमहल जगत-विख्यात है। यह अपनी बेगम मुमताजमहल से बहुत प्रेम करता था और उसी की स्मृति में इसने ताजमहल बनवाया।

शाहजहाँ को अपने अंतिम समय में बहुत कष्ट झेलना पडा। इसके पुत्रो में उत्तराधिकार के लिये सग्राम छिड गया। यह अपने बडे पुत्र दारा को सम्राट बनाना चाहता था। दारा उस समय दिल्ली में ही था। इसका दूसरा पुत्र शूजा बगाल का गवर्नर था, तीसरा औरगजेब दक्षिण में और चौथा मुराद गुजरात

में गवर्नर था। इन सबने अपने को अलग अलग सम्राट घोषित कर दिया। औरंगजेब ने चालाकी से मुराद को फुसला कर अपनी तरफ मिला लिया। बादशाह ने शुजा को रोकने के लिये जयपुर नरेश मिर्जा राजा जयसिंह को भेजा तथा औरगजेब और मुराद दोनो का सामना करने के लिए जोधपुर नरेश महाराजा जसवन्तसिंह (प्रथम) को भेजा। उज्जैन के पास धरमत नामक स्थान पर जसवन्तसिंह और दोनो शाहजादो मे युद्ध हुआ। शाही फौज के सेनापति कासिम खां ने, जो औरगजेब को चाहता था, महाराजा को धोका दिया। इस प्रकार विजयी औरगजेब आगे बढा और उसने दारा को परास्त कर के शाहजहा को अपने महल मे कैद कर दिया। औरगजेब अपने तीनो भाइयो का खातमा कर के दिल्ली के तख्त पर बैठा। शाहजहा को साढे सात वर्ष तक कारागार मे कठोर यातनाए सहनी पडी। बुढापे मे उसकी पुत्री जहानआरा ने उस की सेवा करके उसके भग्न हृदय को शान्त्वना दी। अन्त मे २२ जनवरी १६६६ ई० को शाहजहा की जीवन-लीला समाप्त हो गई और वह अपने पुत्र के बधनों से मुक्त हो गया। शाहजहाँ को मुमताजमहल के पार्श्व मे ताजमहल मे दफनाया गया।

**शाहू**

-यह महाराष्ट्र के निर्माणकर्ता वीर शिवाजी का पोता व शम्भाजी का पुत्र था। इसका शासनकाल ई० सन् १७०८ से ४६ तक रहा। शाहू अपनी माता तथा अन्य सम्बन्धियो के साथ १६८६ ई० मे कैद कर लिया गया। मई सन् १७०७ मे आजम के द्वारा मुक्त कर दिया गया। अब शाहू अपने पितामह के राज्य पर मुगल सम्राट के सामन्त के रूप मे शासन करने लगा। शाहू के महाराष्ट्र मे प्रवेश करते ही बहुत से मरहठे सरदार इससे आ मिले किन्तु ताराबाई ने विरोध किया। शाहू के व्यक्तित्व मे एक विचित्र आकर्षण था। इसका स्वभाव कोमल तथा दयालु था। इसमे उच्चकोटि की आचार-व्यवहार की सभ्यता थी। शाहू ने सन् १७०८ मे ताराबाई की सेना को पराजित कर सतारा पर अपना अधिकार कर लिया। इसने ४१ वर्ष तक शासन किया और पेशवाओ के नेतृत्व मे मरहठा साम्राज्य की द्रुतगति से अभिवृद्धि हुई। अत शाहू की गणना महाराष्ट्र के महान् शासको मे होती है। सन् १७४६ मे शाहू की मृत्यु हो गई और सारी मराठा शक्ति पेशवा के हाथ मे आ गई।

**सुजात खां (शुजात खां)**

यह गुजरात के सूबेदार शेख मुहम्मदशाह फारूखी के प्रमुख अधिकारी 'काजिमवग' का पुत्र था और बड़ा वीर तथा नीतिज्ञ था। ई० सन् १७२० मे

हैदरकुली खा गुजरात का शासन सुजात खा को सौप कर चला गया था। उसके स्थान पर निजाम स्वय गुजरात का सूवेदार वन गया ग्रौर हमीद खा को गुजरात मे ग्रपना प्रतिनिधि नियुक्त कर दिया किन्तु सुजात खा ने शाही दरबार मे हमीद खा का पक्ष कमजोर देखा तो उस पर चढाई कर दी ग्रौर ग्रपनी सेना को ग्रलग-ग्रलग टुकडियो मे विभक्त कर दिया। जव वे शहर के निकट पहुँचे तो विखरी हुई टुकडियों पर मरहठो ने ग्राक्रमण कर दिया जिससे सुजात खा की सेना तितर-वितर हो गई। सुजात खा ने एक तरफ ग्रपना मोर्चा लिया किन्तु हमीद खा मौका पाकर ऊपर ग्रा धमका ग्रौर सुजात खा पर तीरो ग्रौर भालो से वार करने लगा। इस प्रकार सुजात खा को मार डाला गया।

**सुरतांन (सिरोही के राव सुरतान)–**

यह राव लाखा का प्रपौत्र तथा भाण का पुत्र था। राव मानसिंह के बाद सिरोही की गद्दी पर बैठा, किन्तु कुल ग्रधिकार वीजा देवडा के हाथ मे था। इसने सुरतान के काका सूजा रणधीरोत को मरवा डाला। बीजा स्वय सिरोही का राजा बनना चाहता था पर उसका मनोरथ पूर्ण नही हुग्रा ग्रौर कल्ला राजा वना दिया गया किन्तु कुछ दिन बाद ही सरदारो ने कल्ला को हटा कर दुबारा सुरतान को सिरोही का राजा बनाया। इसने चन्द्रसेन के पुत्र रायसिंह को रात्रि के समय ग्रचानक ग्राक्रमण कर मार डाला था। गुजरात जाते समय महाराजा सूरसिंह को रायसिंह के मारे जाने का खयाल ग्रा गया ग्रौर उन्होने बदला लेने के लिए सिरोही और उसके गाँवो को लूटने की आज्ञा दे दी। यह देख सुरतान घवराया ग्रौर वहुत-सा रुपया महाराजा की भेट कर उनसे सन्धि कर ली।

**सूजा (शाह शुजा)–**

यह बादशाह शाहजहा का द्वितीय पुत्र और बगाल का सूवेदार था। बगाल मे विद्रोह कर देने पर ग्रामेर के मिर्जा राजा जयसिंह को इसके विरुद्ध भेजा। उसने जाकर शाहजादे शुजा को परास्त कर दिया। वाद मे राज्य प्राप्ति के लिए ग्रागरे पर ग्रधिकार प्राप्त करने की कामना से वगाल से चल पडा। पर इस उत्तराधिकार युद्ध मे पराजित होकर ग्रराकान की ग्रोर भाग गया ग्रौर वही पर आराकानियो द्वारा मारा गया।

**सूरजमल**

यह सादू गोत्र का चारण और नाथा का पुत्र था। यह महाराजा जसवन्त-सिंह के साथ काबुल मे था, किन्तु महाराजा की मृत्यु के बाद ग्रौरगजव बादशाह

की आज्ञा से महाराजा जसवतसिह के दल के साथ दिल्ली आ गया। इसी दिल्ली के युद्ध मे महाराजा अजीतसिंह की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ।

**शेखअल्लाह यार–**

यह अहमदाबाद के सूबेदार सर बुलन्द खा के विश्वासपात्र सेवकों मे से था। युद्ध के समय यह किले का रक्षक बनाया गया था। शेखअल्लाह यार ने अपने साथियो की सलाह से फाटकों को चुनवा दिया और स्थान-स्थान पर रक्षक नियत कर दिये और घेरे के लिये सामान एकत्रित करने लगा। शेख-अल्लाह यार, जिसको शहर की चौकसी व रक्षा का भार सौपा था, पूरी सतर्कता व सावधानी से कार्य करता था। यह बडा वीर, नीतिज्ञ तथा रण-कुशल व्यक्ति था और अहमदाबाद के युद्ध मे राजाधिराज बखतसिंह से लडता हुआ मारा गया।

**सेखा (राव शेखा)–**

यह राव सूजा का द्वितीय पुत्र था। अपने भाई बाघा की इच्छानुसार शेखा ने अपना अधिकार छोड बाघा के ज्येष्ठ पुत्र वीरम को राज्य का उत्तरा-धिकारी बनाने की अनुमति दी थी। परन्तु सरदारो ने चुपचाप गागा को गद्दी पर बैठा दिया। इसीसे राव शेखा बहुत नाराज हुआ और जोधपुर का राज्य प्राप्त करने के लिये नागोर के नबाब दौलत खा और हरदास ऊहड की सहायता से वि० स० १५८५ (ई० स० १५२९) मे जोधपुर पर चढाई की। राव गाँगा और बीकानेर के राव जैतसी भी अपनी सेना सहित युद्ध-क्षेत्र मे आ डटे। घमा-सान युद्ध हुआ। दौलत खा भाग गया और शेखा लडता हुआ वीर-गति को प्राप्त हुआ। शेखा महान् वीर, त्यागी और साहसी व्यक्ति था।

**सैयदउद्दीन (ख्वाजा सैयदउद्दीन)–**

बादशाह मुहम्मदशाह के प्रधान मत्री निजामुलमुल्क के विश्वासपात्र व्यक्तियो मे था। निजामुलमुल्क के दक्षिण मे चले जाने के बाद इसने अपना प्रभाव बढाने का प्रयत्न किया और यह प्रधान राज-मत्रियो की श्रेणी में आ गया। किन्तु यह अधिक दिनो तक शाही दरबार में टिक नही सका, और बाद-शाह मुहम्मदशाह के कुप्रबन्ध से नाराज होकर दक्षिण में निजामुलमुल्क के पास चला गया।

**सैयद बन्धु–**

भारतीय इतिहास मे हुसनअली खा तथा हुसैनअली खा सैयद, सैयद-बन्धु (भाइयो) के नाम से पुकारे जाते हैं। ई० सन् १७१२ से १७२० तक के

समय को मुगलकाल मे सैयद बन्धुओ का समय कह सकते है। इस समय में सम्राटों को बनाना, बिगाडना इनके बायें हाथ का खेल था। इनका पिता सैयद अब्दुल्ला खा मियाँ औरगजेब के शासनकाल मे बीजापुर तथा अजमेर का सूबेदार रह चुका था। फर्रुखसियर ने इन्ही की सहायता से सिंहासन प्राप्त किया था, अत हसन (अब्दुल्ला) को प्रधान मंत्री और हुसेन को प्रधान सेनापति नियुक्त किया। इस प्रकार सेना तथा शासन दोनो पर इनका नियत्रण हो गया। ये बडे ही वीर, योग्य तथा दृढप्रतिज्ञ थे। हिन्दुस्तानियो के साथ इनकी अधिक सहानुभूति थी। ये हिन्दू-विरोधी-नीति के घोर विरोधी थे। रतनचन्द नामक हिन्दू व्यापारी को इन्होने अपना दीवान नियुक्त किया। दुर्ग के सेनाध्यक्षो तथा पदाधिकारियो की नियुक्ति का अधिकार भी इन्हे था। इस प्रकार इन्होंने उत्थान की सीमा पार कर ली थी। अब इनको नीचा दिखाने के लिये सम्राट ने कूटनीति से काम लेना आरम्भ किया और इनके विरुद्ध षडयन्त्र रचने लगा, जिसका पता इनको लग गया और इन्होने जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह से मित्रता कर उसको अपनी ओर मिला लिया तथा फर्रुखसियर की सत्ता को समाप्त करने का निश्चय कर लिया। फलत वह पकड लिया गया और अन्धा करके कारागार मे डाल दिया गया और कुछ दिन बाद ई० सन् १७१९ के अप्रेल मास मे उसका वध कर दिया गया। उसके बाद सैयद भाइयो और महाराजा अजीतसिंह ने रफी-उद-दाराजात और रफीउद्दौला को क्रमश नाम मात्र का सम्राट बनाया। इनके बाद सैयद भाइयो ने मुहम्मदशाह को सिंहासन पर बैठाया। इसी के समय मे इनका पतन हो गया और ई० सन् १७२० मे कुछ षडयत्रकारियो ने हुसेनअली का वध कर दिया। भाई की मृत्यु का समाचार पाते ही हसनअली (अबदुल्ला) बदला लेने के लिये सेना एकत्रित करके चला परन्तु बादशाह की सेना से युद्ध मे पराजित होकर कैद कर लिया गया। कारागार मे ही ई० सन् १७२२ मे उसकी मृत्यु हो गई।

**सोनग–**

राव सोहाजी का दूसरा पुत्र और आसथान का छोटा भाई था। इसने अपने बडे भाई आसथान की सहायता से ईडर (गुजरात) के (कोली जाति के) राजा सामलिया सोड को मार कर ईडर राज्य प्राप्त किया था। ईडर का राजा होने के कारण ही सोनग के वशज ईडरिया राठौड कहलाये।

**हमीद खां–**

यह बादशाह मुहम्मद शाह के वजीर निजाम-उल-मुल्क का चाचा था। बादशाह मुहम्मदशाह ने जोधपुर नरेश महाराजा अजीतसिंह को गुजरात की

सूबेदारी से हटा कर हैदरकुली खा को वहाँ का सूबेदार बनाया। हैदरकुली खा बादशाह के वजीर निजाम से शत्रुता रखता था। जब वह गुजरात का स्वतत्र शासक बनने का प्रयास करने लगा तो निजाम को उसे वहाँ से हटाने मे सफलता प्राप्त हुई। निजाम स्वय गुजरात का सूबेदार बन गया और अपने चाचा हमीद खा को गुजरात मे अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर दिया।

निजाम बादशाह मुहम्मदशाह से प्रसन्न नही रहता था, अतः उसने दक्षिण मे जाकर हैदराबाद को अपने अधिकार मे कर लिया और वहा का स्वतत्र शासक बन बैठा और उसका चाचा हमीद खा भी गुजरात का स्वतत्र शासक बन गया।

हमीद खा ने अहमदाबाद मे बहुत अत्याचार किये। वह कथाजी, पीलाजी आदि मरहठो से मिल गया। इसका दमन करने के लिये बादशाह ने शुजाअत खा, इब्राहीमकुली खां, रुस्तमअली खां आदि मुगलो को सेना सहित भेजा किन्तु हमीद खां बडा चालाक, बुद्धिमान, नीतिज्ञ व दूरदर्शी था। उसने मरहठो की सहायता से एक एक कर के बादशाह के भेजे हुए सब मुगलो को मार डाला और उनकी सेनाओ को भगा दिया। अन्त मे बादशाह मुहम्मदशाह ने एक विशाल दल के साथ सर बुलद खा को गुजरात का सूबेदार बना कर भेजा। हमीद खा ने उसका मुकाबिला किया किन्तु अपनी पराजय का अनुमान कर के अहमदाबाद को छोड कर दक्षिण को ओर चला गया।

**हरदास ऊहड़ (ऊड़)-**

यह मोकलोत के २७ गावो सहित कोढणा (कोरणा) का स्वामी था। यह जोधपुर राज्य की लक्कड चाकरी नही करता था, केवल आकर मुजरा कर जाता था, इसलिये कुँवर मालदेव इससे अप्रसन्न रहता था, अत. हरदास का पट्टा ज़ब्त कर लिया। इस समाचार को सुन कर वह सोजत मे वीरमदेव के पास चला गया और गागा का साथ छोड कर रायमल से जा मिला। यह जोधपुर का राज्य वीरम को दिलाने के पक्ष मे था, अत यह शेखा से जा मिला। यह बडा ही वीर, स्वाभिमानी और निर्भीक व्यक्ति था। यही नागौर के नबाब दौलत खा को शेखा की सहायतार्थ लाया था। इसी युद्ध मे राव शेखा और हरदास ऊहड लडते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

**हैदर कुली खाँ-**

यह बादशाह बहादुर शाह, फर्रुखसियर और मुहम्मद शाह के समय मे शाही सल्तनत का वफादार रहा। इन बादशाहो के शासनकाल मे सर्व प्रथम ई० सन् १७१५ से १७१८ तक सूरत बन्दरगाह का शासक रहा। हैदर कुलीखा

बादशाह मुहम्मदशाह के विश्वासपात्र सेनापतियो मे था। इसके कार्यो से प्रसन्न होकर बादशाह मुहम्मद शाह ने हैदर कुलीखा को भी छ हजारी जात व सवार दो अस्पहसि अस्पह का मनसब और नासिर जग का खिताब भी दिया और हरावल व तोपखाना का अफसर बनाया। जब हसनपुर के पास अबदुल्ला खा की फौज से मुकाबला हुआ तो हैदरकुली खा ने तोपखाने से ऐसे गोले बरसाये कि अब्दुल्लाह खा की फौज मे खलबली-सी मच गई और बहुत से आदमी जान बचा कर भागे। पिछली रात तक एक लाख सवारो मे से कुल सतरह अठारह हजार सवार अब्दुल्ला खा के साथ बाकी रह गये। इस विजय से हैदर कुली खा का प्रभाव बढ गया। इसके बाद इसे जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह पर भी चढाई के लिये तैयार किया किन्तु महाराजा अजीतसिंह ने अहमदाबाद की सूबेदारी का इस्तीफा भेज कर अजमेर को अपने कब्जे मे रखा, अहमदाबाद की सूबेदारी हैदर कुलीखा को मिल गई।

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है कि ग्रथ मे कवि महोदय ने कई पात्रो के नामो का आधा भाग अथवा उनके नामो को भिन्न-भिन्न रूपो में अकित किया है। ग्रथ में उनका केवल उल्लेख मात्र ही है। अत ग्रथ के आकार को ध्यान में रखते हुए ऐसे पात्रो का पूर्ण परिचय न दे कर केवल नामावली ही नीचे दी जाती है।

**सूरज प्रकास, भाग ३, में आये हुए महाराजा अभयसिंह की सेना के प्रमुख योद्धाओं की नामावली**

सूरज प्रकास भाग ३ मे आये हुए राजाधिराज बखतसिंह की सेना के प्रमुख वीरों की नामावली

**सूरज प्रकास भाग ३ में आये हुए विजयराज भण्डारी की सेना के मुख्य योद्धाओं की नमावली**

ग्रथ की भूमिका को समाप्त करने के पूर्व मै राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के सम्मान्य सचालक पद्मश्री जिन विजयजी मुनि, पुरातत्त्वाचार्य के प्रति आभार प्रदर्शित करता हूँ कि उन्होने साहित्य की इस अमूल्य निधि का जो ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, सम्पादन करने की सत्प्रेरणा दी।

ग्रथ-सम्पादन मे राजस्थान प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुर के उप-सचालक श्री गोपाल नारायणजी बहुरा, एम. ए ने समय समय पर मार्ग-निर्देशन कर सहायक ग्रन्थो के अध्ययन मे सहयोग देकर तथा ग्रथ मे कविराजा करणीदान व महाराजा अभयसिंह के चित्र प्राप्त करने में जो सहयोग दिया उसके लिये मैं पूर्ण कृतज्ञ हूँ। साथ ही श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया को भी धन्यवाद देता हूँ कि उन्होने ग्रथ के प्रूफ-सशोधन मे सहयोग दिया।

—सीताराम लालस

रोडला भवन
जोधपुर
श्रावणी तीज, स० २०२०

# सहायक ग्रंथों की सूची




१ आसोप का इतिहास—पं० रामकरण आसोपा।

२ उदयपुर राज्य का इतिहास—डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, भाग १-२।

३ औरंगजेबनामा—मुंशी देवीप्रसाद।

४ जोधपुर राज्य का इतिहास—डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, भाग १-२।

५ जोधपुर राज्य की ख्यात—हस्तलिखित, हमारे संग्रह की।

६ टॉड राजस्थान, हिन्दी अनुवाद—पं० बलदेवप्रसाद मिश्र।

७ तवारीखे-पालनपुर—सैयद गुलाब मियाँ कृत।

८ नीमाज का इतिहास—पं० रामकरण आसोपा।

९ नैणसी की ख्यात—काशी नागरी प्रचारिणी सभा।

१० भारत का बृहद् इतिहास, द्वितीय भाग (द्वितीय खंड)—प्रो० श्रीनेत्र पाण्डेय, एम.ए., एल-एल. बी

११ मारवाड़ का इतिहास—महामहोपाध्याय पं० विश्वेश्वरनाथ रेऊ, प्रथम भाग।

१२ मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास—पं० रामकरण आसोपा।

१३ राज रूपक—वीरभाण रतनू कृत।

१४ राज विलास—मान कवि कृत, नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस।

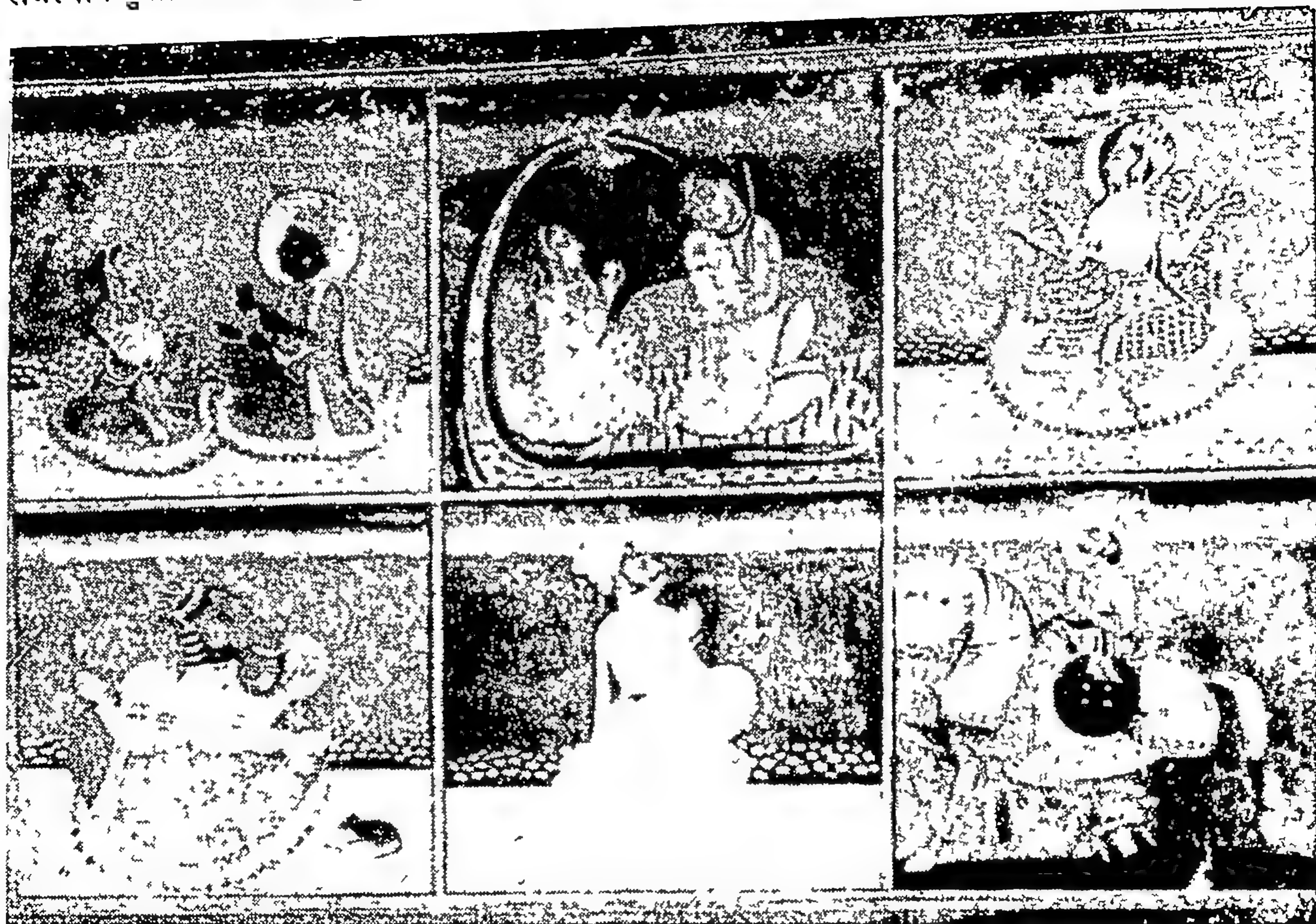
१५ लेटर मुगल्स—इर्विन।

१६ वंश भास्कर—कविराजा सूर्यमल मीसण।

१७ वीर विनोद—महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास कृत, भाग १-२।

१८ हिस्ट्री ऑफ औरंगजेब—यदुनाथ सरकार।



गणपति श्रीपति गवरिपति, सुमिरि शारदा भान ।
पञ्चदेव पूजा निरत, कविया करणीदान ॥

(महाराजा साहिब जोधपुर के निजी ग्रन्थ-भण्डार "पुस्तक प्रकाश" में से ठाकुर जयकृतसिंहजी, एडमिनिस्ट्रेटर के सौजन्य से प्राप्त चित्र)

कवियां करणीदांनजी विजैरांमोतरौ कह्यौ

# सूरजप्रकास

## भाग ३

---

### जुधरौ वरणण

कवित्त– 'अभमल' जयचँद अेम, सबळ दळ लिया[1] सकाजा ।
सहर नदी उपरास, मँडे डेरा महाराजा[2] ।
विदा किया[3] जिण वार, जोध करि[4] वीर जगाया ।
किला सिरै कमधजा, लडण मोरचा लगाया ।
विकराळ तोप[5] चोळां-वदन, छट[6] धूवा[7] रव[8] छावियौ[9] ।
जुध पडै[10] रीठ ओळां ज्युही[11], गोळा-अबर-गाजियौ[12] ।। १

ग्रीव[13] पडै सिर गुडै, भडा धड पड़ै भिडज्जां[14] ।
कोट पडै कगुरा[15], भूक हुय[16] पडै भिडज्जा[17] ।
छाजा पडै अछेह, मँडप उडि पडै महल्ला[18] ।
मुगळाणिया[19] अमाप, पडै[20] आधान दहल्ला[21] ।

---

१ ख ग. लीया । २ ख. माहाराजा । ग महाराजा । ३ ख. कीया । ४ ख. किरि । ग किर । ५ ग दोप । ६ ख ग. छूटि । ७ ख. धूवा । ग. धुवा । ८ ग. रवि । ९ ख. छाजीयौ । १० ख ग. गडे । ११ ख. ग जही । १२ ख गाजीयौ । १३ ख. ग ग्राव । १४ ग. भिडझ्झ । १५ ख. ग कागुरां । १६ ख. ग होय । १७ ख भुरज्जा । ग. भुरझ्झा । १८ ग. महिला । १९ ख मुगलाणीयां । २० ग. पड़ि । २१ ग दहला ।

---

१ चौळा-वदन – जोशमे लाल मुख किए हुए । छट – शीघ्र । रव – रवि, सूर्य । छावियौ – आच्छादित हो गया ।

२ ग्रीव – गर्दन । भिड़ज्जां – घोडो । भूक – चूर्ण, नाश । अमाप – अपार । आधान – गर्भ । दहल्लां – आतक ।

पनँगेस[1] पड़ै कँध कोम पर, धोम आराबा धड़हड़ै ।
तडफडै पडै[2], मछ[3] नीर[4] तिम[5], पड़ै दमँग गोळा पडै ॥ २

राकस जिम रवदाळ, कमँध कपिराज सकाजा ।
वीर 'अभौ' बखतेस, राम लछमण जिम राजा[6] * ।
विध[7] रावण सिरविलँद, उहिज[8] चित धरै[9] इरादौ[10] ।
जुडै पहल इँद्रजीत, जेणि[11] विध[12] साहिबजादौ ।
लक जिम[13] वाद अहमँद लियण[14], लख गोळा झड लागियौ[15] ।
वमरीर अभायण जुध विखम, जुध रामायण जागियौ[16] ॥ ३

सातम[17] निसा सरब्ब[18], अनै निसदिन असटम्मी[19] ।
अमासमा[20] घण उडै, ज्वाळ गोळा नभ जम्मी[21] ।
नमि तिथ[22] कड़क निहाव, धोम सौगुणा अँधारा ।
ओळा जिम मँडि[23] उरड, असण[24] गोळा अणपारां[25] ।
अडड़ाट[26] नाद वैराट[27] अज, घट्ट[28] जांणि दूजौ[29] घडै ।
वरसाळ झाळ गौळां[30] वहनि, प्रळैकाळ छौळा[31] पडै ॥ ४

---

१ ख ग पनगेस । २ ग प्रतिमे यह शब्द नही है । ३ ख मछि । ४ ग जहानीर ।
५ ख ग तपि । ६ ग राज । *यह पक्ति ख प्रतिमे नही है ।
७ ख. ग विधि । ८ ख वोहीज । ग. बोहीज । ९ ख धरे । १० ख अरादौ ।
११ ग. जेण । १२ ख. ग विधि । १३ ख ग जेम । १४ ख. ग. लीयण । १५ ख ग लागीयौ । १६ ख जागीयौ । ग जागीयो । १७ ख सातिम । ग. सातीम । १८ ख. सरव्व । १९ ख. ग असदमी । २० ख अम्हांसम्हां । ग अम्हसम्हा । २१ ख ज्जमी । २२ ख तिथि । २३ ख मझि । २४ ख ग असणि । २५ ख. उणपारा । २६ ख अडडाट । ग उडदाट । २७ ख वैराज । २८ ख ग जद । २९ ग. दूजो । ३० ख गोला । ३१ ग छोळां ।

---

२ पनँगेस – शेपनाग । कोम – कूर्मावतार, कच्छपावतार । धडहडै – आवाज होती है । मछ – मत्स्य । दमँग – अग्निकरण ।

३ कपिराज – हनुमान, सुग्रीव । इरादौ – विचार । साहिबजादौ – शाहजादा । वाद अहमँद – अहमदावाद । वमरीर – जबरदस्त । अभायण – वह ग्रंथ जिसमे महाराजा अभयसिंहका चरित्र-वर्णन है ।

४ अमासमा – एक दूसरेके सम्मुख । नभ – आकास । कडक – जोर । निहाव – प्रहार, प्रहारकी ध्वनि । असण – तीर, बाण । अड़डाट – ध्वनि विशेष । अज – ब्रह्मा, कुम्भकार । वरसाळ – वर्षा । वहनि – अग्नि ।

धिकता[1] इम[2] रिण[3] धोम, 'अभै' विलँदनू कहाए ।
जिम तै[4] लिखे[5] जबाब[6], अेम लडि चौडै[7] आए ।
चाक[8] पहल चाढिया[9], जुडण चौगांन जमीरा ।
अबै कोट लै[10] ओट, अेह[11] नह सरत[12] अमीरा[13] ।
सुणि एम वचन प्रजळे[14] असुर, इसौ[15] तेज दरसावियौ[16] ।
वमरीर वाघ वतळावियौ[17], जाणै नाग खिजावियौ[18] ॥ ५

जमरूपी जिणवार, एक गोळौ[19] गढि आए ।
तन बगसी[20] तन तोडि, अळग ले गयौ[21] उडाए[22] ।
दरह हुवो *खळ दळा, भाण[23] विण जेम तपोभ्रम[24] ।
गरद हुवौ* 'गुलमीर', 'सयद'[25] 'कायम्म'[26] समोभ्रम ।
सिर विलँद[27] एह कथ साभळी, खवरदार दक्खी[28] खड़ै[29] ।
गुलमीर खांन उड्डे[30] गयौ, साहि निवाजस[31] सांकडै ॥ ६

सुत बगसी[32] साधियौ[33], ⊛आप सुत सुणे डरायौ ।
मण हजार सोरमै, जाणि सुरमुक्ख[34] जगायौ[35] ⊛ ।

---

१ ख धिषतां । २ ख. ग. यम । ३ ख ग रण । ४ ख ग. तै । ५ ग लिषै । ६ ख ग. जुवाव । ७ ग चोडै । ८ ख ग चाकि । ९ ख चाढ़ीया । १० ख लीय । ग. लीयै । ११ ख. येह । १२ ख सरति । ग. रीत । १३ ख समीरा । १४ ग प्रजलै । १५ ग इसो । १६ ख दरसावीयौ । १७ ख. वतलावीयौ । १८ ख षीजावीयौ । १९ ख गोलो । २० ख वगसी । २१ ख ग गयो । २२ ख उडाए । ग उडायै ।
*··· *चिन्हांकित पंक्तियाँ ख प्रतिमे नही हैं ।
२३ ग भोण । २४ ग तमोभ्रम । २५ ख ग सैद । २६ ख ग कायम । २७ ख विल । २८ ख दष्पी । ग दपी । २९ ख पडै । ३० ख उडे । ग उडै । ३१ ग निबाजस । ३२ ख. ग वगसी । ३३ ख साझीयौ । ग. साझियौ । ३४ ग सुरमुष । ३५ ग जगायो । ⊛ ⊛चिन्हांकित पंक्तिया ख. प्रतिमे नही हैं ।

---

५ धिकता – क्रोधाग्निमे प्रज्वलित । अभै – महाराजा अभयसिंह । चाक चाढ़िया – उत्तेजित किए । जुडण – भिडना, टक्कर लेनेको, युद्ध करनेको । दरसावियौ – दिखाई दिया । खिजावियौ – कुपित किया ।

६ बगसी – ( ? ) गरद – ध्वंस, सहार । गुलमीर – गुलमीरखा नामक सर बुलदका योद्धा । सांभळी – सुनी । दक्खी – कही । साकड़ै – सकटमे ।

७. साधियौ – ( ? ) । सोरमै – बारूदमे । सुरमुक्ख – अग्नि, आग ।

'विलँद' तांम वीफरे[१], धूत दाढी[२] कर धारै[३] ।
ईसफहा[४] आसफा[५], इलम फातमां[६] उचारै[७] ।
महमँद इमांम कहि कहि मुगळ, असिमर ग्रहि करिमुख[८] अरण ।
ताकीद[९] कीध सांजति करण[१०], किलम[११] राड[१२] चौडै[१३] करण ।। ७

सुणे कीध 'अभसाह', किलम[१४] ताकीद[१५] हुकम्मा ।
बिहुवै फौज नकीब, ताम फिरिया[१६] हमतम्मा[१७] ।
खुरासाण हिदवाणा[१८], करै साजित[१९] जँग कारण ।
तदि किसड़ा गज तुरँग, दुझल सुर आसुर दारण[२०] ।
करि[२१] चाळ[२२] वीर साजति[२३] करै, घणा जोमहूता[२४] घणा ।
किण भाति तरफ दहुवां[२५] कहू, तिकै[२६] रूप चहुवा[२७] तणा ।। ८

---

१ ग वाफरै । २ ग डाढ़ी । ३ ख. धारे । ४ ग. इसफहा । ५ ख. ग. आसपा । ६ क फातण । ७ ख उचारे । ८ ख. मुषकरि । ग मुषकर । ९ ख ताकीत । १० ख ग तणी । ११ ग कलम । १२ ख. ग. राडि । १३ ख. चोडै । १४ ख. ग. कलह । १५ ख ताकीत । १६ ख. फरीया । ग. फिरिकै । १७ ख हमतम्मा । ग. हमत्तमा । १८ ख हींदवाण । १९ ख ग साजति । २० ख ग दारुण । २१ ख. ग. कलि । २२ ख चारु । २३ ग. साजनि । २४ ख ग. जोमहुता । २५ ख. दहुवों । ग दहूवां । २६ ख. ग. तिके । २७ ख. चहुवा । ग चहूवा ।

---

७ वीफरे – कुपित होता है । धूत – धूर्त, दुष्ट । दाढी धारै – जिस प्रकार हिन्दू अपनी श्मश्रु पर ताव देते हैं उसी प्रकार मुसलमान युद्धादिके समय अपनी दाढी पर हाथ धरते हैं । ईसफहा – ( ? ) । आसफा – ( ? ) । इलम – इल्म, साना । फातमा – मुहम्मद साहबकी कन्या जो हजरतअलीकी पत्नी और हसन तथा हुसेनकी माता थी । महमँद – इस्लाम धर्मके प्रवर्तक, अरबके प्रसिद्ध पैगम्बर मुहम्मद । इमाम – मुसलमानोमे धर्मशास्त्रका ज्ञाता और विद्वान, धार्मिक नेता, पथ-प्रदर्शक । असिमर – तलवार । अरण – अरुण, लाल । साजति – ( ? ) ।

८. विहुवै – दोनो । साजित – तैयारी । दहुंवां – दोनो । चहुवां – चारो ओरमे ।

सालाणरा सुचग, सिंघल दीपरा सकाजा।
*महा[1] चीन मुलकरा, रजे कजळीवनि[2] राजा।
रैवा तटि[3] बींझरा[4]*, रान[5] रूपरा गिरदां।
केक[6] मुळावाररा[7], केक[8] पाररा समुदां[9]।
बहगिरा[10] फिरँग पूरव्वरा[11], आरकट्टरा उजरा[12]।
पँच गजी पीठरा धीठ पिड, काळ रूप घण[13] कुजरा[14] ॥ ९

छंद पद्धरी हाथियारारा वखाण

दहुवै दळ मैगळ इसा दूठ।
विण अैब[15] पठा मद छौळ[16] वूठ।
घण पावस नीझर गिरँद घाट।
परनाळ[17] वहै[18] मद पच[19] पाट ॥ १०
चख आरण[20] धिखता रूप चोळ[21]।
क्रीडा[22] करत मधुकर कपोळ[23]।
पोगरप[24] लाग लळवळ[25] अनूप।
रागरो रीझिया[26] नाग रूप ॥ ११

---

१ ख. ग. माहा। २ ख ग कजलीवन। ३ ख तट। ४ ख ग विंझरा।
* *चिन्हांकित पंक्तिया ख. प्रतिमे दुवारा आई हुई है।
५ ख ग रग। ६ ख केयक। ७ ग. मलावार। ८ ख ग. केयक। ९ ख समुदां। ग. समदा। १० ख वौहोगिडा। ग वोहोगिडा। ११ ख. पूरव्व। ग पूरब। १२ ख ग वूजरा। १३ ख घणा। १४ ख. कूजरा। १५ ख. ग. अैव। १६ ग छोळ। १७ ख ग. पडनाळ। १८ ग बहे। १९ ख पाच। २० ग. अरण। २१ क चौळ। २२ ग क्रीळा। २३ क कपौळ। २४ ख. पोगलप। ग. पोगरप। २५ ख. ललचल। ग. ललवल। २६ ख रीझीया।

---

९ सुचग – श्रेष्ठ। सिंघल दीपरा – एक द्वीप जो भारतवर्षके दक्षिणमे हैं, सिंहलद्वीप। कजळीवनि – एक प्राचीन वनका नाम जहा पर हाथी वहुतायतसे पाये जाते थे। बींझरा – विन्ध्याचल पर्वतके।

१० मैंगळ – हाथी। दूठ – जवरदस्त। पठा – युवा। छौळ – धारा, प्रवाह। वूठ – वर्षा (?)। पावस – वर्षा ऋतु। नीझर – झरना। घाट – बनावट। परनाळ – मकानकी छतसे पानी नीचे गिरनेका नाला।

११ धिखता – प्रज्वलित। चोळ – लाल। क्रीडा – खेल। मधुकर – भौंरा। पोगरप – हाथीकी सूंड पर। लळवळ – मुडती है। रीझिया – खुश, हर्षित।

गातरा जिके तम सिखर गात ।
जातरा अमोलक भद्रजात ।
दतरा ठिला ढाहिक[1] दुरग ।
ऊधरा चाचरा मसत अग ।। १२

तन रूप घटा भाद्रवतणास ।
घेरिया[2] फौजदारा[3] घणास* ।
प्पूतारै[4] मारै[5] गडा[6] पांण ।
इण विध[7] बैसारै[8] नीठ आण[9] ।। १३

झाटकि रूमाला[10] गिरद झाडि[11] ।
पैछौळ कीध जिम घण पहाडि[12] ।
मसळूद[13] करा हाथळ मळेस[14] ।
जामळे पाक तत्ते जळेस ।। १४

अै'पहल[15] तेल फेरै[16] अरोह[17] ।
बह[18] दीध आमलातणा[19] बौंह[20] ।
सझि किया[21] इद्र धानख[22] सरीस ।
सिदूर जँगाला तिलक सीस ।। १५

---

१ ख. ढाहक । २ घेरीया । ३ ग. फोजदारा ।
*यह पक्ति ख. प्रतिमे नही है ।
४ ख पौतारे । ग पोतारे । ५ ख मार । ६ ख गणां । ७ ख विधि । ८ ख वैसारै । ग वेसारे । ६ ख आणि । १० ख. ग रूमाला । ११ ख ग झाड । १२ ख पहाड़ । ग पाहाड । १३ ख. ग. मसरूद । १४ ख मसेल । १५ ख ग रूपहल । १६ ख ग. फेरे । १७ क अरोहे । १८ ख ग वौहो । १६ ग. आलमातणा । २० ख वोह । ग बोह । २१ ख ग. कीया । २२ ग धानेष ।

---

१२ तम – अधेरा, श्यामता । तम सिखर – काला पहाड । भद्रजात – श्वेत रगका हाथी । ठिलां – टक्कर । ढाहिक – गिराने वाला । ऊधरा – ऊचा उठा हुआ । चाचरा – भाल, ललाट ।

१३. भाद्रवतणास – भादो मासके । फौजदारां – महावतो । प्पूतारे – जोश दिलाते हैं । गडा – गडस्थल । पाण – हाथ । बैसारै – वैठाते हैं ।

१४ गिरद – गर्द, धूलि । मसळूद – मसल कर । करा – हाथो, सूडो । जामळे – एक साथ कर दिये ।

१५ वौह – सुगध, महक ।

कठळ वूठाळू[1] रूपकंध[2] ।
बधिया[3] किलावा चमरबध[4] ।
तहमद्द[5] भूल कसि घंट तांम ।
जगी धरि[6] हवदा पूठि जाम ।। १६

आरांम राडियां[7] छक उपाट ।
घण भीड[8] नाडिया[9] चड[10] घाट ।
घण लोह भार पक्खर[11] घुमाय ।
ओपै जिम पाहड पख आय ।। १७

औद्राव[12] तणा[13] घण[14] के अपाल ।
ढळकाय चाचरां भमर ढाल ।
गड़ सिलह ससत्र कसियां[15] गरूर ।
सिर चढियो[16] महावत[17] महासूर[18] ।। १८

धर फरर चढे नीसांण धार ।
परचड मही - मुरतब अपार ।
कसि नौबत[19] धारक चढ़े[20] केक ।
अन[21] हौद मेघ - डबर अनेक ।। १९

---

१ ग वूंगलू । २ ख. रूपकाधि । ग. जिम रूपकाधि । ३ ख. वाधिया । ग वाधिया । ४ ख. वाधि । ग. वाधि । ५ ख. ग. तहनमद । ६ ग घर । ७ ख ग राड़ीयां । ८ ख ग भीडि । ९ ख नाडीयां । १० ख ग प्रचड । ११ ख ग पख्यर । १२ ख. औद्राण । ग ओद्राण । १३ ख. ग तवा । १४ ख ग षड । १५ ख ग कसीयां । १६ ख. चढ़ीया । ग चढ़ि । १७ ख ग माहावत । १८ ख माहासूर । १९ ख. ग नौवति । २० ग. चढि । २१ ख. ग अनि ।

---

१६ कठळ – हाथीके कठका आभूषण । किलावा – कलाप । चमरबध – ( ? ) । तहमद्द – कमरसे लपेटनेका कपडा या अगोछा, लूगी, तहमद ।

१७. नाडिया – हाथीकी अम्मारी कसनेका मोटा रस्सा विशेष । चड – प्रचड, महान । पक्खर – हाथीका कवच ।

१८. औद्राव तणा – आतकके, भयके । सिलह – कवच । गरूर – जबरदस्त ।

१९. नीसांण – झडा । मेघडबर – मेघाडबर, छत्रविशेष ।

मगरूर हौद[1] जँगिया[2] मझार[3] ।
धुर चढै अरब हथिनाळ[4] धार ।
साझदा केयक बध साधि ।
बह[5] वीजळ[6] सूडाडड[7] बाधि ।। २०

तै भारण बारह मण[8] सतोल[9] ।
खभारण लगर दीध खोल ।
जदि थापल[10] बोलैं[11] विरद[12] जाम ।
तपसी जिम खोलै[13] पलक ताम ।। २१

तरियला नजर आणै[14] तयार ।
दौडिया[15] हाक करि डाकदार ।
लगरां खळकता हले लार ।
दोळा गिलौळ गड चरखदार ।। २२

एहडा गयँद खुटहड[16] अरोड ।
जमदूत भूत अवधूत[17] जोड ।
धावत खुन[18] कज्यू[19] उरड धाव ।
नख ताम गिलोळा पडि निहाव ।। २३

---

१ ग हौदा । २ ख ग जगियां । ३ ख ग. मझार । ४ ख हथनालि । ग हथनाळ । ५ ख वहौ । ग वहु । ६ ग वीजळ । ७ ग सूडादड । ८ ख मस । ९ ख णतोल । १० ख थापलि । ग हाथल । ११ ख. ग. बोले । १२ ग वीरज । १३ ख ग षोले । १४ ख. ग. आणे । १५ ग दौडिया । १६ ख षुटहक । ग षुटहड । १७ ख. ग अवधूत । १८ ख ग षून । १९ ख. ग कजि ।

---

२० धुर – प्रथम । हथिनाळ – तोप विशेष । वीजळ – तलवार । सूडाडड – हाथीकी सूड ।

२१. खभारण – हाथीके बाधनेका स्थान । लगर – हाथीको पैरसे बाधनेकी जजीर ।

२२ तरियला – ( ? ) । डाकदार – मस्त हाथीको राह पर लाने वाले घुडसवार जिनके हाथमे साट होता है । खळकता – ध्वनि करते समय । दोळा – चारो ओर । गड – भाला विशेष जिसे मस्त हाथीको सीधा करनेके लिए डाकदार हाथी पर मारते है । चरखदार – मस्त हाथीको सीधा करनेका चरख नामक उपकरण रखने वाला ।

२३ खुटहड – जबरदस्त, उद्दड । अरोड़ – न रुकने वाला । जोड़ – समान, तुल्य । निहाव – प्रहार, चोट ।

रौद्राण भचक[1] भाला गरीठ ।
धारक्क[2] बहै गज बाज[3] धीठ[4] ।
धडहडै[5] धोमा-रव चरख धोम ।
बणि[6] धोम अधारव गोम बोम[7] ॥ २४

कत्तक्क[8] हार कळहळ कहाक ।
हुय[9] धता धता[10] धत वीर[11] हाक ।
नब्बाब[12] अनै दरगह नरंद ।
गहतत एम आणे गयद ॥ २५

कवित्त—खळळ सँकळ मद खळळ, मसत घूमत मदग्गळ[13] ।
मेघ-डमर[14] नीसाण, मही-मुरतबां झळाहळ ।
प्रचँड लोह पाखरा, चोळवोळा[15] चखचोळा[16] ।
जँगी हवद जकडिया[17], तवा[18] खळकिया[19] कपोला ।
हथनाळ[20] दगण आरव[21] हसम[22], माहुत[23] चढिया मैगळा ।
देवळा तरा[24] धर करि[25] दुगम, जँगम जूथ वीझाजळा[26] ॥ २६

---

१ क. भबक । २ ख. धारख्व । ग. धारक । ३ ख ग वाग । ४ ख दीठ । ५ ख ग धडहड । ६ ख ग वणि । ७ ख ग वोम । ८ ख ग. कौतक्क । ९ ख ग होय । १० ख धताधता । ग धत्ताधत्ता । ११ ख ग धत वीर । १२ ख नव्वाव । ग नब्बाब । १३ ग मदगाळ । १४ ख ग डबर । १५ क चौळवौळा । १६ क चौळां । १७ ख. जडकीया । ग जडिकया । १८ ग तबा । १९ ख षडकीया । ग षडकिया । २० ख ग हथनालि । २१ ख आरव । ग अरब । २२ ख ग हमस । २३ ग मावत । २४ ग तरा । २५ ख ग किर । २६ क वीजाजळां ।

---

२४ रौद्राण—भयंकर । भचक—प्रहार, प्रहारकी ध्वनि । गरीठ—जबरदस्त, हाथी । धडहडै—ध्वनि करते हैं । धोमा-रव—धुएकी आवाज । धोम—अग्नि ।

२५ कळहळ—कोलाहल । कहाक—ध्वनि ।

२६ खळळ—जंजीरके हिलनेकी ध्वनि या जल-प्रवाहकी ध्वनि । सँकळ—शृंखला । मदग्गळ = मत्कल—हाथी । मेघ डमर—मेघाडम्बर नामक छत्र । नीसाण—झंडा । चोळवोळा—पूर्ण लाल । चखचोळा—जोशमे लाल नेत्र किये हुए । तवा—हाथीको ललाट पर युद्धके समय धारण कराया जाने वाला उपकरण । हथनाळ—बंदूक । दगण—दागने पर, दागनेको । आरब—तोप । हसम—सेना, फौज । मैगळा—हाथियो । जगम—चलने वाला । वीझाजळा—विंध्याचल पर्वत ।

घोड़ारा वखाण

छंद पद्धरी– ऊपना असिल अैराक अग ।
तै बलख खेत आरब तुरग ।
अन्नेकम[1] को तेजह अथाहि ।
मोमना[2] चेचि[3] कहि तुरँग माहि ।। २७

रुमहरी हुसेना बाद[4] राति ।
जिण[5] अरब माहि वळि[6] नौख जाति ।
खधारी उतन खधार खेत ।
लख लख मुलवारी मोल[7] लेत ।। २८

बेखता[8] ताव मुज नस्सबाज ।
बह[9] डसिय[10] दत तन गुरज बाज[11] ।
खित तुरकी आलातीन खेत ।
बाला[12] मुसैद रोसनी[13] बेत । २९

चहनई हरेवी रूप चंग ।
तारीफ रग तौफा[14] तुरग ।
दुरकेबा[15] केयक[16] जमी दोज[17] ।
चितरांम लिखीजै इसा चोज[18] ।। ३०

---

१ ख ग अनेकम । २ ख मोमता । ३ ख. ग. चेच । ४ ख ग वाद । ५ ग जिन । ६ ग वलि । ७ ख मूल । ८ ख. वेषता । ग. भेषता । ९ ख वौहो । ग बोहो । १० ख ग डसीय । ११ ख ग वाज । १२ ख ग वाला । १३ ग रोसवी । १४ ख. ग तोफा । १५ ख. ग दुरकेवा । १६ ख ग केइक । १७ ख दौज । १८ ग चौज ।

---

२७ ऊपना – उत्पन्न हुए । अैराक – तेज । खेत – उत्पत्ति-स्थान । आरब – अरब देश ।

२८. भिन्न २ घोड़ोंके उत्पत्ति स्थानोंके नाम है ।

२९ वेखता – दिखाई देता है ।

सोवनरा ताजी च्यार साल ।
पँच दोक[1] दिना[2] पौरस अपाल ।
धुर केंक माळवी सरस धज्ज ।
भीमड़ाथ[3] थळी वाळा भिडज्ज ।। ३१

कूदणा कच्छी छेकै कुरग ।
तत्ता[4] स्रब[5] तुरँगाहूं तुरग ।
कठियाण[6] भुजनगर खेतकाज ।
बेखता[7] तता कपिहूत बाज[8] ।। ३२

घण घाव[9] घटै नह पाण घाट ।
धुर खेत ऊपना[10] जिके धाट[11] ।
उण धाट खेत मझि बळि[12] 'आधि[13] ।
बप[14] तेज बगारा[15] तुरँग[16] बाधि[17] ।। ३३

तुरियद[18] जिसा[19] रथ आपताप[20] ।
मुरधरा खेतरा बळ[21] अमोप ।
राडद्रह[22] अनै माहेव[23] रासि[24] ।
बह[25] मोल रूप बळवँत हुबासि ।। ३४

---

१ ख दोय । २ ख विना । ३ क. भिभडाथ । ४ ख. ग ताता । ५ ख श्रव । ग थव । ६ ख कठीयाण । ७ ख ग वेखता । ८ ख वाज । ९ ख ग. धाव । १० ग. उपना । ११ ख घाट । १२ ख ग वळ । १३ ख ग. असाधि । १४ ख वष । ग वप । १५ ख ग वगारा । १६ ग तुरगि । १७ ख ग वाधि । १८ ख. ग तुरीयद । १९ ख ग जसा । २० ख. ग आफताप । २१ ख वल । २२ ख. राउद्रह । २३ ख महिए । ग सहिम्रं । २४ ख. ग वरास । २५ ख. वोहो । ग वोहो ।

---

३१ ताजी – घोडा । भीमड़ाथ – रग विशेषका घोडा । थळी – मारवाड राज्य । भिडज्ज – घोडा ।

३२ कछी – कच्छी घोडा । तत्ता – वहुत तेज । कठियाण – काठियावाडी घोडा । बाज – घोडा ।

३३ पांण – प्राण, शक्ति, वल । घाट – कम । घाट – ऊमरकोट प्रान्तका नाम ।

३४. तुरियद – घोडा । आपताप – आफताब, सूर्य । अमाप – अपार । राडद्रह – मारवाड राज्यातर्गत एक प्रान्तका नाम । माहेव – बाडमेर जिलेका प्राचीन नाम । हुबासि – घोडा ।

लाखौरी[1] सुरँग अजूव[2] लैंत ।
किसमसी साह ज्यानू[3] कुमैत ।
तेलिया[4] मुहा सदळी[5] तुरग ।
सोसनी सबज हसा[6] सुरग ।। ३५

रोसनी बिदामी[7] पेस रूद ।
कागडा हस चकवा कबूद[8] ।
गुलजार बौज[9] अवलक्ख[10] गात ।
सिंदळी[11] अनै सरगा सुभात ।। ३६

बह[12] अवरस[13] मुसकी अर सँजाब ।
बौरता[14] केहरी पेस बाव[15] ।

---

१ ग लाखेरी । २ ख अजूव । ३ ख जानू । ग मूजानु । ४ ख. ग तेलीया । ५ ग. सदनी । ६ ग हुजा । ७ क विदानी । ८ ख ग. कवूव । ९ ख वोज । ग बोज । १० ख ग. अबलव्य । ११ ख ग सुदली । १२ ख ग. वहौ । १३ ख ग. अवरस । १४ ख वोरता । ग वोरता । १५ ख. वाव ।

---

३५. लाखौरी – रग विशेपका घोडा । सुरँग – लाल रगका घोडा । अजूव – ( ? ) । किसमसी – किशमिशके रगका घोडा जो शालिहोत्रके अनुसार शुभ माना जाता है । कुमैत – एक प्रकारका शुभ रगका घोडा । तेलिया – तिलके तेलके रगका घोडा । सदळी – हल्के पीले चदनके रगका घोडा । सोसनी – वैंगनके रगसे मिलते रगका घोडा, जो शुभ माना जाता है । सवज – हरे घासके रगसे मिलते रगका घोडा, सब्ज, यह अति शुभ माना जाता है । हसा-सुरग – सफेदी लिए हुए हल्के लाल रगका घोडा जो शुभ माना जाता है ।

३६ रोसनी – घोडेका रग विशेप । विदामी – विदामके रगका घोडा । पेस रूंद – ( ? ) । कागडा – सफेदी लिए हुए हल्की श्यामताके रग वाला घोडा विशेप (?) । हस – सफेद रगका घोडा । चकवा – चक्रवाक पक्षीके रगका घोडा जो अत्यन्त मागलिक व शुभ माना जाता है । कवूद – ( ? ) । गुलजार – रग विशेपका घोडा । बौज – शुभ रगका घोडा, इसका दूसरा नाम बौजलयी भी है । अबलख – चितकबरा घोडा, इसका दूसरा नाम वौजलायी भी है । सिदली – शुभ रगका घोडा । सरगा – ( ? ) ।

३७ अवरस – शुभ रगका घोडा । मुसकी – मुश्कके रगका घोडा । सँजाव = सजाफ – आधा लाल, आधा सफेद या आधा लाल, आधा सब्ज घोडा । वौरता – शुभ रगका घोडा । केहरी – सिंहकेसे रगका घोडा ।

कासनी ताफता पँच कल्यांण ।
सूलहरी[1] चपा पट[2] सिचाण[3] ।। ३७

जिलहरी आबनूसी जमद ।
मुरहरी हरी[4] सेली समद ।
आवै न पार कहता अथग ।
रँगजीत[5] कबूतरतणा रग ।। ३८

नखउलट कटोरा सम अनोप ।
अँग नळी नीकळी[6] चित्र ओप[7] ।
बाजुवा[8] सुछट तायक वळाक[9] ।
चाका दुनाब पीडा[10] सचाक ।। ३९

सुजि ताम्र तुड कधा समाथ ।
बाजोट उवर अइयाळ[11] बाथ ।

---

१ ख सुलहरी। ग सुनहरी। २ ख ग पट्टी। ३ ग सीचाण। ४ ख हरी हरी। ५ ख रगजिता। ग रगिजिता। ६ ख ग. नीसळी। ७ ख. वोप। ग वोय। ८ ख ग वाजुवा। ९ ग बलाक। १० ख ग पीडा। ११ ख ग ईयाल।

---

३७ कासनी – कासनीके फूलोके रग वाला घोडा। ताफता – चमकदार रेशमी कपडे जैसे रगका घोडा। पँच कल्याण – मागलिक घोडा जिसका शिर (माथा) और चारो पैर सफेद हो और शेष शरीर लाल, काला या किसी अन्य रगका हो। सूलहरी – यहा सुनहरी शब्द होना ठीक अर्थ बैठता है, रग विशेषका घोडा। चपा – चपा फूलके से रगका घोडा। सिचाण – सिंचान नामक पक्षीके समान रगका घोडा।

३८ जिलहरी – रग विशेषका घोडा। आबनूसी – आबनूस वृक्षकी लकडीके समान अत्यन्त श्याम रगका घोडा। जमद – जामुनके रगका घोडा। मुरहरी – ( ? )। हरी – रग विशेषका घोडा। सेली समद – एक प्रकारका शुभ घोडा। अथंग – अपार, असीम।

३९ अनोप – अनुपम। बाजुवां – पार्श्वों। चाकां – ( ? )। पींडा – पशुओके पिछले पैरका ऊपरी भाग। सचाक – चक्रके समान गोलाईयुक्त।

४०. ताम्र तुड – ( ? )। समाथ – समर्थ, मजबूत। बाजोट – काठ या पत्थरकी वन हुई चौकी जिस पर भोजनका थाल रखते हैं। उवर – वक्षस्थल। अइयाळ – घोडेकी गर्दनके वाल। बाथ – वाहु-पाश।

केहास बिहूं[1] धजरग कन्न[2] ।
प्रतहास[3] गौसरिप[4] चहर[5] पन्न[6] ।। ४०

दुजराज नयण ससि बीज डाच ।
मल्लूक पसम मुखमल कुमाच ।
झमरूख[7] चमर[8] सिखराळ[9] झाट ।
सुजि ओछ[10] पडछ आसण सुघाट ।। ४१

दै[11] उवर टकर ढाहै दुरग ।
तदि दुहू दळा इसडा तुरग ।
अति लीण[12] लोह पतिध्रमी[13] आण ।
लहि[14] ठाम ठाम चाढै[15] लगाण ।। ४२

पाडवा खुरहरां झपट पाय ।
तदि मिळै[16] हाथळा ओप ताय ।
ओपै[17] दुसमाजा[18] तन उतग ।
आरसी झळक काढिया[19] अग ।। ४३

---

१ ख ग. विहू । २ ख. कन्न । ग. कन्ह । ३ ख प्रतिसाह । ग प्रतिसाद । ४ ग गोसरिप । ५ ख ग चौहोर । ६ ख पन्न । ७ ख झम्मररुष । ग झमररुष । ८ ख चम्मर चमर । ग वाल चमर । ९ ख तथा ग प्रतियोमे यह शब्द नही है । १० ख ग ओछ । ११ ग दे । १२ ख. लाण । ग लोयण । १३ ग प्रतिध्रमी । १४ ख ग्रहि । ग ग्रही । १५ ख ग. चाढ़े । १६ ख ग मिले । १७ ख ओपे । ग ओपैं । १८ ख ग दुसमाला । १९ ग काढीया ।

---

४० केहास – कैंमा । धजरग – ध्वजाके समान नोकदार । कन्न – कर्ण, कान । प्रतहास – ( ? ) । गौसरिप – ( ? ) । चहर – ( ? ) । पन्न – ( ? ) ।

४१ दुजराज – द्वितियाके । ससि – चन्द्रमा । मल्लूक – कोमल । पसम – बाल । मुखमल – कपडा विशेष । कुमाच – कपडा विशेष । झमरूख – घने बालो वाला । चमर – पूछ ( ? ) । सिखराळ – ( ? ) । ओछ – कम, छोटा । पडछ – घोडेकी चाल विशेष । आसण – घोडेकी पीठका वह स्थान जहा पर सवार बैठता है । सुघाट – सुन्दर, दृढ ।

४२ ढाहै – गिरा देते हैं । पतिध्रमी – स्वामी-भक्त । लगाण – लगाम ( ? ) ।

४३ पांडवां – शरीर ( ? ) । खुरहरा – घोडेकी पीठ या शरीरका मैल उतारनेका उपकरण । हाथळा – हथेलिया । दुसमाजा – ( ? ) ।

तहदार गादिया[1] धरे तांम ।
जग जोतिम दाखल जूळ[2] जामं ।
कळबूत[3] रजत सोव्रन सकाज[4] ।
सिकळात[5] मुखम्मल[6] फिरँग साज ।। ४४

तै पीठ धार[7] ताणँस[8] तंग ।
रेसमी जोड अणपार रंग ।
ऊकडा[9] भीडि[10] दुहु कडा आणि ।
जड़किया[11] मलै तर[12] नाग जाणि ।। ४५

बँध जोट दीध कसि जेर बध ।
सझि पेसबध कमसार[13] संध[14] ।
लोहाळ रिछाईपै[15] लगाय ।
घण घूघराळ पाखर घुमाय[16] ।। ४६

कसि सिरी गडद[17] निस[18] सध[19] कीध ।
डोरिया[20] बांधि[21] गजगाह दीध ।

---

१ ख गीयां । २ ख. ग फूल । ३ ख ग कळवूत । ४ ग काज । ५ ग सकलात । ६ ख ग. मुषमल । ७ ख धारि । ८ ख ग ताणेस । ९ ख ऊकढ़ा । ग. ऊकटा । १० ग भीड । ११ ख जडकीया । १२ ख. तदि । ग तरि । १३ ग कमसिर । १४ ग. सझि । १५ ख. ग रिछालीयै । १६ ख घुंमाय । ग घुमाय । १७ ख प्रतिमे यह शब्द नही है । ग गरद । १८ ख ग नीस । १९ ख. दिट । ग दढ । २० ख डोरीया । २१ ग. वाध ।

---

४४. तहदार – मोटी ( ? ) । जोतिम – ( ? ) । जूळ – ( ? ) । रजत – चादी, रौप्य । सोव्रन – सोना । सिकळात – कीमती ऊनी वस्त्र विशेष, सिक्लात । फिरँग साज – जीनके उपकरण जो युरोपियन ढगके थे ( ? ) ।

४५ ऊकड़ा – जीनके साथ कसा जाने वाला चमडेका फीता । मलै तर – चदनका वृक्ष । जाणि – मानो ।

४६. जेर बंध – ( ? ) । पेसबध – ( ? ) । घूघराळ – घुघरूयुक्त ।

४७. सिरी – ( ? ) । गड्द – ( ? ) ।

वीखा भर[१] लंबी माळ वीख ।
तै घाम एविया[२] चूच[३] तीख ॥ ४७

ऐबिया[४] मझै[५] लागति उदार ।
दुति तीर वेग के राहदार ।
औदकै निजर निज छाह आय ।
जुडतां गज चाचर[६] चढै जाय ॥ ४८

मझि खगां[७] झाट खेल्हे[८] मलग[९] ।
आफळै अणी पर धार अग ।
पवन रा कुटबी[१०] वेग पाण[११] ।
उड्डुंड[१२] सिध गुटका जिम उडांण ॥ ४९

खैंग[१३] सहज्ज[१४] मझि डाण खाय ।
अदफरा गिरा[१५] ठहरत आय ।
बाजा[१६] दळ दहुवै[१७] जेण[१८] वार ।
ऐसा[१९] कीया[२०] हाजर तयार ॥ ५०

---

१ ग भरि। २ ख एवीया। ग ऐव्रीवा। ३ ख वूच। ग वूच। ४ ख एवीया। ग एवीय। ५ ग मडे। ६ ख ग. चाचरि। ७ ख. खगि। ८ ग षेलै। ९ क मजग। १० ख ग कुटवी। ११ ग. षाण। १२ ख ग उडड। १३ क खैरू। १४ ख. ग हज। १५ ग प्रतिमे यह शब्द नही है। १६ ख ग वाजिद। १७ ख ग दुहुवै। १८ ख. जेणि। १९ ख ग. एरसा। २० ग किया।

---

४७ वीखा – घोडेकी चालोमेसे एक चाल, इसे संस्कृतमे वीखा कहते हैं। माळ वीख – घोडेकी एक चाल। चूच – ( ? )।

४८ तीर वेग – तीरके समान तेज चलने वाला। राहदार – राह नामक चाल विशेषसे चलने वाला। औदकै – चौंकते हैं। जुडता – भिडने पर, टक्कर लेने पर। चाचर – भाल, ललाट।

४९ मलग – छलाग, कुदान। पवन ' पाण – तेज गतिसे चलनेसे घोडे वायुके कुटुम्बी जैसे मालूम होते है। उड्डुंड उडाण – घोडे मानो सिद्धि-प्राप्त महात्माओके गुटके है, जिन्हे हाथमे लेते ही तुरन्त ही अभीष्ट स्थान पर पहुच जाते हैं।

५०. खैंग – घोड़ा। अदफरा गिरा – पहाडोके मध्य भाग तक। बाजा – घोडा।

दुहौ[1] — इसा[2] बाजि[3] दहुँवै वळां[4], सो कवि कहै[5] सकाज ।
असवारी कजि आणियौ[6], बरण[7] कियौ[8] इक वाज ।। ५१

महाराजा अभयसींघजीरै निज सवारीरै घोडा सुरजपसावरौ वरणण

छप्पै— नख अहिरण[9] धज नळी, कळी बाजू पीडा चक ।
वजै नास बांसळी[10], ताव वीजळी छळी तक ।
ओछ[11] पड़छ रवि अग, चमर भमर सुर[12] चंम्मर ।
केकी ग्रीव कसस्सि[13], तिकर[14] लंकी कब्बूतर[15] ।
सिख दीप स्रवण मुख बीज ससि, चूर[16] स्यांम मूरति चसम ।
सुखपाळ चाल उर ढाल सम, पनँगयाळ मुखमल पसम ।। ५२

---

१ ख. कवित्त छप्पै ।। प्रथम दूहो । ग कवित छप्पै प्रथम दुहो । २ ख ग. यसा । ३ ख दुहुवै । ग दुहूवै । ४ ख दलां । ग दल । ५ ख कहे । ६ ख. ग. आंणीयो । ७ ख ग. वरण । ८ ख ग किसौ । ९ ख ग. अहरणि । १० ख ग वसली । ११ ख. ग ओछ । १२ ख प्रतिमे यह शब्द नही है । १३ ख. ग. कसीस । १४ ख. ग तिकरि । १५ ख ग कबूतर । १६ ख ग चुरस ।

---

५१. बाजि — घोड़ा । कजि — लिए । आंणियो — लाया गया ।

५२. अहिरण — लोहका चोकोर खड जिस पर लोहार या सोनार गर्म धातुको रख कर पीटते हैं । यहा घोडेके सुमोकी दृढता व कठोरताके लिए कविने प्रयोग किया है । धज — ध्वज, ध्वजा डड । नळी — पैरके घुटनेके नीचेका सीधा भाग । कळी — समान । चक — चक्र, गोल, वर्तुल । नास — नाक । बासळी — वासुरी, मुरली । ताव — तेजी । वीजळी — विद्युत । पडछ···अग — ( ? ) । चमर — पूछ । भमर — घने बालो-युक्त । सुर चम्मर — सुरा गायके पूछके बालोका बना हुआ चवरके समान । केकी — मयूर, मोर । ग्रीव — गर्दन । तिकर — समान । लकी कब्बूतर — कवूतर जो बहुत चचल होता है और कुलाचे अधिक खाता है, इसकी घोडेकी चचलतासे उपमा दी जाती है । स्रवण — श्रवण, कान । वि० वि०—घोड़ेके कानोको दीपक शिखाकी उपमा दी जाती है । बीज — द्वितीया । चूर स्याम — शालिगरामकी मूर्ति जिसकी घोडेकी आखसे उपमा दी जाती है । चसम — चश्म, नेत्र । सुखपाल चाल — चलनेमे घोडा ऐसा आराम देने वाला है मानो सुखपाल नामक वाहनमे वैठे हों । उर ढाल — घोडेके वक्षस्थलका भाग ढालके समान चौडा है । पनँगयाळ ··पसम — घोडेके गर्दनके बाल नागके समान और शरीरके बाल मखमलके समान कोमल हैं ।

निज सरीक पवनरौ, धाव धखपँख जिम धावै ।
कमठ पूठि[1] अहि कमळ, धमक चवबँधा धुजावै ।
पडै कोट उर टकर[2], पड़ै[3] गज धकै अपारा ।
जळ धारा मछ जेम, धसै सामौ[4] खग धारा ।
हमगीर जिकौ[5] वागां हका, सिधुर[6] ऊपर[7] सेर सौ ।
सूरज पसाव[8] अैराक सुध[9], सूरज तुरगा एर सौ ।। ५३

लोह डाच धरि लीण[10], मळे हाथळ दुसमाला ।
फिरँग साज झड़फियौ[11], पँडव[12] छोडिया[13] अपाला ।
उछटि[14] डोर[15] ऊपरा, बेव[16] करतौ[17] बिसतारै[18] ।
पै उठाय दांहिणौ[19], अग दाहिणौ निहारै ।
सपतास नही इण सारिखौ[20], जोय सूर[21] इम[22] जाणियौ[23] ।
सूरजपसाव साकति सजे[24], इण विध[25] हाजर आणियौ[26] ।। ५४

---

१ ग. पूठ । २ ग टकरि । ३ ग षडै । ४ ख ग साम्हौ । ५ ख जिको । ६ ख. ग सींधुर । ७ ग उपर । ८ ग. पसा । ९ ग सूध । १० ग लीन । ११ ख झडफीयौ । १२ ग. पडवि । १३ ख ग. छोडीयौ । १४ ख उछुट । ग ऊछट । १५ ग डोर । १६ ख. ग वेव । १७ ग करतो । १८ ख विसतारै । ग विस्तारै । १९ ग दाहणौ । २० ग सारीखौ । २१ ख सूरिज । ग. सूरज । २२ ग ईम । २३ ख जाणीयौ । २४ ख. ग. सझे । २५ ख ग. विधि । २६ ख. आणीयौ ।

---

५३ धाव – गति, दौड । धख पँख – गरुड । कमठ कमळ – इस घोडेकी पीठ कच्छपावतारकी पीठके समान है और शिर शेषनागके शिरके समान है । धमक – चलनेसे पैरकी होने वाली आहट । चववँधा – चारो ओर, चारो दिशाओमे । पडै खग – इस घोडेकी वक्षस्थलकी टक्कर लगनेसे वडे वडे गढ ढह जाते है और वडे वडे हाथी गिर जाते हैं । युद्धस्थलमे तलवारोके प्रहारोके सम्मुख इस प्रकार टूट पडता है मानो मत्स्य जलमे तेजीसे गिरता हो । सिंधुर – हाथी । अैराक – घोडा । हमगीर .. एरसौ – यह घोडा हल्ला होने पर युद्ध भूमिमे सदैव आगे रहने वाला है और हाथियोंके टक्कर मारनेमे सिंहके समान है । यह महाराजा अभयसिंहजीका घोडा सूरज-पसाव सूर्य भगवानके घोडे सप्ताश्वके समान है ।

५४ डाच – मुख । फिरँग साज – यूरोपियन ढगकी घोड़ेकी जीन आदि । पँडव – ( ? ) । अपाला – वेरोक । डोर – लगाम । बेव – वेग, गति ( ? ) । साकति – घोडेकी जीन ।

### तोपारी वरणण

जळा धोय ऊजळा, काट काढिया[1] अरावां।
बळि भैंसा बाकरा, रग चाढिया[2] सरावां।
चँडे चँडे कहि चरच[3], मँडे चित्राम सिदूरां।
थँडे सोर थेलिया[4], भरे गोळा भरपूरा।
अति खेवि[5] धूप आसावरी, रूप सकति वायण[6] रुखी।
धमजगर अगर[7] तोपा धरी, मगर सूर[8] नाहर मुखी॥ ५५

### जोधारारी वरणण

करि सनान ध्रम करै[9], धरे[10] प्रम[11] ध्यान स्यामध्रम।
काया जोग अनेक, भोग माया तजि विभ्रम[12]।
अचवि गग जळ उजळ[13], उजळ[14] पौसाक अधारे।
सझे झळाहळ सार, ईस[15] निज मंत्र उचारे[16]।
भाराथ रमायण भागवत, कथा पवित्र[17] धरि धरि करां।
धरि मरण नेम सिर परि[18] धरा[19], तुररा तुळसी[20] मजरा॥ ५६

एक ताछ इण भाति[21], नीमणायत भड निडुर[22]।
तपसी सिध भड[23] त्रइह[24], तिया[25] धरि अगां बगतर[26]।

---

१ ख काढीया। ग काटिया। २ ख चाढीया। ३ ख ग. चरचि। ४ ख थैलीयां। ग थैलिया। ५ ग षेव। ६ ख वायणि। ग वयणि। ७ ख प्रतिमे यह शब्द नही है। ८ ख. सूर सूर। ९ ख करे। १० ग. धरै। ११ ख. ध्रम। १२ ख वीभ्रम। १३ ग. उझ्झल। १४ ख. ऊजळ। १५ ख ग इसट। १६ ग उचारै। १७ ख ग पत्र। १७ ग पर। १९ ख. ग. धरे। २० ख तुरसी। २१ ग. भांत। २२ ख ग निडर। २३ ख तथा ग. प्रतिमे यह शब्द नही है। २४ ख. ग सवत्रएहै। २५ ख तीयां। २६ ख वग्गतर। ग. वगतरा।

---

५५ काट – जग। अरावा – तोपो। बाकरां – वकरो। रग ( ? )। चरच – पूजा कर के। थँडे – घुसेड कर, दबा कर। धमजगर – युद्ध।

५६ प्रम – परम, विष्णु, ईश्वर। विभ्रम – भ्रममें डालने वाला। अचवि – आचमन कर के। अधारे – धारण कर के। झळाहळ – वेदीप्यमान, तेजस्वी। सार – अस्त्र-शस्त्र, तलवार। ईस – महादेव। भाराथ – महाभारत ग्रन्थ।

५७. एक ताछ – एक ही प्रकारका। नीमणायत – मजबूत, दृढ

झले[1] टोप सिर[2] झलम[3], राग मौजां[4] कर हाथळ ।
आवध[5] कसि करि अमल, झले साबळ झाळाहळ ।
बजरंग[6] घाट काळा विकट, दुरत थाट जमदूत सा ।
कर[7] जोम गयण[8] औघस[9] करै, धोम नयण अवधूत[10] सा ॥ ५७

बीज बचा[11] बाणिका, भरे तीरा भूथारण[12] ।
खर[13] जमदढ खग खरा[14], दुगम बाधै भड दारण[15] ।
जकडि छुरा खजरा, कसै वह[16] साज बदूका[17] ।
ढळक[18] अलीबँध ढाल, अरण[19] मुख[20] वणिक अचूका ।
बरबरै[21] रोस चढिया[22] बिखम[23], परचँड चामँड[24] पूत सा ।
करि जोम आभ[25] औघस करै, धोम नयण अवधूत सा ॥ ५८

रछिक[26] गऊ[27] दुजराज[28], सील गगेव कहावै ।
एक लखां आगमै, एक लख अँगम[29] न आवै ।

---

१. ख. झटे । २ ख. सिरि । ३ ख. झिलम । ४ ख. मौंजा । ग. मोजां ५ ग आवधि । ६ ख. ग वजरग । ७ ख ग. करि । ८ ख गय । ९ ख. औपस । ग. ओधस । १० ख. ग अवधूत । ११ ख ग. वचा । १२ ग भोथारण । १३ ख ग पर । १४ ख. ग परा । १५ ग. दारुण । १६ ख ग वहो । १७ ग वादूकां । १८ ख. ढलिक । ग. ढळकि । १९ क अणिक । २० ख मुषि । ग मुषी । २१ ख ग वरवरै । २२ ख चढ़ीया । २३ ख ग विखम । २४ ग चामुड । २५ ख. ग वोम । २६ ग रक्षिक । २७ ख गउ । २८ ग द्विजराज । २९ ग मन अग ।

---

५७. झले – धारण कर के । टोप ··· झिलम – युद्धके समय धारण करनेका टोप । राग ·····हाथळ – पैरोमे लोहके बने मोजे तथा हाथोमे लोहके बने दस्ताने धारण किये । वजरग = वज्र+अग – मजबूत । दुरत – भयकर । गयण – आकास । औघस – घर्पण । धोम – अग्नि, आग, लाल ।

५८ वाणिका – आकार, प्रकार । भूथारण – तर्कश, तूणीर । जमदढ़ – कटार विशेप । दुगम – दुर्गम्य, भयकर । दारण – जवरदस्त । अलीवँध – पीठ पर ढाल वाधनेका वधन जो वक्षस्थल पर कसा जाता है । अरण – अरुण, लाल । वरवरै – जोशमे ना । चामँड-पूत-सा – भैरवदेव के समान । आभ – आसमान ।

५९ रछिक – रक्षक । गगेव – गाङ्गेव, भीष्म पितामह । आंगमै – पराजित करता है, वशमे करता है । अँगम – वशमे होना, पराजित होना ।

साच वीच[१] जुध समै, मोह धारै नह माया।
करै टूक पति काम, काच सीसी जिम काया।
नरनाह नटै[२] पलटै नही, मेरग्गिर[३] मजबूत[४]-सा।
करि[५] जोम वोम औघस[६] करै, धोम नयण अबधूत-सा[७] ।। ५९

तीन पहर[८] रवि तपै, जिया[९] ऊपर[१०] जग जांणै।
स्याम[११] सुछळि म्रत[१२] सझिण[१३], अधिक उच्छब[१४] चित आंणै*।
खग झाटा[१५] खेल्हबा[१६], राव जम ऊपरि रूठै।
माथै[१७] त्रण[१८] मेल्हता[१९], आगि[२०] झाळा बळि ऊठै।
नेहडा जोड अछरा[२१] नयण, जुध[२२] हणमत पथ जेहड़ा।
नवसहँस तणा कर बहसि नर, उरस छिबै[२३] भड एहडा ।। ६०

इम त्रिहुवै घड अडर, भीच मगरूर 'अभा'रा।
फतै करण ऊफणै[२४], उरै[२५] बब रै[२६] वरारा।
तुरां चढै[२७] तिण वार, वडी फौजरा[२८] बहादर[२९]।
हाजर पैदल हुवा, धिकत[३०] तोडा धूमगर[३१]।

---

१ ख ग वाच। २ ग भटै। ३ ख ग मेरगिर। ४ ख ग मजवूत। ५ ख. ग. कर। ६ ग ओघस। ७ ख ग. अवधूतसा। ८ ख पौहोर। ग पोहर। ९ ख. जीयां। १० ग उपरि। ११ ग. सांम। १२ ग मून। १३ ग सझण। १४ ग उछव।

*यह पक्ति ख. प्रतिमे नहीं है।

१५ ग जाटा। १६ ख षेल्हवा। ग. षेलवा। १७ ग माथे। १८ ख त्रिण। ग तृण। १९ ग मेलतां। २० ग आग। २१ ग अपछर। २२ ख ग जुधि। २३ ख. ग. छिवै। २४ ख ऊफतै। २५ ख ग. वरै। २६ ख वव। २७ ग चढे। २८ ग फोज। २९ ख वाहा। ग वाहादर। ३० ख ग षषत। ३१ ख ग धूमंधर।

---

५९. वोम – व्योम, आसमान।

६०. स्याम – स्वामी। सुछळि – लिए, युद्धमे। सझिण – सिद्ध करने वाला। नेहडा – स्नेह। हणमत – हनुमान। पथ – पार्थ, अर्जुन। नवसहँस तणा – महाराजा अभयसिंह।

६१. भीच – योद्धा। मगरूर – गर्वीला, अभिमानी। अभा – महाराजा अभयसिंह। तोडा – वदूक या तोप छोडनेका पलीता। धूमंगर – अग्नि, आग।

दरगाह थाट गह मह दुरति[१], लोह घाट[२] जुध जै[३] लभै ।
सोळ[४] प्रकार मँत्र पढ[५] सकति, उण वेळा पूजी 'अभै' ।। ६१

सिलै[६] ससत्र[७] कसि सूर, विडँग[८] चढियौ 'विजपाळौ' ।
तुरां चढे तिणवार, लोक पौरस[९] लकाळौ ।
सात सहँस[१०] असवार, च्यार सहँस[११] पैदल चलि[१२] ।
गाढपूर दरगाह अयौ[१३], जाणै[१४] दधि ऊभळि[१५] ।
काळरी निजर[१६] किलमाण[१७] परि[१८], तेज जोर[१९] अणताळरी[२०] ।
भाळरी बूग[२१] पौरस भळळ[२२], विकट[२३] फौज[२४] विजपाळरी ।। ६२

**महाराजा अभैसींघजीरौ वरणण**

पूजि सकति 'अभपती'[२५], सुरँग चिलतह साधारै[२६] ।
हटा[२७] जडे[२८] हूडिया[२९], वीर पौरस वाधारै[३०] ।
भले टोप सिर झिलम, पेच यक[३१] पेच[३२] करै[३३] पर ।
धूप र किर[३४] धारियौ[३५], सिहर भम्मर सहस्सकिर[३६] ।

---

१ ख ग. दुरत । २ ख ग भाट । ३ ख ग जय । ४ ख ग सोलह । ५ ख ग पढि । ६ ख ग सिलह । ७ ख ग सस्त्र । ८ ग विडगि । ९ ख ग पौरसि । १० ख ग. सहस । ११ ख ग सहस । १२ ख चली । १३ ग आयौ । १४ ख जाणे । १५ ग उभळि । १६ ख ग नजर । १७ ख ग. किलमा । १८ ख ग परा । १९ ख जोम । ग जोण । २० ख अणताजरी । २१ ख ग बूग । २२ ग भलल । २३ ग. बिकट । २४ ग फोज । २५ ग अभपति । २६ ख साधारे । २७ ख. ग. हठां । २८ ग. जडै । २९ ख हूडीया । ग हूडिया । ३० ख ग वाधारे । ३१ ख ग. इक । ३२ ग. पेट । ३३ ख. ग कसे । ३४ ख ग किरि । ३५ ख धारीयौ । ३६ ख सहसक्कर । ग सहँसक्कर ।

---

६१ दरगाह – दरबार । गह मह – भीड । अभै – महाराजा अभयसिंह ।

६२. सिलै – सिलह, कवच । विडँग – घोडा । विजपाळौ – विजयराज भडारी । तुरा – घोडो । लकाळौ – वीर । गाढ़पूर – समर्थ, शक्तिशाली । ऊभळि – उमड कर । किलमाण – यवन, मुसलमान । अणताळ – असीम । बूग – ( ? ) । भळळ – तेजपूर्ण ।

६३ चिलतह – कवच । धूप – तलवार । सिहर – शिखर । सहस्सकिर – सूर्य ।

बुगलार[1] भीड[2] वाढौ[3] बहसि[4], जमदढ़ खग साजां जकड़ि ।
भूथांण[5] कसे भुह[6] मूछ भिडि, पाण तांण सांकळ[7] पकडि ।। ६३

हाळबोळ[8] छकहूत, हले असि चढण झळाहळ ।
इम[9] दीसै उण वार, समँद मथसी साहँसबळ[10] ।
बिय[11] सामँद[12] बधसी[13], काय लेसी लँक[14] जुध कर ।
काय हणमँत जिम कमँध, ग्रहे लेसी द्रोणागिर ।
द्रगपाळ[15] कँद करसी दुझलि[16], इसौ[17] तेज दरसावियौ[18] ।
रवि सिहर प्रगट हुय[19] जेण खड[20], 'अभमल' बाहर[21] आवियौ[22] ।। ६४

खमा खमा बोलता[23], लोक लारा अणपारा ।
आप गयण तोलतौ[24], भुजां पौरस[25] छक भारा ।
सझे ताम सल्लाम[26], वस[27] खटतीस वरग्गा[28] ।
सिध जाणै[29] सँकरनू, करै[30] आदेस करग्गा[31] ।
पय धरि रकेब चढियौ[32] पमँग[33], 'अभमल' छक इसड़ै उरड ।
सपताम[34] चढे[35] किर[36] सहँसकिर[37], गोविंद करि चढियौ[38] गुरड[39] ।।६५

---

१ ख बुलगार । ग बुलगार । २ ख भीडि । ३ ग. वाढो । ४ ख ग वहसि । ५ ग. भूथान । ६ ख भौंह । ग भौंह । ७ ख सावल । ग सावल । ८ ख हलावोल । ९ ख. ग यम । १० ख सहसव्वल । ग सहसवळ । ११ ख ग काय । १२ ख ग. समद । १३ ख. ग वाधसी । १४ ख. क । १५ ख द्रिगपाल । ग दिगपाल । १६ ख ग दुभल । १७ ग इसो । १८ ख दरसावीयौ । १९ ख ग होय । २० ख रुष । ग रूष । २१ ख. ग वाहरि । २२ ख आवीयौ । आवियो । २३ ग वोलतो । ग बोलतो । २४ ग तोळतो । २५ ग. पोरस । २६ ख. ग सलाम । २७ ख वग । २८ ग वरगां । २९ ख. जाणे । ग जाण । ३० ग करे । ३१ ग करगां । ३२ ख चढीयौ । ग. चढ़ियो । ३३ ख पमगि । ३४ ख सयतास । ३५ ग चढ़ै । ३६ ख ग किरि । ३७ ख सहसकर । ग. सहसकरि । ३८ ख चढ़ीयौ । ३९ ग गरुड ।

---

६३. बुगलार – ( ? ) । भूथांण – तर्कश । भुह – भौहो । भिड़ि – स्पर्श कर के ।

६४. हळाबोळ – पूर्ण । छकहूत – जोशसे, उमगसे । बिय – दूसरा । सामँद – समुद्र । काय – या, अथवा । दुझलि – वीर, योद्धा । सिहर – शिखर, बद्दल । खड़ – घोडा चला कर ।

६५. आदेस – नमस्कार, प्रणाम । करग्गां – हाथोसे । पय – पैर, चरण । रकेब – घोडेकी काठीके साथ बांधा जाने वाला पावदान । पमँग – घोडा । इसडै – ऐसे । उरड़ – साहस, बल । सपतास – सप्ताश्व । किर – मानो । सहँसकिर – सूर्य, भानु ।

होय सिंधू[1] दळ हले, तूर वाजतां त्रंबाळां ।
बेला[2] कठठे[3] बिकट[4], तोप हमलां दताळां ।
करि[5] बँदूक[6] पायकां, ज्वाळ धिकता[7] जामगां[8] ।
पाति जजर पेडियां[9], भांति[10] छेडिया[11] भुजगां ।
वरियांम सिलह पोसा[12] विचै, भुजां 'अभै' नभ भेटियौ[13] ।
तदि[14] जाणि भाण[15] ग्रीखम तणौ[16], काळी घटा लपेटियौ[17] ।। ६६

चिलतह झिलम चढाय[18], ससत्र[19] अंग कसे सचेळा ।
चढि रैवत[20] पसाव[21], 'वखत'[22] आयौ जिण[23] वेळा ।
तिलक छाप तुलिछिका[24], माळ[25] धारिया[26] महाबळ[27] ।
हरवळ लखमण हुवौ[28], 'अभा' रघुपति च[29] आगळ ।
मुख मूछ[30] अणी भूहार मिळ[31], अरण वदन छक ऊफणै[32] ।
व्रजराज उपासक[33] जिण[34] वखत, दीठा (हिज) आवै देखणै ।। ६७

---

१ क. सिध्ध । ग सीधू । २ ख वेला । ग. बैळा । ३ ख कठटे । ४ ख ग विकट । ५ ख ग कर ६ ख. ग वदूक । ७ ख धिषता । ग धिषता । ८ ख जामंगा । ग जामगां । ९ ख ग पेडीया । १० ग भांत । ११ ख छेडीयां । ग छोटिया । १२ ग पोस । १३ ख भेटीया । ग. भेटियो । १४ ग. तदे । १५ ख भाणि । १६ ग ग्रीखम-तणो । १७ ख लपेटीयौ । १८ ख वढाय । १९ ख ग सस्त्र । २० ख रेवत । ग रेवत । २१ ख ग पसाय । २२ ग बषत । २३ ख ग तिण । २४ ख ग तुळसिका । २५ ग. माळा । २६ ख धारीयां । २७ ख महावल । २८ ख. हूवो । २९ ख ग. चै । ३० ख मुछ । ३१ ख ग मिळि । ३२ ख. उफणे । क. ख. ऊजणे । ३३ ख ग उपासिक । ३४ ख ग तिण ।

---

६६ तूर – वाद्य विशेष । त्रबाळा – नगाडो । वेला – तरग, हिलोर । हमलां – हमलो, टक्करो । दताळा – हाथियो । जांमगा – पलीतो । जजर – यमराज । वरियाम – वीर, योद्धा । सिलह पोसां – अस्त्र-शस्त्रोसे सुसज्जित । अभै – महाराजा अभयसिंह । नभ – आकाश । भेटियौ – स्पर्श किया । लपेटियौ – आवेष्ठित किया ।

६७ चिलतह – कवच । झिलम – युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप । सचेळा – श्रेष्ठ, वढिया । रैवत – घोडा । पसाव – ( ? ) । वखत – महाराजा वखतसिंह । लखमण – लक्ष्मण । रघुपति – श्री रामचन्द्र भगवान । आगळ – आगे । अणी – नोक । भूहार – भौहो । अरण = अरुण – लाल । छक – जोश, उत्साह । ऊफणै – उबाल खाता है । व्रजराज – श्रीकृष्ण । वि० वि०—महाराज वखतसिंहजीके व्रजराजका इष्ट था ।

पखरैता ध्वज पूर, सिलह ससत्रा[1] रिण साजा ।
उभै सहँस आपरा, साथि[2] सांमत सकाजा ।
त्रिय[3] सहस ताबीन[4], दीध महाराज[5] पायदळ ।
उभै सहँस उमराव, बँधव जतनेत[6] सहँसबळ ।
अगिवाण हुवा चक्र आक्रखे[7], रमा कथ चढ़ि गुरड़[8] रथ[9] ।
हरवळा मुहर[10] हरवळ हुई, वाघ अरोहक[11] वींसहथ[12] ।। ६८
'गिरधर' 'रतन' गरूर, वणे[13] हरवळ 'विजपाळी ।
कडाजूड़ कठठियौ[14], ऐम दळ 'अभमल' वाळौ ।

**सर बुलदरा जोधारारो वरणण**

उठो[15] 'विलँद' दळ असुर, बधि[16] मुगरबां जनेबां ।
पेसकबज खजरां, जकड़[17] वणिया[18] रणजेबा[19] ।
सझि अलीबंध[20] सिलहट सपरि[21], धिख[22] चख गिड़कँध धाखिया[23] ।
पाघडाबध ओळा[24] प्रचँड, अंध जेम[25] उपडाखिया[26] ।। ६९

---

१ ख. ग. सस्त्रा । २ ग साथ । ३ ख त्रए । ग त्रण । ४ ख ग. तावीन । ५ ख ग माहाराज । ६ ख. ग. जतनैत । ७ ग. आक्रषे । ८ ख. ग गरुड । ९ ख. ग रथि । १० ख. मोहोरि । ग. मोहर । ११ क अरौहक । १२ ख ग वीसहथि । १३ ख. वले । १४ ख. कठटीयो । ग कठटियो । १५ ग. उठि । १६ ख ग वांधि । १७ ख जकडि । १८ ख वणीया । १९ ख रणजेवां । ग. रणजोवा । २० ख अलीवघ । २१ ख सपर । ग. सफर । २२ ख. धिसि । २३ ख. घाषीया । २४ ख ओला । २५ ख ग जोम । २६ ख. ग उपडाषीया ।

---

६८ पखरैता – कवचधारी घोडा । ध्वज – ( ? ) । उभै – दो । सहँस – सहस्त्र । त्रिय – तीन । तावीन – आधीन, मातहत । पायवळ – पदाति, पैदल सेना । अगिवाण – अगाडी, अग्र । चक्र – विष्णुका शस्त्र, सुदर्शन चक्र । आक्रखे – धारण किए हुए । रमा कथ – विष्णु । वाघ अरोहक – सिंह पर सवारी करने वाली । वीसहथ – बीस भुजा वाली, देवी, दुर्गा ।

६९ गिरधर – गिरधरदास भडारी । रतन – रत्नसिंह भडारी । मुगरबा – विशेष प्रकारकी तलवारे । जनेबा – तलवारो । रणजेवा – तलवारें विशेष । सिलहट – एक खास प्रकारका कपडा जिसकी ढालें बहुत बढिया और मजबूत बनती है । सपरि – ढाल । गिडकँध – प्रचड शरीरधारी, शक्तिशाली । पाघडाबध – ( ? ) । ओळा – श्रेष्ठ, उत्तम । अध – अधकासुर नामक दैत्य जो दिति और कश्यपका पुत्र था । इसके सहस्त्र शिर थे, यह अधक इसलिए कहलाया कि देखते हुए भी मदके मारे अधोके समान चलता था । उपड़ाखिया – जोशीला, गर्वोन्मत ।

इक भाटी[1] आवखी, पियै[2] दुव्बार[3] सराबा[4] ।
भैसा आधा भखै, बोट[5] नुकळमै कवाबा ।
डंड[6] सहत[7] करि दुरत[8], रवद काचा पळ रौळै[9] ।
मण बारह[10] मुदगरा, त्रणा जेही[11] ऊ तोलै[12] ।
भोळै[13] परत्र[14] जम[15] भूपरै[16], पिड[17] जाणै अहि पाखिया[18] ।
विण[19] सुरसबर्ध[20] भक्खी[21] विखम, अध कध उपड़ाखिया[22] ॥ ७०

किता कसे[23] अैराक, ऊच पौसाका ऊपर ।
अरि[24] ओळा[25] पाघडा[26], कुलँग जूगा[27] बहु[28] जव्वर[29] ।
सिलह किता नखसिक्ख, करे जवनां कळिचाळा ।
इम कसिया[30] अैराक, मगजवदळा[31] मतिवाळा ।
करि करि कुराण पांना[32] करग[33], रवद[34] जाणि जद[35] रूठिया[36] ।
बे बे कबाण[37] भूथाण[38] बँध[39], आसमाण[40] छिब[41] ऊठिया[42] ॥ ७१

---

१ ख ग भाठी । २ ख पीयै । ३ ख. दुव्वार । ४ ख. ग सरावा । ५ ख ग वोट । ६ ख ग दड । ७ ख. ग. सहस । ८ ख दुरित । ९ ख ग रोलै । १० ख ग वारह । ११ ख जैही । १२ ग. उतोलै । १३ ख ग भोलै । १४ ख ग पडत । १५ ख ज । १६ ख द्रूतरै । ग भूतरै । १७ ख. पड । १८ ख. पाषीयाँ । १९ ख. विधि । २० ख सूरसवध । ग. सूरसवध । २१ ख ग. भषी । २२ क. वपडाषिया । २३ ख कसै । २४ ख ग पर । २५ ख औला । २६ ख पाषडा । २७ ख ग जुग्गा । २८ ख वह्न । २९ ख भवर । ग. जबर । ३० ख. कसीया । ३१ ख ग मगजवाला । ३२ ग पना । ३३ ख ग. करगि । ३४ ग रवद । ३५ ग जम । ३६ ख रूठीया । ३७ ख ग कवाण । ३८ ग भूथानि । ३९ ख वधि । ग. बधि । ४० ग आसमाणि । ४१ ख ग छवि । ४२ ख. ऊठीया । ग. उठिया ।

---

७०. भाटी – शराब निकालनेकी भट्टी । आवखी – पूर्ण । बोट– टुकड़ा, खड । नुक्ळमैं– शराबके साथ खानेकी चीज, गजक । दुरत – जबरदस्त, भयकर । पळ – मास । रौळै – हजम कर जाते हैं । मुदगरा – मुग्दर । भोळै ··पाखिया – उनके देखनेसे भ्रममे यमराज जैसे दिखाई देते हैं और वे श्याम शरीरके ऐसे प्रतीत होते है मानो विना परो वाले कृष्ण-सर्प हो ।

७१ अैराक – घोड़ा ( ? ) । कुलँग – कुलाह, मुकुट । जूगा – जोगा, वडा । कळिचाळा – योद्धा, वीर । रवद – यवन ।

चढै[1] एम कळिचाळ, पूर पखराळ पमंगा ।
अति झडत्त[2] अणताळ, दुवै चख[3] झाळ[4] दमंगा[5] ।
नजर[6] ठाळ[7] करि निहँग, समळ ऊताळस उड्डी ।
पडै[8] चोट पखाळ, बाळ[9] बधीयक[10] बड्डी[11] ।
विकराळ जोम छकिया[12] वहै, देव मनिख[13] अहि नँह[14] डरै ।
रिणताळ[15] आळ माटै[16] रवद, काळ चाळ[17] पकडै[18] करै ॥ ७२

जुदा[19] मिसल[20] जगहूत[21], असल[22] विल्लायत[23] वाळा ।
इसडा बारहजार, चूच चढिया[24] कळिचाळा ।
चह्चहती चीवरी, जेम वाणी मुख जपै ।
दळ जाहर देखता, करी नाहर उर कपै ।
जमरूप केस भूरा जरद, रुख सिचाण[25] सामळ[26] रुखा ।
चख चोळ नजर कहरी चुगल, मुगळ[27] बाज[28] बहरी[29] मुखा ॥ ७३

गहि बँदूक[30] फिरँगान[31], मेघ डबर[32] मझि मंडे ।
च्यार कबांण[33] मुसैद, च्यार तरगस[34] चवडडे ।

---

१ ख. ग. चढे । २ ख ग झडतां । ३ क. छख । ४ ग झाळा । ५ ख ग डुमगा । ६ ग निजर । ७ ख वाल । ग बाळ । ८ ख ग. पाडै । ९ ख ग. वाळ । १० ख. वधीयक । ग बधियक । ११ ख. वड्डी । ग व्वडी । १२ ख. छकीया । १३ ख ग मनषि । १४ ख ग नह । १५ ख. ग रणताल । १६ ग मटै । १७ ख वाळ । १८ ख पकडे । १९ ख. ग जुदी । २० ग. निसल । २१ ख गजहूत । ग. जमदूत । २२ ग असलि । २३ ख विल्लायति । ग विलायति । २४ ख. चढ़ीया । २५ ग सीचांण । २६ ख सम्मल । ग. सम्मल । २७ ख. मुषल । २८ ख. वाज । २९ ख ग वहरी । ३० ख वदूक । ग वदूष । ३१ ख. फिरगान । ग. फिरगान । ३२ ख ग डवर । ३३ ख कवांण । ३४ ख. ग. तरकस ।

---

७२. पखराळ – कवचधारी घोडा । अणताळ – अपार । दमगां – अग्निकण । ठाळ – देख कर । निहँग – आकाश । जोम – जोश । रिणताळ – युद्ध । आळ माटै – कौतुकमे, खेलमे । चाळ – वस्त्राञ्चल ।

७३. चूच – पूर्ण । चीबरी – एक पक्षी विशेष जो रात्रिमे ही बोलता है जिसकी बोली भयावह समझी जाती है । सिचाण – बाज, एक शिकारी पक्षी । सामळ – चील । कहरी – भयावह, आफत पैदा करने वाला । बहरी – एक शिकारी पक्षी ।

७४. मुसैद – ( ? ) । तरगस – तर्कश ।

टोप सबज[1] चिलतहै, धरै[2] समसेर जमधर।
फजर पढै[3] फातिया[4], असुर चढिया[5] गज ऊपर।
कसमसे घाट अहि कोम कँध, भोम पाट लग्गौ[6] भवण[7]।
चढि रीस जाणि[8] रांवण[9] चढ़े, रांमहूत धमचक करण[10] ॥ ७४

सीसा जामँग सोर, *भार गाडा बाणा भर।*
चव हजार सुत्रनाळ[11], हबस[12] उसताज बहादर[13]।
त्रण[14] हजार रहकळा, अरब उसताज अचूका।
सुकर नरा बगसरा[15], बार[16] हज्जार[17] बँदूकां[18]।
बि[19] हजार तोप कठठी[20] बडी, गोळमदाज[21] फिरगरा।
करि अजर[22] क्रोध कीधा किलम, जबर[23] मसाला जंगरा ॥ ७५

चढे सेख चँदवळा, मुगळ वर[24] गोळज[25] गौळां।
रचे गोळ राफजी[26], सयद पाठाण हरोळा।
मँडे अराबां[27] मुहरि[28], वीर नीसाण[29] वजाया।
अली अली कहि असुर, एम सामुहा[30] चलाया।

---

१ ख सवज। २ ख ग. धरे। ३ क चढ़े। ग. पढै। ४ ख फातीया। ५ ख चढ़ीयौ। ग चढियो। ६ ख लगा। ग. लगो। ७ ख ग. भमण। ८ ग जाण। ९ ख. ग रामण। १० ख ग रमण।

*ख तथा ग प्रतियोमे—'भार वाणा गाडा भर।'

११ ख ग सुत्रनाळि। १२ ख ग हवस। १३ ख. ग. वहादर। १४ ख ग त्रिण। १५ ख ग वगसरां। १६ ख. ग वार। १७ ग हजार। १८ ख. वदूका। ग. बदूषा। १९ ख ग वि। २० ख. कठटे। ग कठठे। २१ ख. गोलदाज। २२ ख. अरज। २३ ख ग जजर। २४ ख ग वर। २५ ख गोजल। ग. गौळज। २६ ग राषजी। २७ ख सरावा। २८ ख मोहोरि। ग. मोहौरि। २९ ख निसाण। ३० ख सातुहा।

---

७४. सवज – उत्तम, श्रेष्ठ, सब्ज। चिलतहै – कवच। फातिया – प्रार्थना, फातहा। अहि – शेषनाग। कोम – कच्छपावतार। भवण – भ्रमित। धमचक – युद्ध।

७५ सुत्रनाळ – ऊँट पर रख कर चलाई जाने वाली वदूक जो साधारण वदूकसे वडी होती है। त्रण – तीन। वगसरां – मुसलमानो। वि = द्वि – दो।

७६ चँदवळां – सेनाका पीछेका भाग, चदावल। गौळज – सेनाका मध्य भाग। राफजी – शीया मुसलमान। वि०वि० – शीया मुसलमानोका वह दल जिसने हजरत अलीके लडके जैदका साथ छोड दिया था—सिर्फ इसी कारणसे सुन्नी लोग इस शब्दका प्रयोग शीया लोगोके लिए उपेक्षापूर्वक करते हैं। हरोळां – सेनाका अग्र भाग, हरावल। मुहरि – अगाडी, आगे। अली – ईश्वरका एक नाम। असुर – यवन। सामुहा – सम्मुख, सामने।

मोरचा राड़ि त्रण[1] दिन मँडे[2], सूरा धरम सबाबरा।
आमसम्हा[3] कठठि[4] चौड़ै[5] उरडि[6], नरियँद भूळ नबाबरा[7] ॥ ७६

जुधप्रिय देवारौ वरणण

साकणि डाकणि सकति, सकति चवसठी समोसरि[8]।
समळ महा[9] सिध सकति, सकति वायणी[10] सिकौतरि[11]।
मँगळ धमळ[12] उदमाद[13], करै नाचै किलकारै।
जैत जैत 'जोधांण', एम मुख[14] वचन उचारै[15]।
'अभमाल' लड़ै[16] 'सिर विलँद'हू[17], घणा मुगळ खग[18] घावसी।
जेचंद[19] जिमाडी[20] अटक जिम, जीमण आज जिमाडसी[21] ॥ ७७

वीरभद्र गणराज, सहत[22] पारबती सकर[23]।
खिल[24] नारद खेचरा, भूत भूचरा भयकर।
त्रहकै[25] तूर त्रबाळ[26], चड कळिचाळ[27] त्रहक्कै[28]।
वकै[29] वीर-वैताळ[30], ग्रीध[31] बेताळ[32] गहक्कै[33]।

---

१ ख ग. त्रिण। २ ग मडै। ३ ख. ग. अमसम्हा। ४ ख ग. कठटि। ५ ख. चोडै। ६ ख. ग. उरड। ७ ख. नवावरा। ग नवावरा। ८ ख ग समौसर। ९ ख. माहा। १० ख. ग वायण। ११ ख ग सीकोतर। १२ ग. धवल। १३ ग उदमदा। १४ ख. मुषि। १५ ख उवारे। १६ ख ग लडे। १७ ख सीरविलदूहू। १८ ख. षगि। ग. षल। १९ ख ग जयचद। २० ग. जिमाडि। २१ ग. जीमाडसी। २२ ग सहित। २३ ख. सकरि। २४ ख. लिषि। ग षिलिं। २५ ख. ग. त्रहके। २६ ख. त्रवाल। ग तंबाळ। २७ ग. कळिकाळ। २८ ख चहक्के। ग. चहकै। २९ ख ग. वके। ३० ख. वेताळ। ३१ ग. गीध। ३२ ख. विकराल। ग वकराळ। ३३ ख गहक्के। ग गहकै।

---

७६. सबाबरा – किसी वस्तुके मध्यका वह भाग जिसमे वह बहुत उत्तम जान पडे; प्रारम्भका, श्रेष्ठताका। आमसम्हा – परस्पर एक दूसरेके सम्मुख। भूळ – समूह।

७७. समोसरि – समान, तुल्य। समळ – साथ। वायणी – ( ? )। मँगळ धमळ – मागलिक गायन। उदमाद – हर्ष, आनद। किलकारै – तेज आवाज करता है। जैत जैत – विजय हो, विजय हो।

७८. खेचरा – आकाशचारी। भूचरा – भूमि पर चलने वाले। त्रहक्कै – वाद्य बजते हैं। तूर – वाद्य विशेष। त्रंबाळ – नगाडा। चड – रणचडी, दुर्गा। कळिचाळ – योद्धा, युद्ध तथा युद्धप्रिय देवगण। वीर – युद्धप्रिय देव विशेष जिनकी सख्या राजस्थानीमे ५२ मानी जाती है। बेताळ – देव विशेष।

झणणाट[1] नाद नूपर[2] झँझर[3], सुर वाजॅत्र सैतीसमौ ।
रँभ हूर रथा ढँकियौ[4] अरक, मँडि ब्रहमँड[5] बावीसमौ ॥ ७८

हैदळ पैदळ हसत[6], हले दळ बळ[7] हीलोहळ[8] ।
उदध सात उलटिया[9], जाणि बारह[10] घण वद्दळ[11] ।
रज[12] झाखौ[13] किरणाळ[14], कमळ जहराळ लटक्कै[15] ।
चोळ भाळ चापडै, कमँध रवदाळ कटक्कै[16] ।
त्रबाळ नाद रौद्रव तदिन[17], विखम दहू[18] दळ[19] वाजिया[20] ।
सझि छपन कोडि जाणै[21] सघण, एकणि[22] साथ अग्राजिया[23] ॥ ७९

**सेनारौ वरणण**

**भुजगी**— इसा[24] थाट ईरान[25] नौ कोट[26] ऽवाळा[27] ।
चढे आविया[28] चापड़े बधि[29] चाळा[30] ।
छका ऊफणै बूग[31] लोहां छछोहा[32] ।
धिखै[33] कँरवा[34] पाडवा जेम[35] धौहा[36] ॥ ८०

---

१ ग. टणणाट । २ ख. नूपुर । ग भूपर । ३ ग झझ । ४ ख टक्रीयौ । ग ढ़कियौ । ५ ग. ब्रह्मड । ६ ख ग हसति । ७ ख ग वळ । ८ ग हिलोहल । ९ ख. उलटीया । १० ख ग वाहरह । ११ ख ग वादळ । १२ ग. रज । १३ ख झर्षो । ग. ढ़कौ । १४ ख. किरनाळ । ग जिणनाळ । १५ ख. लट्टके । ग. लटके । १६ ख कट्टके । ग कहके । १७ ख. ग तदनि । १८ ख. दुह । ग. दुहू । १९ ख चल । ग. वल । २० ख वाजीया । ग वाझिया । २१ ख. ग. जाणे । २२ ग एकण । २३ ख अग्राजीया । २४ ख. ईसा । २५ ग. इरान । २६ ख कोट । २७ ख. वाला । ग वाळा । २८ ख ग. आवीया । २९ ख. धाधि । ग. वाधि । ३० ख. वाला । ग. वालां । ३१ ख ग वूग । ३२ क छछोहा । ३३ ख. ग. धिषे । ३४ ग केरवा । ३५ ख प्रतिमे यह शब्द नही है । ३६ ख प्रतिमे यह शब्द नही है ।

---

७८. झँझर – पैरोमे धारण करनेका स्त्रियोका आभूषण विशेष । अरक – सूर्य ।

७९. हैदळ – घुडसवार । हसत – हस्ती, हाथी । हीलोहळ – समुद्र । झाखौ – धूलि-आच्छादित जो स्पष्ट नही दिखाई देता हो । किरणाळ – सूर्य, भानु । कमळ – शिर । जहराळ – शेषनाग । लटक्कै – लचक रहे हैं । चापडै – युद्धस्थलसे । रवदाळ – मुसलमान । रौद्रव – भयकर ।

८०. नौ···ऽवाळा – नवकोटी मारवाडके अधिपतिके । चाळा – उत्पात, युद्ध । बूग – (?) । छछोहा – तेज ।

अहकार नब्बाब[1] दज्जोण[2] अेहौ[3] ।
जठै हिंदवा[4] नाथ पोराथ जेहौ ।
हुबेवा[5] चढे जाणि क्रोधाळ होवै ।
दसेकध[6] बाणावळी[7] राम दोवै[8] ।। ८१
किलम्मेस[9] राजा तणा भीच[10] कोपै ।
इसी रीस बेवै[11] दळा माहि ओपै ।
झिगे जांणि सामद्दरी हेक झाळी ।
अनै[12] दूसरी तीसरी[13] नैण ऽवाळी[14] ।। ८२
उठी धू 'विलदेस' आयौ अछायौ ।
अठी हूत राजा अभैसिंघ आयौ ।
किलम्मेस वाळा उठी भूल काळा ।
अठी आवळा-भूळ भूपाळ वाळा ।। ८३
ढळक्कै[15] गजा चम्मरा[16] क्रीब[17] ढालां ।
भळक्कै[18] अणी भम्मरा[19] त्रीछ भाला ।
खळक्कै[20] सिलै[21] पाखरां राड़ि खगी ।
जळक्कै[22] विचै धोम-सी दीठ जगी ।। ८४

---

१ ख. नवाव । ग नबाब । २ ख दझ्झेण । ग दजोण । ३ ख. एहो । ४ ख हींदुवां । ग. हींदवो । ५ ख. हुवेवा । ग हुवैवी । ६ ख दसैकध । ग. दसकध । ७ क वाणवळी । ८ ग दोवैं । ९ ख किलमेस । ग किलमेस । १० ख ग जोध । ११ ख वेवै । ग वेवैं । १२ ग. अना । १३ ख. तीसरा । ग तीसरा । १४ ख ग. वाळी । १५ ख झलकै । ग ढ़ळकै । १६ ख चमरा । ग. चमरा । १७ ख ग क्रीछ । १८ ख भल्लकै । ग भळकै । १९ ख. भमरां । ग भमरा । २० ग षळकै । २१ ख ग सिल्है । २२ ख जल्लकै । ग जलूकै ।

---

८१. दज्जोण – दुर्योधन । दसेकध – रावण । बाणावळी – धनुर्विद्यामे प्रवीण, बाणोकी पक्ति ।
८२. किलम्मेस – बादशाह । भीच – योद्धा ।
८३. उठी धू – उस तरफसे । विलदेस – सर बुलद । अछायौ – जोशपूर्ण । भूल – दल । काळा – वीर, योद्धा । आवळा-भूळ – सुसज्जित ।
८४. चम्मरां – ( ? ) । क्रीब – ( ? ) । ढाला – हाथियोके ललाट पर युद्धके समय धारण कराया जाने वाला उपकरण । भळक्कै – चमकते है । त्रीछ – तीक्ष्ण । खळक्कै – खलखलकी ध्वनि करते हैं । सिलै – कवच, सिलह । धोम-सी – अग्नि जैसी ।

लळक्कै[1] गजां पोगरां[2] नाळ[3] लोभा ।
भळक्कै[4] मुखां सूरमा भांण सोभा ।
गुड़ै बे[5] दळां आगळा[6] तोप गाडा ।
जठै बांण[7] गोळां सराजांम जाडा ॥ ८५

भयाणंख गाडा किता जूग[8] भारू ।
दळा गोळिया[9] पूर सांमांन[10] दारू ।
जळाबोळ[11] हीलोळ हालत जाडा ।
अणी आरबां[12] पूरबां थाट आडा ॥ ८६

अरोहै[13] कितां जूग बेछाड अगा[14] ।
चखा चोळबोळां[15] हथा[16] रांम चंगा[17] ।
तठै दूग[18] तूटै धिखै आग[19] तोडां ।
घणू नाळ[20] ताळां वजै नास घोड़ां ॥ ८७

भड़ै फीण घोड़ा मुखे सेत भारा ।
तिकै जाणि ऊगा धरा वीज[21] तारा ।

---

१ ख. ग लळकै । २ ग. पौगरा । ३ ख ग. नाग । ४ ख. ग भळकै । ५ ख. वे । ग. वैंदळां । ६ ख आगला । ग. अगळा । ७ ख ग वाण । ८ ख. गुज । ग जूग । ९ ख ग गोलीया । १० ख सामान । ग सामान । ११ ख जलावोल । १२ ख. आरवा । ग आरवा । १३ ख ग. अरोहे । १४ ग अगी । १५ ख. चोलवोलां । १६ ख. ग हथा । १७ ग चगी । १८ ख. दोग । ग. दौंग । १९ ख. ग. आगि । २० ख नाग । २१ ख वीचि ।

---

८५ लळक्कै · लोभा – हाथियोकी सूंडें ( पोगरा ) कोमलताके कारण इधर-उधर लचकती या मुड़ती है, भौंरे इसे कमलकी नाल समझ कर लोभायमान हो रहे है । सराजाम – सामान । जाडा – घना, बहुत ।

८६ जूग – ऊंट । भारू – वजनी, भार ढोने वाले । दारू – बारूद । जळाबोळ – समुद्र । हीलोळ – तरग, लहर ।

८७ बेछाड़ –चचल, उद्दण्ड । चखा चगा – उन योद्धाओके नेत्र जोशमे लाल हैं और हाथोमे बडी-बडी बदूकें (रामचगा) है । दूग – अग्निकण । धिखै – प्रज्वलित हो रहे हैं । आग-तोडा – बदूकें या तोपें छोडनेके पलीते । नास – नाक, नाकका रध्र ।

८८. फीण – फेन । सेत – श्वेत । भारा – बूद, कण ।

उठै हाथियां[1] ऊपरा धज्ज[2] उड्डी[3] ।
गिरां ऊपरा ऊछळे[4] जाणि[5] गुड्डी[6] ॥ ८८

थटै[7] सामँद्रा[8] हाथिया[9] पाळि[10] थाई ।
उभै जम्मरी[11] जाणि[12] जम्मात[13] आई ।
धरा गूजरां देववा[14] क्रोध धीठा ।
दुवै धूमरा फील नीसाण दीठा ॥ ८९

उठी राफजी आविया[15] च्यार यारी ।
अठी[16] बैसनां[17] साखतां[18] अग्रकारी ।
परा ऊचरै[19] नाम चौवीस पीरा[20] ।
धरै ध्यांन औतार[21] चौवीस धीरां[22] ॥ ९०

उठै[23] ईसफा आसफां[24] नांम आखै ।
दुवै काळिका चडिका अेह दाखै ।
कतेबा[25] कलम्मा[26] उचारै[27] कुराणा ।
पढै भारथा[28] भागवंतां पुरांणा ॥ ९१

---

१ ख ग हाथीया । २ ग धज । ३ ख. ग ऊडी । ४ ग ऊछळै । ५ ग जांण । ६ ख. ग गुडी । ७ ख थटा । ग थट । ८ ख सामद्रा । ग सामद्र । ९ ख ग हाथीया । १० ग पाळ । ११ ग जासरी । १२ ग. जांण । १३ ग जमात । १४ ख. दाविवा । ग दीविवा । १५ ख आवीया । १६ ग. उठी । १७ ख वैसना । ग. वैसना । १८ ख साकत । ग. साकता । १९ ख. ऊच्चरै । ग उच्चरै । २० ख पीर । २१ ग ओतार । २२ ख. धीर । २३ ख ग उवै । २४ ख आसपा आसपा । ग. आसपा । २५ ख कतेवां । २६ ख. कल्लमां । ग. कल्लौमा । २७ ख ग. उच्चारै । २८ ग भारथ ।

---

८८. धज्ज – ध्वजा । गिरां – गिरो, पर्वतो । गुड्डी – पतंग ।

८९. धरा गूजरां – गुजरातकी भूमि । धूमरा – समूह । फील – हाथी ।

९०. औतार – अवतार ।

९१ कतेबां – धर्म-शास्त्रो, कितावो । कलम्मा – वे वाक्य जो मुसलमान धर्मके मूल मत्र हो, कलमा । भारथां – महाभारत ग्रथ ।

विवांणां परां ता[1], चलां[2] सौख वागी ।
लखे[3] हूर रंभा वहै वादि[4] लागी ।
उपाड़ै किता मारका खैग[5] आगा ।
लड़ेवा[6] जिकां सीस गैणाग[7] लागा ।। ६२

असीलां रसी रेहिया[8] हाथ आंणै ।
तसीसां करै जोस कावांण तांणै ।
सरीखां अमीरां तणा जोध सूरा ।
पियै[9] आकला राडि नू[10] क्रोध पूरा ।। ६३

वहै हैमरा[11] सौख[12] जाणै[13] विवांणै[14] ।
जुझाऊ[15] घटा भाद्रवा जेम जांणै[16] ।
दखै[17] नांम अल्लाह[18] दे हाथ दाढी ।
चवै रांम मूछां वळे भ्रूंह[19] चाढी ।। ६४

किलम्मां[20] अनै वाद लागौ[21] कनौजां ।
फबै[22] आय चाकै चढी दोय फौजां ।। ६५

---

१ ख. ग रा । २ ख. ग. तलां । ३ ग. लखै । ४ ख ग वाद । ५ ख. ग. षैग । ६ ग लडैवा । ७ ख गैं । ग. गैणागि । ८ ख रोहीया । ग. रोहिया । ९ ख पीए । ग पिए । १० ग. नौ । ११ ग. हेमरां । १२ ख ग सोक । १३ ख. जाणे । १४ ख विवाणे । ग. विवाणे । १५ ख जोझाउ । ग. जोजावू । १६ ख. जांणे । १७ ख दखे । १८ ग अलाह । १९ ख. ग. भौंह । २० ख. किलमां । ग. किलमा । २१ ग लागो । २२ ख फवे । ग फवै ।

---

६२ विर्वाणा – विमानो, वायुयानो । सौख – पशुओ, वायुयानो आदिके तेज चलनेसे होने वाली ध्वनि । लखे – देख कर । खैग – घोडा । गैणाग – आकाश, गगनागरा ।

६३ असीला – एक प्रकारका शस्त्र । तसीसां – हाथो । कावांण – कमान, धनुष । आकला – तेज ।

६४ हैमरां – हयवरो, घोडो । जुझाऊ – वीररस पूर्ण । दखै – कहते है । चवै – कहते हैं ।

६५. किलम्मां – मुसलमानो । वाद – युद्ध । कनौजां – राठौडो ।

जुधरो आरंभ

**कवित्त**–धर अंबर[1] क्रम[1] धोम, घटा डंबर रज घुम्मट[2] ।
हाक वीर है हीस[3], भूल नेवर झणणाहट ।
भाला बह[4] भळहळै, जेण[5] वेळा[6] जुध जीपक ।
जांणै घर घर[7] जगै, दीपमाळा मझि[8] दीपक ।
दहु[9] वळा[10] तोप लग्गी दगण, रूप काळ डाचा रुखी ।
रवि प्रळै काज[11] जांणै रसम, ज्वाळ[12] झाळ ज्वाळामुखी ।। ९६

धुबै[13] आरबा[14] धोम, गाज रौद्रव गमगम्मैं ।
प्रथमी गयण पताळ, धमक ओद्रव[15] धमधम्मै* ।
उदधि सुजळ ऊझलै, हेम प्रघळै[16] जळ हल्लै ।
दइत[17] लाग नर देव, दसै द्रगपाळ[18] दहल्लै ।
ऊडता[19] भिडै छूटै उडै, असण जेम गोळा अखत ।
अन्नेक[20] जांण छूटै अरक[21], नवेलाख तूटै नखत ।। ९७

दगै नाळ रवदाळ, जड़ै विकराळ जँजीरा ।
कमँध दळां कळिचाळ, उडै झळ नाळ अँगीरा[22] ।

---

१ क. ख कह । २ ख. घूमट । ३ ख हैंसीस । ग हैहीस । ४ ख वौहो । ग बोहो । ५ ख जेणि । ६ ख. वेलां । ७ ग घरि घरि । ८ ख सझि । ९ ख दुहु । ग. दुहु । १० ख वलां । ग बला । ११ ख. ग काल । १२ ग. ज्वाळा । १३ ख ग. धुवै । १४ ख आरवा । १५ ग ओद्रव ।

*यह पक्ति ख. प्रतिमे नही हैं ।

१६ ख प्रयलै । १७ ख दईत । १८ ग द्रिगपाळ । १९ ग उडता । २० ग अनेक । २१ ख जूटै । २२ ख अगिरा ।

---

९६ डबर – समूह । है = हय – घोडा । हींस – घोडेकी हिनहिनाहटकी ध्वनि । नेवर – घोडेके घुटनेके ऊपर धारण कराया जाने वाला आभूषण । भळहळै – चमकते हैं । जीपक – जीतने वाला, विजयी । डाचा – मुख । रसम – रश्मि, किरण ।

९७ धुवै – छूटती हैं । आरबा – तोपो । रौद्रव – भयकर । गमगम्मै – इधर - उधर, चारो ओर । ओद्रव – भयकर । हेम – हिमालय पर्वत । दहल्लै – भयभीत होते हैं । असण – वज्र । अखत – अक्षत ।

९८. नाळ – तोप । रवदाळ – मुसलमान ।

धर अबर धडहड़ै[1], छिपा धूमर भर छाए।
रज अबर[2] अरडाव[3], जेठ रति जिम चढ़ि जाए[4]।
विचि तिमर घोर गोळा वहै, जाजुळ[5] मंगळ[6] जोतिरा।
अम्हसम्हां जांणि[7] लागा उडण, सिखर मुकति साजोतिरा॥ ९८

प्रळैकाळ घण परै[8], असण घण घोर अँगारा।
सुणिजै[9] नह अनि सबद, निसह रिण[10] तूर नगारां।
दुगम[11] वळा[12] दारुवां[13], दुहू तरफां दरसाई।
जाणै घर घर[14] ज्वाळ, लक हणमंत[15] लगाई[16]।
पखरैत जरद घटका पडै, रटका गोळां रीठरा।
हाथियां[17] सीस कुटका[18] हुवै[19], मटका जांण[20] मजीठरा॥ ९९

रांमचँगा रहकळा, चलै गोळा कळिचाळक।
कबडी[21] जाणिक[22] करै, कुवर[23] पावकरा बाळक[24]।
गडा जेम गोळिया[25], रीठ वाजै घोमारव।
खेलै[26] जांण[27] खिदौत[28], भळक करि करि निज[29] भाद्रव।

---

१ ख घरहडै। २ ख. डवर। ग. डबर। ३ ख. अरडावै। ४ ग जायै। ५ ग जाजुलि। ६ ग मगलि। ७ ग जाण। ८ ख ग. पडै। ९ ख ग. सुणजे। १० ख ग रण। ११ ग दुरम। १२ ख ग झला। १३ क. ख दारावां। ग. दारवां। १४ ग घरि घरि। १५ ग. हनूमत। १६ ग लगाइ। १७ ख. हाथीयां। १८ ख गुटका। १९ ग. हुवा। २० ख जाणि। २१ क कडवी। २२ ख. जाणे। ग जाणै। २३ ख ग कुवर। २४ ख ग वाळक। २५ ख गोलीया। २६ ख. षेल्है। २७ ख जाणि। २८ ख ग षिदोत। २९ ख. ग निस।

---

९८ धडहडै – कपायमान होता है, ध्वनित होता है। छिपा – रात्रि। धूमर – धुंआ। अरडाव – ध्वनि विशेष। मगळ – अग्नि, रक्त वर्ण। अम्हसम्हां – आमने-सामने। मुकति साजोतिरा – सायुज्य मुक्ति जिसमे जीवात्मा परमात्माम लीन हो जाता है।

९९ निसह – रात्रि। दारुवां – बारूदो। पखरैत – कवचधारी घोडा। जरद – कवच या कवचधारी योद्धा। रटका – टक्करो। रीठरा – प्रहारोके। मटका – मिट्टीका वना वडा पात्र।

१०० राम चँगा – एक प्रकारकी वडी वदूक। कबडी – एक प्रकारका खेल। गडा – गिरते हुए वर्षाके जमे हुए गोले, ओला। घोमारव – ( ? )। खिदौत – खद्योत, जुगनू। भळक – चमक-दमक।

समसेर बांण छूटै समर, श्रो श्रोपम इण नाचनै[1]।
परियांण[2] जाण[3] छूटै[4] पनँग, जावै[5] चदण[6] बावनै[7] ॥ १००

उण मौसरि 'अभमाल', सूर हाकलै सकाजा।
श्रणी कढा[8] टाळिया[9], राम जाणै[10] कपिराजा।
सीह जाण[11] सादूळ, एक साथे[12] बह[13] श्राया।
जटी वीरभद्र जिसा, जाणि बह[14] वीर जगाया।
काढिया[15] खगा मुजरा[16] करै, भौह[17] मूछ[18] श्रणिया[19] भिडी।
सूरजपसाव[20] आगै सभै[21], इम त्रिहु वागा ऊपड़ी ॥ १०१

धमकनाळ धर धसकि, थाट परबत थरसल्ले[22]।
कमळ सेस भिड[23] कमठ, दाढ दाढाळ दहल्ले[24]।
परां सौक[25] पक्खरा[26], धमक[27] वागी धजराजां।
श्रनळ पख उड्डिया[28], गिलण जाणै[29] गजराजा।

---

१ ख भावनै। २ ख ग परश्राय। ३ ख जाणि। ४ ख ऊडे। ग. ऊडै। ५ ख ग जाए। ६ ख चदणि। ७ ख. वावनै। ग वावनै। ८ ग काढ। ९ ख टालीया। १० ख ग जाणे। ११ ख जाणि। १२ ख ग. साथे। १३ ख वहो। ग बहो। १४ ख. वहो। ग बहो। १५ ख काढीयां। १६ ग. मुरा। १७ ख ग भौह। १८ ख ग मूछ। १९ ख ग श्रणीयां। २० ख सूरिजपसाव। ग सूरजिपसाव। २१ ग सभै। २२ ग थरसलै। २३ ख. ग भिडि। २४ ख दहक्के। ग. दहलै। २५ ख. ग. सोक। २६ ख ग. पाखरा। २७ ख ग धमस। २८ ख ऊडीया। ग. ऊडिया। २९ ख ग जाणे।

---

१००. **परियाण** – पखधारी। **पनँग** – सर्प।

१०१ **मौसरि** – अवसर पर। **हाकलै** – जोश दिलाता है, उत्तेजित करता है। **सादूळ** – शार्दूलसिंह। **जटी** – जटाधारी। **सूरजपसाव** – महाराजा अभयसिंहके निज सवारीके घोडेका नाम।

१०२. **थरसल्ले** – कम्पायमान हो गये। **कमळ** – शिर। **दाढाळ** – वराहावतार। **सौक** – पक्षियोके या तीरो, वाणो आदिके तेज चलने पर होने वाली ध्वनि। **धजराजां** – घोडो। **अनल पख** – एक प्रकारका बडा पक्षी विशेष जिसके विषयमे कहा जाता है कि यह सदैव आकाशमे उडा करता है और वही अडे देता है। इसका अडा पृथ्वी पर गिरनेके पूर्व ही फूट जाता है और बच्चा निकल कर आकाशमे उडता हुआ अपने मा-बापसे जा मिलता है। इसकी खुराक हाथी मानी जाती है। यह हाथीको चोचमे पकड कर आकाशमे उड जाता है। **गिलण** – निगलनेके लिए।

धुबि[१] नास फडड[२] रज धूसरड[३], रथ अछरां मग रोकिया[४] ।
नाळां निहाव गोळां निहसि[५], झाळा दिसि असि झोकिया[६] ॥ १०२

मोतीदांम– दहूं[७] वळ[८] घोर त्रंबागळ[९] डाक ।
हुवै रिणताळ[१०] दहू[११] वळ[१२] हाक ।
धुवां रज डंबर[१३] अंबर[१४] धार ।
अमावस भाद्रव जेम अँधार ॥ १०३
उडै झळ मगळ चाळ अँगार[१५] ।
प्रळै घण बांण कुहक्क[१६] अपार ।
पडै घड[१७] तूट[१८] अधौअध पाट ।
घडतोइ जांणि भुले विध[१९] घाट ॥ १०४
कसी सत बांण[२०] जुवांण कबाण[२१] ।
बिहू[२२] वळ छूटत फूटत बाण ।
उठै अँग नारँग छीछ[२३] अपार ।
फिरगिय[२४] जाणि[२५] पतंग फुँहार ॥ १०५
उठै[२६] घण सायक मेघ 'विलंद' ।
अयौ[२७] किर गोकळ ऊपरि इंद ।

---

१ ख ग. धुवि । २ ग फरड । ३ ग धूसरडि । ४ ख रोकीया । ५ ख ग निहस । ६ ख झोकीया । ७ ख दुहु । ग दुहू । ८ ग बल । ९ ख. त्रवागल । १० ख. ग रणताळ । ११ ख दूहु । ग दुहू । १२ ग बल । १३ ख डंव्वर । १४ ख. अव्वर । १५ ग अधार । १६ ख ग बाण कहोक । १७ ख घट । ग. घढ । १८ ख. तूटि । १९ ग विधि । २० ख ग पाण । २१ ख. ग कवांण । २२ ख. विहू । २३ ख. छाछ । ग वीछ । २४ ख फिरगीया । ग. फुरगीय । २५ ग. जाण । २६ ख. उठे । २७ ख आयो ।

---

१०२. निहाव – तोपकी ध्वनि ।

१०३. त्रवागळ – नगाडा । डाक – ध्वनि । वळ – ओर, तरफ । भाद्रव – भादो मास ।

१०४ बांण कुहक्क – एक प्रकारकी तोप ।

१०५. जुवांण – जवान । नारँग – रक्त, खून । छींछ – फव्वारा । फिरगिय – फिरगी देशकी बनी तलवार (?) । पतग – सूर्य (?) ।

१०६. सायक – तीर, बाण ।

झरां झँगरा[1] वजि पावक झौक[2] ।
सरां वजि तीड[3] परां जिम सौक[4] ॥ १०६

चलै सर[5] वेधि सिले[6] घट चोळ ।
झिणै[7] पट[8] जाणि समीर झकोळ ।
घणा सर पार हुवै बरघल्ल[9] ।
सौ सौ सर गात रहै अधसल्ल ॥ १०७

झुकै[10] धर हैमर सूर झुझार[11] ।
भमै किर साख तिडा[12] दळ भार ।
इसी[13] सर[14] सौक नक्यू[15] अटकाय ।
आयौ 'अभपत्तिय'[16] बाज उडाय ॥ १०८

इती कहता गुण लग्गिय[17] वार ।
इती नह वार लगी उणवार ॥ १०९

**सरबुलदरौ जोधारांनू वकारणौ**

छप्पै[18]—बार[19] हजार बँगाळ[20], 'विलँद' तिण वार वकारे ।
करि कबांण[21] टकार, धाव सांमा[22] पग धारे[23] ।

---

१ ख झिगरां । ग. झीगरां । २ ख ग. झोक । ३ ग टीड । ४ ख. ग. सोक । ५ ख सिर । ६ ख सल्है । ग. सिल्है । ७ ख ग झीणै । ८ ग पटि । ९ ख ग. वरघल्ल । १० ख. झूकै । ११ ख जुझार । १२ ख ग तीडां । १३ ख. इसै । १४ ख सिर । १५ ग नक्यौ । १६ ख. अभपतीय । १७ ख. लग्गीय । ग लगीय । १८ ख ग छपै । १९ ख. ग वार । २० ख वगाल । २१ ख. ग कवांण । २२ ख साम्हां । ग सम्हा । २३ ग. धारै ।

---

१०६. झरां झँगरां – झाडी समूह । पावक – अग्नि । झौंक – ध्वनि, आवाज विशेष । सरां – वाणो, तीरो । सौक – पक्षियोंके तीरो आदिके तेज चलनेकी ध्वनि ।

१०७ सर – तीर । सिलै = सिलह – कवच । घट – शरीर । समीर – हवा । झकोळ – झोका । वरघल्ल – बडा छेद । अधसल्ल – मध्यमे, बीचमे ।

१०८. झुकै ·····भार – युद्धस्थलमे सैकडो घोडे (हैमर) और योद्धागण इस प्रकारसे भिड रहे हैं मानो खडी फसल पर टिड्डी दल मंडरा रहा है । वाज – घोडा ।

११०. बँगाळ – मुसलमान । वकारे – उत्साहित किये । धाव – आक्रमण ।

चढि हाथी चालियौ[१], सयद[२] कायम्म[३] सरीनह ।
चढि हाथी चालियौ[४], तांम पठांणा[५] 'तरीनह' ।
बारहां[६] तणा सैयद[७] बिहू[८], चढि हाथिया[९] चलाविया[१०] ।
अल्लीजनाद[११] आवधअली[१२], अली अली करि आविया[१३] ।। ११०

वकि[१४] पटा फुलहथा[१५], 'सोरि'[१६] खिलकार[१७] कुसत्री[१८] ।
तस[१९] कसीस लेजमां[२०], जजर गत्ती जाजत्री[२१] ।
ज्यान मढी बज्जर[२२], भूर-दाढा[२३] चव[२४] फेरां ।
भौह चढी मौसरा, हाथ कड्ढी समसेरां ।
इलमा कुरांण कहि कहि अली, वदै[२५] वीद[२६] हूरा वरण ।
हाबस्स[२७] खेल जैही हरख, मुसलमांन बहसे[२८] मरण ।। १११

कोट[२९] तोप कमधजा, जिकै[३०] लोपै[३१] जमराणा ।
कोट लोप[३२] रहकळा, बोह[३३] लोपै[३४] झड बाणां ।
सौक[३५] पडै[३६] सायकां, सेल धमरोळ सताबां[३७] ।
मिळै लोह मारका, नरिंद[३८] हरवळां नबाबा[३९] ।

---

१ ख चालीयौ । २ ख ग सैद । ३ ख ग. कायम । ४ ख चालीयो । ५ ख ग. पाठांण । ६ ख वारहा । ७ ख. ग सईयद । ८ ख. विहू । ग वहू । ९ ख हाथीया । १० ख चलावीया । ११ ख ग अलीजमाल । १२ ख अवादअली । ग आवदअलो । १३ ख आवीया । १४ ख वाकि । ग. वाक । १५ ख. फुलहता । १६ ख ग सेर । १७ ख. ग पिल्हार । १८ ख ग. कुस्सती । १९ क. कतीस । २० क लेनमां । २१ ख. जाजती । ग. जाझझती । २२ ख. वज्झरा । ग वजरां । २३ ख ग. भूर दढ्ढी । २४ ग. चवा । २५ ख. वरणे । ग. वणे । २६ ख. वाव । २७ ख. ग हावसं । २८ ख. ग. वहसे । २९ ग. कोटि । ३० ख. ग. जिके । ३१ ख लोपे । ३२ ग रोप । ३३ ख वोह । ग वोहो । ३४ ख ग लोपे । ३५ ख ग सोक । ३६ ख. पडे । ३७ ख सतावा । ३८ ग निरद । ३९ ख नवावां । ग नवावा ।

---

११०. अली – ( ? ) ।

१११ वकि – एक प्रकारकी तलवार । पटा – तलवारें विशेष । फूल हथा – तलवारे । खिलकार = खिल्हार – खेलाडी । तस – हाथ । कसीस – प्रत्यचा चढाना । लेजमां – एक प्रकारकी कमान । वि वि – फारसीमे धनुष चलानेके निमित्त अभ्यास करनेके निमित्त वनी हुई नरम और लचकदार कमानको लेजम कहते हैं, कविने यहा कमानके अर्थमे प्रयोग किया है । जजर – वज्र, भयकर । भूर-दाढ़ा – यवन, मुसलमान । चव फेरां – चारो ओर । मौसरां – श्मश्रु, मूंछ ।

११२. धमरोळ – प्रहार । सताबा – तेज, शीघ्र ।

समसेर सिलहपोसां सिरै, उडि रत वहै अचप्पळां[१] ।
जुध जांणि[२] पतँग वरसंत जळ, वसँत रमै घण वीजळा ॥ ११२

जुध वरणण

दोढ़ौ[३]—समँद[४] 'विलँद' दळ सबळ, अथग आवियौ[५] 'अभैमल' ।
उण वेळा सुर असुर, झळळ लोहा भिड[६] ऊजळ[७] ।
पमग[८] भाण-पसाव[९], पमँग पखरैतां पाडै ।
मुगळां खगि 'अभमाल'[१०], झिलम सहिता सिर झाड़ै ।
अत खुरा[११] उळझता, दियै[१२] असिपाव दतूसळ ।
'अभौ'[१३] खाग आछटै, कहर विहरै कूंभाथळ ।
अम्हसम्हा[१४] हजारां[१५] आहुड़ै[१६], धोम पड़ै खागा धजर ।
घडियाळ[१७] जाणि वज्जै[१८] घणी, गढ लका फज्जर[१९] गजर ॥ ११३

छप्पै—इम लडता ऊमरा[२०], अरज कीधी जिण वारा[२१] ।
वाग थभ[२२] इकवार, हाथ देखिजे हमारा ।
भड परखण भूपाळ, ताम ऊभौ[२३] असि ताणै ।
रामायण रघुनाथ[२४], जोध परखं कपि जाणै[२५] ।
सैफळै[२६] लडै भड असुर सुर, जडै सेल[२७] खागा जरक ।
कौतक्क[२८] जेण[२९] देखै कळह, *ऊभौ रथ थाभे अरक ॥ ११४

---

१ ख अच्चपला । ग. अचपळा । २ ग जाण । ३ ग. दोढो । ४ ख कमद । ग समद । ५ ख आविणं । ग आवीयो । ६ ख. ग भिडि । ७ ख ऊझल । ग उझल । ८ ख ग पम्मग । ९ ग. भाणपस्साव । १० ख अभमाल । ग अभिमाल । ११ ख षरा । १२ ख दीयै । १३ ख अभै । ग अभो । १४ ख. अम्हासम्हा । १५ ख हजरा । १६ ग आडै । १७ ख घडीयाल । १८ ग वजै । १९ ख. ग फजर । २० ख. ग उबरा । २१ ख. ऊणवारा । ग उणवारा । २२ ख ग थाभि । २३ ख उभौ । २४ ख ग रुघनाथ । २५ ख जाणे । २६ ख सैपटै । २७ ग. सैल । २८ ख ग कौतग । २९ ख ग तेण । *ख तथा ग. प्रतियोमे— रथ थाभै ऊभो अरक ।

---

११२ सिलह पोसा – जिरहबख्तरसे सुसज्जित । रत – रक्त, खून । अचप्पळां – तेज । पतँग – ( ? ) । वीजळा – तलवारों ।

११३ भाण पसाव – सूरजपसाव नामक महाराजा अभयसिंहका घोडा । झाडै – काटता है । अत – आर्ते । दतूसळ – हाथीके बाहर निकले हुये दात । कहर – कोप । विहरै – विदीर्ण करता है, काटता है । अम्हसम्हा – एक दूसरेके अभिमुख । धोम – प्रहार, तेज प्रहार । धजर – भाला । फज्जर – प्रात काल । गजर – प्रात.कालके घटेकी आवाज ।

११४ सैफळै – अस्त्र-शस्त्रो सहित ( ? ) । जरक – प्रहार, चोट । अरक – सूर्य ।

रसावली– जूडिए[1] जूगरा[2], धरै[3] ध्रोहं[4] धरा ।
जाणिजै[5] जम्मरा[6], भड्डु[7] रौस[8] भरा ॥ ११५

करब्बाहै[9] करा, साबळा सौसरा ।
तन्न[10] बग्गत्तरा, पजरा सप्परा ॥ ११६

आछटै अज्जरा[11], करिमाळक्करा[12] ।
फूटरा फूटरा, चाचरा फाचरा ॥ ११७

डाडरा वीहरा[13], स्रोणरा ड ल्हरा ।
गूदरा मांसरा, अतरा[14] ह्वै गरा ॥ ११८

झूलपै झझरा, पक्खणे[15] सप्परा ।
धुब्बि[16] धोमध्धरा[17], बक्करा[18] बीफरा ॥ ११९

कटीए[19] कल्लरा, लूडता[20] लालरा ।
भौमि हौदब्भरा[21], गज्ज[22] नारगरा ॥ १२०

---

१ ख. जूडीए । ग जूडिये । २ ख ग गूजरां । ३ ख ग धर । ४ ख. ग द्रोह । ५ ख जाणजे । ग जाणजै । ६ ग जमरा । ७ ख ग. भड । ८ ख. रोस्स । ग रोस । ९ ख वाहे । ग बौंहो । १० क तन्न । ११ ग अजरा । १२ ख. करमालकरा । १३ ख. विःहरा । १४ ख. आतरा । १५ ख ग पषणे । १६ ख धुब्चि । ग धुवि । १७ ख घोमघरा । ग. घोमघरा । १८ ख वकरा । १९ ख कट्टीय । ग कटिए । २० ग लाडता । २१ ख.ग. भरा । २२ ख ग. गज ।

---

११६ करा – कृपान, तलवार । सावळा – भाला विशेष । सौंसरा – ( ? ) । तन्न – शरीर । सप्परा – ( ? ) ।

११७ अज्जरा – जबरदस्त । करिमाळक्करा – तलवारके । फूटरा – ठीक, सुन्दर । चाचरा – मस्तक । फाचरा – खड, टुकडा ।

११८. डाडरा – वक्षस्थल । वीहरा – विदीर्ण होकर । स्रोणरा – शोणितका, रक्तका । डाल्हरा – ( ? ) । गूदरा – चर्बीके, मासपिंडके । अतरा – आंतोके । गरा – ढेर ।

११९. झझरा – ( ? ) । पक्खणे – ( ? ) । सप्परा – ( ? ) । धुब्बि – तेज होकर, जोशमे आकर । धोमध्धरा – युद्ध । वक्करा – ( ? ) । बीफरा – ( ? ) ।

१२० कटीए – कटे ए अथवा कटिके (?) । कल्लरा – जबडेके । लूडता – लडखडाना हुआ (?) । गज्ज = गज – ढेर । नारगरा – रक्तके ।

पिंड[1] नाळप्परा, भब्भकै[2] भभरा।
रत्र पत्रब्भरा[3], चौसटी[4] चडरा ॥ १२१

त्रक्ख[5] मेटत्तरा, पिवै[6] नीरपरा[7]।
बीरन्या[8] तब्बरा[9], किल्लकारक्करा[10] ॥ १२२

उड्डि[11] सीस उरा[12], पिड़[13] चक्काफरा[14]।
धरि[15] फूलध्धरा[16], जाणि पकज्जरा[17] ॥ १२३

आवता अधंरा[18], सीस[19] लै सँक्करा[20]।
जोग[21] अइज्जरा[22], कठ हारक्करा ॥ १२४

सूरमां[23] चौसरा, आवरै[24] अच्छरा[25]।
आसुरा[26] अड्डरा[27], वरां[28] हूरं वरा[29] ॥ १२५

---

१ ख ग पड। २ ख. भब्भकै। ग भभकै। ३ ख. ग भरा। ४ ग चौसठी। ५ ख ग त्रष। ६ ख ग. पीयै। ७ ख ग नीरप्परा। ८ ख. वीरन्य। ९ ख. त्यवरा। ग नृत्यवरा। १० ख. ग किलक्वारकरा। ११ ख ग उडि। १२ ख. ग अरा। १३ क फिड। ख पिंड। ग फिड। १४ ख ग चक्वफरा। १५ ख ग धर। १६ ख ग फूलध्धरा। १७ ख. पक्वजरा। ग. पक्वजरा। १८ क अघरा। १९ ख ग सिर। २० ख सि सकरा। ग ले सकरा। २१ ख. जोग्यद। ग. जोग्यइ। २२ क फज्जरा। ग अजरा। २३ ख ग सुरिमा। २४ ग अवरै। २५ क. अज्जरा। २६ ख ग असुरा। २७ ख ग. अडरा। २८ ख ग. वर। २९ ख हूरव्वरा। ग. हूरवरा।

---

१२१ नाळप्परा – ( ? )। भब्भकै – उमडते हैं। भभरा – शस्त्र-प्रहारसे होने वाले बडे-बड घाव। रत्र – रक्त, खून। पत्रब्भरा – देवियोंके खप्पर भर रही हैं।

१२२ त्रक्ख – तृषा, प्यास। बीरन्या – युद्धप्रिय देव। तब्बरा – पात्र विशेष। किलकारक्करा – हर्षध्वनि।

१२३. उड्डि पकज्जरा – शस्त्र-प्रहारोसे शिर कट कर खड-खड होकर भूमि पर गिर रहे हैं। वे गिरे हुए शि-रखड इस प्रकार शोभायमान हो रहे हैं मानो कमलकी पखुडिएँ गिरी हो।

१२४. आवता ...हारक्करा – युद्ध-भूमिमे तलवारोके प्रहारोसे शिर कट रहे हैं। उन्हे भगवान रुद्र ऊपर ही ऊपर भूमि पर गिरनेके पहिले ही उठा कर अपनी मुडमाला कर लेते हैं।

१२५ चौसरा – पुष्पहार। आसुरा – मुसलमान। हूर – अप्सरा, परी।

कड्ढि[1] धूबक्करा[2], धड नृत्तध्धरा[3] ।
करी[4] घावक्करा[5], विड्डु[6] रूपव्वरा[7] ॥ १२६
केतरा राहरा, केय[8] रूखक्करा[9] ।
छक्किया[10] छोहरा[11], लग्गिया[12] लोहरा ॥ १२७
घूमवै[13] घूमरा[14], मत्र[15] ज्यू[16] मद्दरा ।
कँध पाव उड्डे[17] कर कोपरा[18] धुकै छकै लौटै धरा ॥ १२८
वरियाम 'अभा' 'सिर विलँदरा',
एम[19] करै जुध ऊमरा[20] ॥ १२९

दुहा[21]—इम[22] धिकता[23] रिण[24] ऊमरा[25], धड़ छँट[26] खळखग धार ।
सौ पावँडा[27] नरेस हू, वधि[28] पहुता[29] जिण वार[30] ॥ १३०

**जुधमें महाराजा अभैसींघजीरौ वरणण**

**मोतीदाम**—वधे[31] छक पौरस दूजिय[32] वार[33] ।
झडै[34] नर तूजिय[35] वाग झलार ।

---

१ ख वढि । ग वढ्ढि । २ ख ग धूवक्करा । ३ ख ग नृतिधरा । ४ ख ग करि । ५ ख घाकक्क । ६ ख ग. विडि । ७ ख ग वरा । ८ ख ग केई । ९ ख. ग रूषक्करा । १० ख छकीया । ग छक्कीया । ११ ख ग छौहरा । १२ ख लग्गीया । ग लगीया । १३ ख घूमवै । ग धूमवै । १४ ख घमरा । ग घूमरा । १५ ख मन । ग मत । १६ ख. ज्यौं । ग ज्यौ । १७ ग. उडे । १८ ख ग कोप । १९ ख एक । २० ख ऊवरा । ग उवरा । २१ ख दूहा । ग दोहो । २२ ख ग यम । २३ ख ग धिषता । २४ ख ग रण । २५ ख ऊवरा । ग ऊवरा । २६ ख ग छत । २७ ख पावडा । ग पावडा । २८ ख विधि । २९ ख. पौहौता । ग पोहोता । ३० ख ग उणवार । ३१ ग वधै । ३२ ख ग. दूजीय । ३३ ग वारा । ३४ ख. झाडे । ३५ ख ग तूजीय ।

---

१२६ कड्ढि—निकाल कर । धूवक्करा—हाथमे तलवार लेकर अथवा शिर कट जाने पर । धड रूपव्वरा—धड भूमि पर नृत्य करता है । इस प्रकार घावोसे परिपूर्ण शरीर भयावह प्रतीत होता है ।
१२७. केतरा—केतुके । राहरा—राहुके ।
१२८ घूमरा—समूह । कोपरा—कुर्पर, कूर्पर, कोहनी, घुटना ।
१२९ ऊमरा—सरदार, योद्धा ।
१३० धिकता—क्रोधमे प्रज्वलित होते हुए । छँट—कट कर ।
१३१ छक—जोश, उत्साह । झड़ै—वीर-गति प्राप्त होते हैं । तूजिय—धनुष अथवा घोडा ।

राजा गयणाग छिबै चढि रोस ।
'जोधा' हर सूर भयंकर जोस ।। १३१

उगा[1] मुख बारह[2] दीत उदार ।
भिड़े[3] तिणवार मुछार[4] भुहार ।
जोए[5] जुध[6] रीस चढी[7] वरजागि ।
उठी घ्रत सीचिय[8] जांणिक आगि ।। १३२

'विलद' निबाब[9] परा वरियांम[10] ।
रुठौ[11] किर रावण ऊपर राम ।
अयौ कँस ऊपर[12] केसव एम ।
जाळधर सीस जटाधर जेम ।। १३३

धरे असुरा दळ ऊपर[13] धख ।
पेखे जिम नाग कुळां धखपख ।
इयै[14] असुरां दळ क्रोध उफाण[15] ।
जुए[16] गज जूथ कँठीरव जाण[17] ।। १३४

'अजावत' साबळ हाथ उपाडि ।
फबै[18] नरसिंघ जिसौ खँभफाडि[19] ।

---

१ ख उग्ग । ग ऊगा । २ ख ग वारह । ३ ग भिडै । ४ ख सुछार । ५ ग जोये । ६ ख जुाध । ७ ख वढ़ी । ८ ख ग सीचीय । ९ ख नवाव । ग नबाब । १० ख वरीयाम । ११ ख रूठौ । ग. रूठो । १२ ख ऊपरि । १३ ख ऊपरि । १४ ख ईवै । ग ईयै । १५ ख. उफाणि । ग ऊफाण । १६ ख ग जूए । १७ ख. ग जाणि । १८ ख फवे । १९ ग खँभफारि ।

---

१३१. गयणाग – आसमान । जोधा – जोधपुर नगरके संस्थापक राव जोधा । हर – वंशज ।

१३२ दीत – आदित्य, सूर्य । मुछार – श्मश्रु । भुहार – भौहे । वरजागि = (व्रजा + अग्नि – वज्राग्नि ।

१३३ जाळधर – एक पौराणिक असुरका नाम । जटाधर – महादेव ।

१३४. धख – क्रोध, गुस्सा । पेखे – देखे । धखपख – गरुड । कँठीरव – सिंह ।

१३५ नरसिंघ – नृसिंहावतार ।

सुरांगुर[1] रूप इसँ 'अभसाह' ।
निलागर[2] थापलियौ[3] नरनाह ।। १३५

'चौडा' हर तांम करे[4] चख चोळ ।
गाढागुर वाग उपाडिय[5] गोळ ।
अैराकिय[6] धावत खाग[7] उपाड[8] ।
परा लगि जाणि[9] उडत पहाड़ ।। १३६

बहै[10] अतरिक्ख[11] अरोहक[12] बाज ।
खडे[13] हरि जाणि चढे खगराज ।
पमग अफाळि सुरज्ज[14]-पसाव ।
रोळा मझि[15] मेलियौ[16] मारवै[17] राव ।। १३७

महाराजा अभैसींघजीरा जुधरौ वरणण

दिये कपि डांण उडाण[18] दमग ।
पड़ै[19] उर चोट[20] मतग पतग[21] ।
करैं धज साबळ वाह कमध ।
कडाधड फूटि[22] पडै गिडकध ।। १३८

---

१ ख. सूरागुर । २ ख ग नीलागर । ३ ख. थापलीयौ । ४ ग करि । ५ ख ग उपाडीय । ६ ख अैराकीय । ७ ख. वाग । ग वागि । ८ ग. उपाडि । ९ ख. जाण । १० ख ग वहै । ११ ख ग अतरीष । १२ ग. अरोहिक । १३ ख ग षडै । १४ ख सूरिज्ज । ग सूरज पसाव । १५ क तझि । १६ ख. मेलीयौ । ग मेलियो । १७ ख मारुव । ग मारवा । १८ ख ऊफाण । १९ ख ग पाडै । २० ग चौट । २१ ख ग पमग । २२ ख फूठि ।

---

१३५ सुरागुर – आर्याधिपति, यह शब्द महाराजा अभयसिंहके लिए विशेषण रूपसे प्रयोग किया गया है । निलागर – महाराजा अभयसिंहका घोडा । थापलियौ – उत्साहित किया ।

१३६ चौंडा – राव चूडा । ताम – तब । गोळ – सेना । अैराकिय – घोडा ।

१३७ अतरिक्ख – अन्तरिक्ष आसमान । अरोहक – सवार । बाज – घोडा । हरि – विष्णु । खगराज – गरुड । अफाळि – झोंक कर । सुरज्ज-पसाव – महाराजा अभय-सिंहके घोडेका नाम । रोळा – युद्ध । मारवै राव – मारवाडके अधिपति महाराजा अभयसिंह ।

१३८ कपि डाण – वानरके समान छलांग । दमग – अग्निकण । मतग – हाथी । पतग – ध्वजा ( ? ) । धज – भाला विशेष । वाह – प्रहार । कडाधड – कवचधारी । गिडकध – प्रचडकाय, गिरिस्कध, पहाड के शिखर के समान ।

सिल्है अँग पाखर बाज दुसार ।
धरा मझि जाय गडै चवधार[1] ।
जडे इम काढत सेल जरूर ।
पड़ै रत छौळ चढ़ै दिन[2] पूर ॥ १३६

धकध्धक[3] स्रोण चँडी[4] पत्र[5] धार ।
डकड्डुक[6] पीवत लेत डकार ।
तवै[7] रिख हास अदोत तमास ।
सँपेखत[8] वाग कसे सपतास ॥ १४०

डोहै[9] रवदाळ झकोळि डँडाळ ।
कढी खिज झाळ जिसी किरमाळ[10] ।
अड़ै चहुवै[11] दळ[12] मीर अथाग ।
खिवै 'अभमाल' चहूवळ[13] खाग ॥ १४१

भुजा दुय[14] च्यारि भुजा बळ भूप ।
रचै गज ग्राह[15] स्रियावर[16] रूप ।
वहै खग साबळ[17] तात[18] विनाण ।
कटै जरदाण[19] जुवाण केकाण ॥ १४२

---

१ ख ग. जवधार । २ ख. ग नदि । ३ ख. धक्कधक । ग धकधक्क । ४ ख चडि । ५ क रल । ६ ख ग. डक्कडक । ७ ख तव्वै । ८ ख ग सपेषत । ९ ख डोले । ग डोहे । १० ख ग करिमाल । ११ ख. चिहुवै । १२ ख ग वल । १३ ग चहू-वळ । १४ ख ग. दोय । १५ ख ग. गाह । १६ ख ग श्रीयावर । १७ ख. सावण । ग साबण । १८ ख. ग तत । १९ ग जरदांन ।

---

१३९ सिल्है – कवच । दुसार – आर-पार । रत – रक्त, खून । छौळ – धारा ।

१४० धकध्धक – तेज द्रव प्रवाहकी ध्वनि । स्रोण – शोणित, रक्त । पत्र – देवीका खप्पर, पात्र । डकड्डुक – द्रव पदार्थ पीनेसे होने वाली ध्वनि । डकार – उद्गार । तवै – कहता है । रिख – नारद ऋषि । सँपेखत – देखता है । सपतास – सूर्यका सप्ताश्व नामक घोडा ।

१४१ डोहै – विलोडित करता है, रौंदता है । रवदाळ – यवन, मुसलमान । झकोळि (झकझोर कर ?) । डँडाळ – वह शस्त्र जिसको पकडनेके लिए डंडा लगाया जाता है, यथा॰ भालादि । खिज झाळ – कोपाग्नि किरमाळ – तलवार ।

१४२ च्यारि भुजा – चतुर्भुज, विष्णु । स्रियावर – सीतापति श्रीरामचन्द्र । विनाण – समान, तुल्य । जरदांण – कवच, कवचधारी योद्धा । जुवाण – जवान । केकांण – घोडा ।

नरां सिणगार धरै जुध नेत[1] ।
करै खळ[2] राहतणी परि[3] केत ।
वहै[4] खग एम[5] फबै वरियांम ।
रांमायण मांहि फबै जिम राम ।। १४३

'अभैमल' आगळ[6] जोध अपार ।
वधै[7] वध खाग[8] वहै[9] जिणवार ।
कटै सिलहक्क कडा कसणक्क ।
भभक्क डबक्क[10] स्रोणक्क भभक्क ।। १४४

खैंगक्क उचक्क[11] खाटक्क[12] खगक्क[13] ।
काटक्क[14] कटक्क झाटक्क झटक्क ।
बिजक्क[15] बळक्क[16] जुरक्क[17] जरक्क ।
सेलक्क धमक्क भचक्क सहक्क ।। १४५

फौजक्क[18] रोसक्क फारक्क फरक्क ।
हूरक्क वरक्क हुवै[19] खळ हक्क ।

---

१ ग नैत । २ ख पण । ३ ग. पर । ४ ख ग वाहै । ५ ग ऐम । ६ ग आगळि । ७ ख ग वधे । ८ ख ग. घाव । ९ ख. ग करै । १० ख. डवक्क । ग. उवक्क । ११ ग उच्चक्क । १२ ग. पाटक । १३ ख. ग पटक्क । १४ ग काटक । १५ ख ग वीजक्क । १६ ख ग वलक्क । १७ ख. जुरक । १८ ख. फोजक्क । १९ ग. हुवै ।

---

१४४ सिलहक्क – कवच । कसणक्क – वध । भभक्क – उभडना क्रियाका भाव । डावक्क – डूबते समय ध्वनि होनेकी क्रिया । स्रोणक्क – शोणित, रक्त ।

१४५ खैंगक्क – घोडा । खाटक्क – ढाल । खगक्क – तलवार । काटक्क – जबरदस्त, शक्तिशाली । कटक्क – सेना । झाटक्क – प्रहार । झटक्क – ( ? ) । बिजक्क – तलवार । बळक्क – लचक, मोड । जुरक्क – प्रहार । जरक्क – झटका । सेलक्क – भाला । धम्मक – ध्वनि विशेष । भचक्क – प्रहार या प्रहारकी ध्वनि ।

१४६ फौजक्क – सेनाका । रोसक्क – जोश । फारक्क – झडा । हूरक्क – अप्सरा, परी । वरक्क – वरण करने वाला, वीर । खळ – शत्रु । हक्क – हाक, तेज आवाज ।

सीसक्क सझक्क हारक्क हरक्क[1] ।
ग्रिधक्क[2] गहक्क गूदक्क[3] गटक्क[4] ॥ १४६

वीरक्क नचक्क सझक्क सबक्क ।
चोळक्क पियक्क कळिक्क[5] चहक्क ।
करक्क हाडक्क गुडक्क[6] कडक्क[7] ।
खिवै खँजरक्क पड़ै खरडक्क ॥ १४७

ओरै[8] असि आरण[9] धोम अताळ ।

**माहवसिंह चांपावत**

चापावत[10] सूर लड़ै चमराळ[11] ।
चखा करि 'माहव'[12] पावक चोळ ।
धडा[13] खळ सेल करै धमरोळ ॥ १४८

भुजा बळ[14] पाथ समोभ्रम भूप ।
रौदां दळ ढाहत अंतक रूप ।

---

१ ग रक्क । २ ख ग ग्रीझक्क । ३ ख ग. गूदक्क । ४ ख गढ्क्क । ग गट्टक्क । ५ ख कालिक्क । ६ ख ग गूडक्क । ७ ख करक्क । ८ ख ओरे । ९ ग आरणि । १० ख. चपावत । ११ ख. चमर। । १२ ख मांहव । १३ क धरा । १४ ख ग. वळ ।

---

१४६ सीसक्क – वीर-गति प्राप्त वीरोके शिर । सझक्क – तैयार करता है । हारक्क – मुंड-माला । हरक्क – महादेव, हर । ग्रिधक्क – गिद्ध । गहक्क – आवाज करते हैं । गूदक्क – मासपिंड । गटक्क – निगलते है ।

१४७. वीरक्क – युद्ध-प्रिय देव जो रुद्रके अवतार माने जाते है । नचक्क – नृत्य करते हैं । सबक्क – आगे बढ़ते हैं सब (?) । चोळक्क – रक्त, खून । पियक्क – पीते हैं । कळिक्क – कालिका, रणचंडी । चहक्क – चूमती है । करक्क – रीढकी हड्डी । हाडक्क – हड्डियें । गुडक्क – संधिस्थानकी हड्डी, माससहित हड्डी । कडक्क – ध्वनि विशेष अथवा शक्ति । खिवै – चमकते हैं । खँजरक्क – शस्त्र विशेष । खरडक्क – प्रहारका निशान ।

१४८ आरण – युद्ध । धोम – क्रोधाग्नि । अताळ – तेज । चापावत – राठौड राव चापाके वंशज । चमराळ – मुसलमान । चखां – नेत्रो । माहव – माहवसिंह चापावत । धमरोळ – प्रहार, युद्ध ।

१४९ पाथ – पार्थ, अर्जुन । समोभ्रम – पुत्र । रौदां – यवनो । ढाहत – सहार करता है, मारता है । अंतक – यमराज ।

वाहै खग वींद जिही[1] चढि वान ।
धरा नवकोट[2] सिरै परधान ।। १४६

कुसळसिंह चापावत

हरौळायहूत[3] हरौळ हठाळ ।
तठै 'कुसळेस' वधे[4] रिणताळ[5] ।
धरा[6] बळ[7] क्रोध ग्रोरैं[8] धजराज ।
जिसी विध[9] सामँद वीच[10] जिहाज ।। १५०

सिल्है[11] घट वेधत वाहत[12] सेल ।
खेलै[13] जिम होळिय[14] फागण[15] खेल ।
सांमा[16] खळ ग्रावत वीजळ साहि ।
मिळै[17] जिम सोर उडै झळ माहि ।। १५१

चढै खळ हीक तुरी उर चोट ।
काळाहळ भूस हुवै व्रज कोट ।
सेलाळ जरद्द[18] मरद्द[19] सकाज ।
वेधै वज्र भाखर पाखर बाज ।। १५२

---

१ ख जीही । २ ग नवकोटि । ३ ख ग हरोलाही । ४ ग वधे । ५ ख. गणताल । ६ ग धरैं । ७ ख ग वल । ८ ख ग्रोरे । ९ ख. ग. विधि । १० ख. वीचि । ११ ग सिल्हे । १२ ख वाहतं । १३ ख षेल्हे । १४ ख ग फागण । १५ ख. ग होलीय । १६ ख. साम्हा । ग सम्हां । १७ ख. मिले । १८ ग जरद । १९ ग मरद ।

---

१४९ वींद – दूल्हा । वांन – उमग, जोश । धरा नवकोट – मारवाड ।

१५० हरौळायहूत हरौळ – सेनाके अग्र भागमे युद्ध करने वालोमे भी आगे रहने वाला । हठाळ – अपनी हठीला । कुसळेस – कुशलसिंह चापावत । रिण ताळ – युद्ध । धजराज – घोडा ।

१५१ सिल्है – कवच । वेधत – छेद करता है । होळिय…खेल – होलिका पर खेला जाने वाला खेल जिसे गेहर भी कहते हैं । वीजळ – तलवार । साहि – सम्हाल कर, धारण कर । झळ – अग्नि, आगकी लपट ।

१५२ हीक – प्रहार । तुरी – घोडा । काळाहळ – अत्यन्त श्याम । भूस – कवच । सेलाळ – भालाधारी । जरद्द – कवच । भाखर – पर्वत । बाज – घोडा ।

लोही धखधक्क[1] वभक्कत[2] लाल ।
पड़ै धर जाणि[3] पतग पखाळ ।
गोळा जिम ढाहि खळा गज गाहि ।
वधे जुध कीध गजा सिर वाहि ॥ १५३

कुभाथळ[4] वेधि कढै धजकूत[5] ।
हौदा मझि मीर हणै खगहूत ।
करै इम 'नाथ' तणौ 'कुसळेस' ।
वडै परमाण अनै लघुवेस ॥ १५४

करणसिंह चापावत

जठै 'करनाजळ' क्रोध व्रजाग ।
ओरै[6] असि जाणि धिखतिय[7] आग[8] ।
दावानळ गोळिय[9] घाट दुसार ।
हुवा खग वाहत जाणि हजार ॥ १५५

चहू दळ[10] मेछ करै खग चोट[11] ।
कळै नह धूहड़ मैंगळ[12] कोट ।
सुतन्नस[13] राजड भाण सुतन्न[14] ।
करै जुध क्रन्नतणी[15] पर क्रन्न[16] ॥ १५६

---

१ ख. धकधक्क । ग धकधक । २ ख. वभकत । ग. भभकत । ३ ग. जाण । ४ ख. कूभायल । ५ ख. कुत । ग. कूत । ६ ख. ओरे । ७ ग. धिषतीय । ८ ख. ग आगि । ९ ख. गोलीय । १० ख. वल । ग वळ । ११ ग चौट । १२ ख. मैमट । ग मैमट । १३ ख. सुतत्रस । १४ ख सुतन । ग. सुतन । १५ ख क्रन । ग क्रन । १६ ख क्रन । ग पर क्रन ।

---

१५३ धखधक्क – द्रव पदार्थका तेज प्रवाह या प्रवाहकी ध्वनि । वभक्कत – उमडता है । पतंग – ( ? ) । पखाळ – चमडेका वहुत वडा थैला जिसमे पानी भर कर ऊटो, व भैसो पर लाद कर लाते हैं । वाह – प्रहार ।

१५४ कुभाथळ – हाथीका कुम्भस्थल । धजकूत – भालेकी नोक या अग्र-भाग । वडै – महान, वड़ा । अनै – और । लघुवेस – लघु वयस, छोटी आयुका ।

१५५ करनाजळ – करणसिंह चापावत । धिखतिय – प्रज्वलित ।

१५६ धूहड – राव धूहडका वशज, राठौड । मैंगळ – हाथी । सुतन्नस – पुत्र । राजड – राजसिंह चापावत जो पालीका ठाकुर था । भाण – उदयभाण । क्रन्नतणी – राजसिंह चापावत पुत्र करणके । पर – शत्रु । क्रन्न – कुतीपुत्र कर्ण ।

अखाहर वाहत खाग उनग[1] ।
जुड़ै जिम भारथ दारुण[2] जग ।
वळोवळ लूबत रोद्र व्रजाग ।
भिड़ सुजि सूर हुवै दुय[3] भाग ॥ १५७

गाहै[4] नर हैमर[5] गैमर गाहि ।
महाबळ[6] नीठ पड़ै[7] जुध माहि ।
वरै[8] रँभ बैसि[9] रथा रण विंद[10] ।
अधौअध राज लियै[11] सुरइंद ॥ १५८

तुरी जुध मेळि लडै 'सगतेस'[12] ।
नतीठ धसै[13] जिम पड[14] नरेस ।
तोड़ै दळ मुग्गळ[15] खाग तरास ।
जुजट्ठळ[16] जेम लिये[17] जसवास[18] ॥ १५९

'दलौ' असि झौकि[19] लड़ै दइवाण[20] ।
खगां झट[21] थाट हणै खुरसाण ।

---

१ ख.ग उमग । २ ग दारण । ३ ख ग. दोय । ४ ख गाहे । ५ ग हेमर । ६ ख माहावल । ७ ख पडे । ८ ख वरे । ९ ख वैसि । ग वेसि । १० ख.ग व्यद । ११ ख लीयो । ग. लियो । १२ ख सकतेस । १३ ख ग धसे । १४ ख. पव । १५ ख. मूगल । ग मुगल । १६ ख जुजिठल । ग. जुजिष्टल । १७ ख लीम । ग. लीयौ । १८ ख वास । १९ ख. झोकि । ग. झोक । २० ख दईवांण । २१ ख. झटि ।

---

१५७ अखाहर – अखयसिहके वशज । उनग – नगी । वळोवळ – चारो ओरसे । लूवत – आक्रमण करते है । रोद्र – मुसलमान । वज्राग – जवरदस्त, वज्रकी अग्निके समान ।

१५८ हेमर – घोडा । गैमर – हाथी । गाहि – ध्वस कर के । अधौअध – पूर्ण आधा । सुरइंद – सुरेंद्र, इद्र ।

१५९ तुरी – घोडा । सगतेस – शक्तिसिह । नतीठ – घोडा, वीर । तरास – ( काटना, तराशना ? ) । जुजट्ठल – युधिष्ठिर । जसवास – यश, कीर्ति ।

१६०. दइयाण – वीर । थाट – दल, समूह । खुरसांण – मुसलमान ।

धरै[1] मन स्यांमध्रमौ रिणधक्ख ।
लखां सिर ओरवियौ[2] अबलक्ख[3] ।। १६०

हणै[4] खग झाट अमीर हरौळ ।
चुरै[5] खळ गोळ नेक चँदौळ[6] ।
उभै रँगि[7] सेल अनै तरवार ।
पुगौ[8] तरि मीर घडां नदि पार ।। १६१

सुजाहर[9] सूर 'मुकद' सुतन्न ।
धरा इक तेज कहै[10] धनिधन्न[11] ।
सुजावत[12] 'ऊद'[13] ग्रहै[14] खग सूर ।
रमै[15] रिण[16] बाळ दसा मगरूर ।। १६२

चावा[17] खळ[18] मुग्गळ[19] भांजि अछग ।
जुड़ै भड वाघ बचा जिम जंग ।
करां खग काढि अफाळि[20] केकाण ।
करै जुध 'माल' तणौ[21], 'कलियांण'[22] ।। १६३

---

१ ख ग. घरे । २ ख. वोरवियो । ग. वौरवियौ । ३ ग अबलषा । ४ ख. ग. हुणे । ५ ख. ग चूरे । ६ ग. चंदोल । ७ ग. रग । ८ ख पूगौ । ग पूगो । ९ ख. ग सूजाहर । १० ग. कहे । ११ ख. धनधन्न । ग. धनधन्न । १२ ख ग. सूजावत । १३ ग उद । १४ ख. ग्रहे । १५ ख. ग. रमे । १६ ख ग. रण । १७ ख ठावा । ग. छावा । १८ ख षग । १९ ख. ग मूगल । २० ग. आफाळि । २१ ग. तणो । २२ ख. कलीयाण ।

---

१६० **स्यांमध्रमौ** – स्वामीके प्रति कर्त्तव्य । **रिणधक्ख** – युद्धकी इच्छा वाला । **सिर** – ऊपर । **ओरवियौ** – झोक दिया । **अबलक्ख** – चितकबरे रगका घोडा ।

१६१. **चुरै** – ध्वस करता है, सहार करता है । **गोळ** – सेना । **चँदौळ** – सेनाके पीछेका भाग, चदावल ।

१६२. **सुजाहर** – सूजाका वशज । **मुकद** – मुकर्दसिंह । **धनिधन्न** – धन्य-धन्य, वाह-वाह । **सुजावत** – सूजाका वशज । **ऊद** – उदयसिंह ।

१६३ **चावा** – प्रसिद्ध । **अछग** – (पूर्ण ?) । **वाघ** – व्याघ्र, सिंह । **अफाळि** – झोक कर । **केकांण** – घोडा । **माल** – मालसिंह । **कलियांण** – कल्याणसिंह ।

करै घण[1] झाटक लोह कराळ ।
दुवै दुव टूक हुवै रवदाळ ।
समोभ्रम[2] 'नाहर' 'भैरव' सूर ।
मिळे[3] असि झूझ करै मगरूर ।। १६४

खता[4] अँगि तीर फरक्कि[5] पँखार ।
धड़ा[6] छत मेघ[7] घणा छत्रधार[8] ।
बळाभख[9] मेलि तुरी गह[10] बौह[11] ।
'लालौ'[12] 'सगतावत' ढाहत[13] लौह[14] ।। १६५

जुडत 'जसावत' आगि व्रजागि ।
लोहां झट[15] खेलत अबर[16] लागि ।
'पाबू' जिम सूर 'किसन्न'[17] प्रमाण ।
दियै काळमी[18] जिम[19] नीलिय[20] डाण ।। १६६

वहै[21] खग 'धूहड' सीस विहार ।
धुजट्टिय[22] सीस जिसी गंगधार ।

---

१ ग लोह । २ क समोभ्रम । ३ ख ग मेले । ४ ख. षतअग । ग पतेअग । ५ ख फरकि । ग फेरकि । ६ ख. ग घड । ७ ख. ग. भेछ । ८ ख. ग षगधार । ९ ख बलभाष । ग. बलभषि । १० ग. गज । ११ ख वोह । ग वोह । १२ ख. लालो । ग लालो । १३ ख. ग. वाहत । १४ ख. ग लोह । १५ ख. षट । १६ ख. अवरि । ग पारस । १७ ख क्रिसन्न । १८ ख ग कालवी । १९ ग वम । २० ख नीलीय । ग नाभियै । २१ ग. वहै । २२ ख ध्रिजट्टीय । ग ध्रितदियै ।

---

१६४. झाटक — प्रहार । टूक — खड । रवदाळ — मुसलमान । समोभ्रम — पुत्र । नाहर — नाहरसिंह । भैरव — भैरवसिंह । झूझ — युद्ध ।

१६५ खता अँगि = खतग — एक प्रकारका तीर विशेष । पँखार — तीरका वह स्थान जहांसे वह प्रत्यचा पर चढाया जाता है । छत्रधार — राजा । लालौ — लालसिंह । ढाहत — प्रहार करता है । लौह — शस्त्र ।

१६६ अवर — आसमान । पाबू — प्रतिज्ञावीर राठौड पाबू । किसन्न — किसनसिंह । काळमी — प्रतिज्ञावीर राठौड पाबूकी घोडीका नाम । नीलिय — रग विशेषकी घोडी । डाण — गति, चाल ।

१६७. धूहड — राव धूहडका वशज, राठौड । विहार — विदीर्ण कर के । धुजट्टिय — शिव, महादेव, धूजंटी ।

कटै खग झाट अनेक किलम्म[1] ।
झड़ै सिर तांम सहेत[2] झिलम्म[3] ॥ १६७

तिया इम सोभ फवैं रिणताळ ।
महा-तर[4] तूट[5] पड़त मुहाळ ।
सिलैबंध[6] ढाहत वाहत सार ।
सजे[7] नृप[8] जाणिक[9] सूरसिकार[10] ॥ १६८

इखै[11] रथ थाभि[12] अदीत अचभ ।
थयौ 'किसनेस' हुतासण थभ ।
घणा सिर सेल सहे[13] खग घाव ।
वरे[14] रँभ चौसर कीध वणाव ॥ १६९

रिमा खग झाट घणा[15] गँज[16] राळि ।
तरै 'किसनेस' पडै रिणताळि[17] ।
चढै[18] रथ हीर जडाव चमीर ।
वरै[19] सुरलोक विचै नर वीर ॥ १७०

---

१ ख किल्लम । ग किल्लम । २ ग सहित । ३ ख झिल्लम । ग झिलम । ४ क ख. महीतर । ५ ख. तूटे । ६ ख. ग सिल्हैबंध । ७ ख ग. सझै । ८ ख. ग नृप । ९ ग जाणक । १० ख. सूरसिक्कार । ११ ख ईखै । १२ ग थभ । १३ ख हसे । १४ ख वणे । ग वरै । १५ ग घण । १६ ख. रंग । १७ ख रणतालि । ग. रिणतळि । १८ ख चढे । १९ ख वसे । ग. वसै ।

---

१६७. किलम्म – मुसलमान । झडै – कट कर गिरते हैं । झिलम्म – युद्धके समयमे शिर पर धारण करनेका टोप ।

१६८. सोभ – शोभा, काति । महा-तर = महातरु – बडा वृक्ष । मुहाळ – मुंहकी ओर, औंधा मुह । सिलैबंध – अस्त्र-शस्त्रोसे सुसज्जित । ढाहत – गिरता है । सार – तलवार ।

१६९. इखै – देखता है । अदीत – आदित्य, सूर्य । अचंभ – आश्चर्यमे । किसनेस – किसनसिंह । हुतासण – अग्नि । चौसर – पुष्पहार ।

१७०. गँज – समूह । राळि – गिरा कर । तरै – तब । रिणताळि – युद्ध-स्थल । चमीर – सोना ।

रिमा दळ सीस 'तेजावत'[1] रूप ।
धुवै[2] खग भांण प्रळै जिम धूप ।
सहे[3] खग सूर 'हरिद' सुतन्न ।
अयौ[4] जिम भारथ पड अजन्न ।। १७१

उपाड़ैइ[5] वीर[6] वज्रग[7] अराधि ।
सिरू[8] खत्रवाटतणी घण साधि ।
खळा सिर झाडि फुलै[9] हथखड[10] ।
डोहै[11] दळ फेर[12] तुरी चक्र ड़ंड[13] ।। १७२

वहै[14] झट[15] औझट[16] त्रीछण वाढ़ ।
डोरी जिम घाव करै जमदाढ ।
ढहै[17] नर हैमर गैमर[18] ढाल ।
मला सहसा जिम 'साहँसमाल'[19] ।। १७३

'पतावत' सूर लड़ै अणपाल[20] ।
करै खग झाट खळां दळ काळ ।
वाहै[21] खग[22] 'माहव'रौ 'वखतेस' ।
पाडै खळ सीस करै सिरपेस[23] ।। १७४

---

१ ग. तिजावत । २ ख धुवं । ३ ख ग साहे । ४ ख. आयौ । ग. आयो । ५ ख अपाड्य । ग. अपाड्य । ६ ख वीर । ७ ख वज्रग । ८ ख ग सरू । ९ ख. फुल्लै । १० ग हूंयपड । ११ ख ग डोहे । १२ ख फेरि । १३ ग दड । १४ ख ग वाहे । १५ ग झड । १६ ग प्रोझड । १७ ख ग ढाहे । १८ ग. मैर गैमर । १९ ग मैहसमाल । २० ख. अनपाल । २१ ख वाहे । २२ ख. प । २३ ख ग निवपेस ।

---

१७१ रिमा – शत्रुओं । हरिद – हरिसिंह । पड अजन्न – पाण्डु पुत्र अर्जुन ।

१७२ झाडि – झाड़ कर । डोहै – विलोड़ित करता है, मथन करता है । तुरी – घोड़ा ।

१७३ झट – प्रहार । औझट – भयंकर, तेज । त्रीछण – तीक्ष्ण । वाढ – शस्त्रका पैना भाग । जमदाढ – कटार । ढहै – गिरते हैं, वीर गति प्राप्त होते हैं । हैमर – घोड़ा । गैमर – हाथी । ढाल – युद्धके समय हाथीके मस्तक पर धारण कराया जाने वाला उपकरण । साहँसमाल – [illegible] ।

१७४ अणपाल – [illegible], [illegible] । माहवरौ – महाराजसिंहका । वखतेस – बखतसिंह ।

तठै 'सबळेस' समोभ्रम[1] 'तेज' ।
जुड़ै खग झाट करै नह जेज ।
भाऊसुत[2] सूर 'उमैद'[3] भुजाळ ।
रमैं[4] खग झाट हणै[5] रवदाळ ॥ १७५
'रैणायर'[6] 'मोकम'[7] वाहत रूक[8] ।
उभै जगनाथ[9] सुतन्न[10] अचूक[11] ।
सुरापण[12] धार[13] खत्रीपण[14] सीम ।
भिड़ै[15] जुध जाणि[16] 'अरज्जण'[17] 'भीम' ॥ १७६
समोभ्रम[18] 'राजड़' पेम सकाज ।
बाहै[19] खग ओरि[20] घडा विच[21] बाज ।
कणैठिय[22] कन्न[23] तणौ[24] कमधज्ज[25] ।
इसी कुळवट्ट[26] किसौ[27] अचरज्ज[28] ॥ १७७
जडक्कत[29] लोह कडक्कत[30] सध ।
करै खग झाट 'पदम्म'[31] कमध ।

---

१ ख. समोभ्रम । २ भावूसुत । ग. भावुसुत । ३ ख. ग उमेद । ४ ख रमे । ५ ख हणे । ६ ख रेणायर । ७ ख मोकम । ग मोहोकम । ८ ग रूक्क । ९ ग जगन्नाथ । १० ख सुतन्न । ग. सुतन । ११ ख अचूक । १२ ख ग. सूरायण । १३ ख. ग धूर । १४ ख. षत्रीवम । ग. षत्रीवट । १५ ख. भीडै । १६ ग जाण । १७ ख अरिज्जण । ग अरिजण । १८ क समोभ्रम । १९ ख वाहे । ग वाहै । २० ख. वोरि । ग. ओर । २१ ख विचि । ग विचि । २२ ख ग कणैठीय । २३ ख. ग. कन । २४ ख. ग तणो । २५ ग कमधज । २६ ख कुलवाकि । ग. कुळवाट । २७ ग. किसो । २८ ख अचिरज्ज । ग इचरज । २९ ख ग सडक्कत । ३० क जडक्कत । ग. कडकत । ३१ ख. पदम । ग. पदम ।

---

१७५ सबळेस – सबलसिंह । समोभ्रम – पुत्र । तेज – तेजसिंह । जेज – विलंब । भाऊसुत – भाऊसिंहका पुत्र । उमैद – उम्मेदसिंह । भुजाळ – वीर ।

१७६ रैणायर – रणछोडदास । मोकम – मोहकमसिंह । रूक – तलवार । जगनाथ – जगन्नाथसिंह । सुतन्न – पुत्र । अचूक – निशंक । सुरापण – शौर्य । अरज्जण – पाडु-पुत्र अर्जुन ।

१७७. राजड – राजसिंह । पेम – पेमसिंह । बाज – घोडा । कणैठिय – कनिष्ठ, छोटा भाई । कन्न – करणसिंह । अचरज्ज – आश्चर्य ।

१७८. जड़क्कत – प्रहार करता है । कड़क्कत – टूटता है । सध – सधि-स्थान । पदम्म – पदमसिंह ।

रिमां 'सगतावत'[१] वाढत[२] रीस ।
आई भरि[३] पत्र दियंत[४] असीस ।। १७८

अडै[५] 'लखधीर' तणौ[६] 'अमरेस' ।
जरू खग झाट हणै जवनेस ।
रचै जुध कूप समोभ्रम[७] 'राम' ।
वहै खग वाढ[८] दियै[९] वरियांम[१०] ।। १७९

समोभ्रम[११] 'केहरि' पाथ समाथ ।
हिचै 'किरमाळ' झटां[१२] 'हरनाथ' ।
'धनावत' 'अम्मर' कोप धियाग[१३] ।
खळां घट भूक करै झट खाग ।। १८०

'दलावत' सूर 'विसन्न'[१४] दुझाल ।
लोहा अरि ढाहि[१५] करै धर लाल ।
'उदौ'[१६] 'अरिजन्न'[१७] तणौ[१८] अणभग ।
जठै खग वाहि[१९] हणै[२०] खळ जग ।। १८१

---

१ ख सगताव । २ ख. वाढत । ३ ग भर । ४ ख दीयत । ५ ग लडै । ६ ग तणो । ७ क समौभ्रम । ८ ख. ग दाद । ९ ख. ग. दीयै । १० वरीयाम । ११ क समौभ्रम । १२ क झळा । १३ ख. ग. धीयाग । १४ ख. विसन्न । १५ ख. टाहि । ग ढाह । १६ ख लदौ । ग ऊदो । १७ ख. अरिजन्न । १८ ग. तणो । १९ ग. बोह । २० ग हिणै ।

---

१७८ आई – दुर्गा, रणचंडी । असीस – आशीर्वाद ।

१७९ लखधीर – लखधीरसिंह । अमरेस – अमरसिंह कूपावत । जरू – दृढ । जवनेस – यवनेश, बादशाह । कूप – कूपावत शाखाका राठौड । राम – रामसिंह ।

१८० केहरि – केसरीसिंह । पाथ – पार्थ, अर्जुन । समाथ – समर्थ । हिचै – युद्ध करता है । किरमाळ – तलवार । झटां – प्रहारो । धनावत अम्मर – धनसिंहका वशज अमरसिंह । धियाग – अधिक, असीम । भूक – ध्वंस, नाश ।

१८१. विसन्न – विशनसिंह । दुझाल – योद्धा । अरि – शत्रु । ढाहि – संहार कर, मार कर । उदौ – उदयसिंह । अरिजन्न – अर्जुनसिंह । तणौ – तनय, पुत्र । अणभग – वीर ।

तई दळ देखि पटाभर तेम ।
अयौ[1] जुध 'केहर'[2] केहरि[3] अेम ।
धड़ां खळ टूक करै धँख[4] ध्रोह ।
लियै[5] घण बोह 'जसव्वँत'[6] लोह ॥ १८२

जुड़ै वरवा[7] रँभ ऊछब[8] जाणि ।
पयौ[9] नहि काळ सु लेख प्रमाणि[10] ।
'फतौ'[11] 'परताप' सुतन्न[12] अफेर ।
सत्रा दळ सोस खमै[13] समसेर ॥ १८३

समोभ्रम 'साहिबखांन' सकाज ।
लोहा 'पदमेस' लड़ै[14] कुळ लाज ।
समोभ्रम[15] देवियसिंघ[16] सधीर ।
धुबै[17] खग झाट 'फतौ'[18] 'रणधीर' ॥ १८४

पँजा खग झाट 'फतावत' पाणि ।
जुड़ै जुध[19] 'नाहर' नाहर जांणि[20] ।
सत्रा दळ सीस[21] 'जोरावर साह' ।
'रासावत' लोह करै रिमराह[22] ॥ १८५

---

१ ख आयौ । ग. आयो । २ ख ग. केहरि । ३ ख केहरी । ४ ख धक । ग. धख । ५ ख लीयै । ग. लियं । ६ ख. जसावत । ग. झळाहल । ७ ख बरिवा । ग. वरिवी । ८ ख ग उछव । ९ ख. पायौ । ग पायो । १० ग प्रमाण । ११ ग. फतो । १२ ख सुतन । ग सुतन । १३ ख विषै । ग षिवै । १४ ग पडै । १६ क. समौभ्रम । १६ ख ग देवीयसिंघ । १७ ख धुवे । ग धुवै । १८ ग फतो । १९ ख. जुधि । २० ग. जाण । २१ ख सीसि । २२ ख. रिमसाह ।

---

१८२ तई – शत्रु । पटाभर – हाथी । केहर – केसरीसिंह । केहरि – केशरी । बोह – आनन्द, रसास्वादन ।

१८३. पयौ – प्राप्त हुआ । फतौ – फतेहसिंह । परताप – प्रतापसिंह । सुतन्न – पुत्र । अफेर – वीर, योद्धा । समसेर – तलवार ।

१८४. पदमेस – पदमसिंह । फतौ – फतेहसिंह ।

१८५. नाहर – नाहरसिंह । जोरावर साह – जोरावरसिंह । रासावत – रासाका वंशज ।

जुडै सुत 'ऊदल' पौरस[1] जोर ।
करै खग घाव निहाव 'किसोर' ।
'दलौ'[2] 'परताप' सुतन्न[3] दुझाल ।
ढाहै खग झाट[4] खळां गज ढाल ।। १८६

समोभ्रम[5] 'पेम' 'हिदाळ' सकाज ।
निजोडत मुग्गळ[6] थाट[7] नराज[8] ।
वडा खळ खाग हणै वरदैत[9] ।
जुडै इम[10] 'भांण' समोभ्रम 'जैत' ।। १८७

तठै रुघनाथ तणौ[11] 'सुरतेस' ।
रिमा खग झाट करै घण रेस ।
सुतन्न तिलोक[12] तिलोक सराह ।
वधेवध[13] 'राम' करै खग वाह ।। १८८

जुड़ै[14] 'कुसळेस' तणौ खग जास ।
दावानळ रूप नरायणदास[15] ।
जठै[16] हरकिसन्न[17] 'मांन' सुजाव ।
घणा[18] रवदाळ हणै खग घाव ।। १८९

---

१ ग पौरिस । २ ग दलो । ३ ख. सुतन । ग. सुतन्न । ४ ख ढाट । ५ क. समोभ्रम । ६ ख मूगल । ग मौंगळ । ७ ख. ग. झाट । ८ ख. वाराज । ग नाराज । ९ ख. ग. विरदैत । १० ग इ । ११ ग. तणो । १२ ग. तीलोक । १३ ख वधेवधि । ग. वधैवधि । १४ ख. जुडे । १५ ग. नराइण । १६ ग. जठे । १७ ख किस्सन । ग. किसन । १८ ख घणो ।

---

१८७ पेम – पेमसिंह । निजोडत – दूर करता है, काटता है । नराज – तलवार । वरदैत – वीर, यशस्वी । भांण – सूरजभाणसिंह ।

१८८. सुरतेस – सूरतसिंह । रिमां – शत्रुओं । रेस – पराजय । तिलोक – तिलोकसिंह । तिलोक – तीनों लोक । सराह – प्रशंसा करते हैं । वधेवध – बढ़-बढ़ कर ।

१८९. मांन – मानसिंह । सुजाव – पुत्र । रवदाळ – मुसलमान ।

अड़ै सुत गोवरधन्न[1] अठेल[2] ।
खगां 'कलियांण'[3] रमै जुध खेल ।
उठै खग वाहत वीर[4] अरोध[5] ।
जोरावरसिंघ[6] 'जसावत' जोध ।। १९०

करै करिमाळ झटां पति[7] कांम ।
जळाहळ 'राम' तणौ 'जगरांम' ।
विजूजळ झाट करै जिण वार ।
सुरौ[8] 'अणंदेस'[9] तणौ[10] सिरदार ।। १९१

सुतां[11] 'रतनेस' मौहक्कम[12] सूर ।
रिमा[13] खग झाट हणै मगरूर ।
'कलौ' दलसाह तणौ[14]* दइवांण[15] ।
मिळै खग झाट छिबै असमांण[16] ।। १९२

---

१ ख गोवरद्धन। ग. गोवरधन। २ ख. अठ्ठेल। ग अठैल। ३ ख. कलीयांण। ४ ख. वीर। ५ ख ग. अरोह। ६ ख. जोरावसिंघ। ७ ग. पटि। ८ ख. सूरौ। ९ ख ग अणदेस। १० ग तणो। ११ ख ग. सुत। १२ ख. महोकम। ग. माहोकम। १३ ग. रमै। १४ ख. तणै। १५ ख. ग कलिचाल। १६ ग. असमांन।

*ख तथा ग प्रतियोमे यहा पर निम्न पक्तिया और मिली है—
'रमै चंद्रहास भमै रवदाल।
दिवो सगतेस तणो दईवाण।।'

---

१९० अठेल – पीछे न हटने वाला, वीर। कलियाण – कल्याणसिंह। जुध – योद्धा, वीर।

१९१. करिमाळ – तलवार। जळाहळ – तेजस्वी। रांम – रामसिंह। जगरांम – जगरामसिंह। विजूजळ – तलवार। सुरौ – वीर। अणंदेस – आनंदसिंह। सिरदार – सरदारसिंह।

१९२ रतनेस – रतनसिंह। कलौ – कल्याणसिंह। दलसाह – दलसिंह। दइवांण – वीर।

झळाहळ 'वीरमऊत' 'झुझार'[1]* ।
भिड़ै खग झाट सराहत भार ।
'छतौ'[2] नरसिंघ तणौ[3] छक छोह ।
लगावत खान दळा सिर लोह ।। १६३

'हठी' रिणछोड तणौ[4] करि हाक ।
पछट्टत[5] खाग हणै पिसणाक ।
'विजावत'[6] 'सोभ' लड़ै छक वाधि[7] ।
श्रौ झाड़त[8] वीजळ[9] क्रोध असाधि ।। १६४

अड़ै भड 'रायमलौत'[10] अजब्ब[11] ।
गाहै खग[12] वीजळ झाट गजब्ब[13] ।
'वाघावत'[14] 'सूरज' गौ विकराळ ।
तरासत मीर खगा रिणताळ ।। १६५

समोभ्रम[15] 'गोयँद'[16] अम्मरसिंघ ।
धड़च्छत[17] मेछ घण खगधिग[18] ।

---

१ ख ग झुझार । *यहासे आगे ख तथा ग प्रतियोमे निम्न पक्तिया और मिली हैं—
'करूर गुमान सुतन किसोर, जुटै पग झाटा हूवर जोर ।
रूपावत अमर ढाल वरूथ, जूटै पग झाट करै षळ जूथ ।
अनो जुध रूप तणौ दईवाण, भिडै षग झाट सराहत भाण ।'
२ ग. छतो । ३ ग. तणो । ४ ग. तणो । ५ ख. पछाट्टत । ग पछटत । ६ ख बिजावत । ७ ग बाधि । ८ ख छाडत । ग ओछाडत । ९ ख. बीजळ । १० ख ग रायमलोत । ११ ख. अजव्व । १२ ख मल । १३ ख. गजव्व । १४ ख वाघावत । १५ क समोभ्रम । १६ ग. गोयँद । १७ ख. ग घड़छत । १८ ख. ग षगधींग ।

---

१६३ वीरमऊत – वीरमसिंहका पुत्र । झुझार – झूझारसिंह । छतौ – छत्रसिंह । छक – उत्साह ।

१६४ हठी – हठीसिंह । पछट्टत – प्रहार करता हैं । पिसणाक – शत्रु । वीजावत – विजयसिंहका वशज । सोभ – सोभाग्यसिंह । झाड़त – काटता है । विजाळ – तलवार । असाधि – अपार ।

१६५ अजव्व – अजबसिंह । गजव्व – भयकर । सूरज – सूरजसिंह । तरासत – काटता है ।

१६६. गोयँद – गोविंदसिंह । धड़च्छत – काटता है । मेछ – मुसलमान । खगधिग – जबरदस्त, शक्तिशाली ।

जोरावरसिंघ 'अणँद' सुजाव ।
पछट्टत[1] खाग जड़ै अहि पाव ॥ १९६
जगावत' अज्जब[2] जैत जुहार ।
पड़ै खळ घूमर खाग प्रहार ।
समोभ्रम 'वैण'[3] विढे[4] 'अजबेस' ।
करै खग वाह[5] हणै किलमेस ॥ १९७
'भाऊ'[6] सुत[7] 'पीथल' 'भीम' भुजाळ[8]।
उठै खग वाहण[9] लूण उजाळ ।
'वाघावत'[10] आणँदसी जिण वार ।
धमोडत सेल वहै[11] खग धार ॥ १९८
मँडे जुध 'नाथ' तणौ[12] 'फतमाल' ।
तई खग झाडि भरै रत ताळ ।
'दलौ' 'अणँदेस' 'सुतन्न'[13] दुगांम[14] ।
'हरी' खळ ढाहत[15] पूरत हांम ॥ १९९
'माधावत' रांमसि[16] लोह मराट ।
झपेटत मीर थटां खग झाट ।

---

१ ग पछटत। २ ग अजब। ३ ख वेण। ४ ख. विटै। ग विढ़ै। ५ ख ग वाहत। ६ ख भावू। ग भाव। ७ ख सुर। ८ ग. डुजाल। ९ ख वाहत। १० ख. बाघावत। ११ ख. बहै। १२ ख ग तणै। १३ ख सुतंन। १४ ख. दुगम। १५ ख ग. वाढ़त। १६ ख ग. रामसी।

---

१९६. अणँद – आनदसिंह। सुजाव – पुत्र। अहि – नाग, हाथी।

१९७ अज्जब – अजबसिंह। वैण – वेणीसिंह। अजबेस – अजबसिंह। किलमेस – मुसलमान।

१९८. पीथल – पृथ्वीराज। भीम – भीमसिंह। आणँदसी – आनदसिंह। धमोड़त – प्रहार करता है।

१९९. रत – रक्त, खून। ताळ – मैदान, तालाब। खळ – शत्रु। ढ़ाहत – सहार करता है। हांम – अभिलाषा।

२००. मराट – जबरदस्त। झपेटत – प्रहार करता है। मीर – यवन, मुसलमान। थटां – समूह, दल।

समोभ्रम[1] 'मांडण' दारुण[2] सूर ।
हठी खळ मीर वरावत[3] हूर ।। २००

'चौळावत' मीर झटां खग चौज ।
'फतावत' 'आणँद' आणँद[4] फौज ।
भिड़त पटैत इसा[5] जुध भेद ।
अगै भड जूटत भूप 'उमेद' ।। २०१

'अनावत'[6] 'अम्मर' खाग उनाग ।
भिडै जरदैत करै दुय भाग ।
करै खग झाटत देवकरन्न[7] ।
'विहारिय'[8] सभ्रम चोळ वरन्न[9] ।। २०२

सराहत सूर हथां खग[10] मे'स[11] ।
'मधावत' लोह करै 'मुकँदेस' ।
समोभ्रम[12] 'सांवळ'[13] झौकि[14] हुबास[15] ।
दियै[16] खग झाटक जीवणदास[17] ।। २०३

निजोडत मेछ धरे[18] खत्र नेम ।
खगा 'सगतेस'[19] समोभ्रम[20] 'खेम' ।

---

१ क समौभ्रम । २ ख दारण । ३ ख बरावर । ४ ख ग. डोहत । ५ ग. इता । ६ ख अनावत । ग. अन्नावत । ७ ग. देवकरन । ८ ख ग. बिहारीय । ९ ख. बरन्न । ग. वरन । १० ख. पष । ११ ख सेस । १२ क समौभ्रम । १३ ख सामल । १४ ख ग. झोकि । १५ ख. ग. दुवास । १६ ख दीयै । १७ ख दीवणदास । १८ ग धरै । १९ ख. ग. सगतेस । २० क. समौभ्रम ।

---

२०० माडण – माडणसिंह । हठी – हठीसिंह । वरावत – वरण करवाता है । हूर – परी, अप्सरा ।

२०१. पटैत – वीर, योद्धा । अगै – पहिले, पूर्व ।

२०२. अम्मर – अमरसिंह । उनाग – नगी । जरदैत – कवचधारी योद्धा । विहारिय – विहारीसिंह । सभ्रम – पुत्र । चोळ – लाल । वरन्न – वर्ण, रंग ।

२०३ मे'स – महेश, महादेव । सावळ – श्यामलसिंह । हुवास – घोडा । झाटक – प्रहार ।

२०४. निजोडत – काटता है । मेछ – मुसलमान । खत्र – क्षत्रियत्व । खेम – खेमसिंह ।

धारूजळ जोध समोभ्रम* धींग[1] ।
सूरां खळ चूर करै रायसीध ॥ २०४

तई भड़ साहिबखांन® सुतन्न ।
केवी खग चूर करै 'जसक्रन्न'[2] ।
समोभ्रम साहिबखांन® सकाज ।
रिमां खग घाव करै 'जगराज' ॥ २०५

सहै[3] खग सभ्रम 'सांमतसाह'[4] ।
विढ़ै 'अनपाळ' करै हथ वाह[5] ।
सभ्भै करिमाळ झटां समरेस ।
विढै[6] 'करनेस'[7] तणौ[8] 'वखतेस' ॥ २०६

'ऊदावत' सांम लड़ै अवनाड ।
धड़ा[9] अवझाड करै धज फाड ।
'अभैमल' 'लाल' सुजाव अबीह ।
सत्रां खग ढाहत ज्यू गज सीह ॥ २०७

'वैणावत'[10] 'पातल' वीजळ[11] वाह[12] ।
गोड़ै गज बाज खळां गज-गाह ।

---

*चिन्हांकित पद्यांश ग प्रतिमे नही है ।

१ ख धींघ । ग धीघ । २ ग जसक्रन ।

®चिन्हांकित पद्यांश ख. प्रतिमे नही है ।

®चिन्हांकित पद्यांश ख प्रतिमे नही हैं ।

३ ख. साहे । ग साहै । ४ ख सामतसा । ५ ख बाह । ६ ख. विढ़े । ७ ख ग करणेस । ८ ग. तणो । ९ ख. षडां । १० ख वेणावत । ११ ख प्रतिमे यह शब्द नही है । १२ ख बाह ।

---

२०४ धारूजळ – तलवार । चूर – ध्वस ।

२०५. तई – ( ? ) । केवी – शत्रु ।

२०६. सभ्रम – पुत्र । सांमतसाह – सामतसिंह । हथ वाह – प्रहार । करिमाळ – तलवार । समरेस – युद्ध ।

२०७. अवनाड – योद्धा । घड़ा – दल । अवझाड़ – ध्वस । लाल – लालसिंह । सुजाव – पुत्र । अवीह – निडर ।

२०८. वीजळ – तलवार । वाह – प्रहार । गज-गाह – ध्वस, सहार ।

'गजौ' हरियंद[1] तणौ[2] अवगाढ़ ।
वडा[3] जरदैत हणै खग वाढ[4] ॥ २०८

'चापावत' एम[5] लड़ै किळचाळ ।
कूपावत[6] वाहत खाग कराळ ।
तिकै कुळ सूरज 'कान' सतेज ।
जोए[7] खळ[8] थाट करै नह जेज[9] ॥ २०९

जई धख वारण मारण[10] जोम ।
धिखै[11] चख दारण आरण धोम ।
घडा जमरूप भयंकर घाट ।
भिड़ै[12] धज मूछ अणीस भुहाट[13] ॥ २१०

तई भुज[14] साबळ कीध त्रिभाग ।
वहै[15] असि उप्रमतौ असि[16] वाग ।
अयौ[17] असुरांण दळा मझि एम ।
ज्वाळानळ[18] रू घ्रत[19] ऊपर[20] जेम ॥ २११

वेधे[21] दळ मुग्गळ[22] कूत वहेत[23] ।
सिल्है घट पाखर बाज सहेत ।

---

१ ग हरींद । २ ग तणो । ३ ख बडा । ४ ख बाट । ग. वाह । ५ ख ऐम । ६ ख. ग कूपावत । ७ ग. जोऐ । ८ ख. षग । ९ ग जेंज । १० ख स्मरण । ११ ख घिषे । १२ ख भिडे । १३ ग. मुहाट । १४ ख भड । १५ ख बहै । १६ ख. ग मझि । १७ ख आयो । ग आयो । १८ ख. ग जालंनळ । १९ ख. ध्रित । ग. ध्रित । २० ख. ऊपरि । २१ ख वैधे । ग. विधे । २२ ख. मूगगल । ग मुगल । २३ ख वहेत ।

---

२०८. अवगाढ – वीर । जरदैत – कवचधारी योद्धा ।

२०९. किळचाळ – वीर । कूंपावत – राव कूपाके वंशज, राठौडोंकी एक उपशाखा । कांन – कानसिंह ।

२१० वारण – हाथी (?) । आरण – अरुण, लाल । धोम – क्रोधाग्नि । घड़ा – सेना । घाट – बनावट । भुंहाट – भौंहो ।

२११. त्रिभाग – एक प्रकारका भाला । उप्रमतौ – तेज । असुराण – बादशाह, मुसलमान ।

२१२. सिल्है – कवच । बाज – घोडा ।

जुथां[1] विहराय[2] गजां परि जाय ।
वहै[3] जिम लाय झकोळिय वाय ॥ २१२

हौदां[4] मझि लोह[5] करै[6] करि हाक ।
महारिख[7] देखि हुवै मुसताक ।
हिलोळि छडाळ ग्रहै[8] चँद्रहास ।
तछै घण मीर कलम्म[9] तरास[10] ॥ २१३

कितां भड[11] सीस पड़े भड़ केक ।
हुवै[12] अधफाड पडै भड हेक[13] ।
उडै[14] अधसीस वहै तरवार[15] ।
आधा तरबूजतणी उणहार ॥ २१४

समोभ्रम[16] 'रांम' अदीत सराह ।
वधै[17] इम कान्ह करै खग वाह[18] ।
ओरै असि 'ऊदल'[19] जग अथाह ।
निजोड़त[20] मीर[21] खगां नर नाह ॥ २१५

---

१ ग जूथां । २ ख बिराय । ३ ख वहे । ४ ग. होदां । ५ ख लौह । ६ ख. कारे । ७ ग महारिषि । ८ ख ग ग्रहे । ९ ख. ग कलम । १० ग. तराछ । ११ ख. ग. थड । १२ ग. हूवै । १३ ग. ऐक । १४ ख. उडे । १५ ख. तरवारि । १६ ख ग समोभ्रम । १७ ख वधे । १८ ख. बाह । १९ ख बूदल । २० क निजोडत । २१ ग. मार ।

---

२१२ विहराय – विदीर्ण कर के । लाय – दावाग्नि । झकोळिय – आघात पा कर । वाय – हवा ।

२१३ महारिख – महर्षि नारद । मुसताक – मस्त । हिलोळि – हिला कर । छडाळ – भाला । चंद्रहास – तलवार । तछै – तत्क्षण है । घण – बहुत । मीर – सरदार । कलम्म – मुसलमान । तरास – (काट कर ?) ।

२१४. उणहार – सूरत, शक्ल ।

२१५. रांम – रामसिंह । अदीत – आदित्य, सूर्य । कान्ह – कानसिंह । निजोड़त – काटता है ।

जड़क्कत[1] सेल भिदै[2] जरदाळ[3] ।
कड़क्कत[4] कध वहै[5] किरमाळ[6] ।
दादौ[7] जिण 'गोवरधन्न'[8] दुझाल ।
ढाहै 'गजसाह' अगै गजढाल ॥ २१६

'अभैंमल' अग्र 'फतावत' अेम ।
जुडै भड जाहर नाहर जेम ।
'रामौ'[9] 'सबळावत'[10] वाहत रूक ।
भभक्कत स्रोण हुवै[11] खळ भूक ॥ २१७

पियै[12] रत पत्त चँडी भरपूर ।
सुरा[13] गुर हाथ वखांणत सूर ।
टळै नह 'रांम' खत्रीवट टेक ।
उडावत लोह अमीर अनेक ॥ २१८

वहै[14] रत पूर नदी जिम वार ।
तुटै निज सीस घणी तरवार ।
उपै[15] खग टूक लोही मझि एम ।
जळाधर वीच[16] कळाधर जेम ॥ २१९

---

१ ख. जड़कत । २ भिडै । ३ ग जडदाल । ४ ख. ग. कडकत । ५ ख वहै । ६ ख ग फरिमाल । ७ ख दादो । ८ ख गोवरधन । ग गोवरधन । ९ ग रामो । १० ख सवळाउत । ११ ग ह्वै । १२ ख. ग. पीयै । १३ ख सुरां । १४ ख. बहै । १५ ख. ग. वोपै । १६ ख ग. वीचि ।

---

२१६. जड़क्कत – प्रहार करता है । जरदाळ – कवच । कड़क्कत – कट-कटकी ध्वनि करते हैं । वहै – चलती है । दादौ – पितामह । गोवरधन्न – चदावल ठाकुर गोरधर्नसिह ।

२१७ रामौ – रामसिंह । रूक – तलवार । भभक्कत – उमडता है । स्रोण – रक्त, खून । भूक – ध्वस, नाश ।

२१८ रत – रक्त, खून । पत्त – पात्र, खप्पर । वखाणत – प्रशसा करता है । सूर – सूर्य । टेक – प्रण, प्रतिज्ञा ।

२१९. वार – पानी । उपै – शोभित होता है । टूक – खंड । जळाधर – वादल । कळाधर – चद्रमा ।

वढ़ै[1] वप वीजळ[2] खड विहंड ।
पड़ै[3] धर तांम किया[4] रत-पिंड[5] ।
तई वर[6] रभ रथां चढि ताम ।
रहै[7] धर कीत वसे स्रग[8] 'रांम' ।। २२०
करै खगझाट हणै किलमाण ।
भिड़ै 'भगवान' तणौ 'हरिभाण' ।
सारा[9] झक बौळ[10] करत सनांन ।
अडी खँभ 'भाण'[11] छिबै असमान[12] ।। २२१
तई[13] 'हरभाण'[14] पछट्टत[15] तेग ।
वहै असमांन[16] छटा करि[17] वेग[18] ।
तिसा जम बाळ कलिंद्रि तरंग ।
बगत्तर[19] पोस उडंत बरंग ।। २२२
जोरावरसिंघ 'पदम्म'[20] सुजाव ।
घटा जरदैत थटै खग घाव ।
समोभ्रम[21] 'भाऊ' 'बखत्त'[22] सकाज ।
तई खग झाट हणै सिरताज ।। २२३

---

१ ख. वढ़े । २ ख बीजळ । ३ ख पडे । ४ ख ग कीया । ५ ख ग रतप्पड । ६ ख ग. वरि । ७ ख रहे । ८ ख श्रुग । ग श्रुगि । ९ क. सिरी । १० ख ग. बोळ । ११ ख बांण । १२ ग असमांण । १३ ग तइ । १४ ख. हरिभांण । ग हारेभांण । १५ ग. पछटत । १६ ख ग असमांनि । १७ ख ग. किरि । १८ ख. बेग । १९ ख. बग्गतर । ग वगतर । २० ख ग. पदम । २१ क समोभ्रग । २२ ख ग बख्खत ।

---

२२० वढै – कटते है । वप – वपु, शरीर । वीजळ – तलवार । रत-पिंड – युद्धमे वीरगति प्राप्त होते हुए वीरोका अपने रक्तसे मिट्टीके साथ पितरोके लिए पिंड बनाना । धर – भूमि । स्रग – स्वर्ग ।

२२१ किलमांण – यवन, मुसलमान । भगवांन – भगवानसिंह । हरभाण – सूरजभाणसिंह । सारां – तलवारो । झक बौळ – तरवतर । अडी खँभ – जबरदस्त । भाण – सूरजभाण । छिबै – स्पर्श करता है ।

२२२. हरभांण – सूरजभाणसिंह । तेग – तलवार । छटा – बिजली । कलिंद्रि – कालद्री, यमुना । बगत्तर पोस – कवचधारी । बरग – खंड, टुकडा ।

२२३. पम्मद – पदमसिंह । सुजाव – पुत्रब । बखत्त बखतसिंह । सकाज – लिए ।

सुरै[1] 'फतमाल' तणै सिरदार ।
दुसै घट साबळ कीध दुसार ।
अणी[2] धड़ कट्टि[3] फबै फळ एम ।
जाळीमझि हत्थ सुहागणि जेम ।। २२४

जठै प्रथिसिंघ[4] पराक्रम जागि ।
लड़ै भड धूहड अबर लागि ।
पछट्टत मुग्गळ[5] रूप प्रहार ।
किलक्कत वीर[6] जयज्जयकार[7] ।। २२५

दियै[8] खग झाट 'फतावत' दोय ।
हुता[9] जुध झांण अचभम होय ।
भाई 'बिहू'[10] कूप हरागज भार ।
'अरिज्जण'[11] भीम तणी उणहार[12] ।। २२६

जुड़ै 'सिरदार' तणौ[13] वरजाग[14] ।
खळां सिर 'पीथल' वाहत खाग ।
'छतौ' भड़ 'रांम' सुतन्न छछोह ।
लोहां पहराक[15] हणै झट लोह ।। २२७

---

१ ख ग सूरै । २ ख. अरा । ग अरी । ३ ख. ग फूटि । ४ ख प्रिथिसिंघ । ग. प्रथिसिंघ । ५ ख ग मूगल । ६ ख बीर । ७ ख. ग जयजयकार । ८ ख. दीयै । ग. दीये । ९ ख ग हुता । १० ख दुहू । ग दुहू । ११ ग अरिजण । १२ ख. उणहार । ग. अणुहार । १३ ग तणो । १४ ग वरजागि । १५ ग. लहरीक ।

---

२२४ दुसार – इस ओरसे उस ओर तक, आर-पार । फळ – भालेकी नोक, शस्त्रकी नोक ।

२२५ पछट्टत – पटकते हैं, गिराते हैं । किलक्कत – हर्षपूर्ण ध्वनि करते हैं । जयज्जयकार – जय-जयकी ध्वनि ।

२२६ अचभम – आश्चर्ययुक्त । कूंपहरा – राव कूंपाके वंशज, राठौड ।

२२७ सिरदार – सरदारसिंह । वरजाग – जबरदस्त । पीथल – पृथ्वीराज । छतौ – छत्र-सिंह । राम – रामसिंह । छछोह – तेज । लोहा पहराक – अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित । झट – प्रहार । लोह – शस्त्र ।

सभै खग झाट हणै खळ साथ ।
हिचै 'भगवांन' तणौ[1] 'हरनाथ' ।
तठै 'करनौत'[2] लड़ै खग ताह[3] ।
थटां मझि सांमँत अगद थाह[4] ॥ २२८

'चत्रूभुज'[5] 'चंद' तणौ, विरचाळ[6] ।
दियै[7] खग झाट हिणै[8] रवदाळ ।
'देवावत' बद्रियसिंघ[9] दुगाम ।
करै खग झाट खत्रीवट[10] कांम ॥ २२९

जुड़ै 'रतनागर' 'भीम' सुजाव ।
दियै[11] खग झाट खळा सिर दाव ।
'उदावत'[12] 'वक्खत' जै अवसाण ।
खँडाहळ झाट[13] हणै खुरसाण ॥ २३०

पछट्टत[14] लोह थटां पँडवेस ।
अड़ै 'हररूप' तणौ[15] अणँदेस[16] ।
'झुझावत'[17] 'ईस' दियै[18] खग झाट ।
पड़ै खळ थाट चढै घर पाट[19] ॥ २३१

---

१ ग तणो। २ ख करणोत। ग. करणोत। ३ ख. ताहि। ग साहि। ४ ख. ग. थाहि। ५ ख. चत्रभुज। ग चत्रभुज। ६ ख ग वधिचाल। ७ ख दीयै। ८ ख ग. हुणै। ९ ख. बद्रीयसिंघ। १० ग षत्रीवटि। ११ ख. दीयै। १२ ख. ऊदावत। १३ ख ग थाट। १४ ख. ग पछाटत। १५ ग. तणो। १६ ख. ग. अणदेस। १७ ख ग. भूझावत। १८ ख दीए। १९ ख. ग. पाठ।

---

२२८. करनौत – करणोत शाखाके राठौड़।

२२९. विरचाळ – वीर, योद्धा। हिणै – ध्वस करता है। रवदाळ – यवन, मुसलमान। दुगांम – वीर, जबरदस्त।

२३०. रतनागर – समुद्रसिंह। भीम – भीमसिंह। उदावत – उदावत शाखाका राठौड़। खँडाहळ – तलवार। खुरसाण – यवन, मुसलमान।

२३१. पँडवेस – बादशाह, यवन। अणँदेस – आनदसिंह। ईस – ईश्वरीसिंह। पाट – ढेर, समूह।

खहै 'खड़गेस' तणौ 'रघु'[१] खीज ।
वाहै[२] खग जाणि अकाळिय[३] वीज[४] ।
सझै[५] 'कुसळेस' तणौ जुध सांम ।
निजोडत मीर खगा वड नाम[६] ।। २३२

'कलौ'[७] सिवदांन तणौ[८] कळमूळ[९] ।
झकोळत वीजळ[१०] मुग्गळ[११] झूळ ।
'हरौ'[१२] किसनावत 'लाल'[१३] हठाळ ।
खहै खग झाट वहै[१४] रत-खाळ ।। २३३

लडै 'बगसौ'[१५] घण वाहत[१६] लोह ।
बहादरऊत[१७] धसै गजबोह ।
अहमद खेत वडै अवसाण ।
सझै जुध 'सामत'रौ सुरताण ।। २३४

बाहै घण खाग घणीस[१८] बुहाडि[१९] ।
पडै[२०] रिण[२१] नीठ घणा खळ पाडि ।
परी[२२] वर[२३] होय विमाण[२४] पधारि ।
मिळै[२५] सुरधांम आराम मझारि ।। २३५

---

१ ग. रघू । २ ख वाहै । ३ ख. अकालीय । ४ ख. बीज । ५ ख सझे । ६ ख ताम । ७ ग कलो । ८ ग. तणो । ९ ख ग कलिमूळ । १० ख. बीजळ । ११ ख मूगल । ग. मगळ । १२ ख हर । ग. हरी । १३ ख. णाल । १४ ख. बहै । १५ ग. वगसो । १६ ख बाहत । १७ ख वाहादरवूत । ग बाहादरघूत । १८ ख घणीसा । १९ ख वाहाडि । ग वहाडि । २० ख. पडे । २१ ख ग रण । २२ ख परा । २३ ख वरि । २४ ख. बिमाण । २५ ख मिले ।

---

२३२. खहै – भिडता है, युद्ध करता है । खडगेस – खड्गसिंह । रघु – रघुनाथसिंह । खीज – कोप कर के । अकाळिय – असामयिक । वीज – विजली ।

२३३. कलौ – कल्याणसिंह । कळमूळ – योद्धा, वीर । झकोळत – प्रक्षालन करता है । वीजळ – तलवार । झूळ – समूह । हरौ – हरीसिंह । लाल – लालसिंह । हठाळ – अपने हठ पर दृढ रहने वाला । रत-खाळ – खूनका नाला ।

२३४ वगसौ – वगसीराम । वहादरऊत – वहादुरसिंहका वंशज । गज बोह – गज-व्यूह । अहमद – अहमदावाद । सामत – सामंतसिंह । सुरताण – सुल्तानसिंह ।

२३५. नीठ – कठिनतासे । परी – अप्सरा । वर – पति । सुरधाम – स्वर्ग ।

रिमां खग झाट[1] हणै जमरूठ ।
तठै 'बखतेस' 'दलावत' तूठ[2] ।
हवै 'सुरतांण' तणौ 'हठमाल' ।
झटा[3] खग खेलत सूर दुझाल । २३६

'अभौ'[4] भड 'जैत' तणौ अवनाड ।
*करै खग झाटक[5] थाट[6] किंवाड[7] ।
जोरावरऊत 'पद्दम्म'[8] अजागि* ।
'उदावत'[9] खाग खळा सिर आगि ॥ २३७

'जसावत' 'माधव' दारण जोम ।
हिचै खग झाट करै खळ होम
'रांमौ' 'सगतेस' तणौ करि रीस ।
सत्रां चँद्रहास तरास तसीस ॥ २३८

'रासौ' जुध 'माहव'रौ मछराळ ।
रमै खग झाट खळा विकराळ[10] ।
'अनावत'[11] 'अम्मर' सम्मर आय ।
घणा खळ ताय[12] हणै खग घाय ॥ २३९

समोभ्रम[13] 'चद' 'सिवौ'[14] धुबि[15] सार।
वरावत हूर रिमां जुध वार ।

---

१ ख झाटि । २ ख. ग डूठ । ३ झट । ४ ख ग. अनौ । ५ ग. झाटकि । ६ ग थट । ७ ग किवाट । ८ ग पदम । * *ये दो पक्तिया ख प्रतिमे नही हैं ।
९ ख कवत । १० विकराल । ११ ख. अन्नावत्त । १२ ग ताहि । १३ क समौ-भ्रम । ग समोभ्रम । १४ मिवो । ग सिवो । १५ ख ग धुवि ।

---

२३६. रिमां – शत्रुओ । जमरूठ – यमराजके समान रुष्टमान । तुठ – ( ? ) ।
२३७. जैत – जैतसिंह । अवनाड – वीर ।
२३८ दारण – जबरदस्त । जोम – जोश । हिचै – युद्ध करता है । होम – ध्वस । चँद्रहास – तलवार । तरास – काटता है । तसीस – हाथोसे ।
२३९. रासौ – रायसिंह । माहवरौ – माहवसिंहका । मछराळ – वीर । अम्मर – अमरसिंह । सम्मर – युद्ध ।
२४० समोभ्रम – पुत्र । चद – चद्रसिंह । सिवौ – शिवदानसिंह । धुबि – युद्ध कर के । सार – तलवार । वरावत – वरण कराता है । हूर – अप्सरा ।

'हठी' 'सबळेस' समोभ्रम[1] हेक ।
निजोडत वीजळ[2] खांन[3] अनेक ।। २४०

तणं[4] 'दलसाह' तणौ 'सुरतेस' ।
सत्रां खगधार भ्रमत 'सुरेस' ।
तई खग वाहत 'कुभ'[5] सुतन्न ।
करै खग भाटक सूर 'मुकन्न'[6] ।। २४१

बडा[7] खळ रूक[8] हणै अणबीह ।
सभै 'हिमताउत' डूगरसीह ।
ग्रैराक जराक कराक अथाह ।
समोभ्रम[9] 'भोज' लडै 'गजसाह' ।। २४२

खहै 'अजबावत' साहिब - खांन ।
उडै खग भाट छिबै असमान ।
दिपै 'कुसळेस' सुतन्न[10] 'दुरग' ।
सत्रा खग भाट तरग सुरग ।। २४३

पटायत[11] सूर इतो[12] परमाण[13] ।
जुड़ै इम[14] अग्र[15] 'उमेद' 'सुजाण'[16] ।

---

१ क ग. समोभ्रम । २ ख बीजष । ग. बीजल । ३ ख. लांन । ४ ग. तठै । ५ ख कूभ । ६ ख मुक्कन । ग. मुक्कन । ७ ग. वडा । ८ ग रूप । ९ ख समोभ्रम । १० ख सुतत्र । ग. सुतन । ११ ख पटाइत । १२ ग इतै । १३ ख. परमाणि । १४ ख. ग इण । १५ ख. अग्रि । १६ ख. सुजाणि ।

---

२४० हठी – हठीसिह । निजोडत – काटता है । वीजळ – तलवार ।

२४१. तणं – तनय, पुत्र । सुरतेस – सुरतसिह । सुरेस – इन्द्रसिह । कुंभ – कुभकरण । मुकन्न – मुकुनसिह ।

२४२. रूक – तलवार । अणवीह – निडर, निशक । ग्रैराक – तलवार । जराक – प्रहार । कराक – क्रदन, चिल्लाहट । भोज – भोजसिह । गजसाह – गजसिह ।

२४३ खहै – युद्ध करता है । अजबावत – अजवसिहका पुत्र । छिबै – स्पर्श करता है । कुसळेस – कुशलसिह । दुरग – दुर्गादास । सुरग – रक्त, लाल ।

२४४. पटायत – पट्टाधिकारी । जुडै – भिड़ते हैं । उमेद – उम्मेदसिह ।

उरज्जणसिघ[1] 'पदम्म'[2] सुजाव[3] ।
घणा खळ ढाहत वीजळ[4] घाव ॥ २४४

वाहै[5] खग[6] मुग्गळ[7] वारोवार[8] ।
हुवौ[9] सिर पकज पख - हजार ।
तई[10] सर सेल तेगा[11] भर[12] तेम ।
जई फब[13] गात कँथा सिध - जेम ॥ २४५

अरीथट हूर वराय[14] अनेक ।
अरी झल लोह वरी[15] रँभ एक[16] ।
जरै द्रव[17] देह करै जसवास[18] ।
विमाण[19] अरोहि करै[20] स्रुगवास[21] ॥ २४६

हुवै घण मुग्गळ[22] ग्रोखम हेम ।
खहै[23] खग झाट 'फतावत'[24] 'खेम' ।
'मधा'हर फील हणै जुध माह[25] ।
सदा सिव भाण करत[26] सराह[27] ॥ २४७

---

१ ग उरजणसिघ । २ ख ग पदम । ३ ग. सूजाव । ४ ख ग बीजळ । ५ ख वाहै । ग वाहे । ६ ख ग षल । ७ ख. मूगल । ग मुगल । ८ ख. बारोहीवार । ग वारोहीवार । ९ ग हुवो । १० ख ग तइ । ११ ख ग. तगां १२ ख भरि । १३ ख ग फबि । १४ ग बराय । १५ ख बरी । ग. वीर । १६ ख येक । १७ ख. ग द्रव । १८ ग जसवासा । १९ ख बिमाण । २० ख कीयौ । ग कियो । २१ ख श्रुगिव्वास । ग. श्रूगिवास । २२ ख. मूगल । ग. मुगल । २३ ख वहै । २४ ख वता-वत । २५ ख ग. माहि । २६ ख ग कहत । २७ ख ग सराहि ।

---

२४४ पदम्म – पदमसिंह । सुजाव – पुत्र । ढाहत – गिराता है, मारता है । वीजळ – तलवार ।

२४५ पंकज – कमल । पंख-हजार – सहस्रदल कमलके समान । कँथा – फटे-पुराने चिथडोकी बनी गुदडी जिसे फकीर धारण करते हैं ।

२४६ अरीथट – शत्रु-दल । हूर – अप्सरा । जसवास – यश, कीर्ति । विमाण – विमान, वायुयान ।

२४७ फतावत खेम – फतेहसिंहका वशज खेमसिंह । मधाहर – माधोसिंहका वशज । फील – हाथी । सराह – प्रशसा, तारीफ ।

दुबाह[1] अनेक लड़ै थट दोय ।
कमधांय[2] 'खीम' जिसौ नह कोय[3] ।
समोभ्रम सांमतसिघ सरूप ।
रिमा खग झाट हणै जमरूप ॥ २४८
'मधावत' 'ईसर' लोह मराट ।
घणा खम झाट तछै खळ घाट ।
करै खग झाट उफाण किरोध ।
जुडै[4] जुध 'सेर' समोभ्रम[5] 'जोध' ॥ २४९
सुतन्न[6] 'हरिद' लडै 'सिरदार' ।
पबै[7] खग जाणिक[8] बज्र प्रहार ।
रिमां करि नास बाणास[9] रँगेस ।
समोभ्रम[10] 'भाउ'[11] लडै[12] 'जगतेस' ॥ २५०
हिचै[13] चँद्रहास रचै रिख हास ।
सुतां[14] 'भगवांन'ज सांवळदास ।
जुटै करमाळ[15] झळां 'जगवत' ।
अडीखँभ 'कन्न'[16] तणौ[17] 'भगवत' ॥ २५१

---

१ ख. ग दुहाव । २ ख ग कमधज । ३ ग कोई । ४ ग जुडे । ५ क समोभ्रम । ६ ख. सुतन । ७ ग विबै । ८ ग जाणक । ९ ख. वाणास । ग. वाणास । १० क. समोभ्रम । ११ ख भाऊ । ग भोज । १२ ख ग जुडै । १३ ख. हिवै । ग हिवे । १४ ख ग सुत । १५ ख करिमाल । १६ ख. ग कान्ह । ७१ ग. तणो ।

---

२४८ दुबाह – वीर, योद्धा । थट – सेना । कमधाय – राठौडोंमे । खीम – खीमसिंह । हणै – सहार करता है ।

२४९. मधावत ईसर – माधोसिंहका पुत्र ईश्वरीसिंह । मराट – जबरदस्त । तछै – सहार करता है । उफाण – उबाल । किरोध – क्रोध । सेर – शेरसिंह । समोभ्रम – पुत्र । जोध – जोधसिंह ।

२५०. हरिद – हरिसिंह । सिरदार – सरदारसिंह । पबै – पर्वत । जांणिक – मानो । बांणास – तलवार । भाउ – भाऊसिंह । जगतेस – जगतसिंह ।

२५१ हिचै – प्रहार करता है । चँद्रहास – तलवार । रिख – नारद ऋषि । भगवांन – भगवानसिंह । करमाळ – तलवार । अडीखँभ – जबरदस्त । कन्न – किसनसिंह । भगवत – भगवतसिंह ।

धमोडत साबळ[1] मुग्गळ[2] धींग ।
सुता[3] हरिनाथ जके हरसीघ[4] ।
दियै[5] खग झाटक रूप दुरत्त ।
सुता[6] 'कुसळेस' कँठीर सुरत्त ।। २५२

वडा[7] उजबक्क[8] हणै खग वाह ।
समोभ्रम 'कान्ह' लड़ै 'दलसाह' ।
समोभ्रम 'दीप' 'हिंदाळ' सधीर[9] ।
वधेवधि[10] लोह करै नर वीर[11] ।। २५३

विढै जुध मेड़तिया जुध वेर[12] ।
सिरै[13] 'सिरदार' समोभ्रम[14] 'सेर' ।
'अभैमल' चाड जिके[15] बह[16] वार ।
धरा जुध कीध फतै[17] खग धार ।। २५४

'अभा' छळि मेडतनैर अभंग ।
जितौ[18] अरियांण हुतौ[19] कर जग ।
घणा महरात[20] हणै खग घाय ।
जितौ[21] बह[22] जग बळा[23] मझि[24] जाय ।। २५५

---

१ ग मुगल । २ ख. मूगल । ग सावल । ३ ख सु । ग सुत । ४ ख. हरिसींघ । ग. हरिसघ । ५ ख दीयै । ६ ख ग. सुतं । ७ ख वडा । ८ ग. वजवक्क । ९ ग सधी । १० ग वधेविधि । ११ ख बीर । १२ ख बेर । १३ ग सिरे । १४ क समोभ्रम । १५ ख. जिके । १६ ख वहो । ग बहो । १७ ग फते । १८ ख ग. जीतो । १९ ख. हुता । ग. हुता । २० ख महिरात । २२ ख जीतो । ग जीतो । २२ ख. बहो । ग बहु । २३ ग. वळा । २४ ग मजि ।

---

२५२ धमोडत – प्रहार करता है । धींग – वीर । दुरत्त – भयकर । कुसळेस – कुशलसिंह । कँठीर – सिंह ।

२५३ उजबक्क – तातारियोकी एक जाति अथवा इस जातिका व्यक्ति । कान्ह – कानसिंह । दीप – दीपसिंह । हिंदाळ – हिंदालसिंह । वधेवधि – बढ-बढ कर ।

२५४ विढै – वीर-गतिको प्राप्त करते हैं, युद्ध करते हैं । मेडतिया – राठौड वशकी एक शाखा । वेर – समय । सिरदार – सरदारसिंह । सेर – शेरसिंह मेडतिया । चाड – रक्षा ।

२५५ मेड़तनैर – मेडता नगरके । अभग – वीर । अरियांण – शत्रु । बळा – ( अग्नि ? ) ।

सझे खग झाटक कूडळ साथ ।<br>
निजोड[१] धवेच[२] हणै[३] रघुनाथ ।<br>
अहमद कोट करै[४] अणबीह ।<br>
दावानळ जग सवा त्रण[५] दीह ॥ २५६

चौथै[६] दिन खाग झळा[७] कळिचाळ ।<br>
काळादळ[८] रोद्र[९] हणे विकराळ ।<br>
मारे[१०] खळ मुग्गळ[११] सावरमत्त[१२] ।<br>
रतै[१३] रँग कीध उझेळ रगत्त[१४] ॥ २५७

चौड़ा[१५] मझि आय वधे छक चाहि ।<br>
मँडे दुय[१६] राडि हिके दिन माहि ।<br>
उगातिय[१७] मौसर[१८] क्रोध उफांण ।<br>
भयकर जेठ जिसौ मधि भाण ॥ २५८

मारू हथि एम कढ़ी किरमाळ[१९] ।<br>
झळाहळ काळतणै[२०] हथ झाळ ।<br>
तठै पखरैत हकालि तोखार ।<br>
वमल्लिय[२१] भार खँचे[२२] जिणवार ॥ २५९

---

१ ख निजोडि । २ ख धवंच । ३ ख हणे । ४ ख. करे । ५ ख त्रिण । ६ ख चोथै । ७ ख झटां । ग झाटां । ८ ख. कालानल । ९ ख ग. रौद्र । १० ग मारै । ११ ख मूगल । ग. मुंगल । १२ ख. ग. सावरमति । १३ ख ग. रातै । १४ ख. ग. रगति । १५ ग. चौडै । १६ ख दोया । ग दोय । १७ ख. उगतीय । ग. ऊगतिय । १८ ग. मोसर । १९ ख करिमाल । २० ग. काळतणो । २१ ख. ग. वमालीय । २२ ग षचै ।

---

२५६. झाटक – प्रहार । कूडळ – धनुप । निजोड – काटता है । धवेच – राठौड वंशकी धवैचा शाखाका व्यक्ति । अहमद – अहमदाबाद । दावानळ – दावाग्नि । सवा दीह – सवा तीन दिन ।

२५७. काळचाळ – वीर । रोद्र – यवन । सावरमत्त – साबरमती नदी । रतै – लाल । उझेळ – तरग । रगत्त – रक्त, खून ।

२५८ मँडे – रच दिये । राडि – युद्ध । उगातिय मौसर – श्मश्रुके बाल निकलते समय । उफाण – उबाल । जेठ – जेष्ठ मास । मधि – मध्य ।

२५९ मारू – वीर राठौड । कढ़ी – निकली । किरमाळ – तलवार । तठै – वहा । पखरैत – कवचधारी घोड़ा या योद्धा । तोखार – घोड़ा । वमल्लिय – ( ? ) ।

झपट्टत नाळ[1] दमग झळास ।
करै 'वखतावर'[2] नट्ट कळास ।
ओरे[3] असि वाहत खाग अपार ।
'विलद' 'विलद' कहै जिण वार ॥ २६०

धरा[4] जरदैत पड़ै खग धार ।
उडै धड फाड[5] जनेउ उतार ।
रिमा कँधि 'सेर' करै घण रीस ।
सभ्भै खग झाट उडै बह[6] सीस ॥ २६१

सहेत[7] झिलम्म[8] पड़ै घमसाण ।
जाळी[9] मझि कीर मतीरह[10] जांण ।
आगै भड 'सेर' सिरै अमराव[11] ।
उठी 'तरियन्न'[12] सिरै अधिकाव ॥ २६२

जमात समेत[13] दुहू जमरांण ।
मिळे[14] घमसाण छिबै[15] असमाण ।

---

१ ख. ताल । २ ख बषतावर । ३ ख. औरे । ग. ओरें । ४ ख घडा । ग. धडां । ५ ग फाट । ६ ख ग. वहो । ७ ख. राहैत । ८ ख. झिल्लम । ग झिलम । ९ ख जांली । १० ग मतीरहि । ११ ख ग. उमराव । १२ ख ग तरियन्न । १३ ख. ग सहेत । १४ ख. मेले । ग मिलै । १५ ख छिवे । ग छिवै ।

---

२६०. **झपट्टत** – झपटते हैं, तेज दौडते है । **नाळ** – घोडेके सुमके नीचे लगाया जाने वाला वृत्ताकार उपकरण । **दमग** – अग्निकण । **झळास** – चमक, आगकी लपट । **वखतावर** – वख्तावरसिंह ।

२६१ **धरा** – पृथ्वी । **जरदैत** – कवचधारी योद्धा । **उडै उतार** – तलवारोंके प्रहारोसे योद्धाओके शरीर ठीक उसी स्थानसे बराबर कटते हैं जहा पर उनके शरीर पर यज्ञोपवीत धारण किया रहता है । **रिमा** – शत्रुओ । **सेर** – शेरसिंह मेडतिया ।

२६२. **झिलम्म** – युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप विशेष, शिरस्त्राण । **घमसांण** – युद्ध । **जाळी** – जाल, फंदा । **कीर** – तोता । **मतीरह** – हिंदवानी नामक वर्षा ऋतुमे होने वाला तरबूजके आकारका लता फल विशेष । **तरियन्न** – तरयनखा नामक यवन । **अधिकाव** – विशेषता ।

२६३. **जमरांण** – यमराज । **घमसाण** – युद्ध । **छिबै** – स्पर्श करते हैं ।

अम्हौ[1] सम्ह सायक फूटि अपार ।
धडा धमरोळ पड़ै चवधार ।। २६३

पछट्टत[2] खग्ग राठौड[3] पठाण ।
भयकर कौतिग[4] देखत भाण ।
रूणझण[5] नेवर हूवर[6] रभ[7] ।
उठै[8] हसि नारद होय अचभ ।। २६४

लोही धभकंति[9] खगां झट[10] लागि ।
उडै झळ जाणि खँडी वन[11] आगि ।
लडायक 'सूर' जिसौ वहलीम[12] ।
भणै[13] ज 'तरीन' तणौ 'अभरीम' ।। २६५

खड़ै असि 'सेर' दिसो[14] चढि खाग[15] ।
'निजायक' जांणि खिजायक[16] नाग ।
आवतीहि[17] झेलि[18] पठाण अफेर ।
साम्है[19] सिर खाग[20] लगाइय[21] 'सेर' ।। २६६

तई अघसीस वढै तह-ताज[22] ।
कियौ[23] सिव खप्पर[24] जीमण काज ।

---

१ ख ग अम्हो। २ ख पछ्ट्टत। ग. पछटत। ३ ग. राठोड। ४ ख कौतक। ग कौतग। ५ ख ग. रणझण। ६ ख ग. हूर। ७ ख. वरभ। प. [illegible]। ८ ख उट्ठै। ९ ख ग. भभकत। १० ख. झटि। ११ ख. वन। १२ ख ग वहलीम। १३ ख ग भणे। १४ ख दिली। १५ ख. ग पाग। १६ ख. ग. पिजायक। १७ ख आवता १८ फ. जेल। १९ फ सम्हैं। २० ख. ग. पाग। २१ ख ग. लगाईय। २२ ख साज। २३ ख. ग. कीयो। २४ क पक्खर।

---

२६३- अम्हौ सम्ह – परस्पर एक दूसरेके अभिमुख। सायक – तीर। घडा – शरीर। धमरोळ – प्रहार कर के। चवधार – भाला विशेष।

२६४ रुणझण – जेवरोंकी ध्वनि। नेवर – पैरमे धारण करनेका स्त्रियोंका एक आभूषण। हूवर – परी। रभ – अप्सरा। अचभ – आश्चर्ययुक्त।

२६५ धभकति – उमडता है। खँडी वन – एक प्राचीन वन जिसे अर्जुनने जलाया था।

२६६ खिजायक – कुपित।

२६७. जीमण – भोजन या भोजन करनेके लिए।

सहे खग[1] दीध पठांण समाथि[2] ।
हुई खग[3] झाट[4] कमधज हाथि[5] ।। २६७

हिचै[6] 'कुसळाहर' घायल होय ।
दूजी[7] खग[8] झाट किया[9] बट दोय ।
जोये[10] 'अभराम' विहंडज[11] जवान ।
खहै[12] खग[13] 'मांनड' 'चूहड-खान[14] ।। २६८

वाहै[15] खग[16] चूहड-खांन[17] विक्राळ ।
नाराजक बाजतणौ मुहिनाळ[18] ।
आ वाहि पठांण सकै न उभारि ।
तितै भड़ 'सेर' वाही तरवारि ।। २६९

खडै[19] हंस भोम[20] पड़े कटि खान[21] ।
उडे[22] सिर वीज[23] पड़ी असमान ।
'सेरा'[24] मुहरै[25] भड़ सेर समान ।
खगां[26] हणियौ[27] जुधि 'मांनड-खान[28] ।। २७०

सभै भड़ तीन लखे[29] सरियन्न ।
तठै गज हूल कियौ[30] तरियन्न[31] ।

---

१ ख ग षाग । २ क समाय । ३ ख. ग. षग । ४ क. हाय । ५ ख ग झाटक ६ ख हिवे । ग हिचे । ७ ख ग. दूजा । ८ ख ग. षग । ९ ख ग. कीया । १० क ख जोए । ११ ग. विहज । १२ ख ग. षहे । १३ ख. ग. खाग । १४ ख चूहड़-षान । १५ ख वाहे । ग. बाहै । १६ ख ग षग । १७ ख ग चूहड़षांन । १८ क. ग मुहनाळ । १९ ख. ग षडै । २० ख भौम । ग भूम । २१ ख ग षान । २२ ख डडो । २३ ख बीज । २४ ख सेर । २५ ख. ग मोहरै । २६ ख ग षगां । २७ क. हणि । ख हणीयौ । २८ क मांनह खांन । २९ ख लषे । ३० ख. ग कीयौ । ३१ ख तरीयन्न ।

---

२६७ झाटक – प्रहार ।

२६८. हिचै – युद्ध करता है, भिडता है । विहडज – कट कर । खहै – युद्ध करता है ।

२६९. नाराजक – तलवार । बाजतणौ – घोड़ेके ।

२७०. खडै – प्रयाण करते हैं । हंस – प्राण । भोम – भूमि । मुहरै – अगाडी ।

२७१. हूल – प्रहार ।

'मधा'हर मेडतिया[1] जमराण ।
प्रळै भळ रूप 'तरीन' पठांण ।। २७१

कसीसत टक - अढार - कबांण ।
परी अह[2] रूप ध्रवै सिर पांण ।
धणी खग[3] झाट करै घण घाय ।
लगी किर वसतणै[4] वन लाय ।। २७२
दियै[5] 'बखतावर'[6] माकड़ डाण ।
खगा[7] झट 'सेर' हणै खुरसाण[8] ।
अळूझत बाज[9] खुरा[10] मझि अत ।
मथै खुरदेत[11] गजां मयमत[12] ।। २७३
वधै[13] 'तरियतन्नणौ'[14] सबछेक ।
हौदा[15] मझि खाग[16] लगाइय[17] हेक ।
जठै खग[18] तत ज्यूही वही[19] जाय ।
खडा[20] भड घूम चकरिय[21] खाय[22] ।। २७४
तकै सिर ईस लियै[23] मुसताक ।
पडै छक जाणिक फूल पियाक ।

---

१ ख मेडतिया। २ ख अह। ३ ख. ग. षग। ४ ख बास। ग वास। ५ क दिए। ख दीयै। ६ ख. वखतावर। ७ ख ग. षगा। ८ ख. ग. षुरसांण। ९ ख. वाझ। ख वाज। १० ख ग. षुर। ११ ख ग षुर। १२ क मवदत। ख मदमत। १३ ख वधे। १४ ख. तरीयम्नतणै। १५ ग होदा। १६ ख. ग. षाग। १७ ख ग लगाईय। १८ ख ग षग। १९ ख. वहि। ग वुही। २० ख. ग. षडा। २१ ग चषकेरीय। २२ ख. ग षाय। २३ ख. लेए। ग. लिए।

---

२७२. कसीसत – धनुष पर प्रत्यचा चढाते हैं। टक.. कबांण – एक प्रकार का धनुष विशेष। घाय – प्रहार। किर – मानो। लाय – दवाग्नि।

२७३. माकड – वानर। डाण – छलाग। खुरसाण – यवन। अत – आतें। मयमत – मदमस्त।

२७४ ईस – ईश, महादेव। मुसताक – मस्ती, हर्ष। छक – तृप्त। जाणिक – मानों। फूल – शराब। पियाक – पीने वाला।

किता घट फूट लुटै[1] हिचकंत ।
कबूतर लोटण[2] जेम करत ।। २७५

उवासत[3] सीस लड़ै धड एक ।
इसी विध[4] घाट कुघाट अनेक ।
वहै धज साबळ खाग[5] विहार[6] ।
सभ्भै[7] जुध खान[8] पड़ै[9] सरदार ।। २७६

पड़ै भड़ लोहांइ[10] खेत[11] पचीस ।
अणी घमसांण पणी इक-वीस ।
सहेत 'तरीन'[12] जुदा धड[13] सीस ।
'तरीन' पठांण पड़ै चवतीस[14] ।। २७७

पावै कुण पात कहै गुणपार ।
विढै[15] भड 'सेर' इसौ उणवार ।
महाभड़[16] सूर लडै 'पदमेस' ।
रमै खग झाट हसत रिखेस ।। २७८

विचै खळ थाट करै असिवेव[17] ।
दिपै जिम भारथमै सहदेव[18] ।

---

१ ख ग लूटे । २ ग. लौटण । ३ ग उवासत । ४ ख बिधि । ५ ख बहे । ६ ख बिहार । ७ ख. सभ्भे । ८ ख. ग षान । ९ ख पडे । १० ख. लोदीय । ग लोध्रीय । ११ ख ग षेत । १२ ग तरीयन । १३ ख भड । १४ ख चववीस । १५ ख विढ़ै । ग विडै । १६ ख ग महाबळ । १७ ग असिवैव । १८ ग सहदेव ।

---

२७६ उवासत – ( पडे हुए ? ) । घाट – घट, शरीर । कुघाट – क्षत-विक्षत, खराब । धज – भाला । विहार – विदीर्ण करके ।

२७७. खेत – युद्ध-भूमि । अणी – अनीक, सेना अथवा इस । घमसांण – युद्ध ।

२७८ पात – पात्र, कवि । विढ़ै – युद्ध करता है । पदमेस – पदमसिंह । रिखेस – ऋषीश, नारद ऋषि ।

कटै जरदाळ अमीर कराळ ।
'कलावत' लोह करै कळिचाळ ॥ २७६
जठै खग वाहत[1] दारुण 'जैत' ।
पडै जरदैत घणा पखरैत ।
धसै[2] दळ मूगळ[3] कीध विधूस ।
रुद्रग्गण[4] दक्षतणै[5] जिग रूस ॥ २८०
साम्है सिर खाग वही घमसांण ।
जिकौ[6] अधचंद्र भळक्कत जाण[7] ।
भवानिय[8] दीध सिंदूरज[9] भाळ ।
भळाहळ जाणि[10] त्रिती चख भाळ ॥ २८१
पेचां मझि स्रोण वहै अणपार ।
जटा गग जाणिक[11] धार[12] हजार[13] ।
वघब्बर जेम सिलै[14] विकराळ[15] ।
मँडै[16] गळि माळ जिका रुँडमाळ ॥ २८२
नँदी[17] गण जेम तुरंग निहग ।
जोगारँभ आठ सझै रिण जग ।

१ ख बाहत । २ ख ग धसे । ३ ग मुगळ । ४ ख ग रौद्रगण । ६ ख. ग. दछ्पतणौ । ६ ख ग. जिको । ७ ग. जांणे । ८ ख ग. भवानीय । ६ ख. ग सदूरज । १० ग जाणि । ११ ख जाणि । १२ ख त्रिती । १३ ख चषभाल । १४ ख ग. सिलहै । १५ ख विकराल । १६ ख ग. मडे । १७ क नदी ।

२७६ जरदाळ – कवच । कलावत – कल्याणसिंहका पुत्र या वंशज । कळिचाळ – योद्धा ।
२८०. वाहत – प्रहार करता जैत – जैतसिंह । जरदैत – कवचधारी योद्धा । पखरैत – पखर(कवच जो घोडा या हाथी पर डाला जाता है)धारी घोडा या हाथी । विधूस – विध्वस । रुद्रग्गण – महादेवके गण । दक्ष – दक्ष प्रजापति जो सतीका पिता तथा शिवका स्वसुर था । जिग – यज्ञ । रूस – रुष्ट होकर ।
२८१. भळक्कत – चमकता है । जांण – मानो । भळाहळ – चमकयुक्त, देदीप्यमान । जाणि – मानो । त्रिती – तृतीय । भाळ – ललाट ।
२८२ पेचा – पगडीकी लेपटो । स्रोण – शोणित, खून । जाणिक – मानो । वघबर = (व्याघ्र+अवर) – व्याघ्र चर्म । सिलै – सिलह, कवच । गळि – कठमे, गलेमे ।
२८३. नँदी गण – शिवके द्वारपाल बैलका नाम जिस पर महादेव सवारी करते हैं । तुरग – घोडा । निहग – योद्धा, वीर । जोगारँभ – योगाभ्यास ।

दळै खग[1] 'सूर' तणौ विरदैत'[2] ।
जटाधर रूप कियां[3] भड़ 'जैत' ।। २८३

'भिमाजळ'[4] 'मौकलऊत'[5] भिड़त ।
धमोडत[6] सेल[7] सिलै[8] उधड़त ।
घणा रत छूटत फूटत घाट ।
मजीठकि जांणि[9] ढुळै रँगमाट[10] ।। २८४

सुरा[11] गुर 'रायमलौत'[12] सकाज ।
जुटै 'मुकँदेस' तणौ 'जसराज' ।
लोही झिल[13] रग तुरी धज लाल ।
उझेलत सेल[14] अमीर उथाल ।। २८५

पमग वछेक करै अणपार ।
उडावत[15] लोह झटां असवार ।
जरद्द मरद्द 'र पाखर जंग ।
पड़ै कटि अंग अरद्ध[16] पमग ।। २८६

'जसौ' खग वाहत[17] यू वहि[18] जात ।
घरां दुय[19] जांण[20] वँटी घरवात[21] ।

---

१ ख ग. षल । २ ख बिरवैत । ३ ख कीयौ । ग कीयां । ४ ख ग. भीमाजल । ५ ख ग मौकमऊत । ६ ख. ग धमोडत । ७ ख सेल्ह । ८ ख सिल्है । ९ ख लांणि । १० ग. रगमाटि । ११ ख. ग सूरा । १२ ग रायमलोत । १३ ख. ग झिलि । १४ ग. प्रतिमे यह शब्द नही है । १५ ख उदावत । १६ ग. अरध । १७ ख. बाहत । १८ ख वहि । १९ ख ग दोय । २० ग जांणि । २१ ख घरबात ।

---

२८३. दळै – ध्वस करता है । विरदैत – विरुदधारी, यशस्वी । जटाधर – महादेव ।

२८४ भिमाजळ – भीमसिंह । मौकलऊत – मौकलसिंहका पुत्र । धमोडत – प्रहार करता है । सिलै – कवच । उधडत – फटता है । रत – रक्त, खून । घाट – शरीर । ढुळै – गिरता हैं ।

२८५. सुरां गुर – वीर, योद्धा । झिल – तरवतर हो कर । तुरी – घोडा । धज – भाला ।

२८६ पमग = (प्लवग) – घोडा । जरद्द – कवच । अरद्ध – आधा ।

२८७. जसौ – जसवतसिंह ।

कलावत 'रांम' लड़ै कळिचाळ ।
दियै[1] खग झाट पडै रवदाळ ॥ २८७

वढै[2] रत[3] फेरत[4] कीच विलम्म[5] ।
काळी मढि[6] बाकर जेम[7] किलम्म[8] ।
समोभ्रम[9] 'जैत' 'जसा'[10] समकाज[11] ।
लडै खग झाट लियां[12] कुळ लाज ॥ २८८

पछाड़त जग अमीर पमंग[13] ।
अडै इम रूप 'रूप'हरौ अणभग ।
सभै[14] खग सेल सकौ[15] रिणसाज ।
विढ़ै[16] भड 'भूझ'[17] तणौ 'वनराज'[18] ॥ २८९

धारूजळ झाट धुबै[19] निरधूम[20] ।
भिड़ै[21] 'कुसळेस' समोभ्रम 'भूम'[22] ।
भारा खग तूटत ऊपर भाळ ।
मुड नह सूर लडै मतिवाळ[23] ॥ २९०

घणा धड[24] पै हथ सोभत घाव ।
वणै[25] नर[26] नाहर रेख वणाव ।

१ ख ग दीयै । २ ख बढै । ३ ख ग तड । ४ ख ग फेरत । ५ ख विलब । ग विलस । ६ ख मटि । ग मढ़ि । ७ ख नेम । ८ ग. किलम । ९ क. समोभ्रम । १० ग जुसा । ११ ख मनकात । ग मसकाज । १२ ख ग लीया । १३ ख. ग पवग । १४ ख ग सभ्है । १५ ख ग सको । १६ ख विढ़ै । १७ ख जूझ । ग भूझ । १८ ख बनराज । १९ ख ग धुवै । २० ग निरधूप । २१ ख भिडे । २२ ख ग भूप । २३ ग मतवाळ । २४ ग घणाघण । २५ ख ग वणे । २६ ख जिज ग जिम ।

२८७ रवदाळ – यवन ।

२८८ वढै – वढता है । रत – रक्त, खून । कीच – पक, दलदल । विलम्म – भाला विशेष (?) । काळी – कालिका देवी । मढि – मदिर, स्थान । बाकर – बकरा । किलम्म – मुसलमान । समोभ्रम – पुत्र । जैत – जैतसिह । जसा – जसवतसिह ।

२८९ रूपहरौ – रूपसिहका वशज । अणभग – वीर । सभै – सहार करता है । सकौ – सब । भूझ – भूझारसिह । तणौ – पुत्र, तनय ।

२९० धारूजळ – तलवार । धुबै – प्रज्वलित होता है (?) । भूम – भोमसिह । भारा – समूह । मतिवाळ – मस्त ।

२९१ घणा – बहुत ।

जुटै[1] इम[2] 'दूद'हरौ चढ़ि जोम ।
भळाहळ[3] खाग पछट्टत[4] 'भोम' ।। २९१

सत्रा अधघाट कितां अधसंध ।
करै अधसीस उडै अधकध ।
इसी विध[5] फूल अणी अवझाड़ ।
रचै[6] धसि गोळ भयकर राड़ ।। २९२

खासा गज खांन तणा सिर खीज ।
वहै[7] खग जाणिक वादळ वोज[8] ।
उडै गजसूड चढै असमाण[9] ।
जाए अहि उड्डि[10] मळै गिर[11] जाण[12] ।। २९३

वहै[13] सर साबळ धार विहार ।
वढ़े[14] चुखचुक्ख हुवौ जिण[15] वार ।
धारूजळ वाहि[16] वहाय[17] नृधोम[18] ।
भिडे[19] इम 'भोम' पडै[20] भड़ 'भोम' ।। २९४

---

१ ख जूटै । ग जूडै । २ ग. यम । ३ ख भाळाहल । ४ ग. पछटत । ५ ख बिघि । ग विधि । ६ ख रचे । ७ ख वहै । ८ ख. वीज । ९ ख. ग. असमांणि । १० ख. ग ऊडि । ११ ख ग. तर । १२ ख ग जाणि । १३ ख. बहे । १४ ख बडे । क वढ़ै । १५ ख. ग तिण । १६ ख. बाहि । १७ ख बहाय । १८ ख. ग नृधोम । १९ क. भिडै । २० ख पडे ।

---

२९१ दूद – राव दूदा जिसके वशज मेडतिया राठौड है । हरौ – वशज । पछट्टत – प्रहार करता है । भोम – भोमसिंह ।

२९२ सत्रां – शत्रुओ । फूल – तलवार । अवझाड – काट कर । धसि – बलात् घुस कर । गोळ – सेनाका मध्य भाग ।

२९३ खासा गज – राजा या बादशाहकी निजी सवारीका हाथी । खीज – कोप करके । वीज – बिजली । अहि – सर्प । मळै गिर – मलयगिरि ।

२९४. सर – तीर । धार – तलवार । वढे – कट कर । चुखचुक्ख – खड-खंड । धारू-जळ – तलवार । 'भड़े – युद्ध करके । भोम – भोमसिंह ।

वरे[1] रँभ बैसि[2] झळूस विमांण[3] ।
चले रँगराग हुतां चमरांण ।
परी[4] भरि देत अम्रत्त[5] पियाल* ।
लियै[6] छक भूम हुवै[7] रँग लाल ॥ २०५

मिळै[8] गळबाहि[9] परी मतवाळ[10] ।
वसै[11] स्रगि[12] सोवन धांम विचाळ ।
रमै खग झाट करै चँड[13] रास ।
सुतां[14] 'सिरदार' स[15] जीवणदास ॥ २९६

जुडै गज बाज[16] धिखै गजगाह ।
'बिजावत' 'रांम' करै खग वाह[17] ।
फबै सुत जोधहदास 'फकीर' ।
मँडै खग झाट खँडे बह[18] मीर ॥ २९७

जुडै भड 'माहव' 'मांन' सुजाव ।
हुवै घण[19] वीजळ[20] घाव निहाव ।

---

१ ख वरे। क वरै। २ ग वैसि। ३ ख विमाण। ४ ख परि। ५ ग अमृत।
*ख. प्रतिमे यह पंक्ति निम्न प्रकार से है—
'परि भरि अम्मृत देत पियाल।'
६ ख. लीयै। ७ ग. हूवै। ८ ख ग मिले। ९ क. गजबाह। १० ख मतिवाळ।
११ ख. वसे। १२ ख ग भ्रृगि। १३ ख. रग। १४ ख ग सुत। १५ ग सु।
१६ ग वाज। १७ ख वाह। १८ ख वहो। ग वोहो। १९ ख पण। २० ख.
वीजल।

---

२९५ वैसि – वैठ कर। झळूस – जलसा। चमराण – चँवर। पियाल – प्याला। छक – नृत्य। भूम – भूमि।

२९६. गळबाहि – कंठालिंगन, बाहुपाश। परी – अप्सरा। मतवाळ – मस्त। स्रगि – स्वर्ग। सोवन धाम – सुवर्ण-प्रासाद। विचाळ – बीच। चँड – रणचंडी। रास – नृत्य।

२९७ धिखै – तेज रूपसे होता है। गजगाह – युद्ध। खग वाह – तलवारका प्रहार।

२९८. जुडै – भिडता है। माहव – माहवसिंह। मांन – मानसिंह। सुजाव – पुत्र। निहाव – प्रहार।

विढै[1] खग 'कन्ह'[2] तणौ 'वनिराज'[3] ।
सुता[4] 'अखमाल'[5] 'हरिंद' सकाज ।। २९८
रुका झट भूक करै चमराळ[6] ।
चलै नह 'चदहरौ' कळिचाळ[7] ।
तणौ भ्रम हिदव'[8]- सिघ[9] तराज ।
सत्रा खग वाहत[10] जोध सकाज ।। २९९
सुतां 'रतनेस' अरिज्जणसाह[11] ।
थटा खळ घावत लोह अथाह ।
सवाईयसिघ 'अभावत' सूर ।
करै खग झाटक जग करूर ।। ३००
सझै खळ[12] 'सावळ'रौ[13] 'अचळेस' ।
मथा खळ ऊडत लेत महेस ।
चत्रूभुज[14] नद 'हठी' कळिचाळ ।
रिपा[15] खग वाहत[16] झाळ बराळ[17] ।। ३०१
दियै[18] खग झाट निसाट दुझाळ ।
हिचै जुध 'नाथ' सुजाव हिंदाळ ।

१ ग वढ़ै। २ ख ग कान्ह। ३ ख ग वनराज। ४ ख. ग सुत। ५ ख अख-माल। ग अषमाल। ६ ख चमरास। ७ क. चळिचाळ। ८ ख ग हींदव। ९ ख. सींघ। १० ख वाहत। ११ ग अरिजण। १२ ख. ग षग। १३ ख ग सामल रौ। १४ ख ग चत्रभुज। १५ ख रिषा। ग रिमा। १६ ग बाहत। १७ ग. वराळ। १८ ख दीयै

२९८ कन्ह – कानसिंह। वनिराज – वनराजसिंह। अखमाल – अक्षयसिंह हरिंद – हरिसिंह।

२९९ रुकां – तलवारो। झट – प्रहार। भूक – ध्वंस। चमराळ – यवन, मुसलमान। चदहरौ – चद्रसिंहका वशज।

३००. रतनेस – रतनसिंह। अरिज्जणसाह – अर्जुनसिंह। थटा – सेनाएँ। घावत – संहार करता है।

३०१ सांवळ – सावलसिंह। अचळेस – अचलसिंह। मथा – मस्तक। नद –पुत्र। हठी – हठीसिंह। झाळबराळ – आग-ज्वाला।

३०२. निसाट – असुर, मुसलमान। दुझाल – योद्धा। हिचै – सहार करता है। नाथ – नाथूसिंह। सुजाव – पुत्र। हिंदाळ – हिंदूसिंह।

जुटै[1] जुध[2] 'नाहर'रौ 'जगसाह' ।
उडावत लोह कहै रवि वाह ।। ३०२

उठै 'कुसळेस' तणौ[3] दईवान ।
गाढांगुर वाहत खाग 'गुमांन' ।
मिळै[4] जुध 'पीथल' सभ्रम 'मांन' ।
तई खग खांन हणै मुसतांन ।। ३०३

अरी खग झाटत घोम अमेळ ।
सुरावत[5] दूठ लडंत 'समेळ' ।
'नरौ' 'विजपाळ' तणौ नरनाह ।
विढै[6] सिलहैत लडै[7] खगवाह ।। ३०४

उठै 'किसनेस' सुतन्न 'अनोप' ।
अड़ै खग *झाट चढ़ै कुळ ओप ।
जठै[8] 'हिमतेस' 'अजब्ब' सुजाव ।
करै[*] खग वाहतणौ[9] अधिकाव ।। ३०५

---

१ ख. जुटे । २ ख जुधि । ३ ग. तणो । ४ ख मिले । ५ ख ग सूरावर ।
६ ख. विढ़ै । ७ ख ग हणै । ८ ग. जुडै ।
* *चिन्हांकित पंक्तिया ख. प्रतिमे नही हैं ।
९ ख. वाहताणो ।

---

३०२ नाहर – नाहरसिंह । जगसाह – जगतसिंह । रवि – सूर्य । वाह – शाबाश ।

३०३. कुसळेस – कुशलसिंह । दईवाण – वीर । गाढ़ागुर – योद्धा, वीर । गुमान – गुमानसिंह । पीयल – पृथ्वीराज अथवा पृथ्वीसिंह । सभ्रम – पुत्र । मांन – मानसिंह । तई – शत्रु, आततायी । मुसतांन – मुस्तानिस, अभ्यस्त ।

३०४. अरी – शत्रु । झाटत – प्रहार करता है । घोम – ( ? ) । अमेळ – शत्रु । सुरावत – सूरसिंहका वंशज । दूठ – जबरदस्त । समेळ – समेलसिंह । नरौ – योद्धाका नाम । विजपाळ – विजयसिंह । वढ़ै – युद्ध करता , काटता है । सिलहैत – कवचधारी । खग वाह – योद्धा, राजपूत ।

३०५. किसनेस – किसनसिंह । अनोप – अनोपसिंह । ओप – कांति, तेज । हिमतेस – हिम्मतसिंह । अजब्ब – अजबसिंह । सुजाव – पुत्र । अधिकाव – अधिकता, अधिक ।

अणीकढ़[1] 'सूर' तणौ[2] 'परियाग' ।
खळा[3] थट ढाहत वाहत[4] खाग ।
समोभ्रम 'आणँद' 'सूर' सग्राम ।
करै खग झाटक दाटक काम ।। ३०६

जटा[5] रुद्र क्रोध खगा जगवत ।
भिड़ै 'किरतेस' तणौ 'भगवत' ।
समोभ्रम 'साहिब' 'कुभ'[6] सतोल ।
डोहै[7] दळ मुग्गळ[8] खाग अडोळ ।। ३०७

धुबै[9] खग[10] झाट डंकां वजि ध्रीह ।
अडै 'अभऊत'[11] तणौ अणबीह ।
धसै जुध 'साहिब' सभ्रम धींग[12] ।
सझै खग झाट बहादरसींघ[13] ।। ३०८

खगा झट 'नाहर' नंद 'खगेस' ।
विभाडत खान[14] थटां 'बगतेस' ।

---

१ ख ग अणीकट । २ ग तणो । ३ ख षालां । ४ ख. बाहत । ५ ख जडा । ग जुडा । ६ ख ग कूभ । ७ ख. डोहे । ८ ख. मूगल । ग मुगळ । ९ ख. धुवि । ग धुवै । १० ख षगि । ११ ख ग. अभवूद । १२ ख ग. धींघ । १३ ग. बहादरसिंघ । १४ क थान ।

---

३०६. अणीकढ़ – चुनिदा ( ? ) । सूर–सूरसिंह । परियाग – प्रयागसिंह । थट – समूह, दल । ढ़ाहत – सहार करता है । वाहत – प्रहार करता है । समोभ्रम – पुत्र । आणँद – आनदसिंह । सूर – सूरसिंह । सग्राम – सग्रामसिंह । झाटक – प्रहार । दाटक – जबरदस्त, महान ।

३०७ रुद्र – महादेव । जगवत – जगाता है, प्रज्वलित करता है । किरतेस – कीरतसिंह । भगवत – भगवतसिंह । साहिब – साहिबसिंह । कुंभ – कुभकरण । सतोल – समान । डोहै – ध्वस करता है । अडोळ – अटल ।

३०८. धुबै – जोशमे आता है, प्रहार करता है । डका – नगाडो । ध्रीह – नगाडेकी ध्वनि । अभऊत – अभयसिंहका पुत्र । तणौ – पुत्र । अणबीह – निडर, वीर । साहिब – साहिबसिंह । सभ्रम – पुत्र । धींग – जबरदस्त ।

३०९ खगा झट – तलवारोके प्रहारो । नाहर – नाहरसिंह । नद – पुत्र । खगेस खडगसिंह । विभाडत – ध्वंस करता है, सहार करता है । खान – मुसलमान, ११ वुनद । बगतेस – वखतसिंह ।

झळाहळ खाग खळां सिर झाडि ।
रचै 'सत्रसाल' 'सदावत' राड़ि ॥ ३०९

मांमौ[1] 'सत्रसाल'तणौ मगरूर ।
सझै[2] 'सकतेस' महाभड़[3] सूर ।
सेखावत[4] वाहत[5] खाग सिघाळ ।
चाढ़ै[6] जळपूर चवद्दह[7] चाळ ॥ ३१०

'अभम्मल'[8] भूप 'उमेद' अभंग ।
जुडै कछवाह 'विजावत'[9] जंग ।
कियौ[10] धर गूजर पाणि प्रकास ।
अखै नवकोट धरा जसवास ॥ ३११

'बाहादरऊत'[11] सक्रोध[12] बहास ।
दियै[13] खग झाटक 'दांणियदास'[14] ।
खगां खुरसाण विभाडत खूर ।
तां[15] 'सबळेस' 'बहादर' सूर ॥ ३१२

---

१ ग मौंमौं । २ ग. सझै । ३ ख. ग. महाजुध । ४ ख सेषाव । वाहत । ६ ग चढ़ै । ७ ख. ग चव्वदह । ८ ख ग. अभैमल । ९ ख विजावत । १० ख कीयौ । ग कीयो । ११ ग. वाहादरउतम । १२ ग क्रोध । १३ ख ग दीयै । ख दाणीयादास । ग दाणीयदास । १४ ख. ग सुत ।

---

३०९ झाडि – प्रहार करके । सत्रसाल – शत्रुशाल । सदावत – शार्दूलसिंहका वंशज । राडि – युद्ध ।

३१० मगरूर – गर्वपूर्ण । सकतेस – शक्तिसिंह । सेखावत – कछवाहा वंशकी एक शाखा । सिघाळ – वीर, योद्धा । जळ – तेज, आव, कांति । चवद्दह – चौदह । चाळ – ( मंजिल ? ) ।

३११ अभम्मल – महाराजा अभयसिंह । उमेद – उम्मेदसिंह । अभंग – वीर । जुडै – भिडता है, युद्ध करता है । विजावत – विजयसिंहका वंशज । धर गूजर – गुजरात देश । पाणि – हाथ । अखै – अक्षय । नवकोट – मारवाड । जसवास – कीर्ति, यश ।

१२ सक्रोध – क्रोधपूर्ण । वहास – जोशमें आकर । झाटक – प्रहार । खुरसांण – मुसलमान । विभाडत – संहार करता है । खूर – समूह, दल । सबळेस – सबलसिंह । बहादर – बहादुरसिंह ।

सिल्है खग वाढ़त[1] खान सरीर ।
समोभ्रम 'सूर' 'वखत्त'[2] सधीर ।
उभेळत साबळ जंग अथाह ।
'रासाउत'[3] ख़ान भिडै रिमराह ।। ३१३
धमोड़त[4] सेल गजा परि धाव ।
जुडै 'इद्रसिघ'[5] 'हरिंद' सुजाव ।
रमै 'मौहकावत' ओभड रूक ।
भिड़ै 'भगवत' पड़ै खळ[6] भूक ।। ३१४
दुसै खग झाट पड़ै दुरतेस ।
समोभ्रम 'रूप' लडै[7] 'सुरतेस' ।
'अनौ' 'जगरांम' सुजाव अभग ।
जरू खग झाट पडै खळ जग ।। ३१५
तई पर 'सावत' क्रोध[8] अताळ ।
करै 'बखतेस' झटा किरमाळ ।
जुडै सुत 'भोज' खगा जमराण ।
घणा जरदैत पड़ै घमसाण ।। ३१६

---

१ ख वाढत । २ ख ग. बप्पत । ३ ख. रासावत । ग. रसावत । ४ क. धमौडत ।
५ ख इंद्रसींघ । ६ ख षग । ७ ख. पडै । ८ ख. ग कोप ।

---

३१३ सिल्है – कवच । वाढत – काटता है । सूर – सूरसिंह । वखत्त – वखतसिंह । रासाउत – रायसिंहका वशज । रिमराह – शत्रुओको सीधा करने वाला रिपु राहु ।

३१४. धमोडत – प्रहार करता है । हरिंद – हरिसिंह । सुजाव – पुत्र । मौहकावत – मोहकमसिंहका वशज । ओभड़ – भयकर । रूक – तलवार । भगवत – भगवतसिंह । भूक – ध्वस ।

३१५ दुरतेस – ( दुग्र ? ) । रूप – रूपसिंह । सुरतेस – सूरतसिंह । अनौ – अनाडसिंह । जरू – दृढ, जबरदस्त ।

३१६. सावत – सामतसिंह । अताळ – तेज । बखतेस – बखतसिंह । झटा – प्रहारो । किरमाळ – तलवार । भोज – भोजराजसिंह । जमराण – यमराज । जरदैत – योद्धा । पडै – वीर-गतिको प्राप्त होते हैं । घमसांण – युद्ध ।

तठै सुत 'भाउ'[1] लडत 'तिलोक' ।
झटां खग दैत कहै रवि झोक ।
महाबळ[2] 'ऊद' सुजाव 'मदन्न'[3] ।
विढै[4] खग झाट सिदूर वदन्न[5] ।। ३१७

'जगावत' कीरतसिंघ[6] व्रजागि ।
लड़ै खग चोट[7] खळां धख लागि ।
हठी 'कळियाण' तणौ[8] करि हाक ।
पछट्टत[9] रूक झटा पिसणाक ।। ३१८

तठै 'मोहकावत'[10] 'साम' सतेज ।
मँडै[11] खग झाट उपाट मजेज ।
गाढागुर 'देव'[12] तणौ[13] गिरमेर ।
सत्रा सिर झाट दिये[14] समसेर ।। ३१९

धमोडत[15] सेल सिलै[16] बँध धींग ।
समोभ्रम[17] 'ईसर' दौलतसीघ[18] ।

---

१ ख. भाऊ। २ ख महावल। ३ ख. मद्दन। ग सदन। ४ ख विढै। ५ ख वद्दन। ग वदन। ६ ख वीरतसिंघ। ग कीरतिसिंघ। ७ ग चौट। ८ ग. तणो। ९ ख ग पछटत। १० क. ख. मोहोकावत। ११ ग मडे। १२ ख ग देद। १३ ग तणो। १४ ख दीयै। १५ ख ग धमोडत। १६ ख सिल्है। १७ ग. समौभ्रम। १८ ग दोलतसिंघ।

---

३१७ भाउ – भाउसिंह। तिलोक – तिलोकसिंह। रवि – सूर्य। झोक – शाबाश, धन्य-धन्य। ऊद – उदयसिंह। सुजाव – पुत्र। मदन्न – मदनसिंह। विढै – कटता है। सिदूर वदन्न – लाल मुख।

३१८ जगावत – जगरामसिंहका वशज। व्रजागि – वज्राग्नि, वीर। धख – जोश, जलन। हठी – हठीसिंह। कलियाण – कल्याणसिंह। हाक – जोशकी आवाज। पछट्टत – प्रहार करता है। पिसणाक – शत्रु।

३१९ मोहकावत – मोहकमसिंहका वशज। साम – शामसिंह। मँडै झाट – युद्धमे तलवारोंके प्रहार करता है। उपाट – ( उछालता है, उखाडता है ? )। मजेज – शीघ्र ( ? )। देव – देवीसिंह। गिरमेर – सुमेरु पर्वत।

३२० धमोडत – प्रहार करता है, मारता है। सिलैबँध – कवचधारी योद्धा। धींग – जबरदस्त। ईसर – ईश्वरीसिंह।

समौ[1] 'वखतेस'[2] न ह्वै अनि[3] सौत[4] ।
नगै खग खांन हणै करणोत[5] ।। ३२०

बिढ़ै[6] खग झाट करै असि बेव ।
दिपै[7] 'कुसळेस' समोभ्रम 'देव' ।
'गौदावत' रौद खगां गजगाह ।
'सिवावत' 'सूर' वहादर[8] साह ।। ३२१

जुड़ै[9] छक छोह[10] कँठीरव जेम ।
पछट्टत[11] खाग 'सदावत' 'पेम' ।
तछै[12] घड मेछ खगां तह ताज ।
रचै जुध 'दीप' तणौ 'वछराज' ।। ३२२

लोहां झट बाढत[13] रौद लगस्स ।
'वहादर'[14] 'पीथलऊत' बँगस्स ।
'राघावत'[15] आणंदसिंघ[16] दुबाह ।
विभाड़त[17] मुग्गळ[18] बीजळ बाह ।। ३२३

---

१ ग. समो । २ ग वषतेस । ३ ख ग अन्य । ४ ख ग-सोत । ५ क करणौत । ६ ग विढ़ै । ७ ग. दिये । ८ ख वाहादर । ९ जुटै । १० ख ग छौह । ११ ख. ग. पछटत । १२ क तचै । १३ ख वाढ़त । १४ ख बाहादर । ग वहादर । १५ ख. ग. द्वारावत । १६ ख आणदसींघ । १७ ख बिभाडत । १८ ख. मूगल । ग मुगल ।

---

३०२ समौ – समान, सम्मुख या सामसिंह । वखतेस – वखतसिंह । करणोत – राठौड करणके वशज ।

३२१ बेव – ( भेद ? ) । दिपै – शोभायमान हो रहा है । कुसळेस – कुशलसिंह । समोभ्रम – पुत्र । देव – देवीसिंह । रौद – मुसलमान । गजगाह – युद्ध, योद्धा । सिवावत – शिवसिंहका वशज । वहादरसाह – वहादुरसिंह ।

३२२ कँठीरव – सिंह । पछट्टत – प्रहार करता है । सदावत – शार्दूलसिंह का वशज । पेम – प्रेमसिंह । तछै – काटता है, सँहार करता है । घड – सेना । मेछ – म्लेछ, यवन । दीप – दीपसिंह ।

३२३. लगस्स – लम्वायमान सेनादल । वहादर – वहादुरसिंह । पीथलऊत – पृथ्वीसिंहका वशज । वँगस्स – मुसलमान । बीजळ – तलवार । बाह – प्रहार ।

अड़ै 'रतनेस' 'मौहौकम'ऊत ।
धुबै[1] खग भाळ फबै[2] अबधूत[3] ।
समोभ्रम वीठळदास सधीर ।
विढै[4] 'वखतेस'[5] खगा नर वीर[6] ।। ३२४

'कन्हावत' 'पेम' रमै खग क्रोध ।
'जसावत' 'नाथ' करै रिण[7]-जोध[8] ।
जोरावर 'रामचद्रेस' सुजाव ।
तठै खग वाहत[9] पावक ताव ।। ३२५

'सिभू' 'कुसळावत' वीजळ[10] सूर ।
मिरबर[11] घाय हणै मगरूर ।
चखा धिख चोळ 'जोगावत' 'चद' ।
वाहै[12] खग ढाहत[13] थाट 'विलद'[14] ।। ३२६

तई खग भाट जुदा सिर तन्न ।
करै 'जगतावत' देवकरन्न[15] ।

---

१ ख धुवे । ग धुवै । २ ख कवै । ३ ख. ग. अवधूत । ४ ख विढ़ै । ५ ख ग बपतेस । ६ ख वीर । ७ ख ग. रण । ८ ख धोम । ९ ख व्वाहत । १० ख वीजल । ११ ख मीरबर । ग. मीरावर । १२ ख वाहे । ग बाहै । १३ ख. व्वाढत । ग वाढ़त । १४ ख बिलद । १५ ख करन्न ।

---

३२४. रतनेस – रतनसिंह । धुबै – प्रज्वलित होता है । फबै – शोभा दे रहा है । अब-धूत – मस्त ।

३२५ कन्हावत – कानसिंह का पुत्र । पेम – प्रेमसिंह । जसावत – यशवतसिंहका वशज । नाथ – नाथूसिंह । जोरावर – जोरावरसिंह । रामचद्रेस – रामचद्रसिंह । पावक – अग्नि । ताव – जोश ।

३२६ सिभू – शभूसिंह । कुसळावत – कुशलसिहका वंशज । वीजळ – तलवार । मिरवर – वडे २ यवन योद्धा । घाय – प्रहार । मगरूर – गर्वपूर्ण । चखां – नेत्रो । धिख – प्रज्वलित हो कर । जोगावत – जोगसिहका वशज । चद – ( ? ) । थाट – सेना । विलद – सर वुलद ।

३२७. तन्न – शरीर ।

महोबतसिंघ[1] तणौ मछरसळ ।
सझै झट वीजळ[2] 'स्याम'[3] सिघाळ[4] ॥ ३२७
जठै[5] 'गजसाह' 'करन्न'[6] सुजाव ।
विभाडत[7] मेछ खगा वनराव[8] ।
जुडं खग झाट 'अनावत' 'जैत' ।
बहादर[9] रौद[10] हणै बिरदैत ॥ ३२८
'पतावत' हिंदुवसिंघ[11] प्रचंड ।
खहै खग झाट थटां खट खड ।
सुतं 'भगवतज' 'जालिमसाह' ।
सझै खग झाट उडंत सनाह[12] ॥ ३२९
'हरी' सुत 'केहर' जूटत हेक ।
अरी थट खाग वहत अनेक ।
सझै जुध एह पटायत[13] सीह ।
'उमेदक' जोध अगै अणबीह[14] ॥ ३३०
त्रवागळ[15] ध्रीह त्रहत्रह तूर ।
'कलावत' जग करत करूर ।

---

१ ख महौबतसींघ । २ ख बीजल । ३ ख साम । ४ ख सिंघाल । ५ ग जुटै । ६ ख करंन्न । ग. करन । ७ ख बिभाडत । ८ ख. बनराव । ९ ख बाहादर । ग वहादर । १० ख. ग रौद । ११ ख. हींदुवसींघ । १२ ख सन्नाह । १३ ख ग पटाइत । १४ ख. अणवीह । १५ ख. त्रंवागल । ग त्रावागळ ।

---

३२७ मछराळ – वीर, तेजस्वी । स्याम – शामसिंह । सिंघाळ – वीर ।

३२८ गजसाह – गजसिंह । करन्न – करणसिंह । वनराव – सिंह, वीर । अनावत – अनाड़सिंहका वंशज । जैत – जैतसिंह । रौद – मुसलमान । बिरदैत – यशस्वी, वीर ।

३२९ पतावत – राठौड़ वंशकी पातावत शाखा या इस शाखाका व्यक्ति । भगवतज – भगवतसिंह । जालिमसाह – जालमसिंह । सझै – प्रहार करता है ।

३३० हरी – हरिसिंह । केहर – केसरीसिंह । पटायत – वह जिसके पास बड़ी जागीर हो । सीह – (?) । उमेदक – उम्मेदसिंह । जोध – योद्धा (पुत्र ?) । अणबीह – निडर ।

३३१. त्रवागळ – नगाड़ा । ध्रीह – नगाड़ेकी ध्वनि । त्रहत्रह – नगाड़े या तूर नामक वाद्यकी ध्वनि । तूर – वाद्यविशेष । कलावत – कल्याणसिंहका वंशज ।

वहै[1] असवार अनेक व्रहास ।
दियै[2] खग झाटक 'गोयददास' ॥ ३३१

'कलावत' लोह करै कळिचाळ[3] ।
'बद्री' करिमाळ हणत बँगाळ ।
'जोरौ'[4] हरनाथ तणौ जमरांण ।
खहै खग झाट ढहै[5] खुरसाण ॥ ३३२

'जोरावर' 'ऊदल'[6] सभ्रम जोध ।
वहै[7] किरमाळ कराळ विरोध ।
खगां वजि[8] धूखळ[9] ढाहत खान ।
दमगळ सामंत सभ्रम 'दान' ॥ ३३३

रिमा घट चोळ करै खग रूप ।
रचै जुध 'केहर'रौ[10] 'जगरूप' ।
पछट्टत[11] मुग्गळ[12] सेल प्रहार ।
सझै जुध 'सेर' तणौ सिरदार ॥ ३३४

समोभ्रम[13] 'वीठळ'[14] 'केहर'[15] सूर ।
बँगाळक खाग उडै घण बूर ।

---

१ ख वढै । ग वढै । २ ख दीयै । ३ ख ग कलिचाल । ४ ग जोरो । ५ ख डहै । ग डोहै । ६ ग उदल । ७ ख वहै । ८ ख. ग. वलि । ९ ख. ग धोषल । १० ग केहरि रौ । ११ ख ग पछटत । १२ ख. मूगल । ग मुगल । १३ क. ग समौभ्रम । १४ ख वीठल । १५ ख. केहरि ।

---

३३१. व्रहास – घोडा ।

३३२. कळिचाळ – योद्धा, वीर । बद्री – बद्रीसिंह । करिमाळ – तलवार । बँगाळ – मुसलमान । जोरौ – जोरावरसिंह । खहै – नाश करता है, युद्ध करता है । ढहै – वीरगति प्राप्त होते हैं । खुरसाण – यवन ।

३३३ जोरावर – जोरावरसिंह । ऊदल – उदयसिंह । सभ्रम – पुत्र । कराळ – भयकर । धूखळ – युद्ध, ( तीक्ष्ण ? ) । ढाहत – काटता है, मारता है । खांन – मुसलमान । दमगळ – युद्ध । सांमत – सामतसिंह । दांन – दानसिंह ।

३३४. रिमां – शत्रुओं । घट – शरीर । चोळ – लाल । केहर – केसरीसिंह । जगरूप – जगरूपसिंह । सेर – शेरसिंह । सिरदार – सरदारसिंह ।

३३५ समोभ्रम – पुत्र । वीठळ – वीठलदास । बँगाळक – मुसलमान । बूर – ध्वस ।

धमोडत[1] सेल उभेल दुधार ।
समोभ्रम 'रूप' भिड़ै 'सरदार' ।। ३३५

'जोरौ'[2] 'अणदावत' 'जैत' 'जुहार' ।
सत्रा[3] घट[4] सीस बजावत सार ।
'हठी' सुत 'जीवण' पौरस[5] हूस[6] ।
रमै[7] खग भाट डँडेहड रूंस[8] ।। ३३६

जुड़ै 'रायसिघ' चढै घण जोस[9] ।
रमै भट तेग 'अनावत' रोस ।
समोभ्रम 'राजड़' रूप समाथ ।
हईदळ वाढ़त वीजळ हाथ ।। ३३७

विरांण[10] सरूप किया[11] जिणवार ।
समोभ्रम 'जोध' लड़ै 'सिरदार' ।
गिळै[12] सिर भूक हुवौ[13] अवगाढ[14] ।
वही[15] खग भोक खत्रीवट वाढ[16] ।। ३३८

भिदे हँस ऊप्रम मंडळ भाण ।
महाभड जोति मिळे[17] रहमांण ।

---

१ ख. ग धमौडत । २ ग जोरो । ३ ग. सत्र । ४ ख. धड । ग. घड । ५ ख पोरस । ६ ख. ग होंस । ७ ग रमे । ८ ख ग रोस । ९ ख रोस । १० ख. ग वीरांण । ११ ख कीया । ग कीयै । १२ ख ग गोलै । १३ ख ग. हुवो । १४ ख अणगाढ । १५ ख वाही । १६ ख. वाढ़ । १७ ग मिलै ।

---

३३५ धमोडत – मारता है । दुधार – दो धार वाला भाला । रूप – रूपसिंह ।

३३६. जोरौ – जोरावरसिंह । अणदावत – आनदसिंहका वशज । जैत – जैतसिंह । जुहार – जुहारसिंह । बजावत – प्रहार करता है । सार – तलवार । हठी – हठीसिंह । जीवण – जीवणसिंह । हूस – उत्साह, अभिलाषा । रूस – रोमाञ्चकारी प्रकार (?) ।

३३७ अनावत – अनाडसिंह । राजड – राजसिंह । रूप – रूपसिंह । समाथ – समर्थ । हईदळ – अश्व-दल, घुड-सेना ।

३३८ विराण – भयकर, भयावह । समोभ्रम – पुत्र । जोध – जोधसिंह । सिरदार – सरदारसिंह । भूक – ध्वस, नाश, चूर-चूर । अवगाढ – वीर, छलनी, लथपथ, शरा-बोर (?) । भोक – धन्य धन्य । खत्रीवट – क्षत्रियत्व ।

३३९. हँस – प्राण । ऊप्रम मडळ – विष्णु-मडल । महाभड – महाभट, महायोद्धा । रह-माण – ईश्वर ।

समोभ्रम 'जोध' 'गुमान' सधीर ।
विढै[1] तरवार खळां विमरीर ॥ ३३९

'सदावत' 'सांमत' स्यांम सनाह ।
सभै[2] खग वाह[3] विराह[4] सराह ।
धमोडत[5] सेल सिल्है[6] वँध धींग ।
समोभ्रम 'स्यांम'[7] 'महोकमसीघ'[8] ॥ ३४०

चलै मदमत्त[9] पटाभ्रर चाल ।
लडै खग 'तेज' समोभ्रम[10] 'लाल' ।
इता जुध मेडतिया[11] उमराव ।
रमै रिण खेल वडा[12] रिणराव ॥ ३४१

धुवै[13] रणधोम अणी घण धार ।
उडै[14] रत छौळ[15] अपार अपार ।
जोधा भड जग करै जिणवार ।
सिरै सुत भीम 'पतौ' सिरदार ॥ ३४२

---

१ ख विढे। ग वढ़ै । २ ग सभ्रे। ३ ख. बाह। ४ ख. ग. विराह। घ. विरोह। ५ ख ग धमोडत। ६ ग. सिलै। ७ ख. ग. साम। ८ ख. मोहोकमसिघ। ग. महोकर्मसिघ। ९ ख समसत। १० ख समोभ्रम। ११ ख. ग. मेडतीया। १२ ख. वडा। १३ ख धुवे। ग धुवे। १४ ख वुडै। ग. वुडे। १५ ग. छोल्न।

---

३३९ गुमान — गुमानसिंह। विमरीर — जवरदस्त।

३४० सदावत — शार्दूलसिंहका वंशज। सामत — सामतसिंह। स्याम — स्वामी। सनाह — रक्षा। सभै सराह — तलवारका प्रहार करता है तब दोनो राह ( हिंदू और मुसलमान ) उसकी प्रशंसा करते हैं। धमोडत — प्रहार करता है। सिल्है वँध — अस्त्र-शस्त्रोंमे सुसज्जित, कवचधारी। धींग — योद्धा, वीर। स्याम — श्यामसिंह।

३४१ मदमत्त — मदोन्मत्त, मस्त। पटाभ्रर — हाथी। तेज — तेजसिंह। लाल — लालसिंह। मेडतिया — मेडताके शासक राठौड राव दूदाके वंशजोंकी एक उपशाखा। रिणराव — योद्धा, वीर।

३४२. धुवै — क्रोधमे प्रज्वलित हो रहे हैं। रणधोम — युद्धाग्नि। अणी — अनीक, सेना। रत — रक्त, खून। छौळ — प्रवाह, धारा। सिरै — श्रेष्ठ। भीम — भीमसिंह। पतौ — प्रतापसिंह।

भिड़ै मुख मूछ[1] अणी भुवहार[2] ।
धरे[3] हथ रौळवियौ[4] चवधार ।
वणै[5] मुख चोळ छिबै[6] व्रहमंड ।
'पतै' अस[7] हाकलियौ[8] परचड ।। ३४३

युद्धमें बरातकी तुलना

लगै[9] सर स्रोण जगै[10] लहराज ।
सजे[11] अँग जांण कसूबल साज ।
जमातिय[12] जोध जमातिस[13] जांन ।
वजै सुर सिंधव[14] राग विधान[15] ।। ३४४
लाडी जिम रौद घडा वप[16] लेख[17] ।
दुसै अस गाजि[18] सगा[19] जिम[20] देख[21] ।
अयौ[22] जिम[23] वीच[24] तुरी असवार ।
आवै जिम तोरण वींद[25] उदार ।। ३४५

फेर दूजौ रूपक

झाळाहळ[26] साबळ वाहत झूल ।
सदासिव वाहत[27] जाणि त्रसूळ[28] ।

---

१ ख. मुंछ । २ ख ग भवहार । ३ ग धरै । ४ ख. रौळवीयौ । ग वियो । ५ ख. वणे । ग. वणे । ६ ख छिवे । ग छिवै । ७ ख ग अस्ति । ८ ख. ग हाकलीयौ । ९ ख ग लगे । १० ख ग जगे । ११ ख ग सझे । १२ ख ग जमातीय । १३ ग. जमाजिस । १४ सीधुव । ग. सीधव । १५ ख बिधान । १६ ख बप । १७ ख ग लेखि । १८ ख गाज । १९ ख समा । २० ख झिम । २१ ख. ग. देषि । २२ ख आयो । ग आयो । २३ ख रण । ग रिण । २४ ख बीच । २५ ख. वींद । २६ ख ग झळ । २७ ख. बाहत । २८ ख त्रिशूल । ग त्रिसूल ।

---

३४३ भुवहार – भौहो । रौळवियौ – घुमा कर प्रहार किया । चवधार – भाला । चोळ – लाल । छिबै – स्पर्श करता है । व्रहमड – आकाश । पतै – प्रतापसिंह । हाकलियौ – हाका, तेज गतिसे चलाया ।

३४४. स्रोण – शोणित, खून । लहराज – ( ? ) । जाण – मानो । कसूबल – लाल रग । साज – घोडेकी जीनके उपकरण । सुर – स्वर, आवाज । सिंधव – वीर रसका राग ।

३४५ लाडी – दुल्हिन । रौद घडा – यवन सेना । वप – वपु, शरीर । दुसै अस – शत्रु-दलके घुड सवार । सगा – समधी । तुरी – घोडा । वींद – दूल्हा ।

३४६ झालाहल – देदीप्यमान । साबळ – भाला विशेष । वाहत – प्रहार करता है । झूल – समूह ।

जठै उछटैं खळ सेल जड़त ।
पटै[1] चढि जाणि कनह[2] पड़ंत ।। ३४६

महाबळ[3] मुग्गळ[4] ढाहि अमाप ।
पटाभर सेल जडै 'परताप' ।
ओपै[5] रत चाचर घाव उफाण[6] ।
खुलै[7] गिर जाणिक माणिक खाण[8] ।। ३४७

खत्री गुर खापहुता[9] खळकाय ।
धारूजळ[10] काढिय[11] सेल धपाय ।
अडै खग झाट अँगोअँग आप ।
पडै खळ थाट लडै 'परताप' ।। ३४८

*धडच्छत[12] फांक उडै खळ धूठ[13] ।
सिरा चाचरार[14] जड़ी[15] लग सूठ[16] ।

---

१ ग. पढे । २ क कनक । ३ ख. माहावल । ४ ख मूगल । ग. मुगल । ५ ख ग उपै । ६ ख उफाणि । ७ ख ग. पुले । ८ ख षाणि । ग षान । ९ ख. खापहूत । ग खापहूता । १० ख ग धरूजल । ११ ख ग कट्टीय ।

*· *यहासे आगे चिन्हाकित पक्तिया तो ग. प्रतिमे नही मिली हैं किन्तु कुछ दूसरी पक्तिया मिली है जो क. तथा ख. प्रतियोसे मेल नही खाती हैं, वे निम्न है—

'अनी हरनाथ तणी अवनाड, विढै विचत्रा धड पागि विभाड ।
जठै पग वाहि वरै करि जोस, पछाडत मीर वगतर पीस ।
कटै किलमाण हुवै रत कीच, ᵟविटै इक जोध पला दळ वीच ।'

---

ᵟयह पक्ति पृष्ठ १०५ (पृष्ठके पाठान्तरका नोट देखिए)के पाठान्तरके अनुसार निम्न प्रकार है—
'वढे इक वाज तठे रिण वीच ।'

१२ ख घडछत । १३ ख. धूत । १४ ख. क चचरार । १५ ख. जाडी । १६ ख सूत ।

---

३४६ उछटैं – उछलते हैं, कटते हैं । जड़त – प्रहार करता है । पटै – पटा नामक खेल ।

३४७ ढाहि – मार कर, काट कर । अमाप – अपार । पटाझर – हाथी । जडै – प्रहार करता है । रत – रक्त, खून । चाचर – भाल, ललाट, मस्तक । जाणिक – मानो । माणिक – मानिक्य ।

३४८. खत्री गुर – वीर, योद्धा । खापहुता – तलवारके म्यानसे । खळकाय – प्रहार कर के । धारूजळ – तलवार । सेल – भाला । धपाय – तृप्त करके । पड़ै – वीर-गति प्राप्त होते हैं । थाट – सेना ।

३४९. धडच्छत – प्रहार करता है । फाक – यहा 'खाप' शब्द होना चाहिये जिसका अर्थ तलवार भी होता है । धूठ – वीर । चाचरार – भाल, ललाट । जडी – प्रहार किया । लग – तक, पर्यन्त । सूठ – ( ? ) ।

दियै[1] अधसीस अधै[2] मुख[3] दंत[4] ।
भिना[5] चितरांम अधा घट भत[6] ॥ ३४९

दड़ां जिम सीस उडै[7] खग[8] दाव[9] ।
धडा पर बाज करै अग[10] धाव ।
खुरा मझि अत अळूझत खेत[11]* ।
कडै[12] कपि डाण चढै[13] गज केत ॥ ३५०

*बछेक बछेक 'पतै'[14] जिणवार ।
सझै[15] घण मेछ खगा सिरदार ।
'सलेम' 'अली महमंद' सधीर ।
मारे खग झाटक दोय अमीर ॥ ३५१

सुहै[16] इण भाति लड़ै समराथ ।
'पातौ' जिम भारथ मांझल[17] पाथ ।
हिचै इम एक[18] अनेकह होय ।
कहै गुण पार न पावत कोय* ॥ ३५२

---

१ ख. दोसं। २ ख अधं। ३ ख मुषि। ४ ख. दात। ५ ख भीना। ६ ख. भांत। ७ ख. अधं। ८ ख मुषि। ९ ख. वांत। १० ख मृग। ११ ख घाव। १२ ख करै। १३ ख. कडे।

* *चिन्हाकित पक्तिया ग प्रतिमे नही हैं।

१४ ख. पमं। १५ ख. सझं। १६ ख सोहै। १७ ख माझलि। १८ ख हेक।

---

३५० दडा – गेदो। दाव – प्रहार। धडां – वीर-गति प्राप्त वीरोके शरीर। वाज – घोडा। धाव – दौड, चाल। अत – अतडिएँ। खेत – युद्ध-स्थलमे। कड़ै – पास, निकट। कपि – वानर। डाण – कूदान, छलांग। केत – केतु, ध्वजा।

३५१. पतै – प्रतापसिंह। सझै – संहार कर दिये। मेछ – म्लेच्छ, यवन। सिरदार – सरदारसिंह। सधीर – धैर्यवान, वीर। झाटक – प्रहार।

३५२. सुहै – शोभा देता है। समराथ – समर्थ, शक्तिशाली। पतौ – प्रतापसिंह। भारथ – भारत, युद्ध। माझल – मध्यमे। पाथ – पार्थ, अर्जुन। हिचै – युद्ध करता है, युद्धमे काटता है। गुण – कीर्ति, यश।

मँडे खग झाट दियै कवि[1] मौज ।
'फतौ' खळ सीस उडावत फौज ।
सझै[2] वर[3] हूर वजै रथ सौक[4] ।
'झुझावत'[5] झूझ करै रवि झोक[6] ॥ ३५३

ध्रमध्रम हैखुर सेस धुजाव ।
जुटै खग 'नाहर' 'क्रन्न'[7] सुजाव ।
जुडै खग 'लाल' समोभ्रम 'जैत' ।
'उदावत'[8] 'जैत'[9] लडै़ अखडैत ॥ ३५४

'जोधावत' 'साहिबसिंघ'[10] सुजोस ।
रिमा तरवार[11] हणै घण रोस ।
उडावत[12] लोह धरे[13] खत्र आघ ।
विहारियदास[14] समोभ्रम 'वाघ' ॥ ३५५

वहै[15] खग रौद हणै जुध वेर ।
'फतौ' सिवदांन सुतन्न[16] अफेर ।

---

१ ख ग सिव । २ ख. सझे । ३ ख वर । ४ ख. ग. सोक । ५ ख. ग झूझावत । ६ क झोक । ७ ख. क्रन । ग. क्रन । ८ ख. ऊदावत । ९ ख ग देद । १० ख. ग. साहिवसींघ । ११ ख. तरवारि । १२ ग उदावत । १३ ख धरै । १४ ख. वोहारीयदास । ग विहारीयदास । १५ ख वाहे । ग. वाहै । १६ ख ग सुतन ।

---

३५३. मँडै' झाट – तलवारोसे युद्ध करता है । फतौ – फतहसिंह । उडावत – काटता है । वर – पति । हूर – परी, अप्सरा । सौक – तेज गतिसे आकाशमे वायुयानादिके चलनेकी ध्वनि विशेष । झुझावत – झूझारसिंहका वशज । झूझ – युद्ध । रवि – सूर्य । झोक – शावाश ।

३५४ ध्रमध्रम – घोडे आदिके वेगसे चलनेसे भूमिके कपनकी ध्वनि । हैखुर – घोडेके टाप । सेस – शेषनाग । धुजाव – कपन । जुटै – भिडता है । नाहर– नाहरसिंह । क्रन्न – करणसिंह । सुजाव – पुत्र । जुडै़ – भिडता है, टक्कर लेता है । लाल – लालसिंह । समोभ्रम – पुत्र । जैत – जैतसिंह । उदावत – राठौडोकी उदावत शाखाका व्यक्ति । अखडैत – योद्धा ।

३५५ जोधावत – जोधाका वशज । रिमां – शत्रुओ । रोस – रोष, कोप । खत्र – क्षत्रियत्व, क्षत्रिय । आघ – मान्य, सम्मान । वाघ – वाघसिंह ।

३५६. रौद – मुसलमान । वेर – समय । फतौ – फतहसिंह । अफेर – न मुडने वाला, वीर ।

विढ़ै[1] रिण[2] वीच[3] जवानिय[4] वेस[5] ।
तठै हरनाथ तणौ[6] 'सगतेस' ।। ३५६

तठै 'हठमाल' 'किसोर' सुतन्न[7]* ।
केवी खग झाटत[8] 'आसकरन्न'® ।
जुटै[9] खग झाट 'हठी' जिणवार ।
'हठी' सिर वाजत[10] खाग हजार ।। ३५७

'जोगावत' धार धसत[11] 'जवान'[12] ।
सझै[13] जिम तापस गग सिनान[14] ।
उडै[15] जरदैत वजै[16] खग एम ।
जई मझि फज्जर[17] गज्जर[18] जेम ।। ३५८

---

१ ख. विढ़ै । ग. वढ़ै । २ ख. रण । ३ ख. ग वीच । ४ ख. ग जवानीय । ५ ख. वेस । ६ ग. तणो । ७ ख. सुतंन्न । ग. सुतन ।

*यहासे आगे ख. तथा ग प्रतियोमे निम्न पक्तिया मिली हैं—

'मिले झड लोह बगा वड मन ।।
वरा छक जूटत घाट वराड ।
अनौ हरनाथ तणौ अवनाड ।।'

नोट – ख प्रतिमे यहासे आगेकी पक्तिया वे है जिनका पाठान्तर पृष्ठ १०२ मे दिया जा चुका है । उन पक्तियोके अतिरिक्त भी इस ख प्रतिमे उनसे आगे कुछ पक्तिया और मिली है जो निम्न हैं किन्तु ये सब ग प्रतिमे नही मिली हैं । ग प्रतिमे जो मिली थी उनका पाठान्तर पृष्ठ १०२ पर दिया जा चुका है, वहा पर ये पंक्तिया ख प्रतिमे नही मिली थी किन्तु यहाँ पर ख. प्रतिमे वे ही पक्तिया मिल गई हैं । इनके अतिरिक्त ख प्रतिमे कुछ और पक्तिया यहाँ पर मिली हैं जो ग प्रतिमे यहा पर नही हैं, वे निम्न हैं—

'रूका झट हीक पाडै पषरैत । जिकै असि आप चढे करि जैत ।।
वपाणत भाण 'स्निषे' गज वोह । 'अनौ' हरनाथ तणौ अगि लोह ।।'

८ ग. झाडत ।

®यहा पर इससे पहले इस पक्तिके ऊपर ख तथा ग. प्रतियोमे निम्न पक्ति मिली है—
'तठै 'विरतो' चद्रभाण सुतन्न ।'

९ ख जुडै । १० ख. बाजत । ११ ग धासत । १२ ख जघान । १३ ख. ग सझे । १४ ख. ग सनांन । १५ ख. उठै । १६ ख वजै । १७ ग. फजर । १८ ग. गझ्झर ।

---

३५६. जवानिय वेस – युवावस्था । सगतेस – शक्तिसिंह ।
३५७ हठमाल – हठीसिंह । किसोर – किशोरसिंह । सुतन्न – पुत्र । केवी – शत्रु । हठी – हठीसिंह ।
३५८. जोगावत – जोगसिंहका वशज पुत्र । धार ' जवांन – जोगसिंहका वशज जवानसिंह जब युद्ध मे प्रवेश करता है । तापस – तपसी । फज्जर – प्रात काल । गज्जर–प्रात काल वजने वाले घटे पर होने वाले प्रहार, या प्रात काल वजने वाला घटा ।

जठै धर[1] सीस पडै उडि[2] जांम ।
तठै असि झोकि लड़ै धड ताम ।
महारत[3] मुड विहंड[4] हसत ।
धरा मझि रुड[5] वितुड[6] धसंत ॥ ३५९

हई घड खाग झटां घड हेक ।
किया[7] धड आप सरीख अनेक ।
किरम्मर[8] तीर वहै[9] घण[10] कूत ।
हसै रिख नारद पौरस हूंत[11] ॥ ३६०

घड़ी दुय[12] एम करै[13] घमसाण ।
वरै[14] रँभ प्राण चढैस[15] विमाण[16] ।
वसै स्रुगि 'धूहड' सीस वरीस ।
सिरै रुडमाळ कियौ[17] हर सीस ॥ ३६१

इखे[18] पित ऊपर[19] लोह अपार ।
करै खग झाट 'गुमान' कुवार[20] ।
धारूजळ मुग्गळ[21] तूटत ध्रुह ।
विढे[22] 'अभमुन्य'[23] ज्युही[24] चक्रव्रूह ॥ ३६२

---

१ ख उडि । ग. उड । २ ख. ग. घर । ३ ख ग. हकारत । ४ ख विहट्ठ । ५ ख. ग रूड । ६ ख ग वितूड । ७ ख कीया । ८ ख ग करिमर । ९ ख. वहे । ग वहै । १० ख. घसा । ११ ख. कौतिकहूत । ग कौतकहूत । १२ ख. ग दोय । १३ ख ग करे । १४ ख. वरे । ग. वरे । १५ ख ग. चढ़ेस । १६ ख. विमाण । १७ ख. कीयौ । १८ ख. ईषे । ग. इषै । १९ ख ग. ऊपरि । २० ख कुवार । २१ ख ग मूगल । २२ ख बिढ़ै । २३ ख. ग अभमुन्नि । २४ ख ग प्रतियोमे यह शब्द नही है ।

---

३५९ जाम – समय, पहर । मुड – मस्तक । रुंड – धड ।

३६० हई घड – घुड-सेना । झटां – प्रहारो । किरम्मर – तलवार । कूत – भाला ।

३६१ घमसाण – युद्ध । रँभ – अप्सरा । स्रुगि – स्वर्गमे । धूहड – राव धूहडके वशज, राठौड । वरीस – प्रदान करने वाला । सिरै – श्रेष्ठ ।

३६२ इखे – देख कर । गुमांन – गुमानसिंह । धारूजळ – तलवार । विढे – वीर गति प्राप्त हुआ । अभमुन्य – अभिमन्यू ।

जोए लुघ[1] ऊपर[2] आजि[3] न जाय[4] ।
घणी कुळ लाज लडै[5] घण घाय ।
जिसी[6] विध[7] बाळक[8] ह्वै म्रगराज[9] ।
गिणै नह बेस[10] हणै गजराज ।। ३६३

झडै खगथाट लोहां झिलमिल्ल[11] ।
तेगा मुह घाट हुवौ[12] तिलतिल्ल[13] ।
सुतौ रिण सेज[14] परी वर सूर ।
हई घण मीर किया[15] वर हूर ।। ३६४

चढे रथ नेह 'हठी' वर[16] चाहि ।
मिळे[17] स्रुगि इंदर[18] मिंदर माहि ।
जठै खळ भूक हुवै हय जम्म ।
'दलावत' वाहत[19] खाग 'पदम्म'[20] ।। ३६५

वहै[21] खग वीज[22] ज्युही[23] खग[24] वूठ ।
'दलौ'[25] 'अमरावत' जूटत दूठ[26] ।
करै खग झाट चडी जयकार ।
समोभ्रम 'रूप' लडै 'सिरदार' ।। ३६६

---

१ ख लुप । ग लघु । २ ख उंम्मर । ग. उमर । ३ ख भागि । ४ ग. जाई । ५ ग लडे । ६ ग. जिसि । ७ ख विधि । ग. वि । ८ ख वालक । ९ ख ग. मृगराज । १० ग. वेस । ११ ख ग. झिलझिल्ल । १२ ग. हुग्रो । १३ ख ग तिलतिल । १४ ख ग. सेझ । १५ ख ग कीया । १६ ख. ग. सुत । १७ ग मिलै । १८ ग रदर । १९ ख वाहत । २० ग. पद्दम्म । २१ ख. बहै । २२ ख बीज । २३ ख. ग जहीं । २४ ख ग घण । २५ ग दलो । २६ ख दुठ ।

---

३६३ म्रगराज – मृगराज, सिंह । वेस – वयस, आयु ।

३६४ लोहां झिलमिल्ल – घावोमे तरवतर हो कर । रिण सेज – रण-शय्या । परी – अप्सरा । मीर – मुसलमान, बडा मुसलमान सरदार । हूर – अप्सरा ।

३६५. हठी – हठीसिंह । भूक – चूर-चूर, ध्वस । दलावत – दलसिंहका वशज । पदम्म – पदमसिंह ।

३६६. वीज – विजली । वूठ – वर्षा । दलौ – दलसिंह । अमरावत – अमरसिंहका वशज । दूठ – जवरदस्त । जयकार – जय-ध्वनि । रूप – रूपसिंह । सिरदार – सरदारसिंह ।

अरी घट साबळ अंत अळूझ ।
झिकै[1] 'सकतावत' दारुण[2] झूझ[3] ।
समोभ्रम 'ऊद' धुबै चँद्र हास ।
दळा खळ डोहत मोहन[4] दास ॥ ३६७

झळाहळ सेळ घमोडत[5] 'भाण' ।
पड़ै मुगळांण जुआंण[6] पिठाण ।
सत्रां करि सेल उझेल सरीर ।
वहै[7] वधिखाग[8] 'जसावत' वीर[9] ॥ ३६८

सत्रां गहि[10] कंध उडावत सीम[11] ।
भमावत जाणि गजा घड़[12] भीम ।
हिचै भड 'माल' वहै[13] खग हाथ ।
निजोडत रोद[14] समोभ्रम 'नाथ' ॥ ३६९

घणू खग झाट करै झळ घांम ।
जोरावरसीघ[15] 'फतावत' जाम ।
सँमोभ्रम 'केहरि' 'माहवसाह' ।
निजोडत रोद[16] खगां नरनाह ॥ ३७०

---

१ ख ग. झीकै । २ ख दारण । ३ ख झूक । ४ ख ग. मोहण । ५ ख. ग घमोडत । ६ ख जुयाण । ग. जुवाण । ७ ख बहै । ८ ख. बधिषाग । ९ ख वीर । १० ख ग ग्रहि । ११ क सीस । १२ ख. घड । १३ ख. बहै । १४ क रौद । १५ ग सिंघ । १६ क. रौद ।

---

३६७ अरी – अरि, शत्रु । घट – शरीर । अत – आर्त । सकतावत – शक्तिसिंहका वंशज । झूझ – युद्ध । ऊद – उदयसिंह । धुबै – प्रहार करता है । चँद्र हास – तलवार । डोहत – मथन करता है, ध्वंस करता है ।

३६८ झळाहळ – चमकदार, देदीप्यमान । घमोडत – प्रहार करता है । भाण – सूरजसिंह । पडै – वीर-गति प्राप्त होते हैं । मुगळाण – मुगल, यवन । जुआंण – जवान, युवा । पिठाण – युद्ध । जसावत – जसवंतसिंहका वंशज ।

३६९ गजा घड – हाथी दल । भीम – पाडु पुत्र भीम । हिचै – युद्ध करता है । माल – मालदेव या रायमलसिंह । निजोडत – काटता है, संहार करता है । रौद – यवन, मुसलमान । समोभ्रम – पुत्र । नाथ – नाथूसिंह ।

३७० फतावत – फतहसिंहका वंशज । केहरि – केसरीसिंह । माहवसाह – माधोसिंह ।

'अनो' हरि तेज वणै[1] दइवांण[2] ।
जुडै खग 'जैत'[3] तणो जमराण ।
पछाडत मुग्गळ[4] चंद्र-प्रहास[5] ।
दिपै 'अणदावत' सूंदरदास ।। ३७१

समोभ्रम 'माहव' 'ग्यान' सधीर ।
वढै[6] खग झाट थटा वड वीर[7] ।
भिड़ै खग झाट 'गुमान' भुजाळ ।
'विहारिय'[8] 'सभ्रम' क्रोध विसाळ ।। ३७२

चका चमराळ करै खग चूर ।
सुत[9] 'सबळेस' 'दुरज्जण'[10] सूर ।
'जसावत' जूटत बाहुअजान ।
दियै[11] खग झाट खळां 'सिवदान' ।। ३७३

'द्वारावत' सूर 'अनोप' दुझाल ।
खगां झट भाण दिखावत ख्याल ।
तठै धुबियौ[12] जुध लोह अताघ ।
वाहै खग 'भांण' समोभ्रम 'वाघ' ।। ३७४

---

१ ख विनै । २ ख. दईधांण । ३ क. झैत । ४ ख मूगल । ५ ग प्रहास्य । ६ ख बिढ़ै । ७ ख वीर । ८ ख. विहारीय । ९ ख सुत । १० ग. दुरजण । ११ ख ग दीयै । १२ ख. धुवीयौ । ग धुवियौ ।

---

३७१ अनो – अनाड़सिंह । हरि – हरिसिंह । दइवांण – वीर (?) । जैत – जैतसिंह । जमराण – भयंकर रूप । पछाडत – मारता है, काटता है । चंद्र-प्रहास – तलवार । दपै – शोभायमान होता है । अणदावत – आनंदसिंहका वंशज ।

३७२ माहव – माधोसिंह । ग्यान – ज्ञानसिंह । थटा – दलों, सेनाओं । गुमांन – गुमानसिंह । भुजाळ – योद्धा, वीर । विहारिय – विहारीसिंह । सभ्रम – पुत्र ।

३७३. चका – चक्र, सेना । चमराळ – मुसलमान । चूर – ध्वंस, नाश । सबळेस – सबलसिंह । दुरज्जण – दुर्जनसिंह । जसावत – जसवंतसिंहका वंशज । जूटत – भिडता है । बाहुअजान – आजानबाहु, लंबी भुजाओं वाला, वीर ।

३७४. द्वारावत – द्वारकादासका वंशज । अनोप – अनोपसिंह । दुझाल – वीर । भांण – सूर्य । ख्याल – कौतुहल । धुबियौ – प्रचंड रूपसे हुआ, तीव्र वेगसे हुआ । अताघ = अथाग – अपार, असीम । भांण – सूरजसिंह । वाघ – बाघसिंह ।

'पीथावत' सूर 'करन्न'[1] प्रचंड ।
खगा झट रोद हणै खरहड ।
'सवाइय'[2] 'अम्मरसिंघ'[3] सुजाव ।
वाहै[4] खग आतस रूप वणाव ।। ३७५

'अखौ' 'अणदावत' वीजळ ऊक ।
भयकर मेछ करै जुध भूक ।
घणा खग घाव तुरां घमसाव ।
जुडै भड 'माहव' *'क्रन्न' सुजाव ।। ३७६

सवाइय वाहत खाग सक्रोध ।
जुटै इम 'माहव'* सभ्रम जोध ।
विढै[5] करिमाळ करै धजवाह ।
समोभ्रम 'केहरि'[6] 'गाजीयसाह' ।। ३७७

प्रचडक रोद[7] हणै रुख पाथ[8] ।
नरां पति 'माहय'रौ[9] हरनाथ ।
सकाज 'फतावत' खाग समाथ ।
हई[10] घण रूक करै हरनाथ[11] ।। ३७८

---

१ ग करन्न । २ ख ग सवाईय । ३ ख. अम्मर । ग अमर । ४ ख वाहै ।
* *चिन्हाकित पद्यांश ख. प्रतिमे नही है ।
५ ख वढै । ६ ख केहर । ७ ग रौद । ८ ख माथ । ९ क माहवरौ । १० क. हुई । ग. हइ । ११ क हरिनाथ ।

---

३७५. पीथावत – पृथ्वीसिंहका वशज । करन्न – करणसिंह । खरहड – सेना, फौज । सवाइय – सवाईसिंह । सुजाव – पुत्र ।

३७६. अखौ – अक्षयसिंह । अणदावत – आनदसिंहका वंशज । वीजळ – तलवार । ऊक – प्रहार, वार । मेछ – म्लेच्छ, यवन । भूक – ध्वस, नाश । तुरां – घोड़ो । घमसाव – समूह । माहव – माधोसिंह । क्रन्न – करणसिंह ।

३७७ सवाइय – सवाईसिंह । सभ्रम – पुत्र । जोध – योद्धा, वीर । करिमाळ – तलवार । धज – भाला । वाह – प्रहार । समोभ्रम – पुत्र । केहरी – केसरीसिंह । गाजीयसाह – गजसिंह ।

३७८. प्रचंडक – प्रचड, महान । रोद – यवन । रुख – प्रकार । पाथ – पार्थ, अर्जुन । माहयरौ – माधोसिंहका । हरनाथ – हरनाथसिंह । फतावत – फतहसिंहका वशज । समाथ – समर्थ, शक्तिशाली । हई – हय, घोडा । रूक – तलवार ।

अड़ीखँभ माधवसीघ[1] अभंग ।
जुडै[2] खग 'ऊद तणौ' भड़ जग ।
'अखा' अचरिज[3] किसौ[4] घर एण ।
सुरागुर[5] पीठ जिके[6] चंद्रसेण[7] ।। ३७६
जोधा भड एह पटायत[8] जांणि ।
वधै[9] जुध सूर 'उमेद' वखांणि ।
सभै खळ थाट खगा झट सूर ।
'पतौ' 'महराण' तणौ व्रद पूर ।। ३८०
तप खग-पाणि पियै[10] जळ तेम ।
जवन्न घडा[11] दधि कुंभज जेम ।
धडच्छत[12] फील खगां सिरधार* ।
रचै मुकतागळ[13] मागणिहार[14] ।। ३८१
अटा दछि ज्याग घटा गज[15] ऐम ।
जटाधर क्रोध छुटा[16] गण जेम ।

---

१ ख. माधुव । २ ख. जुटै । ३ ग. अचिरज । ४ क. किसो । ५ ख सूरांगुर । ६ ख. ग जिकै । ७ ख. सैण । ८ ख. पटाइत । ९ ख. वधे । ग वधे । १० ख. पीयै । ११ ख वडा । १२ ख. घड़फछत । ग घड़छत ।

*ख प्रतिमे यह पक्ति निम्न प्रकार है—

'घडफछत फील सिरा षग धार ।'

१३ ख. मुगतागलि । १४ ख जोगणिहार । १५ ख. गजि । १६ क घुट ।

---

३७९ अड़ीखँभ – जबरदस्त, प्रचड । अभग – वीर । ऊदतणौ – उदयसिंहका । अखा – 'अक्षयसिंह' अथवा 'कहते हैं' । अचरिज – आश्चर्य । घर - वस । एण – इस । सुरागुर – सूरवीरोमे महान । पीठ – पीछे । चंद्रसेन – स्वतन्त्रताका परम उपासी राठोड वीर राव चद्रसेन ।

३८०. पटायत – बडी जागीरका स्वामी । पतौ – प्रतापसिंह । महरांण – समुद्रसिंह । तणौ – तनय, पुत्र ।

३८१ तप – तप, तपस्या या तपस्वी । खग पाणि – खड्गधारी । जवन्न – मुसलमान । दधि = उदधि – समुद्र । कुंभज जेम – अगस्त ऋषि । घडच्छत – काटता है । फील – हाथी । मुकतागळ = मुक्ता+गल – मोतियोका समूह । मांगणिहार – याचक ।

३८२. अटा – ( ? ) । दछि – प्रजापति, दक्ष । ज्याग – यज्ञ । जटाधर – महादेव ।

इसी[1] विध[2] जूटत जोम अमाप ।
'तेजो' मय 'भांण' बियौ 'परताप' ।। ३८२

जोधा राठौड़—समोभ्रम[3] 'सांमळ' 'जग' सुभेस[4] ।
उकेलत[5] सेल खळां खळां 'अमरेस' ।
'जसावत'[6] सीघ[7] 'सवाइय'[8] जंग ।
बगाळक खाग करत बरग[9] ।। ३८३

किलम्मक[10] थाट हणै खग कोप ।
अँगोभ्रम 'बद्रीयदास' 'अनोप' ।
उठै[11] 'कुसळावत' रोस उमग ।
जुरावरसीघ[12] धसै[13] मझि जंग ।। ३८४
घटा मिळि फौज[14] त्रंबागळ घोर ।
'जुरा'[15] सिर बूठत लोह सजोर ।
धसै उससै निहसै[16] खग धार ।
वरावत[17] हूर घणा तिण वार ।। ३८५

---

१ ख इसा। २ ख विधि। ३ ग समोभ्रम। ४ ख. सभेस। ५ ख ग. उभेलत। ६ ख. जसाउत। ७ ग. सिंघ। ८ ख. सवाई। ग सवाईय। ९ ग वरग। १० ख किलमक। ग किलमक। ११ ग. उठे। १२ ख ग. जोरावरसिंघ। १३ ख. ग धसे। १४ ग. फोज। १५ ख ग जोरा। १६ ग निहस्यै। १७ ख बरात।

---

३८२ भाण – सूरजसिंह। बियौ – दूसरा वंशज। परताप – प्रतापसिंह।

३८३ समोभ्रम – पुत्र। सामळ – श्यामसिंह। जग – जगतसिंह। उकेलत – सहार करता है। अमरेस – अमरसिंह। जसावत – जसवतसिंहका वशज। सींघ सवाइय – सवाईसिंह। बगाळक – मुसलमान। बरग – खड, टूक।

३८४ किलम्मक – मुसलमान। थाट – सेना। अँगोभ्रम – पुत्र। अनोप – अनोपसिंह। कुसळावत – कुशलसिंहका वशज।

३८५ त्रबागळ – नगाडा। घोर – ध्वनि। जुरा – जोरावरसिंह। सिर – ऊपर। बूठत सजोर – पूर्ण शक्तिसे जोरावरसिंह पर शस्त्रोंका प्रहार होता है। धसै ··धार – वह जोरावरसिंह बलात् सैन्य-दलमें घुसता है, जोशपूर्वक प्रहार करता है और अनेक वीरोंको धराशायी कर के अप्सरा वरण करता है।

वरै[1] रभ कठ धरै[2] वरमाळ[3] ।
चढै[4] खग धार पड़ै[5] कळिचाळ[6] ।
अपच्छर[7] सूर विमाण[8] उडाय ।
जोधहर[9] ताम वसै[10] स्रग[11] जाय ।। ३८६

उदावत राठौड़—जुडै[12] इम 'जोधहरां' जजरेत[13] ।
अठा अग्र[14] ऊदहरा अखडैत ।
जिया[15] मझि सूर 'हदौ' जमरांण ।
घणै[16] छक पूर धसै घमसाण ।। ३८७

वहै[17] धज साबळ खाप[18] विहार ।
विढै[19] खळ भूक करै जिणवार ।
समोभ्रम 'राजड़' यूं[20] घमसाण[21] ।
जुनौ[22] भड 'रूप' 'अजै-कपि' जांण[23] ।। ३८८

'पतावत' रोळा विसाबळ पाण ।
मरू[24] भड तांम छिबै[25] असमांण ।

---

१ ख. बर । ग वरे । २ ख. ग धरे । ३ ख बरमाल । ४ ख चढ़े । ५ ख. पडे । ६ ख क. कळिचाल । ७ ख. ग. अपछर । ८ ख. विमांण । ९ ख. जोधाहर । १० ख. वहे । ११ ख. श्रुगि । १२ ग जुडे । १३ ख. जजरंत । १४ ख उग्र । १५ ख. जीयां । १६ ग. घणे । १७ ख वहे । १८ ख. षाग । १९ ख. विढ़ै । २० ग युं । २१ ख घमसाणि । २२ ख. ग. जूनो । २३ ख ग जाणि । २४ ख ग. मारू । २५ ख छिवे । ग. छिवै ।

---

३८६ कळिचाळ – वीर, योद्धा, युद्धभूमि । जोधहर – राव जोधाके वशज । तांम – तब । स्रग – स्वर्ग ।

३८७ जजरेत – वीर, योद्धा । अठा अग्र – यहासे अगाडी । ऊदहरा – उदावत शाखाके राठोड । जिया ''घमसांण – जिनके वीचमे वीर हृदयसिंह जोशपूर्ण भयकर यमराजके समान रूप धारण कर के युद्ध करता है ।

३८८ धज – भाला । खाप – तलवार या तलवारका म्यान । विढै – काटता है । भूक – ध्वस । राजड़ – राजसिंह । जुनौ – प्राचीन । रूप – रूपसिंह । अजै-कपि – अजनी-पुत्र हनुमान ।

३८९ पतावत – राठोड वशकी एक शाखा अथवा इस शाखाका व्यक्ति, प्रतापसिहका वशज । रोळा – युद्ध । मरू = मारू – राठौड़ ।

मुछार[1] भुहार[2] चढै[3] वड मन्न[4] ।
वधै[5] बळि बावळि[6] जांणि विसन्न[7] ।। ३८९

जई छक ऊपण[8] तेज[9] सराज ।
धिख[10] च्चख[11] ग्रौरवियौ[12] धजराज ।
उडै उर टक्कर[13] थाट ग्रनेक ।
वहै[14] धज साबळ पाणि[15] विछेक ।। ३९०

इसी विधि[16] सेलह[17] पौस[18] उझेल ।
साथहिज[19] काढत हस रुसेल ।
करी सिर वेधत[20] काढत कूत ।
हुबै रत बोळ[21] भँभार वहूंत ।। ३९१

ग्रवा सह खेलत फाग भुग्राळ[22] ।
पतग कि जाणि खुलें[23] परनाळ ।
धम धम वाहत[24] यू[25] चवधार ।
उथैलत[26] मीर गजा ग्रसवार ।। ३९२

---

१ ख मूछार । २ ख बुहार । ३ ख. ग चढ़े । ४ ख मन्न । ५ ख वधे । ६ ख ग. वावळि । ७ ख. विसन्न । ८ ख उफण । ९ ख. तेज । १० ख धिषे । ११ ख ग. चप । १२ ख ग. ग्रोरवीयो । १३ ख ढक्कर । १४ ख. वहे । १५ ख. ग. पाण । १६ ख. विधि । १७ ख सिल्लह । ग सिलह । १८ ख पोस । ग पौंस । १९ ख. ग. सायेहीज । २० ख. वेधत । २१ ख. छोल । २२ ख. ग. भुवाळ । २३ ख. पुले । २४ ख वाहत । २५ ग. युं । २६ ख. ग. उयेलत ।

---

३८९. मुछार – श्मश्रु, मूछ । वड मन्न – वीर । विसन्न – विष्णु ।

३९०. ऊपण = उफण – उबाल खा कर । धिख च्चख – ग्राखोंमें क्रोधाग्नि प्रज्वलित करता हुग्रा । ग्रौरवियौ – झोंक दिया । धजराज – घोडा । विछेक – विशेष ।

३९१ सेलह पौस – ग्रस्त्र-शस्त्रोंमे सुमज्जित ग्रथवा कवचधारी । हस – प्राण । रुसेल – जोशीला । करी – हाथी । कूत – भाला । बोळ – नाल । भँभार – छेद, सूराख ।

३९२ पतंग – ( ? ) । परनाळ – छतसे पानी गिरनेका नाला । चवधार – भाला । उथैलत – उलट कर गिरता है । मीर – बड़े-बड़े मुसलमान सरदार ।

जगी[1] हवदो[2] भिदि सबळ[3] जांम ।
तुटै[4] जरदैत दुसारण ताम ।
तठै मिळि मेच्छ चहूवळ[5] हूत ।
करा सर[6] खाग अवाहत[7] कूत ।। ३९३

मिळै[8] तदि हेक निमख[9] मझारि ।
चिलँक्कत तूट[10] लगी खग च्यारि ।
असी तह फूट[11] चिलत्तह[12] अग ।
खुबै[13] हिक साबळ दोय खतग ।। ३९४

लुहां[14] रत छूट[15] हुवौ रंग लाल ।
गडै[16] करि खेलत फाग गुलाल ।
खुभै[17] अग लोह छछोह खतंग ।
तिसीहि[18] झ[19] भात[20] सुरग तुरग ।। ३९५

'जसै' धखि क्रोध धरै[21] जमजाळ ।
तठै खिज काठिय[22] खाग उताळ ।
हिलोहळ रोद[23] चहू-वळ होय ।
दळा खग[24] टूक करै दोय दोय ।। ३९६

---

१ ख. ग. जगी। २ क. ख. हवदो। ३ ख सावळ। ४ ख. तूटो। ग तुटो। ५ ख. वल। ६ ख. सिर। ७ ख. अबात। ८ ख ग मिले। ९ ख. निमख। १० ख तूटि। ११ ख फूटि। १२ ख. ग. चिलतह। १३ ख. ग षुभै। १४ ख ग लोहां। १५ ख. छूटि। १६ ख. ग गडे। १७ ख ग षुभे। १८ ख तिसीही। १९ ख ज। २० ख भाति। २१ ख. धरे। २२ ख ग. काढ़ीय। २३ ख रौद। २४ ग षळ।

---

३९३. हवदौ – हाथीकी अम्मारी। जरदैत – कवचधारी वीर। दुसारण – ( ? )। चहूंवळहूत – चारो ओरसे।

३९४. चिलंक्कत – कवच। चिलत – कवच। खतग – तीर, तीर विशेष।

३९५ छछोह – पैना, तीक्ष्ण। सुरग – लाल।

३९६ जसै – जसवंतसिंह। धखि क्रोध – क्रोधाग्निमे प्रज्वलित हो कर। जमजाळ – बंदूक विशेष ( ? )। हिलोहळ – विलोडित, कंपनयुक्त। रोद – यवन। चहू-वळ – चारो ओरसे।

रिमां[1] दळ बीच 'जसौ' इण रूख ।
समूद्रह[2] वीच[3] जिसौ सुरमुक्ख ।
वढ़ै जरदैत गुडैं गजबाज ।
जुडै इम 'ऊदहरौ' 'जसराज' ।। ३९७

*सवाइय[4] 'मान' तणौ सिरताज ।
निभ्फोडत[5] मुगाळ[6] भ्फाट नराज* ।
उठै 'जगरांम'तणौ[7] मभ्फि एक
हुवौ[8] 'सुभराम' समोभ्रम हेक ।। ३९८

तिकौ[9] असवार[10] बिचै तिणवार ।
एकौ[11] भड लख जिसौ उणवार ।
हुवै[12] रवि हेक[13] प्रथी[14] तप होय ।
दवै[15] नव लाख तरा[16] ससि दोय ।। ३९९

महाबळ आवत एक मयद[17] ।
गराजत भाजत लाख गयद ।
प्रळैभ्फळ एक दमंग प्रचड ।
खपावत जाणि घणा वन[18] खड ।। ४००

---

१ ख रमा । २ ख. ग समुद्रह । ३ ख बीचि ।
* *चिन्हाकित पक्तिया ख. प्रतिमे नही हैं ।
४ ग. सवाईय । ५ ग. निजोडत । ६ ग मुगल । ७ ख. जगरांमतणा । ८ ख. हुतो । ग. हुतौ । ९ ख तिकै । ग तिको । १० ख. असवोर । ११ ख ग. एको । १२ ख. हुअै । १३ ख एक । १४ ख प्रिथी । १५ ख दवै । १६ ख. तारा । १७ ख मयव । १८ ख बन ।

---

३९७. जसौ – जसवतसिंह । रूख – प्रकार । सुरमुक्ख – अग्नि । ऊदहरौ – उदयसिंहका वशज, उदावत । जसराज – यशवतसिंह ।

३९८ सवाइय – सवाईसिंह । मान – मानसिंह । निभ्फोडत – काटता है । नराज – तलवार । जगराम – जगरामसिंह उदावत । सुभराम – सुभरामसिंह उदावत ।

४००. मयद – सिंह । गराजत – गर्जना करता है । प्रलैभ्फळ – प्रलयकालकी अग्नि । दमग – अग्नि-कण ।

दुवाघण देव एकौ[1] जगदीस ।
सको जग जेण नमावत सीस ।
इसी विध[2] 'मान' महाभड[3] हेक[4] ।
'उदावत' मुग्गळ[5] थाट अनेक ।। ४०१

विधै[6] धज साबळ चोळ वरन्न[7] ।
तुरस्स[8] जरद्द[9] अँगारक तन्न[10] ।
चठीठत साबळ ढाल चढत ।
कँदोइय घेवर जाण कढत* ।। ४०२

पड़ै[11] घण मूगळ सेल प्रचड ।
खत्री गुर खीज कढी भल खड ।
निलौ[12] कपि डाण भरत निराट[13] ।
भडै खळ 'मान' लड़ै खग भाट ।। ४०३

सिलैबँध[14] टूक पडत समग ।
पड़ै करि पाखर टूक पमग ।
भळाहळ वीजळ[15] मगळ भाळ ।
कमधज वाहत[16] खाग कराळ ।। ४०४

---

१ ख. एको। २ ख. ग. विधि। ३ ख माहाभड़। ४ ग हेक। ५ ख मूगल। ग. मुगल। ६ ख बिधै। ७ ख बरन्न। ग. वरंन। ८ ख ग तुरस। ९ ख ग जरद। १० ख. तन्न।

*यह पक्ति ख. प्रतिमे नही है।

११ ख. ग. पाडे। १२ ख. ग नीलौ। १३ ख निरा। १४ ख ग सिलहैवघ। १५ ख बीजक। ग बीजभ्क। १६ ख. बाहत।

---

४०१ मान – मानसिंह। उदावत – राठोड वशकी उदावत शाखाका वीर।

४०२. चोळ वरन्न – लाल रंग। तुरस्स – ढाल। जरद्द – कवच। अँगारक – लाल।

४०३. निलौ – रग विशेषका घोडा। कपि – वानर। डांण – छलाग। निराट – बहुत। मान – मानसिंह।

४०४. सिलैबँध – अस्त्र-शस्त्रोसे सुसज्जित अथवा कवचधारी। 'समग – पूर्ण अगो सहित। पाखर – घोडेका कवच। पमग – घोडा। भळाहळ – चमकती हुई। वीजळ – तलवार। मगळ – अग्नि।

इसी विध[1] 'मांन' लड़त अबीह ।
जपै[2] कुण वार लहै इक जीह ।
अरी खग झाटत रोस उकद ।
महाबळ[3] 'सांभळ' उठत[4] 'मुकद' ॥ ४०५

तठै 'परताप' तणौ खळ तन्न[5] ।
करै खग झाटक सूर 'करन्न'[6] ।
समोभ्रम 'गोयददास' सकाज ।
देवीचद ढाहत रोद[7] दराज ॥ ४०६

धमधम सेल खळां घट धीग ।
सझै[8] 'कुसळावत' पाहड़सीग[9] ।
धुबै 'अजबेस' खळा झळ धूप ।
रिमा धड माहि समोभ्रम 'रूप' ॥ ४०७

मारू खग बाहत[10] 'बाघ'[11] मजेज ।
तठै[12] 'अजबावत' 'जोध' सतेज ।
भँजै खगि मेछ घडा घट भेद ।
उठै 'अणवत्त'[13] सूर 'उमेद' ॥ ४०८

जई खग वाढत[14] खान 'जवांन' ।
दिपै 'सबळेस' तणौ सिवदांन ।

---

१ विधि । ग. विधि । २ ख जपे । ३ ख. माहाबळ । ४ ख. ग ऊत । ५ ख. तन्न । ६ ख करन्न । ७ ख ग रौद । ८ ख ग सझै । ९ ख. ग पाहड़सींघ । १० ख. वाहत । ११ ख वाघ । १२ ख. जठै । १३ ख. अणदावत । १४ ख बाढ़त ।

---

४०५ अबीह – वीर, निडर । सामळ – श्यामसिंह । मुकद – मुकुन्दसिंह ।
४०६ परताप – प्रतापसिंह । तन्न – शरीर । झाटक – प्रहार । करन्न – करणसिंह । ढाहत – मारता है । दराज – महान ।
४०७ घट – शरीर । धींग – वीर । अजवेस – अजबसिंह । धूप – तलवार । रूप – रूपसिंह ।
४०८ मारू – राठौड़ । बाघ – बाघसिंह । मजेज – शीघ्र । अजबावत – अजबसिंहका वशज । जोध – जोधसिंह । अणवत्त – आनदसिंहका वशज । उमेद – उमेदसिंह ।
४०९. जवान – जवानसिंह । सबळेस – सबलसिंह ।

विहडत रोद[1] दळां विकराळ ।
'कलौ' 'हरिनाथ' तणौ कळिचाळ ॥ ४०९
खगा झट देत गजा सिरि खीज ।
वणै[2] इम जांणि गिरा पर वीज[3] ।
महा जुध मज्झि छिबै[4] असमाण ।
दुवौ हदमाल लडै दइवांण[5] ॥ ४१०
मिळै खग झाट हणै मुगळाण ।
जुरावर[6] रैण तणौ जमराण ।
'हरी' सुत केहरि[7] और[8] हुबास[9] ।
पछाडत मुग्गळ[10] चँद्रप्रहास ॥ ४११
सत्रां घड खाग झटा घड़ सोध ।
जुटै मगरूर 'लखावत' जोध ।
उठै खळ[11] तोडत खाग जरूर ।
'सवाइयसीध'[12] 'विजावत' सूर ॥ ४१२
लडै खग झाट[13] लियै कुळलाज ।
समोभ्रम 'राम' 'अणँद' सकाज ।
वहै[14] खग मूगल[15] होत वतीत[16] ।
जुगावत[17] 'पेम' लडै जुधजीत ॥ ४१३

---

१ ख. ग रोद । २ ख ग वणे । ३ ख. ग. बीज । ४ ख ग. छिवै । ५ ख ग. दईवाण । ६ ख. जोरावर । ग. जोरावर । ७ ख. केहर । ८ ख. ओरि । ग. ओर । ९ ख वास । ग हवास । १० ख. मूंगल । ग मुगल । ११ ख षग । १२ ख. ग. सवाईयसिंघ । १३ ख. झाल । १४ ख बाहै । ग वहै । १५ ग. मूषल । १६ ख. बितीत । १७ ख. ग जोगावत ।

---

४०९ विहडत – काटता है, सहार करता है । कलौ – कल्याणसिंह । कळिचाळ – वीर ।
४१०. दुवौ – दूसरा । हदमाल – हृदयसिंह । दइवाण – वीर ।
४११ जुरावर – जोरावरसिंह । रैण – रणछोडदास । हरी – हरिसिंह । केहरि – केसरीसिंह । हुबास – घोडा । चँद्रप्रहास – तलवार ।
४१२. लखावत – लक्ष्मणसिंहका वशज । विजावत – विजयसिंहका वशज ।
४१३. रांम – रामसिंह । अणँद – आनदसिंह । जुगावत – जोगसिंहका वशज । पेम – प्रेमसिंह ।

उठै खग वाहत रोस[१] उमग ।
'अखौ' 'बछराज'[२] तणौ अणभंग ।
मडै[३] खग झाट करै खळ मौत[४] ।
'धनौ' भड़ धूहड गौरधनोत[५] ।। ४१४

समोभ्रम जीवणदास समाथ ।
हुवै खळ खाग लडै हरनाथ[६] ।
*उदावत[७] सूर पटायत ऐह[८] ।
उमेदक आगळि[९] पाण अछेह ।। ४१५

'बहादर'[१०] 'जीवण'रौ[११] रण बोह[१२] ।
'लखौ'[१३] खळ थाट विभाडत[१४] लोह ।
निजोडत वीजळ[१५] मुग्गळ[१६] नेठ ।
'जुरावर'[१७] 'जोग' तणौ जग जेठ ।। ४१६

बळा भख वीजळ[१८] झोकत बाथ[१९]* ।
निजोड़त मेछ 'दिपावत' 'नाथ' ।
तठै 'सबळावत' सूरतसीघ[२०] ।
सझै खळ दगळ मोहणसीघ ।। ४१७

---

१ ख रौस । २ ग वछराज । ३ ख ग. मडे । ४ ग मोत । ५ ख गोरधनोत । ६ ख हरिनाथ । ७ ख ऊदावत । ८ ख ग. एह । ९ ख आगल । १० ख बाहादर । ग वहादर । ११ ग रो । १२ ग. वोह । १३ ग लषो । १४ ख बिभाडत । १५ ख प्रतिमे यह शब्द नहीं है । १६ ख मूगल । ग मुगल । १७ ख. ग. जोरावर । १८ ख वीजल । १९ ग. वाथ ।
* *ख. प्रतिमे यह पक्तिया पुन मिली हैं ।
२० ख ग सूरतसिघ ।

---

४१४ अखौ – अक्षयसिंह । धनौ – धनराजसिंह । धूहड – राठौड ।

४१५. समाथ – समर्थ, शक्तिशाली । आगळि – अगाडी ।

४१६ बहादर – बहादुरसिंह । जीवणरौ – जीवनसिंहका । लखौ – लक्ष्मणसिंह । विभाडत – काटता है । नेठ – (विलकुल ?) । निजोडत – काटता है । जुरावर – जोरावरसिंह । जोग – जोगसिंह । जगजेठ – वीर ।

४१७ बळा भख – ( ? ) । वीजळ – तलवार । बाथ – ( ? ) । दीपावत – दीपसिंहका वंशज । नाथ – नाथूसिंह । सबळावत – सवलसिंहका वंशज । सझै – सहार करता है, मारता है । दंगळ – युद्ध ।

विभाड़त[1] मूगळ खाग विहार[2] ।
समोभ्रम 'भाउ'[3] लड़ै सिरदार ।
सझै जुध ऐह[4] उदावत[5] 'सीह' ।
जैतावत– अठा अग्र 'जैत'हरा अणबीह[6] ॥ ४१८

मँडै खग झाट थँडै नग मेर ।
'फतौ' 'भव'[7] 'गोरधनोत'[8] अफेर ।
सझै खग झाट हणै खळ साथ ।
नरां पति 'रूप' तणौ रघुनाथ ॥ ४१९

धुबै[9] खळ 'नाहर' बीजळ[10] धार ।
'जुरावरसीघ'[11] तणौ जुधवार ।
रिमा थट वाढत झाट नराज ।
समोभ्रम 'सादल' तेज सकाज ॥ ४२०

तछै खळ 'पेम' खगां झट ताम ।
रचै जुध एम समोभ्रम 'रांम' ।
ग्रहै खग वाह करै गजगाह ।
समोभ्रम 'मोहण' 'नाहर साह' ॥ ४२१

---

१ ख. बिभाडत। २ ख बिहार। ३ ख ग भाऊ। ४ ख. ग एह। ५ ख ऊदावत। ६ ग. अणवीह। ७ ख भउ। ८ ख. गोरधनोत। ग गोरधनोत। ९ ग. धुबै। १० ख वीजळ। ११ ख ग जोरावरसिंघ।

---

४१८. भाउ – भाऊसिंह। उदावत – राठौड वंशकी शाखा या इस शाखाका व्यक्ति। सीह – ( ? )। जैतहरा – जैतावत शाखाके राठौड।

४१९. थँडै – धकेलते हैं। नग – पैर, चरण। मेर – सुमेरु पर्वत। फतौ – फतहसिंह। भव – भावसिंह। गोरधनोत – गोरधनसिंहका वंशज। अफेर – वीर। रूप – रूपसिंह।

४२० धुबै – तेज, क्रोधमे होता है। नाहर – नाहरसिंह। झाट – प्रहार। नराज – तलवार। सादल – शार्दूलसिंह।

४२१. तछै – काटता है। पेम – प्रेमसिंह। समोभ्रम – पुत्र। रांम – रामसिंह। गजगाह –

अणी कढ वाहत खाग अपाल ।
दलावतसीघ[१] 'सँग्राम' दुझाल ।
वहै 'सिरदार' खळां खग वाढ[२] ।
गरीवहदास तणौ अवगाढ ।। ४२२

जुडे[३] खग गैंद जही तळजोड़ ।
'अनावत' सीघउमेद[४] अरोड ।
वहै धज साबळ रोद[५] विभाड़[६] ।
'अजावत' साह वखां अवनाड ।। ४२३

विढै[७] 'सत्रसाळ'[८] खगां वरवीर[९] ।
समोभ्रम 'गोवरधन्न'[१०] सधीर ।
'पतावत' सूर बहादर[११] पाण ।
मँडै[१२] खग झाट खडै मुगळांण ।। ४२४

उडै खग झाटक जग अथाह ।
सुत[१३] 'जयसाह' लड़ै 'इँद्रसाह' ।
मिरा[१४] थट खाग झटा मसतान ।
सझै 'इँद्रभाण' तणौ[१५] सिवदान ।। ४२५

---

१ ख ग दलावतसिंघ। २ ख बाढ। ३ ख जुटै। ४ ग. सिघउमेद। ५ ख रौद। ६ ख विभाड। ७ ख बिढ़ै। ८ ख छत्रसाल। ९ ख वरबीर। १० ग गोवरधन। ११ ग वहादर। १२ ख मडे। १३ ख सुत। १४ ख ग. मीरां। १५ ग तणो।

---

४२२ अपाल – बे-रोक-टोक। सिरदार – सरदारसिंह। अवगाढ – वीर।

४२३ अनावत – अनाडसिंहका वंशज। सींघ उमेद – उम्मेदसिंह। अरोड – वीर। अजावत – अजीतसिंहका वंशज। वखां – ( ? )। अवनाड – वीर।

४२४ सत्र साळ – शत्रुशालसिंह। गोवरधन्न – गोरधनसिंह। पतावत – प्रतापसिंहका वंशज। मँडै ''झाट – तलवारसे प्रहार करता है। खड़ै मुगळाण – मुगल वीर-गतिको प्राप्त होते हैं।

४२५ जयसाह – जयसिंह। इँद्रसाह – इन्द्रसिंह। मिरां – मुसलमान।

पटायत एह लडै ग्रणपार ।
ग्रगै भड भूप 'उमेदह' वार ।
धणी थट ग्रग्र 'फतावत' ढाल ।
महावळ[1] जूटत 'सूरजमाल' ।। ४२६
जुडै खग झाट कळोधर 'जैत' ।
'उरजण'[2] 'सादल'रौ ग्रखड़ैत ।
लियै[3] खळ[4] थाट हणै खग लाह ।
समोभ्रम 'राजड' 'जैमलसाह' ।। ४२७
हरी सुत 'ऊदल' 'भाण' हठाल (ळ) ।
चँद्रासक त्रास हणै चमराळ ।
करै खग झाट जडै 'कममेस'[5] ।
'दुरज्जणसीघ'[6] तणौ 'पदमेस' ।। ४२८
खळां दळ भूक[7] करै भळ खड ।
'पतावत' गोपिय[8] नाथ प्रचड ।
छुटा[9] भड बाघ[10] जही[11] छक छोह ।
करणोत राठौड—लडै 'करनोत'[12] झळहळ लोह ।। ४२९
सिरै 'दुरगावत' सूर सधीर ।
वधै[13] तिणवार[14] 'ग्रभौ'[15] नरवीर[16] ।

---

१ ख. माहाबळ । २ ख उरज्जण । ३ ख. लीयै । ४ ख. षग । ५ ख. कमेस । ६ ग दुरजणसिंघ । ७ ख भू । ८ ख ग गोपीय । ९ ख. छूटा । ग छुटा । १० ग वाघ । ११ ख जिही । १२ ख ग. करनौत । १३ ख. वधै । १४ ख वार । १५ ग. ग्रभो । १६ ख नरबीर ।

---

४२६ पटायत — वडी जागीरका मालिक । उमेदह — उमेदसिंह । थट — सेना । फतावत — फतहसिंहका वशज । ढाल — रक्षक । सूरजमाल — सूरजमल ।

४२७ कळोधर — वशज । जैत — जैतावत शाखाका राठौड । उरजण — ग्रर्जुनसिंह । सादल — शार्दूलसिंह । ग्रखड़ैत — वीर । राजड — राजसिंह । जैमलसाह — जैमलसिंह ।

४२८. भाण — सूरजभाणसिंह । हठाल — वीर । चँद्रासक — तलवार । त्रास — प्रहार । चमराळ — मुसलमान । कममेस — करमसिंहोत राठौड । पदमेस — पदमसिंह ।

४२९. पतावत — प्रतापसिंहका वशज । करनोत — राठौड वशकी एक शाखा ।

४३०. दुरगावत — प्रसिद्ध देश-भक्त राठौड दुर्गादासका पुत्र । ग्रभौ — ग्रभयसिंह ।

निलै त्रिसळैंस चढ़ावत[१] निराट ।
अड़ै[२] सिर अंबर[३] -जोम[४] उपाट ।। ४३०

गई धखि[५] क्रोध झळाहळ[६] जागि ।
उभै चख छूटि झळाहळ आगि ।
विडगक झाळि पवत्रिय[७] वाग ।
भळाहळ सेल ग्रहै[८] मध्य भाग ।। ४३१

मिळै[९] भौह मूछ वदन्न[१०] मजीठ ।
निलौ[११] अस[१२] कीध गरक्क[१३] नत्रीठ[१४] ।
करी उर[१५] टक्कर ऊडत[१६] केक ।
अरी जरदैत तुरीस अनेक ।। ४३२

वहै[१७] सफरी रुख सारत वाग[१८] ।
खुरी पर[१९] गाय छुरी पर खाग ।
इसै अस[२०] 'नीब'हरौ[२१] असवार ।
घड़ां गज पार करै चवधार ।। ४३३

वहै[२२] रत छौळ[२३] ढहै विकराळ[२४] ।
दँतूसळ भूमि खहै दुरदाळ[२५] ।

---

१ ख ग चढ़ाव। २ ख अडे। ३ ख अव्वर। ४ ग जौम। ५ ख. घष। ६ ख हलाहल। ७ ख पपत्रीय। ८ ख. ग्रहे। ९ ख मिले। १० ख. वद्दन्न। ग. वदन। ११ ख ग. नीलो। १२ ख ग असि। १३ ग. गरक। १४ ख नतीठ। १५ ख ग वुरदाल। १६ ख उडत। १७ ख वहै। १८ ख. वाग। १९ ख. पर। २० ख. असि.। २१ ग हरो। २२ ख वहै। २३ ख ग छोल। २४ ख विकराल। २५ ख ग. उरदाल।

---

४३०. निलै = निटिल – ललाट। त्रिसळै – ललाटमे क्रोधादिके कारण होने वाले तीन सलवट।

४३१. विडगक – घोडा। झळाहळ – देदीप्यमान, चमकयुक्त।

४३२ निलौ अस – रग विशेषका घोडा। गरक्क – तरबतर। नत्रीठ – वीर। जरदैत – कवचधारी योद्धा।

४३३. नीब – प्रसिद्ध राठोड वीर दुर्गादासका पितामह। चवधार – भाला।

४३४ रत – रक्त। छौळ – प्रवाह।

जँगी हवदां खळ सेल जडंत ।
प्रवाळक रूप अत्राळ पडत ॥ ४३४

हुदा[1] मझि चड त्रढे हुलसाय ।
धण[2] रत मुग्गळ[3] पीत[4] अघाय ।
उडै ग्रहि अत ग्रिझा असमांण ।
पलौ[5] हिक झालत जोगणि पाण ॥ ४३५

उभी हुय जाणिक गोख* अटारि ।
उडावत गूडिय[6] राजकुमारी[7] ।
इसी विध[8] सेल घपाय अभग ।
रुळै[9] खग काढय[10] वीजळ[11] रग ॥ ४३६

अनेकह[12] खाग हणै 'अभ' एक ।
'अभा' पर वाहत[13] खाग अनेक ।
तुरी पर[14] तूटत लोह अताळ ।
पड़ै रुधराळतणा[15] पड़नाळ ॥ ४३७

---

१ ख. ग. हौदां। २ ख घणा। ३ ख मूगल। ग मुगळ। ४ क. ग पात। ५ ख. वलौ।
*यहां से आगे ख. प्रति मे निम्न पद्यांश और मिलता है।
ल ओण अघाय।
लोधी कढि षाग जिसी झल लाय।
वाहे कुवरा गुरत्री छण वाढ।
गिडा कध रौद पडै अवगाढ़।
लडै सिघ क्रन्न हसै जुध लाह॥'
६ ख ग गूडीय। ७ ख. ग. कुमारि। ८ ख ग विधि। ९ ख. रौले। ग. रोलै। १० ख ग काढीय। ११ ख बीजल। १२ ख. अनेह। १३ ख. बाहत। १४ ख परि। १५ ख. रुधराज।

---

४३४. प्रवाळक – मूगा। अंत्राळ – आतें।
४३५. घड – चडी, रणचडी। अंत – आत। ग्रिझां – गिद्धो। पलौ – वस्त्र-छोर, अचल। जोगणि – रणचंडी। पाण – पाणि, हाथ।
४३६. जाणिक – मानो। गूडिय – पतग; कनकौआ। बीजळ – बिजली। रग – प्रकार।
४३७. अभा – वीर राठौड दुर्गादासका पुत्र अभयसिंह। अताळ – शीघ्र। रुधराळ-तणा – खूनके। पड़नाळ – परनाला।

एकौ[1] असि तूटि पड़ै अवसाण ।
दुजै[2] असि ताम चढै[3] दइवाण[4] ।
लुहां[5] रत पूर उपै रग लाल ।
इसी विध[6] सूर लड़ै 'अभमाल' ।। ४३८

एकौ[7] भड जोड़ फबै भडयैत ।
जुडै 'महक्रन्न'[8] समोभ्रम[9] 'जैत' ।
वरच्छिय[10] वेधत[11] घाट[12] बराळ[13] ।
मदां छकि जांणि पड़ै[14] मतवाळ[15] ।। ४३९

पडै रत वेध[16] दुहू वज्र[17] पाट[18] ।
वैरी[19] हर हस वहै[20] स्रुगि[21] वाट[22] ।
तिता भड दात चढ़ै[23] खग तांण ।
जिता घट फूट[24] पड़ै जमराण ।। ४४०

वहै[25] इम सेल कढै[26] खग वीज[27] ।
खळां खग झाट करै धर खीज ।
उभा धड़ केयक सीस उडंत ।
लुटै[28] ललरै अहि जेम लुडंत ।। ४४१

---

१ ख ग. एको । २ ख ग दूजें । ३ ख. चढे । ४ ख. दईवांण । ५ ख ग लोहा । ६ ख ग विधि । ७ ख ग एको । ८ ख ग. महक्रन । ९ ग समोभ्रम । १० ख वरछीय । ११ ग वेघत । १२ ग घाव । १३ ग वराळ । १४ ख पडे । १५ ग [illegible] । १६ ग वेध । १७ ख. वच्च । १८ ख पात । १९ ख वैरी । २० ग वहै । २१ ग त्रुगि । २२ ख. वाट । २३ ग. चढे । २४ ख. फूटि । २५ ग वाहै । ग वाहै । २६ ग काढ़ै । ग. काढ़ै । २७ ग वीज । २८ ग लूटै ।

४३८. अभमाल – वीर राठौड़ [illegible] पुत्र [illegible] ।

४३९. महक्रन – [illegible] राठौड़ । समोभ्रम – पुत्र । जैत – जैतसिंह । घाट – [illegible] । वराळ – [illegible] ।

४४०. वैरी हर – [illegible] । स्रुगि – स्वर्ग ।

४४१. [illegible]

खळक्कत[1] घाट वहै[2] रतखाळ ।
पियै[3] धक धक्क छक्क[4] पयाळ ।
अडभग[5] भेख किया[6] अजरैत ।
जडा रुद्र क्रोध लडै इम 'जैत' ।। ४४२
जठै[7] 'अणदौ'[8] भड 'तेज' सुतन्न[9] ।
करै युध[10] 'खेम' तणौ 'सिव क्रन्न'[11] ।
वढ़ै[12] 'दुरगावत' भांण वरन्न[13] ।
केवी खग वाढत[14] चेन करन्न[15] ।। ४४३
'अभावत' क्रोध सभै[16] अण थाह ।
सिधां धरि साधक ह्वै सिध साह ।
दळां निजहूत वधै[17] विरदैत[18] ।
खळामझि हाकलियौ[19] पखरैत ।। ४४४
छड़ा झलि[20] वाह करै छडियाळ[21] ।
करै घट पार कड़ा[22] कडियाळ ।

---

१ ख. ग. षळकत । २ ख बहै । ३ ख पीयै । ४ ख कछ । ५ ख अडावग । ग. अडावग । ६ ख. कीया । ७ ख तठै । ८ ग अणदो । ९ ग सुत्तन । १० ख जुध । ११ ख क्रम्न । १२ ख विढै । १३ ख बरम्न । १४ ख बाढ़त । १५ ख करन्न । १६ ग सभै । १७ ख वधे । १८ ख बिरदैत । १९ ख ग. हाकलीयौ । २० ख. ग. झिलि । २१ ख छडीयाल । २२ ग कडौं ।

---

४४२. खळक्कत – कलकल ध्वनि करते हैं । रतखाळ –रक्तका नाला । धक धक्क – भूमिमे एकाएक तेज गतिसे द्रव पदार्थको सोखनेसे होनेवाली क्रिया या ध्वनि । पयाळ – पाताल । अडभंग – मस्त, मदोन्मत्त । भेख – वेश । अजरैत – जबरदस्त, उद्दण्ड ।

४४३ अणदौ – आनदसिंह करणोत राठौड । तेज – तेजसिंह करणोत जो वीर दुर्गादासका पुत्र था । खेम – क्षेमकरण करणोत राठौड । सिवक्रन्न – शिवकरणसिंह । दुरगावत – वीर राठौड दुर्गादासके पुत्र । भाण – सूर्य । वरन्न – वर्ण । चैन करन्न – वीर दुर्गादासका पुत्र चैनकरणसिंह ।

४४४ अभावत – अभयसिंह करणोतका पुत्र व राठौड दुर्गादासका पौत्र । सिधसाह – सिद्धकरणसिंह । विरदैत – विरुदधारी, यशस्वी । हाकलियौ – हाका । पखरैत – कवचधारी घोडा ।

४४५ छड़ां – भालो । छडियाळ – भाला धारण करने वाले । कड़ियाळ – कवच ।

छछोहक स्रोण घडां उछटंत ।
दरू[1] धिख भैच पजांण[2] दगंत ।। ४४५
इसी विध[3] साबळ[4] स्रोण अखाय[5] ।
लिधी[6] कटि[7] खाग जिसै[8] झळळाय ।
वहै[9] कुवरा[10] गुर त्रीछण वाढ[11] ।
गिरा कँध रोड़[12] पड़ै अवगाढ ।। ४४६
लडै 'सिध क्रन्न'[13] इसै जुध लाह ।
उभै[14] थट देखि कहै भड़ वाह ।
समोभ्रम तेजकरन्न सकाज ।
लड़ै 'किसनेस' भुजा कुळ लाज ।। ४४७
वढै[15] खळ[16] वीजळ[17] चोळ वरन्न[18] ।
करै 'जस करन्न'[19] तणी[20] दळ क्रन्न[21] ।
इतामझि[22] एक 'उमेद' उकद ।
मिलै[23] कचरावत लोह 'मुकद' ।। ४४८
नरां सिणगार इता करणोत[24] ।
करमसोतारौ वरणण—अगै[25] भड सूर करम्मसियोत[26] ।

---

१ ख ग. दारू । २ ख ग. पजाणि । ३ ख विधि । ग. विधि । ४ ख ग. सावळ । ५ ख. ग. अघाय । ६ ख लीधी । ७ ख ग कढि । ८ ख. जिसी । ९ ख वाहै । १० ख. ग कुवरा । ११ ख वाढ । १२ ख रोद । १३ ग. क्रन । १४ ख उनै । १५ ख. वढे । १६ ख. पग । १७ ख वीजल । ग. वीझळ । १८ ख वरन्न । ग धरन । १९ ख. क्रन्न । २० ग तणो । २१ ख. क्रन्न । २२ ख इतामझि । २३ ख. मिले । २४ ख ग. करणोत । २५ ख आगै । २६ ख. करम्मसीयौत । ग करम-सीयोत ।

---

४४५ छछोहक – तेज । स्रोण – शोणित, खून ।

४४६ झळळाय – क्रोधमें भर कर । अवगाढ – वीर ।

४४७ सिध क्रन्न – सिधकरणसिंह, यह वीर राठौड़ दुर्गादासका पौत्र था । उभै – उभय ओर । थट – सेना । तेजकरन्न – तेजकरणसिंह करणोत राठौड़, यह दुर्गादासका पुत्र था । किसनेस – किसनसिंह ।

४४८. चोळ वरन्न – लाल रंग । कचरावत – कचरसिंहका पुत्र । मुकद – मुकदसिंह ।

४४९ करम्मसियोत – राठोड़ोंकी एक उपशाखा या इस शाखाका वीर ।

सिरै भड़ 'ऊदल'[1] तेण समाज ।
वधै[2] गरकाब कियौ[3] जुध बाज[4] ।। ४४९

सुभा[5] बळ गात पराक्रम सीम ।
भयाणख[6] भीम[7] जिसौ हर 'भीम' ।
अमावड तेज तुरी असवार ।
पाड़ै दळ[8] चाढि धकै[9] अणपार ।। ४५०

भळाहळ रूप[10] झळाहळ भाय ।
जुडै खळ आय तिहा उडि[11] जाय ।
छछोहक वाहत भाल छडाळ[12] ।
दुसारक डाळ पड़ै रवदाळ[13] ।। ४५१

इलोळत स्रोण विचै खळ एम ।
जळाधर बीच[14] तिमगळ जेम ।
कमधज वाहि[15] खळा धजकूत ।
हियै[16] करि पार[17] लियै[18] असिहूत ।। ४५२

भलौ नट[19] जाणि अगै भुव पाळ ।
बँगाळिय[20] वास[21] चढावत बाळ ।

---

१ ख ऊदत । २ ख बधे । ग. वधे । ३ ख. ग कीयौ । ४ ग वाज । ५ ख ग सोभा । ६ ग भयाणष । ७ ख भीम । ८ ख. दल । ९ ख घर्षे । १० ख तोप । ११ ग उड । १२ क. ग. वडाळ । १३ ख. रवदा । १४ ग बांच । १५ ख बाहि । १६ ख ग हींयै । १७ ख पाल । १८ ख. ग. लीयै । १९ ग. नाट । २० ख ग बगालीय । २१ ख बास ।

---

४४९ ऊवल – खीमसरका ठाकुर उदयसिंह । गरकाब – ( ? ) । बाज – घोडा ।

४५०. भीम – भीमसिंह करमोत राठौड । अमावड – अपार ।

४५१. भळाहळ – देदीप्यमान । झळाहळ – अग्नि । भाय – समान । छडाळ – भाला । रवदाळ – मुसलमान ।

४५२ इलोळत – तरगोमे डुबकी खाते हैं । स्रोण – शोणित, रक्त । जळाधर – समुद्र । तिमगळ – एक प्रकारका बडा मत्स्य जो तिमि नामक मत्स्यको भी निगल जाता है, तिमिंगल ।

४५३ बँगाळिय – बगालका । बाळ – बालक ।

वधै[1] गज चाचर साबळ वाहि[2] ।
मुताहळ[3] गज किया[4] जुध माहि ॥ ४५३
उमा मुकताफळ ले वड[5] वार ।
सझै उणहारतणौ सिणगार[6] ।
झळाहळ[7] रीस चढी अति झाळ ।
महाबळ[8] तांम कटी[9] किरमाळ ॥ ४५४
झडै[10] खग आतस रूप झिलम्म[11] ।
कटै विहरार अपार किलम्म[12] ।
दुवै दुवै फट[13] हुवै[14] जरदौत ।
कासि[15] करि तापस[16] लेत[17] करौत ॥ ४५५
दुसै फिरि जात चहूबळ[18] दोळ ।
चहूवळ[19] वाहत[20] खाग सचोळ[21] ।
समोभ्रम 'नाथ'[22] लडै समराथ ।
हुवै जुध भाण सराहत हाथ ॥ ४५६
वदै[23] दहुवै[24] घड़ देखि वछेक ।
एकौ[25] भड 'ऊदक' ऊद अनेक ।

---

१ ख वधे। २ ख. बाहि। ३ ख ग मोताहळ। ४ ख. कीया। ५ ख वड। ६ ख सिरगार। ७ ख झूलाह। ८ ख माहाबल। ९ ख. ग. कढी। १० ख ग झाडै। ११ ख. झिलम्म। १२ ख. किलम्म। १३ ख फद। १४ ख हुश्रै। १५ ख ग कासी। १६ ख. तापल। १७ ख सेत। १८ चहूवल। ग चहूबळ। १९ ख चहूवल। ग. चहूबळ। २० ख ग. बाहत। २१ ख. ग. सचोल। २२ ख ना। २३ ख वदै। २४ ख ग. दुहुवै। २५ ख. ग. एको।

---

४५३ चाचर – मस्तक। मुताहळ – मुक्ताफल, मोती। गज – ढेर।

४५४. उमा – पार्वती। किरमाळ – तलवार।

४५५. झिलम्म – युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप। दुवै – दो। जरदौत – कवचधारी योद्धा। तापस – तपस्वी। करौत – आरा।

४५६ चहूवळ – चारों ओर। सचाळ – वीर। नाथ – नाथूसिंह। समराथ – समर्थ, वीर।

४५७ वदै – कहते हैं। दहुवै – दोनो। घड – सेना। वछेक – विशेष। एकौ…ऊदक – इधर एक ही योद्धा उदयसिंह है, उधर अनेक ऊद (यवन) हैं।

सझै[1] जुध 'माहव'रौ 'सिवसाह' ।
लखावत[2] 'ऊद' लियै[3] खग लाह ।। ४५७
'रासौ' 'कलियांण' तणौ रिण राव ।
घणा[4] जुध बीच[5] करै खग घाव ।
गिरध्दर[6] दास तणौ अवगाढ ।
वहै[7] जुध 'गोकळ' वीजळ[8] वाढ[9] ।। ४५८
समोभ्रम 'माहव' 'सांमत' सूर ।
'कितौ' 'हठमाल' सुतन्न[10] करूर ।
जुडै 'लखधीर' समोभ्रम 'जैत' ।
'तेजो' भड़[11] 'लाल' तणौ विरदैत[12] ।। ४५९
'रुघौ' भड़ 'ईसर'रौ[13] चढि रोस[14] ।
जुड़ै मगरूर चढै अति जोस ।
तेगा भड पाच लडै इम तीख ।
सहै[15] जुध पाडव पांच सरीख ।। ४६०
खहै 'जसक्रन्न'[16] तणौ 'खडगेस' ।
जिकै खग झाट ढहै[17] जवनेस ।

---

१ ख ग सझै । २ ख ग लाखावत । ३ ख ग लीयै । ४ ख घणे । ५ ख ग वीच । ६ ख ग गिरधर । ७ ख बाहै । ग वाहै । ८ ख बीजल । ९ ख वाढ । १० क सुतन्न । ग सतन्न । ११ ग. भिड । १२ ख. विरदैत । १३ ग इसररौ । १४ ख रौस । १५ ख. ग सहे । १६ ख जसक्रन्न । ग. सजक्रन । १७ ख ढहे ।

---

४५७ माहवरौ – माधवसिंहका । सिवसाह – शिवदानसिंह । लखावत – लक्ष्मणसिंहका वंशज । ऊद – उदयसिंह । लाह – लाभ, आनंद ।

४५८. रासौ – रायसिंह । कलियाणतणौ – कल्याणसिंहका पुत्र । रिण राव – महावीर । गोकळ – गोकुलसिंह । वाढ – काट कर, शस्त्रका पैना भाग ।

४५९. जुडै – भिडता है, युद्ध करता है । समोभ्रम – पुत्र । जैत – जैतसिंह । लाल – लालसिंह । विरदैत – यशस्वी, विरुदधारी ।

४६० रुघौ – रघुनाथसिंह । ईसर – ईश्वरीसिंह । मगरूर – गर्व, गर्वधारी । तीख – विशेष, विशेषता । सरीख – समान ।

४६१. खहै – युद्ध करता है । जसक्रन्न – जसकरण, यशकरण । खडगेस – खड्गसिंह ।

समोभ्रम साहिबखान समाथ ।
'नगौ'[१] खग जूटत गोपिय[२]-नाथ ॥ ४६१

पटायत एह[३] लड़ै खग पाण ।
'उमेदक' जोध अगै दइवाण[४] ।
गिरद्धर[५]-दास तणौ अवगाढ ।
वहै[६] खग 'खीम' झळाहळ[७] वाढ[८] ॥ ४६२

सभै जुध 'केसव'रौ सिवदान ।
उडावत हस[९] खळा असमांन ।
रिमा खग वाहि[१०] उभेळि[११] रगत्त[१२] ।
सभै जुध 'वीठळऊत' 'सकत्त'[१३] ॥ ४६३

'अजौ' रुघनाथ' उभै दइवाण[१४] ।
'जसावत्र' खाग हणै जवनाण ।
चुँडावत जूटत यौ[१५] कळिचाळ ।
'भदावत' जूटत अग्रज[१६] भुआळ ॥ ४६४

---

४ ख ग नगै । २ ख ग गोपीय । ३ ग. येह । ४ ख. ग. दईवांण । ५ ग. गिरधरदास । ६ ख वाहे । ग वाहे । ७ ख. झालाहल । ८ ख वाढ़ । ९ ख. सह । ग हास । १० ख बाहि । ११ ख. उभेल । १२ ख ग. रगत । १३ ख. सकत । १४ ख दईवाण । १५ ख. यू । १६ ख. ग अग्रज ।

---

४६१. समाथ – समर्थ, बलवान । नगौ – नगराजसिंह । जूटत – भिडता है ।

४६२ पटायत – जागीरका स्वामी । पाण – प्राण, बल, शक्ति । उमेदक – उमेदसिंह । जोध – पुत्र । दइवाण – योद्धा, वीर । अवगाढ – वीर, योद्धा । खीम – खीमसिंह ।

४६३ सभै – सहार करता है । केसव – केशवसिंह । हस – प्राण । रगत्त – रक्त, खून । वीठळ ऊत – वीठलदासका पुत्र । सकत्त – शक्तिसिंह ।

४६४. अजौ – अजीतसिंह । रुघनाथ – रघुनाथसिंह । उभै – उभय, दोनो । जसावत – जसवतसिहका पुत्र । जवनाण – मुसलमान, यवन । चुंडावत – राव चूडाके वशज राठौड, राठौडोकी एक शाखा । यौं – इस प्रकार । कळिचाळ – युद्ध, योद्धा । भदावत – राठौडोकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति । अग्रज – वडा भाई ( ? ) । भुआळ – राजा ।

'दलौ' भड 'कान्ह' तणौ दइवान(ण) ।
भिड़ै खग 'लाल'[1] तणौ 'भगवान'[2] ।
'उदौ'[3] 'अणदेस' तणौ[4] अणभग ।
जठै खग वाह[5] करै रिण जग ॥ ४६५

'उमेद'ह जोध तड़ै[6] 'अवनाड़' ।
'जसावत' माडण खाग वजाड़[7] ।
सभै जुध गोरधनोत 'किसन्न'[8] ।
त्यही[9] 'अखमाल' मुहोक[10] सुतन्न ॥ ४६६

जुडे[11] खगझाट 'कलावत' जोध ।
'सँगौ'[12] परताप सुतन्न[13] सक्रोध ।
'समोभ्रम' आणँद झोकि हवास[14] ।
दियै[15] खग झाटक वीठळ[16]-दास ॥ ४६७

मनोहरदास सुतन्न[17] 'अमान' ।
खळा खग बाढत[18] नाहरखांन ।

---

१ ख. लाल । २ ग भगवान । ३ ख. दौ । ग. उदो । ४ ग तणो । ५ ख. बाह । ६ ख लडै । ७ ख बजाड । ८ ग किसन । ९ ख त्यूही । ग. त्योही । १० ख. मोहोक । ग मोहोक । ११ ग. जुडै । १२ ख सागो । ग सागो । १३ ख. सुतन । १४ ख. हुवास । १५ ख. दीयै । १६ ख. बीठलवास । १७ ख. ग. सुतन । १८ ख वाढत ।

---

४६५ दलौ – दलेसिंह । कान्ह – कान्हसिंह । दइवान – योद्धा । लाल – लालसिंह । भगवान – भगवानसिंह । उदौ – उदयसिंह । अणदेस – आनदसिंह । अणभंग – वीर । रिण जग – युद्धस्थल, युद्ध ।

४६६. उमेदह – उम्मेदसिंह । जोध – पुत्र । गोरधनोत – गोरधनसिंहका पुत्र । किसन्न – किसनसिंह । अखमाल – अक्षयसिंह । मुहोक – मोहकमसिंह ।

४६७. कलावत – कल्याणसिंहका पुत्र । जोध – योद्धा, वीर । सँगौ – सग्रामसिंह । परताप – प्रतापसिंह । आणँद – आनदसिंह । झोकि – झोक कर । हवास – घोडा । झाटक – प्रहार ।

४६८ अमान – अमानसिंह । बाढ़त – काटता है, सहार करता है ।

मुड़ै[1] खग झाट हणै किलमांण ।
भिड़ै गजसीघ[2] तणौ इँद्रभाण ॥ ४६८
रणावत[3] वाह[4] करै किरमाळ ।
लड़ै चतुरावत[5] भूल[6] लकाळ[7] ।
धुबै[8] खग झाट वजै[9] त्रब ध्रीह ।
'बद्री' सुत सीह-गुमांन अबीह ॥ ४६९
बलावत लोह 'उदावत' बूर ।
'सिवौ' 'परियाग' तणौ जुध सूर ।
हठी सुत रूप कियौ[10] हणुमान[11] ।
महाबळ[12] बाहत[13] खाग गुमान* ॥ ४७०
धवेचा वाह[14] करै खग[15] धार ।
उठै 'अमरावत' 'भीम' उदार ।
दियै[16] खग झाटह कादमतेस[17] ।
वढै[18] 'सकतेस' तणौ 'विसनेस'[19] ॥ ४७१

---

१ ख. ग. मडै । २ ख. ग. गजसिघ । ३ ख राणावत्त । ग राणावत । ४ ख. बाह । ५ ख चुतरावत । ग. चूतरावत । ६ ख. झाझ । ग झूझ । ७ ख लकार । ८ ख ग. धुवै । ९ ख. बजे । १० ख. कीया । ११ ख हणूमांन । १२ ख माहावल । ग महावळ । १३ ग वाहत ।

*यहासे आगे ख. प्रतिमे निम्न पक्तिया मिली हैं—
'अनौ रुघनाथ तणौ अणभग ।
अडे षग झाट लडो लोह अग ॥'

१४ ख वाह । १५ ख. षग । १६ ख. दीयै । १७ ख. कादषतेस । ग. कादसतेस । १८ ख. विढै । ग. वदै । १९ ख विसनेस ।

---

४६८. किलमाण – यवन ।

४६९. रणावत – राणावत शाखाका राठौड । चतुरावत – चतुरसिंहका वशज । भूल – समूह । लकाळ – वीर, योद्धा । त्रब – नगारा । ध्रीह – आवाज । बद्री – बद्रीदास । गुमान – गुमानसिंह । अबीह – योद्धा ।

४७० बलावत – बालूसिहका पुत्र । लोह – शस्त्र । बूर – समूह । सिवौ – शिवदानसिंह । परियाग – प्रयागसिंह । हठी – हठीसिंह । गुमांन – गुमानसिंह ।

४७१ धवेचा – राठौडोकी एक शाखा । अमरावत – अमरसिंहका पुत्र । भीम – भीमसिंह । सकतेस – शक्तिसिंह । विसनेस – विसनसिंह ।

तई खग धार हणै खळ तांम ।
महाजुध[1] 'माहव'रौ[2] हरिरांम ।
पडै खग दावतणा घणपेच ।
महाबळ[3] खेत लडै 'महवेच' ।। ४७२
भळाहळ[4] वीजळ[5] रावळ 'भांण' ।
करै जुध 'जैत' तणौ 'कलियांण' ।
पडै गज मुग्गळ[6] बाज[7] अपार ।
बखांणत सूर हथां तिण वार ।। ४७३
'विजावत'[8] उप्रमते[9] असि वाग ।
खत्री गुर 'क्रन्न'[10] वजावत[11] खाग ।
अरी घड[12] साबळहूत उथाल ।
सभ्रत विजावत[13] 'वैरियसाल'[14] ।। ४७४
अड़ै खग 'जैतहमाल' अथाह ।
'नरौ' 'मुकनेस' तणौ नर नाह ।
विढै गिरमेर समोभ्रम 'वैण'[15] ।
रचै जुध 'खेम' विजावत[16] रैण[17] ।। ४७५

---

१ ख. माहाजुध । २ ख. माहाव । ३ ख. ग माहाबळ । ४ ख. ग. भळाहळ । ५ ख बीजल । ६ ख मूगल । ग. मुगल । ७ ग वाज । ८ ख बिजावत । ९ ख. उप्रमतै । ग ऊप्रमते । १० ख क्रन । ग क्रन । ११ ख बजावत । १२ ख ग घट । १३ ख. बिजावत । १४ ख. वंरीयसाल । ग वैरीयसाल । १५ ख. बेण । १६ ख. बिजावत । १७ ख ग रेण ।

---

४७२. माहव,– माहवसिंह । महवेच – महेचा शाखाका राठौड ।

४७३ वीजळ – तलवार । रावळ – रावल, मल्लिनाथकेवशजोका पद विशेष । भांण – सूरजभाणसिंह । जैत – रावल मल्लिनाथके पुत्र जैतमाल । कलियाण – कल्याणसिंह । बाज – घोडा । वखाणत – प्रशसा करते हैं ।

४७४. विजावत – विजयसिंहका पुत्र । उप्रमते – विशेष । असि – घोडा । क्रन्न – करणसिंह । वैरियसाल – वैरीशालसिंह ।

४७५. जैतहमाल – रावल मल्लिनाथके पुत्र जैतमालके वंशजोकी एक उपशाखा या इस शाखाका व्यक्ति । नरौ – नरसिंह । मुकनेस – मुकुंदसिंह । विढै – युद्ध करता है । गिरमेर – सुमेरसिंह । वैण – वेणीसिंह । खेम – खेमसिंह । विजावत – विजयसिंहका पुत्र । रैण – रणछोडदास ।

सुत 'जगरूप' व्रजागि समांम[1] ।
रिमा खग फाग[2] रमै भड 'रांम' ।
वधै[3] हरिनाथ समोभ्रम 'वान'[4] ।
खळा खग झाटत साहिबखान ।। ४७६

तणौ भ्रम 'पूरण' सीघ तराज ।
सझै जुध मोगर[5] सीह सकाज ।
पता[6] भड क्रोध झळा उतपन्न[7] ।
सझै जुध 'मेघ' 'किसन्न'[8] 'सुतन्न'[9] ।। ४७७

भयकर मेछ घडा[10] खग भोग ।
जुडै 'मुकनेस'[11] समोभ्रम 'जोग' ।
'पिथावत'[12] 'सूरजमाल'[13] प्रचड ।
खळा सिर वाह[14] करै तळ खड ।। ४७८

समोभ्रम 'राजड' 'रैणा'[15] सधीर ।
महाबळ[16] खाग हणै घणमीर ।
भिडै सुत 'जोध' खगा इद्रभाण ।
खग[17] झट थाट हणै[18] खुरसांण ।। ४७९

---

१ ख. ग समाम । २ ख फाम । ३ ख वधे । ग वधै । ४ ख बान । ५ ख ग डूगर । ६ ख. ग पाता । ७ ख ग उतप्पन । ८ ख. सुतन्न । ९ ख किसन्न । १० ख घडा । ११ ख ग मुकदेस । १२ ख ग पीथावत । १३ ख सूरिज । १४ ख वाह । १५ ग. रेण । १६ ख माहाबळ । १७ ख. षगा । १८ ख. हणे ।

---

४७६ समाम – विशेष, वढिया । रिमा – शत्रुओ । फाग – फाल्गुन मासका नृत्य । वांन – वनेसिह ।

४७७ भ्रम – पुत्र । पूरण – पूर्णसिह । तराज – समान । पता – पतावत शाखाका राठौड । मेघ – मेघसिह । किसन्न – किसनसिह । सुतन्न – पुत्र ।

४७८. म्लेछ – मेच्छ, यवन । घडा – सेना । मुकनेस – मुकुन्दसिह । जोग – जोगसिह । पिथावत – पृथ्वीसिहका पुत्र । सूरजमाल – सूर्य्यमल । तळ खड – ध्वस ।

४७९ समोभ्रम – पुत्र । राजड़ – राजसिह । रैणा – रणछोडसिह । घण – वहुत । मीर – वडा सरदार, यवन । जोध – जोधसिह । झट – प्रहार । थाट – समूह । खुरसाण – यवन, मुसलमान ।

चका[1] खग भाट हणै चमराळ[2] ।
विढै[3] नर 'पाळ' तणौ[4] विजपाळ[5] ।
रिमां खग भाट करै घटरेज ।
तिकै जुध 'केहरि' सभ्रम 'तेज' ।। ४८०

घणा खळ थाट सिरै खग घाव ।
सझै जुध 'माहव' 'क्रन्न'[6] सुजाव ।
चका खळ भूक करै खग चौंज[7] ।
भिड़े 'अणदेस' समोभ्रम 'भोज' ।। ४८१

अगोभ्रम 'मेघ' चाढै कुळ ओप ।
'उमेदह' वार लडैत[8] 'अनोप' ।
समोभ्रम 'मेघ' 'जमांन' सकाज ।
लडै खग भाट लिया[9] कुळ लाज ।। ४८२

सत्रा खग भाटक 'गग' सझेस ।
समोभ्रम 'मेघ' लडै[10] 'कुसळेस' ।
वधावधि[11] राड़ि करै खगवाह[12] ।
सत्रा[13] 'परसावत'[14] 'माहवसाह' ।। ४८३

---

१ ख चकां। २ ख मचराल। ३ ख. बिढै। ४ ग तणो। ५ ख. बिजपाल। ६ ख. क्रत। ग. क्रन। ७ ख. चोज। ८ ख. लडत। ९ ख ग. लीया। १० ग. लडे। ११ ख. वधेबधि। ग वधेवधि। १२ ख. षगबाह। १३ ग सत्रा। १४ ख. परसावत।

---

४८०. चमराळ – यवन, मुसलमान। पाळ – गोपालसिंह। विजपाळ – विजयसिंह। घटरेज – ( ? )। केहरि – केसरीसिंह। सभ्रम – पुत्र। तेज – तेजसिंह।

४८१ माहव – माहवसिंह। क्रन्न – करणसिंह। सुजाव – पुत्र। चका – चक्र, सेना। भूक – ध्वस। चौंज – ( ? )। अणदेस – आनन्दसिंह। भोज – भोजराजसिंह।

४८२ अगोभ्रम – पुत्र। मेघ – मेघसिंह। ओप – कांति, दीप्ति। अनोप – अनोपसिंह।

४८३. कुसळेस – कुशलसिंह। वधावधि – वढ-वढ कर। राड़ि – युद्ध। खगवाह – योद्धा। माहवसाह – माहवसिंह।

तई[1] हणमत कळा जुध ताम ।
करै मडळा सझळा खग काम ।
'विहारिय'[2] सभ्रम 'केसव' वीर ।
'सगो'[3] भगवांन सुजाव सधीर ।। ४८४

जुडै 'अन्न'[4] पाळ 'किसोर' सुजाव ।
रोळै खग चोळ किया[5] रिणराव[6] ।
तठै 'बगसावत'[7] जूटत ताम ।
व्रँदावनदास[8] चढै[9] वरियाम[10] ।। ४८५

सझै जुध 'वीदह'रा'[11] खळ साळ ।
हिचै खग भाग चँदोत[12] 'हिंदाळ'[13] ।
रचै जुध 'भोज' हरा रिमराह[14] ।
नरावत नाहरखा नरनाह ।। ४८६

मँडै[15] खग झाट खळा घड-मोड ।
'अनावत' सूरतसीघ[16] अरोड[17] ।

---

१ ग तइ । २ ख विहारीय । ग. विहारीय । ३ ख सागो । ग. सागो । ४ ख. अन । ५ ख कीया । ६ ख ग. रणराव । ७ ख. बगसावत । ८ ख. वृंदावनदास । ग वृंदावनदास । ९ ख चडा । ग चड । १० ख ग वरीयांम । ११ ख हलरा । १२ ख चदोत । ग. चदोत । १३ हिदाल । १४ ख दाह । १५ ग. मडे । १६ ग. सुरतसिंघ । १७ ग. अरोड ।

---

४८४ हणमत – हनुमान । मडळा – राठौडोकी एक उपशाखा । सझळा – बढिया, श्रेष्ठ । विहारिय – विहारीसिंह । सभ्रम – पुत्र । केसव – केशवसिंह । सँगो – सग्रामसिंह । भगवान – भगवानसिंह ।

४८५ रोळै – ध्वस करता है । रिणराव – योद्धा । वरियांम – श्रेष्ठ ।

४८६ वीदहरा – राव वीदाके वशज, राठौडोकी एक उपशाखा । हिचै – युद्ध करता है । भाग चँदोत – भागचदका पुत्र । भोजहरा – भोजके वशज, राठौडोकी एक उपशाखा । नरावत – राठौडोकी एक उपशाखा, इस शाखाका वीर ।

४८७ घड-मोड – सेनाको मोड देने वाला, पीछे हटा देने वाला योद्धा । अनावत – अनाड-सिंहका पुत्र । अरोड – जबरदस्त ।

अड़ै खग[1] भारमलोत[2] अनम्म[3] ।
करै जुध 'भूपति'रौ 'मुहकम्म'[4] ॥ ४८७

अरी खग झाडि छिबै[5] असमान ।
थटा मझि 'भाखर' सभ्रम 'थान' ।
करै जुध 'भीम' कळोध कंठीर ।
'विहारिय'[6] सभ्रम 'साहब'[7] वीर ॥ ४८८

हुवै खळ वीजळ[8] वाहत हाथ ।
नरापति[9] 'भोज' तणौ[10] 'जगनाथ' ।
भिड़ै[11] म्रत[12] कीध 'अभा' छळि 'भोज' ।
युही[13] 'सुरतांण' 'जसा' छळि ओज ॥ ४८९

बिनै[14] जमसूर[15] दादौ अर बाप ।
उवां अधिकोस[16] पराक्रम आप ।
सझै जरदैत खळा घण साथ ।
जगाचख[17] दादि दियै[18] 'जगनाथ' ॥ ४९०

---

१ ख. षगि । २ ख भारमलोत । ३ ख अनंम । ग. अनम । ४ ख मौहौकम्म । ग. मौहौकम्म । ५ ख. ग छिवै । ६ ख. बिहारीय । ग. विहारीय । ७ ख. ग साहिब । ८ ख बीजल । ९ ख. नरौपति । १० ग. तणो । ११ ख. भिडे । १२ ख मृत । १३ ख. यौंही । ग. योही । १४ ग विनै । १५ ख. यम । १६ ख अधिकौस । १७ ख ग जगचख । १८ ख ग दीयै ।

---

४८७ भारमलोत – राठौडोकी एक उप शाखा, इस शाखाका वीर । अनम्म – नही झुकने वाला ।

४८८ भाखर – भाखरसिंह । थान – थानसिंह । भीम – भीमसिंह । कळोध – वंशज । कंठीर – सिंह । विहारिय – बिहारीसिंह । साहब – साहबसिंह ।

४८९ अभा – महाराजा अभयसिंह । छळि – लिए । भोज – भोजराजसिंह । सुरताण – सुल्तानसिंह । जसा – जसवंतसिंह ।

४९० बिनै – दोनो । दादौ – पितामह । जरदैत – कवचधारी योद्धा । जगा चख – सूर्य । दादि – धन्यवाद । जगनाथ – जगनाथसिंह ।

रूपावत जूटत घाट वराड[1] ।
विजूजळ[2] मुग्गळ[3] थाट विभाड[4] ।
जुडै खग[5] 'गोयद'[6] रौ[7] जसराज ।
सुता[8] 'सकतेस' हुमाऊ[9] सकाज ॥ ४६१

हिचै 'दुरगावत' झोकि हुबास[10] ।
दुसै खग झाटत बद्रियदास[11] ।
लडै भड 'गंग' हरा[12] धख लागि ।
'जगावत' सूरतसीघ[13] व्रजागि ॥ ४६२

रिमा सिर वाहत[14] वीजळ[15] रूठ ।
'द्वरौ'[16] मुकँदावत[17] जूटत[18] दूठ ।
नरावत खाग हणै जवनेस ।
महाबळ[19] 'चद'तणौ 'पदमेस' ॥ ४६३

धडच्छत[20] मूगळ बीजळ धार ।
'अनौ' 'सहसावत'[21] सूर उदार ।

---

१ ग वराड। २ ख. वीजूजल। ग. वीजूजल। ३ ख मूगल। ग मुगळ। ४ ख. विभाड। ५ ख. षगि। ६ ख. गोयद। ७ ग. रो। ८ ख. सुन। ९ ख. हमाउ। ग हमाऊ। १० ख. हुवास। ११ ख. ग. वद्रीयदास। १२ ख. हरी। १३ ग. सूरतसिघ। १४ ख. बाहत। १५ ख. वीजल। १६ ख ग. द्वारौ। १७ ख. मुकदारत। १८ ख. जूट। १९ ग. माहावळ। २० ख धडछत। ग. धड़छत। २१ ख. सहसावत।

---

४६१ रूपावत – राठौडोकी एक उपशाखा, या इस शाखाका वीर। घाट वराड – भयंकर रूपसे। विजूजळ – तलवार। विभाड – सहार कर के। गोयद – गोविन्दसिंह। जसराज – जसवतसिह। सकतेस – शक्तिसिंह।

४६२ दुरगावत – दुर्गादासके पुत्र। झोकि – झोक कर। हुवास – घोडा। गग - गगासिंह। धख – प्रवल जोश।

४६३ द्वरौ – द्वारकादास। मुकँदावत – मुकन्दसिहका पुत्र। दूठ – जवरदस्त। नरावत – राठौडोकी एक उपशाखा। जवनेस – यवन, मुसलमान। चद – चद्रसिंह। पदमेस – पद्मसिंह।

४६४ धडच्छत – काटता है, मारता है। वीजळ – तलवार। अनौ – अनोपसिंह। सहसावत – सहस्रसिंहका पुत्र।

चढावत[1] लोह करै बधिचाळ ।
प्रचंडह 'रूप' तणौ 'विजपाळ'[2] ॥ ४६४

जुडै 'रायपाळ'[3] हरौ रण 'जैत' ।
'दुरज्जण'[4] 'नाहर'रौ बिरदैत[5] ।
अडै भड[6] पूरविया[7] अवसांण ।
'दलावत' दूठ[8] जिसा[9] दइवाण[10] ॥ ४६५

सुजावत[11] साहिब-खांन सकाज ।
रिमा सिर झाटत झाट नराज[12] ।
विढै[13] भड ऊहड लोह विछेक[14] ।
इतां सिरपोस 'वाकौ'[15] भड एक ॥ ४६६

'वँकै'[16] भड ओरवियौ[17] जुध बाज[18] ।
सझै खळ साबळहूत सकाज ।
गडा[19] जिम उलाळियौ[20] दग[21] रीठ[22] ।
धरा मझि जाय पडै चखि[23] धीठ ॥ ४६७

---

१ ख चूडावत । ग चडावत । २ ख बिजपाळ । ३ ख रावपाल । ४ ख दुरज्जण । ग दुरझण । ५ ख बिरदंत । ६ ख. भर । ७ ख. पूरवीया । ग. पूरविया । ८ ख. ग दूद । ९ ख ग जिसा । १० ख. 'दईवाण । ११ ख. ग. सूजावत । १२ ख. नाराज । ग नाराच । १३ ख. विढै । १४ ख. वछेक । १५ ख बको । ग. वांको । १६ ख. बकै । १७ ख ओरवीयो । १८ ख. ग. वाज । १९ ख. ग गाडा । २० ख. ऊललि । ग ऊलळि । २१ ख. ग रौद । २२ ख ग. गरीठ । २३ ख. वष ।

---

४६५. जुडै – भिडता है, युद्ध करता है । दुरज्जण – दुर्जनसिंह । नाहर – नाहरसिंह । पूरविया – चौहान वशकी एक शाखा । अवसाण – युद्ध । दइवाण – वीर, योद्धा ।

४६६ झाटत – काटता है । नराज – तलवार । विढै – युद्ध करता है । ऊहड – राठौड वंशकी ऊहड शाखाका वीर । सिरपोस – शिरस्त्राण, श्रेष्ठ । वाकौ – विक्रमसिंह ।

४६७. वँकै – विक्रमसिंह । ओरवियौ – युद्धमे झोक दिया । वाज – घोडा । सझै – प्रहार करता है । साबळहूत – भाला विशेपसे । गडा – ( ? ) । उलाळियौ – गिरा दिया । दग रीठ – ( ? ) । चखि धीठ – ( ? ) ।

भयांणक[1] दीसत यौं[2] भमरूत ।
अखाडथ[3] दत्त[4] जिसा अवधूत ।
रँगै[5] हम सावळ[6] काटिय[7] रूक ।
भयकर झाट करै खळ भूक ॥ ४९८

उडै खग आछर सीस अपार ।
धरै रुडमाळ विचै जटधार ।
पडै असवारतणा धड पाय ।
जठै अरि सीस पडै लगि जाय ॥ ४९९

जुड़ै इम साबळ[8] व्याकुळ जीव ।
हुवा अवतार घणा हयग्रीव ।
करै[9] चुखचुख्ख घणा मुगळांण[10] ।
पोथी जिम वदर[11] वेद पुराण ॥ ५००

रचै तिण मौसर[12] योगिणी[13] रास ।
सझै इम आरण 'बकीयदास' ।
तठै 'हरियद' तणौ[14] मसतान ।
दियै[15] खग झाट खळा सिवदान ॥ ५०१

जुड़ै तिणवार उदावत[16] 'जैत' ।
पछाडत मार[17] खगा पखरैत ।

---

१ ग भयानक । ख भयाणप । २ ख यू । ३ ग अषाडाय । ४ ख दत । ५ ख ग रगे । ६ ख ग सावळ । ७ ख ग काटीय । ८ ख. सोभत । ग. सोवल । ९ ख. करे । १० ख. किलमाण । ११ ख. वदर । १२ ख. मौसरि । १३ ख. जोगणि । ग योगणि । १४ ग तणो । १५ ख. दीयै । १६ ख. ग ऊदावत । १७ ख मीर ।

---

४९८. भमरूत – शस्त्र प्रहारोमे क्षत-विक्षत शरीर वाला । दत्त – दत्तात्रय ऋषि । रूक – तलवार । भूक – ध्वस ।

४९९ आछर – प्रहार । जटधार – रुद्र, महादेव ।

५००. चुखचुख्ख – खड-खड । मुगळाण – मुगल, यवन ।

५०१ मौसर – अवसर । आरण – युद्ध । मसतांन – मस्त ।

५०२. उदावत जैत – उदावत शाखाका राठोड जैतसिंह । पछाड़त – गिराता है । पखरैत – कवचधारी योद्धा ।

'सदौ'[1] 'कुसळावत' जग सधीर ।
वढै[2] खग झाट तठै वर वीर[3] ॥ ५०२

'विहारिय'[4] सभ्रम झोकि व्रहास ।
दळा[5] खळ वीच लड़ै 'गुणदास' ।
विढै[6] 'चंद' 'स्याम' तणौ विकराळ[7] ।
वहै[8] खग झाट कटंत बगाळ ॥ ५०३

हिचै भड़ सिधल[9] चद्रप्रहास ।
समोभ्रम 'वीठल'[10] जीवणदास ।
जुड़ै भड खेतसियोत[11] सुजग ।
'अखौ'[12] धनराज तणौ अणभंग ॥ ५०४

विढै भड भाटिय[13] यू जुधवेर[14] ।
मडोवर आगळ जैसळमेर[15] ।
अणी कढ[16] हाकल[17] बाज[18] उडाण ।
भिडै रिणछोड[19] तणौ ऊदभांण[20] ॥ ५०५

हकारत सूर वकारत[21] हेक ।
करै जुध भूक अनैक[22] अनैक ।

---

१ ग सदो । २ ख. विढै । ३ ख वीर । ४ ख बिहारीय । ग विहारीय । ५ ख. दलां । ग दळा । ६ ख विढै । ७ ख बिकराल । ८ ख बाहै । ग वाहै । ९ ख. सीधल । ग सिघल । १० ख. बीठल । ११ ख. षेतसीयोत । १२ ग. अषो । १३ ख ग भाटीय । १४ ख. युधवेर । १५ ख ग. जेसलमेर । १६ ख कट । १७ ख. हाकलि । १८ म बाज । १९ ख रणछोड । २० ख उदभाण । ग. उदंभाण । २१ ख बकारत । २२ ख. ग अनेक अनेक ।

---

५०२. सदौ – शार्दूलसिंह । कुसळावत – कुशलसिंहका पुत्र ।

५०३. विहारिय – बिहारीदास । सभ्रम – पुत्र । व्रहास – घोडा । चद – चन्द्रसिंह । स्यांम – श्यामसिंह । बगाळ – यवन, मुसलमान ।

५०४ हिचै – युद्ध करते है । सिंघल – राठौडोकी सिंघल शाखाका वीर, योद्धा । चद्रप्रहास – तलवार । वीठळ – विठ्ठलदास ।

५०५ आगळ – रक्षक रूप, अगाडी । उडाण – दौड । ऊदभांण – उदयभाणसिंह ।

सत्रां घट झाट[1] दिये[2] समसेर ।
महारिण[3] वीच[4] हुओ[5] गिरमेर ।। ५०६

अड़ीखभ झोक लगै अवसाण ।
भटी[6] इम 'भाण' बखाणत[7] भाण ।
समोभ्रम 'सूर' खळा[8] समराक ।
'हठी' असि हाकलियौ[9] करि हाक ।। ५०७

सिलैबँध[10] घाट उभेलत[11] सेल ।
खेलै नट जाणिक भागळ[12] खेल ।
घमघम चोट करै घमचाळ ।
बँगाळ उलाळ रगत्र बबाळ[13] ।। ५०८

पडे भड रोद[14] लुहो[15] रँग पूर ।
सुता[16] सिध[17] जाणिक चाढि सिंदूर ।
पडै[18] सिर[19] हेक जुजां[20] दड[21] पार ।
तढै[22] धरि रोस[23] कढी तरवार ।। ५०९

वहै[24] खग ऐम[25] 'हठी'[26] विकराळ[27] ।
कराळक झाळ अताळत काळ ।

---

१ क छाट । २ ख ग दियै । ३ ख. माहारण । ४ ख वीचि । ५ ग हुओ । ६ ख ग भाटी । ७ ग. वषाणत । ८ ख षला । ९ ख हालीयौ । ग. हाकलियौ । १० ख सिल्है । ११ ख उभेलत । ग. ऊभेलत । १२ ख भग्गल । १३ ग बबवाळ । १४ क. रोह । १५ ख. लौही । ग. लोही । १६ ख. सूता । १७ ख ग सिध । १८ ख पडे । १९ ख सर । २० ख. भुजा । २१ ख. डड । २२ ख ग तठै । २३ ग रौस । २४ ख. वाहै । ग. वाहै । २५ ख. एम । २६ क हठी । २७ ख विकराळ ।

---

५०७ अडीखभ – जबरदस्त । झोक – धन्यवाद । अवसाण – युद्ध, अवसर । भटी – भाटी वंश । भाण – उदयभाणसिंह । समराक – योद्धा । हठी – हठीसिंह । हाकलियौ – हाका । हाक – जोशपूर्ण तेज आवाज ।

५०८ जाणिक – मानो । भागळ खेल – ऐंद्रजालिक खेल । घमचाळ – युद्ध । बँगाळ – यवन । रगत्र – रक्त । बबाळ – लाल ।

५०९ रोद – मुसलमान ।

५१०. हठी – हठीसिंह । कराळक – भयंकर । अताळत – ( ? ) । काळ – यमराज ।

कळाहळ[१] हूंकळ[२] ऊकळ काट ।
भळाहळ वाहत[3] वीजळ[४] भाट ॥ ५१०
भळाहळ छूटत[५] स्रोण भभक्क[६] ।
डळाहळ सांस[७] उडै डहचक्क ।
खळाहळ स्रोण तणा घण खाळ ।
'हठी' खग वाहत[८] एम[९] हठाळ ॥ ५११
समोभ्रम 'नाहर' जूटत 'सूर' ।
चँद्रासक मेछ करै चकचूर ।
पेखे[१०] इम पोरस[११] दारण पूर ।
सराहत[१२] 'सूर' तणौ[१३] हथ सूर ॥ ५१२
कळायण[१४] वीच[१५] लडत करूर ।
'पतौ'[१६] इन्द्र भाण तणौ[१७] व्रढपूर ।
'नाथौ' 'अमरावत' खाग उनाग ।
'जगावत' जूटत सूर अजागि[१८] ॥ ५१३
उदावत[१९] 'जीवण' वीजळ[२०] दाव[२१] ।
जुडै 'सुरताण' 'पदम्म'[२२] सुजाव ।

---

१ ख ग. काळाहल। २ ख हूकल। ३ ख वाहत। ४ ख. बीजल। ५ ख छूणत। ६ ग. भभक। ७ ख सीस। ८ ख बाहत। ९ ख ग येम। १० क पेषे। ११ ख पौरस। १२ ग सराहथ। १३ ख ग तणा। १४ ख. ग काळायण। १५ ख वीचि। १६ ग. पतो। १७ ग तणो। १८ ख अजाग। १९ ख वूदावत। ग वुदावत। २० ख. ग बीजल। २१ ख दास। २२ ख पदम। ग पदम।

---

५१० कळाहळ – कोलाहल।

५११. भळाहळ – तेज। स्रोण – शोणित, रक्त। भभक्क – तेज धारा। डळाहळ – (?)। डहचक्क – (?)। खळाहळ – तेज ध्वनियुक्त प्रवाह। घण – बहुत। खाळ – नाला। हठाळ – अपने हठ पर दृढ़ रहने वाला।

५१२ नाहर – नाहरसिंह। चँद्रासक – तलवार। मेछ – यवन। चकचूर – ध्वस, सहार। पेखे – देख कर। हथ – हाथ। सूर – सूर्य।

५१३ कळायण – घटा, सेना। पतौ – प्रतापसिंह। उनाग – नगी। अजागि – जबरदस्त।

५१४ उदावत जीवण – राठौडोकी उदावत शाखाका जीवणसिंह। सुरताण – सुल्तानसिंह। पदम्म – पद्मसिंह। सुजाव – पुत्र।

'सतावत'[१] 'माल' भडत[२] सुभेद ।
अनै 'व्रजपाळ' सुजाव 'उमेद' ।। ५१४

विढै[३] खग 'पीथल'रौ 'बखतेस' ।
वडा[४] खळ थाट हणै लघुवेस ।
'विजौ'[५] 'पदमेस' तणौ वरवीर[६] ।
मडे रिण माझ पड़ै बहु[७] मीर ।। ५१५

'जसावत' सूरतसिंघ[८] व्रजागि ।
लड़ै 'सिव' 'खेतल'रौ धख लागि ।
'सूरावत' 'देव' लड़ैत समाम ।
सझै जुध साहिब[९] ऊत 'सग्राम' ।। ५१६

विढै[१०] भड़ 'जैत' तणौ बखतेस ।
'लखौ' 'हरियद' सुजाव लडेस ।
'रसावत'[११] 'क्रन्न'[१२] लडै रिमराह ।
'दलौ' जयसीघ[१३] सुजाव दुबाह ।। ५१७

'मधौ' करणोत[१४] लड़ै मगरूर ।
समोभ्रम 'नाहर' 'डूगर' 'सूर' ।

---

१ ख श्रुतावत । २ ख लडत । ग भडत । ३ ख बिढ़ै । ४ ख. बडा । ५ ख विजो । ६ ख वरबीर । ७ ख. बौहो । ग बोह । ८ ख. सूरतसींघ । ९ ख साहिव । १० ख विढ़ै । ११ ख ग. वासावत । १२ ख क्रन । ग क्रन । १३ ख ग जयसिंघ । १४ ख ग करणोत ।

---

५१५. पीथल – पृथ्वीराज, या पृथ्वीसिंह । बखतेस – बखतसिंह । विजौ – विजयसिंह । पदमेस – पद्मसिंह ।

५१६ सिव – शिवदानसिंह । खेतल – खेतसिंह । धख - प्रबल इच्छा । समाम – बढ़िया, उत्तम । सग्राम – संग्रामसिंह ।

५१७ जैत – जैतसिंह । लखौ – लक्ष्मणसिंह । हरियद – हरिसिंह । रसावत – रायसिंहका पुत्र । क्रन्न – करणसिंह ।

५१८. मधौ – माधोसिंह । करणोत – राठौड़ वंशकी उपशाखा । नाहर – नाहरसिंह । डूगर – डूंगरसिंह ।

तठै 'भगवांन' तणौ 'सगतेस' ।
जुडै 'अजबेस'[1] तणौ 'जगतेस' ।। ५१८

अनावत[2] दूठ 'गजौ'[3] उणवार ।
जुडै 'हरियद' सुजाव जुंझार[4] ।
अँगोभ्रम 'तेजल' 'बाघ'[5] अबीह ।
समोभ्रम 'रूप' 'अनौ'[6] जुधसीह ।। ५१९

'जगावत' मोकमसीघ[7] सजोस ।
तिकै[8] जुध 'केहरि'[9] 'मान'[10] तणोस[11] ।
पतावत गोपियनाथ[12] प्रचंड ।
खळां सिर[13] झाट[14] दियै[15] भलखंड ।। ५२०

'अखौ'[16] खग खेल रमै दइवाण[17] ।
समोभ्रम दारुण[18] जोध 'सुजाण' ।
समोभ्रम देव करन्न[19] सुधन्न[20] ।
करै खग झाटक खीव[21] करन्न ।। ५२१

---

१ ग अजवेस । २ ख. अनाव । ३ ख जगौ । ४ ख जुंझार । ५ ग वाघ । ६ ग अनो । ७ ख. मौकमसींघ । ग मौकमसिंघ । ८ ख. ग. तिकं । ९ ख केहरी । १० ख. माण । ११ ग तणोस । १२ ख ग गोपीयनाथ । १३ सिरि । १४ ख. झाल । १५ ख ग. दीयै । १६ ख ग अषो । १७ ख दईवाण । १८ ख दारण । १९ ख करन । २० ख सुघन्न । ग सुघन । २१ ख षींमकरन । ग खीमकरन ।

---

५१८ भगवान – भगवानसिंह । सगतेस – शक्तिसिंह । अजबेस – अजबसिंह । जगतेस – जगतसिंह ।

५१९ अनावत – अनाड़सिंहका पुत्र । दूठ – जबरदस्त । गजौ – गजसिंह । हरियंद – हरिसिंह । जुंझार – जूझारसिंह । अँगोभ्रम – पुत्र । तेजल – तेजसिंह । बाघ – बाघसिंह । अबीह – निडर, निर्भय, वीर । रूप – रूपसिंह । अनौ – अनाड़सिंह । जुधसीह – जोधसिंह ।

५२० केहरि – केसरीसिंह । मान – मानसिंह । पतावत – प्रतापसिंहका पुत्र ।

५२१ अखौ – अक्षयसिंह ।

समोभ्रम दारुण सूर 'किसोर' ।
जुड़ै फतमाल खगां वरजोर[1] ।
धारूजळ वाहत[2] ग्रीखम धूप ।
मडै[3] जुध 'देव' क्रनोत[4] 'मनूप' ।। ५२२

विढै[5] भड 'माहव'रौ[6] 'विजपाळ'[7] ।
हरौ 'सकताव'[8] सूर हठाळ ।
हिचै 'चतुरेस'तणौ[9] हरिनाथ ।
'नथौ'[10] भड गोरधनोत[11] सनाथ ।। ५२३

फतावत 'भूझ' लडत अफेर ।
सत्रा जम सेर जही समसेर ।
'जसौ'[12] सिवदान तणौ[13] जमराण ।
'अजौ' भड 'केहर'रौ दइवांण[14] ।। ५२४

सुरा[15] गुर 'सामत'[16] 'सूर' सुजाव ।
'जसावत' 'माहव' क्रोध जगाव ।
समोभ्रम 'मेघ'[17] 'झुंझार'[18] सधीर ।
वढै[19] विरमाण 'जसावत' वीर ।। ५२५

---

१ ख वरजोर । २ ख बाहत । ३ ख ग मडे । ४ ख. क्रनोत । ५ ख. विढ़ै । ६ ख माहावरो । ७ ख. बिजपाल । ८ ख ग सकतावत । ९ ग. चतुरेसतणो । १० ख. नाथौ । ग नाथो । ११ ख ग. गोरधनोत । १२ ग. जसो । १३ ग तणो । १४ ख दईवाण । १५ ख ग. सूरां । १६ ग सामत । १७ ख. सेघ । १८ ख झूझार । १९ ख. विढै ।

---

५२२ किसोर – किशोरसिंह । धारूजळ – तलवार । ग्रीखम – ग्रीष्म । क्रनोत – करणोत शाखाको । मनूप – मनरूपसिंह ।

५२३ हरौ – वंशज । सकताव – राठौडोकी एक शाखा । हिचै – युद्ध करता है । चतुरेस – चतुरसिंह । नथौ – नाथूसिंह ।

५२४ फतावत – फतहसिंहका पुत्र । झूझ – युद्ध । अफेर – न मुडने या पीछे हटने वाला, वीर । जसौ – जसवंतसिंह । जमराण – जबरदस्त, यमराज । अजौ – अजीतसिंह । केहर – केसरीसिंह ।

५२५ सुरा गुर – महावीर, बडा योद्धा । सामत – सावतसिंह । सूर – सूरसिंह । सुजाव – पुत्र । जसावत – जसवंतसिंहका पुत्र । माहव – माधवसिंह । मेघ – मेघसिंह । झुंझार – जुंझारसिंह । विरमाण – वीरभाणसिंह ।

समोभ्रम 'सूदर'[1] सूरजमाल[2] ।
'अजौ' 'हरिनाथ' सुजाव अपाल ।
'अखावत' 'सहसमाल'[3] अरोड ।
मिळै[4] घण घाय खळा घड मोड़ ।। ५२६

वहै[5] खग आय खळा[6] झळ वेग ।
तुटै घण आप तणै सिर तेग ।
सथी[7] करि मेछ घणा समराथ ।
भटी[8] भड तांम पडै[9] भाराथ ।। ५२७

सुरत्रिय[10] ताम[11] वरे सस धीर ।
रथा चढि स्रूगि[12] वसै[13] रणधीर ।
अगोभ्रम 'राजड' सूर 'अजब्ब'[14] ।
गुडै[15] खळ वीजळ[16] झाट गजब्ब[17] ।। ५२८

समोभ्रम 'गोकळ' 'पातल' साह ।
बिभाडत रोद खडा[18] हळवाह[19] ।

---

१ ख सुदर । २ ख. सुरिजमाल । ३ ख तेंहस । ४ ख. मिले । ५ बाहै । ग. वाहै । ६ ख फला । ७ ख ग साथी । ८ ख ग भाटी । ९ ख. पडे । १० ख ग सुरत्रीय । ११ ख ग ताम । १२ ख. श्रुगि । ग स्रुगि । १३ ख. ग. वसे । १४ ख अज्जव । ग अजव । १५ ख. ग गोडे । १६ ख. बीजल । १७ ख. गज्जब । ग गजव । १८ ख षडा । १९ ख ग हळवाह ।

---

५२६ सूदर – सुन्दरसिंह । सूरजमाल – सूर्य्यमल । अजौ – अजीतसिंह । सुजाव – पुत्र । अपाल – जो किसीका रोका न रुके, वीर । अखावत – अक्षयसिंहका पुत्र । अरोड़ – जबरदस्त । मिळै...घाय – बहुतसे घावोसे क्षतपूर्ण हो गया हो । खळा मोड़ – शत्रु-दलको पराजित करने वाला ।

५२७ तुटै तेग – अपने शिर पर बहुत-सी तलवारें तोडाता हुआ । सथी समराथ – बहुतसे यवनोको युद्धस्थलमे अपने साथ गमन करने वाला बना कर । भटी भराथ – तब भाटी योद्धा युद्धस्थलमे धराशायी हुआ ।

५२८. सुरत्रिय – अप्सरा । तांम – उन, तब । सस धीर – ( ? ) । स्रूगि – स्वर्ग । अगोभ्रम – पुत्र । राजड – राजसिंह । अजब्ब – अजबसिंह ।

५२९ गोकळ – गोकुलसिंह । पातल साह – प्रतापसिंह । बिभाडत – सहार करता है । हळवाह – बलभद्रसिंह (?) ।

महाभड[1] सूर 'फतावत' 'मांन' ।
तेगा झट रोद[2] हणै मसतांन ।। ५२९

'विजावत'[3] 'रूप' लड़ै रिण वार[4] ।
धुबै[5] खळ थाट सिरै खग धार ।
विहारिय[6] दास तणौ 'चँद' वीर[7] ।
सुरा[8] 'अणदावत' 'लाल' सधीर ।। ५३०

नरावत 'रूप' लडै नरनाह ।
'रासौ' भड 'खेतल'रौ[9] रिम राह ।
'द्वरावत'[10] वाजत[11] घोर दमांम ।
रमै[12] खग झाट खळा हळिराम[13] ।। ५३१

'अखौ' 'प्रिथीराज'[14] सुजाव अपाल[15] ।
'अनावत' वेढ[16] करै 'अखमाल' ।
'अजौ'[17] जगमाल सुतन्न[18] अभग ।
जगावत 'लाल' करै खग जग ।। ५३२

---

१ ख ग महाबळ । २ ख. ग रौद । ३ ख. विजावत । ४ ख वार । ५ ख. ग. धुवै । ६ ख विहारीय । ग विहारीय । ७ ख. वीर । ८ ख सूरौ । ग सूरां । ९ ग रे । १० ख. ग. द्वारावत । ११ ख वाजत । १२ ख मरै । १३ ख हरिराम । १४ ख ग प्रिथी । १५ ख अपार । १६ ख. वेढ । १७ ग अजो । १८ ख. ग सुत्तन ।

---

५२९. फतावत – फतहसिहका पुत्र । मान – मानसिह । रोद – यवन । मसतान – मस्त ।

५३० विजावत – विजयसिहका पुत्र । रूप – रूपसिह । चँद – चद्रसिह । अणदावत – आनन्दसिहका पुत्र । लाल – लालसिह ।

५३१. नरावत – राठोडोकी एक उपशाखा, इस शाखाका वीर । रूप – रूपसिह । नरनाह – नरनाथ, यहा वीर अर्थ है । रासौ – रायसिह । खेतल – खेतसिह । रिम राह – शत्रु ध्वंसक, शत्रु दल पर रास्ता करने वाला । द्वरावत – द्वारकादासका पुत्र । दमाम – नगाडा । हळिराम – बलभद्रसिह ।

५३२ अखौ – अक्षयसिह । अपाल – वह जो किसीकी रोकमे न रहे, वीर । अनावत – अनाडसिहका पुत्र । अखमाल – अक्षयसिह । अजो – अजीतसिह । जगावत – जगतसिहका पुत्र । लाल – लालसिह । खग जग – तलवारका युद्ध ।

करै जुध 'भाखर'रौ 'महि[1] क्रन्न'[2] ।
'अनौ', 'उगरावत' क्रोध उपन्न[3] ।
वळोवळ[4] मेछ खगां चह चद ।
करै[5] 'सहसावत' सूर 'मुकुद' ।। ५३३

धमोडत साबळ मूगळ[6] धीग[7] ।
समोभ्रम 'पातल' अम्मरसीग[8] ।
'जसावत' जीवणदास सजोस ।
रिमांतरवार[9] हणै घण रोस ।। ५३४

समोभ्रम 'दूद' 'विहारिय'[10] सूर ।
'मधावत' 'बखतसी'[11] मगरूर ।
घटां खग लोह करै धमसाण ।
पटायत[12] भाटिय[13] एह प्रमाण ।। ५३५

भिड़ै खळ सूर 'उमेद' भुवाळ[14] ।
'मधावत' जोध 'जगौ' मछराळ ।
अड़ै 'मुकदौ' भड वीर[15] सु अंग ।
'अनावत' जीवणदास अभग ।। ५३६

---

१ ख महै । २ ख. क्रन । ग. क्रन । ३ ख. उप्पन । ग. उप्पन । ४ ख वलोवत । ५ ख. करै । ग केरे । ६ ग. मुगल । ७ ग धीघ । ८ ख अम्मरसींघ । ग. अम्मरसींघ । ९ ख रिमातरवारि । १० ख. बिहारीय । ग विहारीय । ११ ख. ग. बष्षतसी । १२ ख पटाइत । १३ ख. ग भाटीय । १४ ख भूवाल । १५ ख. बीर ।

---

५३३ भाखर – भाखरसिंह । महिक्रन्न – महकरणसिंह । अनै – अनाडसिंह । उगरावत – उगरसिंहका पुत्र । उपन्न – उत्पन्न । वळोवळ – चारो ओर । सहसावत – सहससिंहका पुत्र । मुकुद – मुकुन्दसिंह ।

५३४ धमोडत – प्रहार करता है । साबळ – भाला विशेष । पातल – प्रतापसिंह । जसावत – जसवतसिंहका पुत्र ।

५३५. दूद – दुर्जनसिंह । विहारिय – बिहारीसिंह । मधावत – माधोसिंहका पुत्र । धमसाण – युद्ध । पटायत – जागीरका स्वामी, जागीरदार । भाटिय – भाटी ।

५३६ उमेद – उम्मेदसिंह । भुवाळ – राजा । जगौ – जगतसिंह । मछराळ – वीर, योद्धा । मुकदौ – मुकुदसिंह । अनावत – अनाडसिंहका पुत्र ।

*समोभ्रम[1] 'जैत' ज 'नाहर साह' ।
समोभ्रम 'नाहर' 'राम' सराह ।
समोभ्रम भाउएदास सकाज ।
तठै भड 'राम' कठीर तराज* ।। ५३७

समोभ्रम 'साहिब भाण' सराह ।
सत्रा खग झाट लडै 'गजसाह'[2] ।
'हरी' सुत जूटत सूर 'हिंदाळ' ।
झटा खग खेलत पौरस झाळ ।। ५३८

धुबै[3] खग 'केहर' बीजळ धार ।
भिडै 'भगवान' तणौ[4] गज भार ।
मँडै[5] रण 'सूर' तणौ 'पदमेस' ।
'सुजावत'[6] 'हिम्मत'[7] जग सभेस ।। ५३९

भऊ[8] सुत 'हींद'[9] वजै गज भार ।
सझै 'कुसळेस' तणौ 'सिरदार' ।
विढै[10] सुत 'जोग' करै खगवाह[11] ।
सत्रा घड सीस 'बहादर'[12] साह' ।। ५४०

---

१ ख ग समोभ्र ।
  * *चिन्हाकित पंक्तिया ख. प्रतिमे नही हैं ।
२ ख गजगाह । ३ ग धुवै । ४ ग. तणो । ५. ख. ग मडे । ६ ग सूजावत । ७ ख. हिम्मत । ८ ख ग. भाऊ । ९ ख. हिंद । १० ख विढै । ११ ख षगवाह । १२ ख ग. बाहादर ।

---

५३७ नाहर – नाहरसिंह । राम – रामसिंह । कठीर – सिंह । तराज – समान ।

५३८ गजसाह – गजसिंह । हरी – हरिसिंह । जूटत – भिडता है ।

५३९ केहर – केसरीसिंह । बीजळ – तलवार । भगवान – भगवानसिंह । गज भार – हाथी समूह । सूर – सूरसिंह । पदमेस – पदमसिंह । सूजावत – सूरसिंहका पुत्र । हिम्मत – हिम्मतसिंह ।

५४० भऊ – भाऊसिंह । हींद – हिन्दूसिंह । कुसळेस – कुशलसिंह । सिरदार – सरदारसिंह । जोग – जोगसिंह । बहादर साह – बहादुरसिंह ।

समोभ्रम 'रूप' लडै 'अमरेस'।
सत्रां 'सबळावत' वीर[1] सभेस।
अबीह 'प्रताप' तणौ 'उगरेस'।
सझै जुध 'सामत'रौ 'सगतेस' ॥ ५४१

मुडै[2] 'उग्रसेण[3] तणौ 'फतमाल'।
लुहा[4] खळकट[5] करै गज 'लाल'।
धिखै भभकै रण क्रोध धियाग[6]।
खड़ख्खड़[7] ढाल झडज्झड[8] खाग ॥ ५४२

उतारत नीर खळा अवगाढ।
महाबळ नीर चढावत 'माढ'।
चौहान–विढै[9] चहुवाण जढै विकराळ।
उजाळत सभर सभरवाळ ॥ ५४३

उरै[10] जुध बीच[11] तुरी 'अजबेस'[12]।
भुहारव[13] ऊपर[14] मूछ भिड़ेस।
मुखै[15] चख चोळ सरूप मजीठ।
धबोडत[16] साबळ मूगळ[17] धीठ ॥ ५४४

---

१ ख. बीर। २ ख. ग. मडै। ३ ख. मुद्रसेण। ग उग्रसेण। ४ ख. ग लोहा। ५ ख. ग. खळदूक। ६ ख. ग धियाग। ७ ख. ग. षडषड। ८ ख झडझड। ९ ख. विढै। १० ख. वोरे। ग. वोरै। ११ ग. वीच। १२ ग अजवेस। १३ ख भौंहारव। १४ ग उपर। १५ ख मुष्व। ग. मुषे। १६ ख धमोडत। १७ ग. मुगळ।

---

५४१. रूप – रूपसिंह। अमरेस – अमरसिंह। अबीह – वीर। प्रताप – प्रतापसिंह। उगरेस – उगरसिंह। सामत – सावतसिंह। सगतेस – शक्तिसिंह।

५४२ फतमाल – फनहसिंह। लुहा – लोहो, शस्त्रो। खळकट – सहार। लाल – लालसिंह। धिखै – प्रज्वलित होता है। भभकै – उमडता है। धियाग – आसमान। खडख्खड़ – ध्वनि विशेष। झड़ज्झड – कटना क्रिया, कटते हैं।

५४३ नीर – कांति। अवगाढ़ – वीर। माढ़ – जयसलमेर राज्य। सभर – साभर। संभरवाळ – चौहान।

५४४ उरै – झोकता है। तुरी – घोडा। अजबेस – अजबसिंह। भुहारव – भौंहो। भिड़ेस – स्पर्श करती है। चख – नेत्र। चोळ – लाल। धबोडत – प्रहार करता है। साबळ – भाला। धीठ – ढीठ, वीर।

उवक्कत[1] घाव रगत्र उलाळ ।
काळीभर[2] पत्र पिवत[3] कराळ ।
हिचै जुध 'लाल' तणौ हरियंद ।
मिळै[4] गज घूमर[5] जाणि मयद ।। ५४५

सभ्रै खग वाह[6] खळा समराथ ।
नरा सिणगार 'अजावत' 'नाथ' ।
रिमा सिर आछट[7] खाग रंगेस ।
मँडै[8] जुध 'सूर' तणौ 'मुकँदेस' ।। ५४६

असुरा[9] भट बाढत खाग अरोड ।
छछोहक 'सूर' तणौ रिणछोड[10] ।
वेरीहर[11] वाढत[12] वीजळ[13] वाह[14] ।
'मुरारिय[15]' सभ्रम 'माधव साह' ।। ५४७

'दलावत' 'हीमतसीघ[16]' दुबाह ।
'रमौ'[17] अजबेस[18] तणौ रिमराह ।
'कुजावत'[19] 'रत्तन'[20] लोह करत्त[21] ।
विढै[22] 'कुसळावत' सूर 'वखत्त[23]' ।। ५४८

---

१ ख उवक्कत । ग उवकत । २ ख कालीभरि । ३ ख. ग. पीवत । ४ ख. ग. मिले । ५ ख घूमर । ६ ख वाह । ७ ख ग आछटि । ८ ख ग मडे । ९ ख. अरी । १० ख ग रणछोड । ११ ख. वैरीहर । ग वेरीहर । १२ ख. ग ढाहत । १३ ख वीजल । १४ ख वाह । १५ ख. ग मुरारीय । १६ ख हिम्मतसिंघ । ग. हिम्मतसिंघ । १७ ख ग. रासौ । १८ ग अजवेस । १९ ख. ग. कौजावत । २० ख. रमन । २१ ख. करत । ग करत । २२ ख. विढ़ै । २३ ख. वख्खत । ग. वख्खत ।

---

५४५. उवक्कत – उमडता है । उलाळ – ऊंचा, ऊपर । लाल – लालसिंह । हरियद – हरिसिंह । गज घूमर – गज-समूह, गज-दल । जाणि – मानो । मयद – सिंह ।

५४६ खग वाह – तलवारका प्रहार । समराथ – समर्थ, वीर । अजावत – अजीतसिंहका पुत्र । नाथ – नाथूसिंह । सूर – सूरजसिंह । मुकँदेस – मुकुंदसिंह ।

५४७. अरोड – जबरदस्त । छछोहक – तेज । सूर – सूरजसिंह । रिणछोड – रिणछोड़दास नामक वीर । वेरीहर – शत्रुवंशज, शत्रु । वाढ़त – काटता है । वीजळ वाह – तलवारका प्रहार ।

५४८ कुसलावत – कुशलसिंहका पुत्र । रतन – रत्नसिंह । वखत्त – वखतसिंह ।

'धिरा'हर[1] 'नाहर' मूगळ[2] धींग ।
सझै 'सबळावत' दुरजणसीग[3] ।
झुकै[4] सर साबळ वीजळ[5] झेलि ।
पड़ै[6] रण खेत[7] खळा घण पेलि ॥ ५४६

वरे रँभ ताय उडाय विमाण[8] ।
चढै[9] अमरापुर सूर चहुाण[10] ।
दुरज्जण[11]-सीघ सुजाव दुबाह[12] ।
वधै[13] मधि राज करै खगवाह[14] ॥ ५५०

लड़ै हरिनाथ तणौ धख लागि ।
वडौ[15] भड 'गोवरधन्न' व्रजागि[16] ।
'अभैमल' चाड वडै[17] अवसाण ।
इसी विध[18] जग करै चहुवाण ॥ ५५१

सोनगरा—मँडै[19] भड़ सोनगरा[20] जुध माहि ।
सझे जुध ओरवियौ[21] 'दळसाहि' ।
कढै[22] खग वाह[23] करत कराळ ।
'चका खळ टूक[24] हुवै धखचाळ[25] ॥ ५५२

---

१ ख ग धाराहर । २ ख मूगल । ग मुगळ । ३ ख दुजणसींघ । ग दुर्जनसिंघ । ४ ख भुकै । ग भूकै । ५ ख ग वीजल । ६ ख. ग. पडे । ७ ख ग षेति । ८ ख. विमाण । ९ ख चढ़े । १० ख. चूह्वांण । ११ ग दुरजण । १२ ग दुवाह । १३ ख वधे । १४ ख षगवाह । १५ ख वडों । ग. वडो । १६ ग व्रझझागि । १७ ख. वडै । १८ ख ग. विधि । १९ ख ग मडे । २० ख सोनगिरा । २१ ख ग ओरवीयौ । २२ ख. कटे । ग कढ़े । २३ ख बाह । २४ ख वूक । २५ ख ग धकचाळ ।

---

५४६. धिरा—धीरसिंह । नाहर—नाहरसिंह । धींग—जबरदस्त । सबळावत—सबलसिंहका पुत्र ।

५५०. वरे—वरण कर के । रँभ—अप्सरा । चहुांण—चौहान वंशका राजपूत । दुबाह—वीर ।

५५१ धख—जोश । अभैमल—महाराजा अभयसिंह । चाड—रक्षा, सहायता । अवसांण—अवसर, मौका ।

५५२ सोनगरा—चौहान वंशकी एक शाखा । चका—चक्र, सेना । धखचाळ—युद्ध ।

घणा रत डूब[1] फटा[2] खिळ[3] घाट ।
पड़ै[4] रत चदण जाणि कपाट ।
उडै बहुबाण[5] परा वज्र[6] ऊक ।
रुका भ्रट ऊपर[7] बाजत[8] रूक ।। ५५३

सझै खळ मार छतीसैई[9] सार ।
वढै[10] वप[11] घाव करै जिण वार ।
'हरी'सुत[12] झेलत लोह हजार ।
अँगो अँग वाहत[13] लोह अपार ।। ५५४

इसी विध[14] लोह[15] करे अणथाह ।
सुरां[16] गुर खेत पड़ै[17] 'दलसाह' ।
परीवर[18] होय वडौ[19] जस पाय ।
चढै[20] असमाण विमांण[21] चलाय ।। ५५५

सकौधर[22] लोक तजै[23] दुख सोक ।
लहै[24] सुख अम्मर[25] अम्मरलोक[26] ।
मँडै[27] खग झाट खड़ै[28] किलमेस ।
'सुरौ'[29] 'दल साह' तणौ 'किसनेस' ।। ५५६

---

१ क डब । २ ख खट । ३ ख. पल । ४ ख. पडे । ५ ख चहुवाण । ग बहूवांण । ६ ख वज्र । ७ ख ग ऊपरि । ८ ग वाजत । ९ ख ग. छतीसैई । १० ख. वढे । ११ ख वप । १२ ख ग हरीसुत । १३ ख. ग वाहत । १४ ख बिधि । ग. विधि । १५ ख जग । १६ ख. ग. सूरा । १७ ख पडे । १८ ख. परीवए । १९ ख वडो । ग. वडो । २० ख ग. चढ़े । २१ ख विमाण । २२ ख. ग सकोधर । २३ ग. तजे । २४ ग लहे । २५ ख अम्मर । ग. अमर । २६ ख. अम्मरलोक । ग अमरलोक । २७ ख ग मढे । २८ ख. पडे । २९ ख. ग सूरो ।

---

५५३ फटा – फट गये । खिळ – दुष्ट, शत्रु । घाट – शरीर । रुका – तलवारो । भ्रट – प्रहार ।

५५४ सार – अस्त्र-शस्त्र । वप – वपु, शरीर । लोह – शस्त्र प्रहार ।

५५६ किलमेस – यवन, बादशाह । सुरो – सूरसिंह । दलसाह – दलसिंह । किसनेस – किसनसिंह ।

पडोसक[1] वाह[2] करै[3] अणपाल ।
'दलावत' साहिब-खान दुझाळ ।
रमै खग झाट वडौ रजपूत ।
उठै[4] 'हिमतेस' दुरज्जण[5]-ऊत ।। ५५७

किलम्मक[6] थाट हणै किरमाळ ।
'हठी' सुत वैरिय[7]- साल हठाळ ।
'सतावत' 'माधव' जगसजेस[8] ।
महाबळ[9] 'मोहण'रौ[10] 'अमरेस' ।। ५५८

सतावत[11] अम्मरसीघ[12] छछोह ।
लडायक घायक वाहत[13] लोह ।
अणी[14] खग झाट हणै दइवांन[15] ।
जुडै सुत दुज्जणसीघ[16] 'जवान' ।। ५५९

नरापति[17] जूटत पौरसनेम ।
'जुरावर'[18] 'वीरम'[19] राणग'[20] जेम[21] ।

---

१ क. पडासक । २ ख बाह । ३ ख. करे । ग कैरै । ४ ख. ऊठै । ग. उठे । ५ ग दुरजण । ६ ख. किलमक । ग किलमक । ७ ख. वैरीय । ग. वैरीय । ८ ख. जंगसझेस । ९ ख. माहाबळ । ग महाबळ । १० ग. रो । ११ ख. ग. छतावत । १२ ख आमरसींघ । ग अम्मरसिंघ । १३ ख. बाहत । १४ ख. अरी । १५ ख दईवांन । १६ ग. दुजणसीघ । १७ ग नरोपति । १८ ख. ग. जोरावर । १९ ख. बीरम । २० ख राणंग । ग राणग । २१ ख. ग जेम ।

---

५५७ पडीसक – तलवार । वाह – प्रहार । दलावत – दलसिंहका पुत्र । दुझाल – योद्धा । हिमतेस – हिम्मतसिंह । दुरज्जण-ऊत – दुर्जनसिंहका पुत्र ।

५५८. किलम्मक – यवन, मुसलमान । थाट – सेना । किरमाळ – तलवार । हठी – हठीसिंह । हठाळ – अपनी आन पर हठ करने वाला वीर । सतावत – शक्तिसिंहका पुत्र । माधव – माधोसिंह । मोहण – मोहनसिंह । अमरेस – अमरसिंह ।

५५९. लडायक – युद्ध करने वाला । घायक – घायल । लोह – शस्त्र । दइवांन – वीर । जवान – जवानसिंह ।

५६०. जुरावर – जोरावरसिंह । वीरम – वीरमदेव सोनगरा शाखाका चौहान । राणग – राणगदेव सोनगरा शाखाका चौहान ।

रचै धर-गूजर आरण रोस ।
जळधर[1] नीर चढावत जोस ॥ ५६०

जुधहर[2] अगाळ[3] दारुण जोध ।
कछवाह—करै जुध कूरमरा[4] सक्रोध ।
नरूहर ओर[5] तुरी नर नाह ।
सझै[6] जुध 'केहर'रौ[7] 'जयसाह' ॥ ५६१

रचै खग आछट पावक रग ।
बँगाळक[8] ऊडत[9] घाव बरग[10] ।
खळा पनँगा सिर[11] दाव खगेस ।
करै 'चँद्रभाण' तणौ[12] 'कुसळेस'[13] ॥ ५६२

'जगावत' 'माल' खळा जमराव ।
सझै[14] जुध 'चैन'[15] 'पिराग' सुजाव ।
तेगा झट वाहत[16] वाजत[17] त्रंब ।
'अँबानयरेस' चढ़ावत अब ॥ ५६३

उठै चत्रकोट वळा[18] उजवाळ[19] ।
करै जुध नाह[20] इहा[21] कळिचाळ ।

---

१ ख ग जालधर। २ ख जोधाहरि। ग जोधाहर। ३ ख ग. आगलि। ४ ख. ग राव। ५ ख ओरि। ६ ख. ग सझै। ७ ग. रो। ८ ग वगाळक। ९ ख ऊडत। ग. उडत। १० ग वरग। ११ ख सिरि। १२ ग तणो। १३ ख कुसलेस। १४ ग सजै। १५ ख. चैत। १६ ख बाहत। १७ ख बाजत। १८ ख ग छलां। १९ ख ग अजुवाल। २० ख नाग। २१ ख. द्रहा।

---

५६० धर-गूजर — गुजरात। आरण — युद्ध। जळधर — जालोर नगर।

५६१ जुधहर — राव जोधाके वंशज महाराजा अभयसिंह। कूरमरा — कच्छवाह वंशके। नरूहर — कच्छवाह वंशके नरूका शाखाका वीर। केहर — केसरीसिंह। जयसाह — जयसिंह।

५६२ खग — तलवार। आछट — प्रहार, वार। पावक — अग्नि। बँगाळक — मुसलमान। वरंग — खंड, टूक। पनँगा — नागो। खगेस — गरुड। कुसळेस — कुशलसिंह।

५६३ जगावत — जगरामसिंहका पुत्र। माल — मालदेव। जमराव — यमराज। चैन — चैनसिंह। पिराग — प्रयागसिंह। सुजाव — पुत्र। त्रंब — नगाडा। अँबानयरेस — आमेर नगर के राजा। अब — कांति, दीप्ति।

५६४. चत्रकोट — चित्तौड।

'अखावत' मोहणसीघ[1] उदार ।
सत्रा घट काढत सेल दुसार ॥ ५६४
महाबळ जूटत अम्मलमांण[2] ।
'जुरावर'[3] तेज तणौं जमराण ।
हिचै 'महिरांण खळां घट हूंत ।
कटै[4] असि[5] हेक लगै[6] वप कूत[7] ॥ ५६५
खगा झट वाहत[8] रौद्रव खूर ।
सझै जुध 'भारथ' सभ्रम 'सूर' ।
हई दळ मूगळ चाढत हीक ।
देवड़ा—महाबळ राड[9] करै मछरीक ॥ ५६६
जसावत दौलतसीघ[10] जगागि ।
'जगावत' 'जैत' लडै क्रुध[11] जागि ।
सझै खग झाट निसाट सताब ।
अबूगिर[12] सीस चढावत आब ॥ ५६७
बँबाळव लोयण घाट वराड[13] ।
'इँदौ'[14] भड एम लड़ै अवनाड ।

---

१ ग. मोहणसिंघ । २ क. अमलमाण । ३ ख ग जोरावर । ४ ख. ग कटे । ५ ख. हसि । ६ ख. लगो । ७ ग कूत । ८ ख. बाहत । ९ ख राडि । १० ग दोलतसिंघ । ११ ख ग कुध । १२ ख आवूगिर । ग आवूगिर । १३ ख बराड । १४ ख इंदा । ग इदा ।

---

५६४. अखावत – अक्षयसिंहका पुत्र ।
५६५ अम्मलमांण – वीर, योद्धा । जुरावर – जोरावरसिंह । हिचै – युद्ध करता है । महिरांण – समुद्रसिंह । कूत – भाला ।
५६६. रौद्रव – यवन, भयकर । खूर – समूह । भारथ – भारतसिंह । सूर – सूरसिंह । हई – घोडा । हीक – ( कम्पन ? ) । मछरीक – चौहान वशका राजपूत ।
५६७ जसावत – जसवतसिंहका पुत्र । जगावत – जगरामसिंहका पुत्र । जैत – जैतसिंह । निसाट – यवन, मुसलमान । सताब – शीघ्र । अबूगिर – आबू पर्वत । आब – कांति, दीप्ति ।
५६८. बँबाळव – भयकर, भयावह, जबरदस्त । लोयण – नेत्र । वराड़ – जबरदस्त । इँदौ – इन्द्रसिंह । अवनाड़ – आनाडसिंह ।

'अनौ' भड 'जैत' तणौ अणभंग ।
जुड़ै 'करणावत' देदल जग ॥ ५६८
उठै[1] 'जगतेस' खळा अजरैत ।
जुडै खग झाट समोभ्रम 'जैत' ।
सुत मळियागिर[2] ऊदल[3]-साह ।
ग्रहै[4] खग वाह[5] करै गजगाह ॥ ५६९
मांगलिया-'हृदौ'[6] भड गोरधनोत[7] हठाळ ।
तठै करमाळ करै रिणताळ ।
सुरां गुर भागचँदोत सकांम ।
रमै खग झाट 'हिरदय[8] राम' ॥ ५७०
वडा[9] खळ ढाहत साबळ[10] वाह ।
'गजावत' 'खीम' करै गजगाह ।
धसै[11] जुध मागळिया[12] भड धून ।
हुसै[13] दळ मारण नेजम[14] हूत[15] ॥ ५७१
'हरी' 'सबळेस' तणौ[16] करि हाक ।
करै खग भूक घणा किलमाक ।

---

१ ग उठे । २ ख ग मलियागर । ३ ग उदल । ४ ख ग्रहे । ५ ख वाह । ६ ग हदो । ७ ख गोरघनोत । ८ ख हिरद्दय । ९ ख. वडा । १० ख सावळ । ११ ख घसे । १२ ग मागलीया । १३ ख दुसै । ग दूसै । १४ ख ग नैजम । १५ ख. ग. दूत । १६ ग तणो ।

---

५६८ अनो – अनाडसिंह । जैत – जैतसिंह । जुडै – भिडता है, युद्ध करता है । करणावत – राठौड वंशकी करणावत शाखाका वीर । देदल – देदलसिंह ।

५६९ जगतेस – जगतसिंह । अजरैत – जबरदस्त, अजयी । जैत – जैतसिंह । सुत – पुत्र । मळियागिर – चंदनसिंह । ऊदलसाह – उदयसिंह । वाह – प्रहार । गजगाह – युद्ध ।

५७०. हृदौ – हृदयसिंह । तठै – वहां । करमाळ – तलवार । रिणताळ – युद्ध । भागचँदोत – भागचंद्रका पुत्र ।

५७१. ढाहत – गिराता है, मारता है । साबळ – भाला विशेष । गजावत – गजसिंहका पुत्र । खीम – खीमसिंह । मागळिया – गहलोत वंशकी एक शाखा । धूत – मस्त, उन्मत्त । नेजम – भाला ।

५७२ हरी – हरिसिंह । सबळेस – सबलसिंह । हाक – जोशपूर्ण आवाज ।

महाबळ वीजळ[1] झाट 'अमान' ।
खहै 'अमरावत' साहिब - खान ॥ ५७२
जठै रहियौ रवि कौतक[2] जोय ।
दियै[3] खग झाट जठै हुल दोय ।
'अजावत' साहिबसीघ[4] 'अनोप'[5]
उमेदहवार लडै भड ओप ॥ ५७३
विढै[6] इक भायण तेग बुहाण[7] ।
सुतं[8] 'रतनागर' द्रूठ 'सुजांण' ।
पुरोहित केसरीसिंह- सभ्रै सिवडापति दारण सूर ।
पिरोहित 'केहरियौ[9]' रसपूर[10] ॥ ५७४
वडां[11] घर एह सदा लगि वीर ।
धणी छळ आवत काम सधीर ।
ददौ[12] इण 'केहररौ' दइवाण[13] ।
उजैणिय[14] खेत वडै[15] अवसांण ॥ ५७५
'जसा' छळ[16] पौरस झाळ जगत्ति[17] ।
दिलीपतहूत[18] लड़ै 'दळपत्ति' ।

---

१ ख. बीजल २ ख कौतिग । ग कौतिक । ३ ख दीयै । ४ ख ग साहिबसिंघ । ५ ग अनोप । ६ ख बढ़ै । ७ ख वहांण । ग बहाण । ८ ग सुत । ९ ख केहर । १० ख पौरस । ११ ख बडो । ग वडो । १२ ख ग. दावौ । १३ ख ग दईवाण । १४ ख. ग उजेणीय । १५ ख बडै । १६ ख ग छळि । १७ ख ग. जगति । १८ ख ग दिलीपतिहूंत ।

---

५७२. खहै – युद्ध करता है । अमरावत – अमरसिंहका पुत्र ।

५७३. जठै – जहा । हुल – ( ? ) । अजावत – अजीतसिंहका पुत्र । अनोप – अनोपसिंह ।

५७४. भायण – ( ? ) । बुहाण – प्रहार होने पर । रतनागर – समुद्रसिंह । द्रूठ – जबरदस्त । सुजांण – सुजानसिंह । सिवडापति – सिवड शाखाका राजगुरु पुरोहित । पिरोहित – पुरोहित । केहरियौ – केसरीसिंह ।

५७५. घर – वंश । सदा लगि – सदैव, नित्य । धणी – स्वामी । छळ – लिए, युद्ध । आवत ' सधीर – युद्धमे वीर गति प्राप्त होते हैं । ददौ – पितामह । केहररौ – केसरीसिंहका । दइवाण – वीर । अवसांण – युद्ध ।

५७६. जसा – महाराजा जसवंतसिंह । छळ – लिए । दिलीपत – बादशाह । दळपति – दलपतसिंह पुरोहित जो केसरीसिंह पुरोहितका पितामह था ।

झटां खग 'औरग' धूमर[1] झाडि ।
पडै[2] झलि लोह घणा खळ पाड़ि ।। ५७६

परी[3] वरि[4] स्रुग[5] वसै[6] 'दळपत्ति'[7] ।
उसी हिज[8] 'केहर' कीध उकत्ति[9] ।
चढी[10] नह सिल्लह अँग बचाव[11] ।
सादोहिज[12] ताम ,कटै सिर पाव ।। ५७७

जमद्दढ[13] खाग कसै[14] जमराण ।
पला भख साबळ[15] रोळवि पांण ।
छूँटे[16] असि तांम चढै[17] छक छोह ।
लिधी[18] नह ढाल वचावण[19] लोह ।। ५७८

सकौ[20] जुधहूत हरोळ[21] सधीर ।
वधै[22] असि झोक[23] लियौ[24] नरवीर ।
आडा[25] दळ टक्करहूंत उडाय ।
जडा[26] दळ वीच[27] कियौ[28] जुध जाय ।। ५७९

---

१ ख. धूमर । २ ग पडे । ३ ग पारी । ४ ख. वरि । ५ ख. ग. श्रुगि । ६ ख. वसे । ग वसे । ७ ख. दलपति । ८ ख. हीज । ९ ख उकति । १० ख ग. चाढ़ी । ११ ख. बचाउ । ग. बचाउ । १२ ख ग. सादोहिज । १३ ख ग जमदढ़ । १४ ख. ग कसे । १५ ग सावळ । १६ ख ग छाटै । १७ ख चढे । १८ ख लीधी । १९ ख बचावण । २० ख ग सको । २१ ख ग हरोल । २२ ख बधे । ग वधे । २३ ख. ग. झीक । २४ ख लीयो । २५ ख ग आडा । २६ ख ग जाडा । २७ ख. वीचि । २८ ख. ग कीयो ।

---

५७६ औरग – बादशाह औरगजेब । धूमर – सेना । पड़ै – वीर गतिको प्राप्त हुआ ।

५७७ परी – अप्सरा । वरी – वरण कर के । स्रुग – स्वर्ग । दळपत्ति – दलपतसिंह पुरोहित ।

५७८ लोह – शस्त्र-प्रहार ।

५७९ जडा – घना ।

घमोडत मूगळ[1] साबळ *घाय ।
अड़ै बड हाथहुंता घड़ आय ।
लेतां खळ आवत साबळ* लार ।
काटै जिम खाचत मच्छ सिकार ।। ५८०

धमधम वाजत[2] सेल धमोड ।
जठै रत छौळ[3] पड़ै जळ जोड ।
पियै[4] भरि खप्पर जोगणि पूर ।
सराहत नारद सकर[5] सूर ।। ५८१

सिलेह[6] घड़[7] पाखर बधि[8] सुचग ।
पड़ै भरळक्कत फूटि पमग ।
सथे[9] हिज फूटत घाट दुसार ।
उडै हस[10] बाज अनै[11] असवार ।। ५८२

करै धज वाह[12] वा[13] कडकत ।
जई मद नीझर[14] सेल जडत ।
करां कर[15] जोर छडाळ कढंत ।
अमावड घाव भरै[16] उबकंत ।। ५८३

---

१ ग मुगल ।
*·*चिन्हाकित पद्यांश ख प्रतिमे नही है ।
२ ख वाजत । ३ ग. छोळ । ४ ख पीयै । ५ क. सूकर । ६ ख. ग. सिल्है । ७ ख ग धड । ८ ख. बेधि । ग वेधि । ९ ख. सायै । ग. साथे । १० ग. हत्ते । ११ ग अने । १२ ख वाह । १३ ग. तवा । १४ ग. नीजर । १५ ग. करि । १६ ख भरे ।

---

५८० घमोड़त – प्रहार करता है । घाय – प्रहार ।

५८१ घमोड – प्रहार । जठै – जहा । रत – रक्त, खून । छौळ – धारा, तरग । सराहत – सराहना करता है । सूर – सूर्य ।

५८२. सिलेह – कवच । भरळक्कत – प्रहार । पमंग – घोडा । हस – प्राण । बाज – घोडा । अनै – और ।

५८३. धज – भाला । सेल जडत – प्रहार करता है । छडाळ – भाला । अमावड़ – अपार, बहुत । उबकत – उमड़ता है ।

जठै रत छीछ गज[1] सिर जाय ।
लगी किर[2] पाहड ऊपर[3] लाय[4] ।
तुटै[5] इम बाहत[6] साबळ ताम ।
कछी[7] खग ताम सुरापण[8] काम ।। ५८४
पछट्टत[9] वीजळि[10] 'केहर'[11] पाणि ।
सिलह[12] बध हेक[13] करै घमसाणि[14] ।
जुडै चहुवै-दळ[15] रोद[16] ग्रजागि[17] ।
खिवै घण 'केहर' ऊपर[18] खग्गि[19] ।। ५८५
ग्रणी सिर सेल भिडै ग्रवगाढि[20] ।
वजै[21] सिर[22] गह्वर[23] धजर[24] वाढि[25] ।
चहच्चह[26] चंड पियै[27] रतचोळ ।
बँबाळव गात हुवै भकबोळ ।। ५८६
जाणै[28] दळ रामण ऊपरि[29] जाय[30] ।
लड़ै हणमत सिंदूर लगाय ।

---

१ ख गजा । २ ख ग. किरि । ३ ग उपर । ४ ग. लाई । ५ ख. ग. तूटो । ६ ग वाहत । ७ ख. कढ़ो । ८ ख सूरापण । ग सुरापण । ९ ग पछटत । १० ख बीजल । ग वीजळि । ११ ख केहरि । १२ ख ग. सिल्है । १३ ग. एक । १४ ग घमसाण । १५ ख. बल । ग. चल । १६ ख. रौद । १७ ख. व्रजाग । १८ ख ऊपरि । ग उपर । १९ ख. ग. खाग । २० ख ग अवगाढ । २१ ख वजै । २२ ख र । २३ ख ग गझ्भर । २४ ख. धज्जर । २५ ख वाढ़ । २६ ख ग चहचह । २७ ख पीयै । २८ ख. जाणे । २९ ग. उपरि । ३० ख. प्रतिमे नही है ।

---

५८४ जठै – जहा । रत – रक्त । छींछ – धार, धारा । किर – मानो । लाय – आग, अग्नि ।

५८५ पछट्टत – प्रहार करता है । वीजळि – तलवार । केहर – केसरीसिंह । पाणि – हाथ । सिलह बध – योद्धा । रोद – यवन । ग्रजागि – जबरदस्त । खिवै – चमकती है ।

५८६ ग्रवगाढि – वीर, योद्धा । गह्वर – तलवार (?) । धजर – भाला । वाढ़ि – काट कर । चहच्चह – द्रव पदार्थको मुहसे खीच कर पीनेकी क्रिया या इस प्रकारसे पीनेसे होने वाली ध्वनि । चड – रणचडी, दुर्गा । रतचोळ – लाल रक्त, लाल खून । बँबाळव – जबरदस्त । गात – शरीर । भकबोळ – तरबतर ।

५८७ हणमत – हनुमान ।

तुटी[1] खग रोद[2] घडा पर तीख ।
सही[3] जमदाढक झाळ सरीख ।। ५८७

करै उव राव[4] दुसार कटार ।
वहै[5] कठि हार परी जिण वार[6] ।
लागौ[7] हणमत[8] पराक्रम[9] लेखि ।
दियै[10] नह हार जति[11] वप[12] देखि ।। ५८८

झझक्कत[13] वारँग[14] फेर झुकत ।
हुवै इम चूक[15] मुनेस हसत ।
उठै दुजराज हसै[16] रिझवार ।
हसत विलोक[17] करै[18] उरहार[19] ।। ५८९

'अभा' छळि एम लड़ै[20] दइवाण[21] ।
घणा वज्र[22] झेलि पड़ै[23] घमसांण ।
रथा चढि रंभ अनै दुजराज ।
सुरा पुर कीध प्रवेस सकाज ।। ५९०

---

१ ख ग तूटी । २ ख ग. रौद । ३ ख. ग साही । ४ ख. राब । ५ ख बाहै । ग वाहै । ६ ख. बार । ७ ख लागौ । ८ ख हमत । ९ ख पराक्र । १० ख ग दीयै । ११ ख ग जती । १२ ख. वप । ग वप । १३ ख झझकत । १४ ख बारग । १५ ख चौंक । १६ ख. ग हसे । १७ ख विलोकि । ग. विलोकि । १८ ख घरे । ग. करे । १९ ख. गलिहार । २० ख लडे । २१ ख वईवांण । २२ ख. बज्र । २३ ख. पडे ।

---

५८७ रोद – यवन । घडा – सेना । जमदाढक – कटार विशेष । झाळ – आगकी लपट । सरीख – समान ।

५८८ जिण वार – जिस समय । जति – जितेन्द्रिय, यति ।

५८९. झझक्कत – चौंकती है । वारँग – अप्सरा । मुनेस – मुनीश, नारद मुनि ।

५९० अभा – महाराजा अभयसिंह । छळि – लिए, युद्ध । वज्र – तलवार । झेलि – सहन कर के । घमसांण – युद्ध । रभ – अप्सरा । दुजराज – पुरोहित केसरीसिंह ।

पितामह पाय[1] लगै[2] सप्रवंति[3] ।
दिवी[4] तदि दादि घणी 'दळपत्ति'[5] ।
'अखावत' एम वसे स्रुगि आय ।
जिते धर अंबर नांम न जाय ॥ ५६१

चारणरो जुध करणौ

'जसावत' सूर 'सुभै' अजरग ।
सभै[6] जुध बीच[7] गरक्क सुरग ।
वेधै[8] खळ साबळ चोळ वरन्न[9] ।
कहै रवि भोक लड़ै 'सुभक्रन्न'[10] ॥ ५६२
करा 'सुभसाह' वहै[11] किरमाळ ।
बगत्तर[12] पोस कटत्त बंगाळ[13] ।
सभै[14] खग ऊजळ भाटक सूर ।
पिळा[15] अखतेस चढावत पूर ॥ ५६३
मँडै[16] तिण बार[17] फतै[18] जुध माह ।
उदावत[19] नाहर खान दुबाह[20] ।
. . . . . .. ......... . . .. ।
... . . .. . . .. ॥ ५६४

---

१ क पाप । २ ख. ग लगे । ३ ख. सप्रवित्त । ग. सप्रवति । ४ ख. ग दीवो । ५ ख. ग दलपति । ६ ख ग सभै । ७ ख. वीचि । ग. वीच । ८ ख. बेधे । ग. वेधे । ९ ख वरन्न । ग वरन । १० ख. सुभक्रन्न । ग सुभक्रन । ११ ख. बहै । १२ ख. वगतर । ग वगत्तर । १३ ख वगोळ । ग वगाळ । १४ ख. ग. सभै । १५ ख ग पीला । १६ ग मडे । १७ ख ग. वार । १८ ख फतो । १९ ख. दूदावत । ग दुदावत । २० ग दुवाह ।

---

५६१. पाय – चरण । सप्रवति – शीघ्र । दादि – धन्यवाद । दळपत्ति – दलपतसिंह पुरोहित ।

५६२. जसावत – जयसिंह बारहठ । सुभै – शुभकरण बारहठ । अजरग – जबरदस्त । सुरग – घोडा । चोळ वरन्न – लाल रग । रवि – सूर्य । भोक – धन्यवाद ।

५६३ करा – हाथो । सुभसाह – शुभकरण । वहै – चलती है । किरमाळ – तलवार । वगत्तर पोस – कवचधारी । वगोळ – मुसलमान । पिळा अखतेस – पीले अक्षत । केसर या हल्दीमे रगे हुए पीले रगके चावल जो विवाहादि मागलिक अवसरो पर निमन्त्रण पत्रके रूपमे इष्ट मित्रो व सम्बन्धियोके यहा भेजे जाते हैं ।

५६४ ( ? ) ।

हिचै[1] तदि चारण झोक[2] हुवास ।
सिरै व्रत[3] बारट[4] गोरख दास ।
सदा कमधां मुहरै[5] अवसाण ।
रचै जुध दारण रोहडरांण ।। ५६५
जिकै पित 'केहरि' दारण[6] जग ।
'अजा'[7] छळ[8] कीध अनेक अभग ।
विखा मझि मेछ दळा खग[9] वाह[10] ।
सझै[11] बहवार[12] सुणी पतसाह[13] ।। ५६६
इसौ[14] भड केहर[15] री[16] दइवाण[17] ।
पटोधर[18] जूटत पौरस पाण ।
उडै असि तेज मजेज उपाट ।
झडै[19] खळ[20] 'गोरख' वीजळ[21] झाट ।। ५६७
लगी नर है तिल हेक[22] लगांण ।
जरद्द मरद्द कटे जँगमाण ।

---

१ ख. हीचै । २ ख. झोकि । ३ ख ग व्रन । ४ ख बाहग । ५ ख मोहौरै । ग मोहौरै । ६ ख दारुण । ७ ख अजै । ग अझा । ८ ख छलि । ९ ख षगि । १० ग वाह । ११ ख. सझे । १२ ख. बौहौवारि । वहौवार । १३ ख. ग पतिसाह । १४ ख ग यसौ । १५ ख केहरि । १६ ख ग रो । १७ ख ग दईवाण । १८ ख ग पाटोधर । १९ ख. ग झाडै । २० ख षग । २१ ख वीजल । ग वीझळ । २२ ग. हैक ।

---

५६५ हिचै – युद्ध करता है । झोक हुवास – धन्यवाद प्राप्त करने योग्य । सिरै व्रत – अपना नियम निभानेमे श्रेष्ठ । दारण – वीर, जबरदस्त । रोहड रांण – रोहडिया शाखाके चारणोमे सर्व-श्रेष्ठ ।

५६६. जिकै केहरि – जिसके पिता केसरीसिंहने महाराजा अजीतसिंहकी सेवामें कई युद्ध किए थे । अजा – महाराजा अजीतसिंह । विखा – आपत्तिकाल, सकटका समय । खगवाह – वीर, बहादुर ।

५६७. इसौ – ऐसा । केहररी – केसरीसिंहका । दइवांण – वीर । पटोधर – पट्टाधिकारी । जूटत – भिडता है । पांण = प्राण – बल, शक्ति । मजेज – शीघ्र । झड़ै – वीर-गतिको प्राप्त होते हैं । गोरख – बारहठ केसरीसिंहका बडा पुत्र गोरखदान । वीजळ – तलवार । झाट – प्रहार ।

५६८. जरद्द – कवच । मरद्द – मर्द, वीर । जँगमांण – घोडा ।

सदा सिव तांम लिये[1] खळ सीस ।
स्रुणी[2] स्रपी चड[3] देत असीस ॥ ५६८

हईवर[4] पाय असीसत हूर ।
समोभ्रम 'केहर' कायम सूर ।
सझै[5] जुध वीजळ मूगळ साथ ।
रिधू 'जसराज' तणौ[6] रुघनाथ ॥ ५६६

बराछक[7] उपट[8] घाट बराड[9] ।
धसै[10] जुध[11] पूर विचै 'धधवाड' ।
धिखै दहुवै[12] चख[13] पावक धाम ।
तीजा चख ईस तणा जिम ताम ॥ ६००

मुछार[14] भुहार[15] मिळै[16] मगरूर ।
सोभा मुख जांणक[17] ग्रीखम सूर ।
भयकर रूप वणै[18] जिम भेस ।
महाभड[19] 'केसर'रौ 'मुकँदेस' ॥ ६०१

---

१ ख लीयै। ग लियैं। २ ख ग. श्रोणी। ३ ख. वड। ४ ख ग. हयीवर। ५ ख. ग सझै। ६ ग. तणो। ७ ग. वराछक। ८ ख ऊपट। ९ ग. वराड़। १० ख. धसे। ११ ग. जूध। १२ ख. दहुवे। १३ ख घष। १४ ख मुछार। १५ ख. भुंहार। ग. भूहार। १६ ख. मिडे। १७ ख. ग. जाणिक। १८ ख वणे। ग वणे। १९ ख महावल।

---

५६८. स्रत्र – रक्त, खून। पी – पी कर। चड – रणचडी। असीस – आशीर्वाद।

५६६ हईवर – योद्धा, वीर। असीसत – आशीर्वाद देती है। हूर – अप्सरा। समोभ्रम – पुत्र। केहर – वारहठ केसरीसिंह। सझै – मारता है, सहार करता है। साथ – सेना, दल। रिधू – अटल, दृढ। जसराज तणौ – जयसिंहका पुत्र शुभकरणसिंह वारहठ। रुघनाथ – रुघनाथदान वारहठ।

६०० वराछक – जवरदस्त, प्रचड। घाट – रचना, वनावट, शरीर। वराड – जवरदस्त। धधवाड – द्वारकादास और मुकुन्ददान धधवाडिया गोत्रके चारण। दहुवै – दोनो। पावक – अग्नि। चख – चक्षु, नेत्र। ईस – रुद्र, महादेव।

६०१. मुछार – मूछ, श्मश्रु। भुहार – भौहो। मगरूर – वीर। जाणक – मानो। ग्रीखम सूर – ग्रीष्म ऋतुका सूर्य। केसर – केसरीसिंह चारण कवि। मुकँदेस – मुकुददान धधवाडिया गोत्रका चारण कवि।

वडा खळ वेधत[1] साबळ[2] वाह[3] ।
लियै[4] लटियाळ तुरी कपि लाह ।
जुड़ै[5] धज सेल पडै जवनेस ।
दखै[6] रवि ताम भोका 'मुकदेस' ॥ ६०२

छौगी[7] सिर सोनहरी[8] छवगाळ ।
भळकत सूरज रूप भलाळ ।
वधै[9] खळ लेत नटा जिम वस[10] ।
हुई घट फटत छूटत[11] हस ॥ ६०३

मुजाइद[12] सेख तणा सुत मांम ।
नवी[13] बगसीस महम्मद[14] नाम ।
करां खग कढ्ढिक[15] रूप करूर ।
मिळै[16] महिराण[17] हुता[18] मगरूर ॥ ६०४

महम्मद सेख तणै महराण ।
उभै[19] धज साबळ पाण जवाण[20] ।

---

१ ख वेधत । २ क सबळ । ३ ख. ग. वाह । ४ ख. लीयै । ५ ख. जडै । ६ ख. ग दाखै । ७ ख ग छोगो । ८ ख नहसोरी । ६ ख. वेधे । ग. वेधै । १० ख. वस । ११ ख ग. छुटत । १२ ख मुजाहिद । १३ ग नबी । १४ ख महमद । १५ ख कट्टोक । १६ ख. ग. मिले । १७ ख. महराण । १८ ख. हुता । ग हुता । १६ ख ग जडै । २० ख जुवाण ।

---

६०२. वेधत – सहार करता है । वाह – प्रहार । लटियाळ – देवी, जटाधारी । तुरी – घोडा । कपि – ( ? ) । जुडै – प्रहार करता है । धज – तलवार । जवनेस – यवन, मुसलमान । दखै – कहता है । रवि – सूर्य । भोका – शाबाश, वाहवाह । मुकदेस – मुकुंददान दधवाडिया गोत्र का चारण कवि ।

६०३. छौगो – श्रवतश, श्रेष्ठ । छवगाळ – शौकीन । भळकत – चमकता है । भलाळ – भाला या भालाधारी । हई – घोडा । हस – प्राण ।

६०४ नवी – ईश्वरका दूत । महिराण – रणछोड । मगरूर – गर्व रखने वाला, जोशीला ।

६०५ महरांण – समुद्रसिह । जवाण – जवानसिंह ।

मिळै[1] भुज घाट दूजौ भलमार[2] ।
पडै[3] खळि[4] भोमि[5] हुवौ[6] खळपार ॥ ६०५
नवी बगसीस खिजै नरनाह ।
वाही[7] 'महरांण' परा खग वाह[8] ।
झलै[9] खग हाथ कढी[10] खग झाळ ।
वाहो[11] 'महराण' खिजै[12] विकराळ[13] ॥ ६०६
उभै हुय टूक पड़ै[14] असुरांण ।
किधा[15] करि राज सवंटि किसांण[16] ।
नवी बगसीस पड़ै[17] सजि[18] जोड़ ।
तरोवर वीज[19] गई किर तोड ॥ ६०७
सोहै[20] हथ घाव सुरग सुभेव ।
हुवौ[21] रग मेछ धडा हथळेव ।
किया[22] खग चोळ 'मुकंद' सकाज ।
सभै महराज हुता[23] सुभराज ॥ ६०८
इसी करतौ[24] गुण झाट उपाट ।
झडै[25] खळ[26] खेलि[27] तसी[28] खग झाट ।

---

१ ख सिल्है । ग सिले । २ ख ग भुजसार । ३ ख पडे । ४ ख षल । ५ ख. भोम । ६ ख ग हुग्रो । ७ ख बाही । ८ ख वाह । ९ ख. झले । १० ख. कटी । ११ ख बाही । १२ ख. षिजे । १३ ग. विकराळ । १४ ग पडै । १५ ख. ग कीधी । १६ ग. कसाण । १७ ख. ग. पडे । १८ ख सनि । ग सजि । १९ ख. बीज । २० ख. ग. सोहै । २१ ख हुग्रो । ग हुग्रो । २२ ख कीयां । २३ ख ग माहाराजहुत्ता । २४ ग करतो । २५ ख झाडे । ग झाडे । २६ ख. षग । २७ ख. लेष । २८ ख तिसी ।

---

६०६ खिजै – कोप करता है । वाही – प्रहार किया ।

६०७ टूक – खंड । पडै – वीर गति प्राप्त हुए । असुराण – यवन । किसाण – कृषक । तरोवर – तरुवर, वृक्ष । वीज – विजली, उल्का ।

६०८ सोहै – शोभा देना है । हथ घाव – हाथका प्रहार । सुरंग – लाल । रग – आनंद । मेछ – यवन । धड़ा – सेना । हथळेव – पाणि-ग्रहण, पाणि-पीडन । मुकंद – मुकुददान दधवाडिया गोत्रका चारण कवि । सभै ... सुभराज – महाराजा अभयसिहजीसे अभिवादन किया ।

६०९ इसी – ऐसी । गुण – काव्य, कविता । भाट – झडी । उपाट – विशेष । झड़ै – वीर गति प्राप्त कर के । तसी – वैसी ही ।

'द्वरी'[1] इण भात[2] लडै दइवाण[3] ।
वँचै[4] कवि लेखहुता[5] ब्रह्मांण[6] ॥ ६०९

तठै छक छोह 'विसन्न'[7] सुतन्न[8] ।
विजूजळ[9] कढ्ढिय[10] लाल वरन्न[11] ।
सहू[12] जुध 'खेतल' दारुण सूर ।
खगा झट ढाहत मूगळ[13] खूर ॥ ६१०

जठै खिडियौ[14] इक आगि ब्रजागि[15] ।
लुहां[16] झट देति[17] खळा धख लागि ।
तिकौ 'वखतेस'[18] कठीरव तेम ।
जुडै 'अमरा' 'धरमावत' जेम ॥ ६११

उठै 'महियार'[19] 'नवल्ल[20]' अपल्ल ।
मँडै[21] जुध बारठ[22] 'सूरजमळ्ळ' ।
जुडै खिडियौ[23] इक वेस[24] जवान ।
दियै[25] खग झाट खळां 'सतिदान' ॥ ६१२

---

१ ख ग द्वारो। २ ख भाति। ३ ख ग दईवाण। ४ ख. ग वचे। ५ ख लेख-हूता। ६ ख सुभराण। ग व्रह्ममांण। ७ ख विसन। ग विसंन। ८ ख. ग. सुतन। ९ ख बीजूजल। १० ख कढ्ढीय। ग कढ़ीय। ११ ख वरन्न। ग वरन। १२ ख. ग सांदू। १३ ख. मूगल। ग. मुगल। १४ ख ग षडीयौ। १५ ख ग व्रजागि। १६ ख. ग लोहा। १७ ख ग. देत। १८ ख वषतेस। १९ ख. ग महीयार। २० ख ग. नघल। २१ ख ग मडे। २२ ख ग बारट। २३ ख. षडीयो। ग. षडियौ। २४ ख वेस। २५ ख. दीयें। ग दिये।

---

६०९. द्वारी – द्वारकादास दधवाडिया गोत्रका चारण कवि। दइवाण – वीर।

६१० विसन्न – कविका नाम। सुतन्न – पुत्र। विजूजळ – तलवार। वरन्न – वर्ण, रंग। खेतल – खेतसी नामक सादू गोत्रका चारण कवि, नाथाका पुत्र। झट – प्रहार। ढाहत – सहार करता है। खूर – समूह, दल।

६११ खिडियौ – चारणोमें खिडिया गोत्रका चारण कवि। लुहां – लोहा, शस्त्र-प्रहारो। धख – जोश। वखतेस – वखता खिडिया गोत्रका चारण कवि। कठीरव – सिंह। अमरा – महाराजा अजीतसिंहकी सेवामे रहने वाला चारण कवि। धरमावत – धरमाका पुत्र।

६१२ महियार – चारणोका एक गोत्र। नवल्ल – नवलदान महियारिया गोत्रका चारण कवि। मँडै – रचता है, करता है। सूरजमळ्ळ – सूरजमल नामक चारण कवि। वेस – वयस, आयु। सतिदान – शक्तिदान नामक खिडिया गोत्रका चारण कवि।

तिकौ[1] अचरिज्ज[2] किसौ[3] घर तास ।
दादौ जिण दारण 'भैरवदास'[4] ।
'धिराहर'[5] बाजत 'आसल' धीर ।
'विठू'[6] जयरांम लड़ै नर वीर[7] ॥ ६१३

इता भड चारण क्रोध असाधि ।
विढै[8] वरदायक[9] वीर[10] विराध[11] ।
खेलै[12] निहचंत झटां भल खड ।
चहायक हेत सहायक चंड ॥ ६१४

तिकै कुळ सूर हुआ[13] तिणवार[14] ।
जिकै[15] व्रद[16] पात कहै जिणवार[17] ।
वडौ[18] खळ थाट हणै[19] गज बोह[20] ।
छतीसह वस[21] चाढवण[22] छोह ॥ ६१५

कहै व्रद[23] आय खळा दळ काप ।
प्रिथीपति धूहड लूण प्रताप ।

**इति चारण जुध ।**

---

१ ख ग. तिको । २ ख ग. अचिरज । ३ ग. किसो । ४ ग. भैरुवदास । ५ ख. ग धाराहर । ६ ख. बीठू । ग वीठू । ७ ख. बीर । ८ ख बिढ़ै । ९ ख. बरदायक । १० ख. वीर । ११ ख बीराध । १२ ख. ग षेल्है । १३ ख. ग. हुवा । १४ ख. तिणबार । १५ ख ग जिके । १६ ग. व्रिद । १७ ख. जिणबार । १८ ख बडो । १९ ख हुणे । २० बौह । २१ ख वस । २२ ख ग. चढ़ावत । २३ ख. ग. व्रिद ।

---

६१३ अचरिज्ज – आश्चर्य । दादौ – पितामह । दारण – जबरदस्त । धिराहर – कविका नाम । आसल धीर – आसिया गोत्रका धीरजराम चारण कवि । विठू जयरांम – चारणोंमे रोहड़िया गोत्रका वीठू शाखाका जयराम कवि ।

६१४ असाधि – असाध्य, अपार । विढ़ै – युद्ध करते हैं । वरदायक – विरुदायक, जोश दिलाने वाले, विरुदाने वाले । वीर विराध – महावीर । चहायक – चाहने वाला । चंड – रणचंडी, दुर्गा ।

६१५ पात – चारण कवि । थाट – दल, सेना । गजबोह – गजव्यूह । छोह – क्षोभ, कीर्ति, यश, उमंग ।

६१६ व्रद – विरुद, कीर्ति । धूहड – राव धूहडके वंशज, राठौड़ ।

ब्राह्मण– भिडै ब्रह्म[1] खत्रिय[2] धरम्म[3] अभ्यास ।
वधै[4] जुध स्यांम-ध्रमी पति व्यास ।। ६१६

'दिपावत'[5] हाथ न लेत उदक्क[6] ।
रुकां बळ[7] लेत पवित्र रिजक्क[8] ।
जिको[9] अजवाळ[10] लियै[11] जसवास ।
फतैचँद सूर वाहै खग व्यास* ।। ६१७

लड़ै[12] तिण वार[13] अडीखभ 'लाल' ।
दळै[14] खळ रांमचँद्रेस दुभाल ।
उदैचँद हाथिय[15] रांम अभग ।
जुडै तदि गाहड-मल्ल[16] सुजग ।। ६१८

अरी सिर तोड[17] रगत्त[18] उफाण[19] ।
पुजै सिव सग्गति[20] विजळ[21] पाण[22] ।
रमाइण[23] भारथ वाणि रटाण ।
इसी विध[24] व्यास लड़ै दइवांण[25] ।। ६१९

---

१ ख ग. व्रह्म । २ ख षत्रीय । ३ ख ध्रम । ग. धरम । ४ ख. ग. वधे । ५ ख. ग दीपावत । ६ ख ग उद्दक । ७ ख बलि । ग बलि । ८ ख रिज्जक । ग रिझ्झक । ९ ख. ग जिको । १० ख भुजवाल । ११ ख ग लीयै ।

*यह पक्ति ख तथा ग प्रतियोंमे निम्न प्रकार है—
'वाहै षग सूर फतेचद व्यास ।'

१२ ख. लड़े । १३ ख बार । १४ ख दलै । १५ ख. ग हाथीय । १६ ख. गाहड-माल । ग. मल । १७ ख तोडि । १८ ख रग्गत । १९ ख. उफाणि । २० ख सक्कति । ग सगति । २१ ख बीजल । ग बीजळ । २२ ख पांणि । २३ ख. ग. रांमायण । २४ ख बिधि । ग विधि । २५ ख ग. दईवांण ।

---

६१७. दीपावत – दीपचद व्यासका पुत्र फतेहचद व्यास । उदक्क – उदक, जल, जल-सकल्प द्वारा लिया गया दान । रुकां – तलवारो । रिजक्क – रोजी, जागीर । अजवाळ – उज्ज्वल कर के । जसवास – यश, कीर्ति ।

६१८. अड़ीखभ – जबरदस्त, शक्तिशाली । लाल – लालचन्द । रांमचँद्रेस – रामचन्द्र, ब्राह्मण । उदैचँद – भाई उदयचद । हाथियरांम – हाथीराम ।

६१९. रगत्त – रक्त, खून । रमाइण – रामायण । भारथ – महाभारत । रटाण – रटी गई, पढी गई ।

भंडारी– दळां खळ झोकि तुरी हुजदार ।
भँडारिय[1] जूटत जै गज भार ।
सकौ[2] सिरपोस 'गिरद्धर'[3] सूर ।
पटोधर 'ऊद'तणौ छक पूर ॥ ६२०
भुहा[4] भिडि मूछ चखां[5] विकराळ[6] ।
काले असि औरवियौ[7] कळिचाळ ।
दियै[8] खग झाट गिरद्धरदास[9] ।
विढै[10] असवार सहेत[11] ग्रहास ॥ ६२१
सिलै[12] बँध पाखर बँध सँधार[13] ।
भेळा हिज[14] गज चढ़ै धर भार ।
बहै[15] खळ गाहटतौ जुध बाज[16] ।
करै खग घाव अरोह सकाज ॥ ६२२
उडै असि ऊपर लोह अपार ।
वढै[17] असि भोम चढै तिण वार[18] ।
किलम्मक[19] एक जठै कळिचाळ ।
वुही[20] खग टोप कटे[21] विकराळ[22] ॥ ६२३

---

१ ख. ग भडारीय । २ ख ग सको । ३ ख. ग. गिरधर । ४ ख ग भौहां । ५ ख षगां । ६ ख. विकराल । ७ ख. वोरवीयो । ग वोरवियौ । ८ ख दीयै । ९ ग गिरधरदास । १० ख वढ़ै । ११ क सहेव । १२ ख सिल्है । १३ ख सिधार । १४ ख ग हीज । १५ ग वहै । १६ ख. ग. वाज । १७ ख बढै । १८ ख. जिणवार । १९ ख किलमक । २० ख बाही । ग. वाही । २१ ग कटै । २२ ख विकराल ।

---

६२०. झोकि – झोक कर । तुरी – घोडा । जदार – ( ? ) । सकौ – सब । सिरपोस – शिरत्राण, रक्षक । गिरद्धर – गिरधरदास भण्डारी । पटोधर – ज्येष्ठ पुत्र । ऊद – उदयचद भडारी ।

६२१. भुहां – भौहो । भिडि – स्पर्श कर । औरवियौ – युद्ध-स्थलमे झोका । कळिचाळ – युद्ध । ग्रहास – घोडा ।

६२२ सिलै बँध – अस्त्र-शस्त्रोसे सुसज्जित । गज – ढेर । गाहटतौ – ध्वस करता हुआ । बाज – घोडा ।

६२३. किलम्मक – मुसलमान । वुही – चली ।

वुहो[1] झळ ऊपर वीजळ[2] वेगि[3] ।
तठै 'गिरधार' वही[4] घण तेगि[5] ।
उभै हुय टूक पडै[6] असुरांण ।
चढ़ै[7] असि साम[8] बियै[9] चहुवाण[10] ॥ ६२४

बिया[11] असि ऊपरि[12] गज्जर[13] बूर[14] ।
सझै खग झाट वळोवळ[15] सूर ।
वहै[16] खग झाट भंडारिय[17] 'वाघ'[18] ।
उडै खळ थाट सघाट[19] अथाघ[20] ॥ ६२५

दुजौ[21] असि जाम कटेस उदार ।
तिजै[22] असि सूर चढ़ै[23] तिण वार[24] ।
लड़ै 'गिरधारिय'[25] अबर लागि ।
उडै खळ[26] थाट सिरै खग आगि ॥ ६२६

महाबळ[27] हूर वरावत[28] मीर ।
वडौ[29] महराज[30] तणौ स वजीर[31] ।

---

१ ख बही । २ ख. बीजल । ३ ख बेग । ४ ख बीही । ५ ख ग तेग । ६ ख. पडे । ७ ख चढे । ८ ख तांम । ९ ग. वियै । १० ख चहुवांण । ११ ख बीया । ग. वीया । १२ ख ऊपर । १३ ग. गजर । १४ ग वूर । १५ ख बलोबल । १६ ख बाहै । ग वाहै । १७ ख ग. भडारीय । १८ ख वाघ । १९ ख सघाट । २० ख. असाध । २१ ख. दूजो । ग. दूजो । २२ ख ग तीजै । २३ ख ग. चढ़े । २४ ख. बार । २५ ख ग. गिरघारीय । २६ ख. सिर । २७ ख. माहाबल । २८ ख. बरावत । २९ ख बडो । ग. वडो । ३० ख ग. माहाराज । ३१ ख. बजीर ।

---

६२४. वेगि – शीघ्र । गिरधार – गिरधरदास भंडारी । असुरांण – यवन, मुसलमान ।

६२५. गज्जर – प्रहार । बूर – प्रहार, समूह । झाट – प्रहार । वळोवळ – चारो ओरसे । सूर – वीर । वाघ – वाघचंद भंडारी (?) । सघाट – समूह । अथाघ – अपार ।

६२६. गिरधारिय – गिरधरदास भंडारी । अंबर – आकास ।

६२७. हूर – अप्सरा ।

दुवै सुत 'ऊद'तणा[1] दइवांण[2] ।
भडारिय[3] कट्टिया[4] खाग[5] भयांण ।। ६२७

वदन्न[6] मजीठ[7] 'जवान' 'विजेस'[8] ।
तठै असि औरवियौ[9] 'रतनेस' ।
जई खग वाहत[10] दारण जोस ।
पड़ै खग झाटक सिल्लह-पोस ।। ६२८

कटै सिर सूर जूटै[11] धड केक ।
उभै हुय[12] टूक पडंत अनेक ।
पडै पग[13] हाथ धरा लपटत[14] ।
किळा[15] किर[16] राखस बाळ करत ।। ६२९

'अभै' भुज भार दियौ[17] अणथाह ।
सुतौ[18] उजवाळ कियौ[19] 'रणसाह' ।
भिड़ै 'रतनागर' यू गज भार ।
वधै[20] असि औरवियौ[21] त्रिण वार ।। ६३०

'रसा'हर[22] तेण समै रिमराह ।
वधै[23] विकराळ[24] हुता खग वाह[25] ।

---

१ ख. ऊदतणै । २ ख ग. दईवाण । ३ ख. ग भडारीय । ४ ख ग कट्टीय । ५ ख ग. षाग । ६ ख. ववन्न । ग वदन्न । ७ ख मजीठ । ८ ख जवानीयवेस । ग जवानी-वेस । ९ ख षोरवीयौ । ग. वोरवियौ । १० ख. वाहत । ११ ख जुटै । १२ ख होय । १३ ख षग । १४ ख. ग. पढत । १५ ख. क्रीला । १६ ख कर । १७ ख. दीयौ । १८ ख सोतौ । ग सोतौ । १९ ख. कीयौ । २० ख. ग. वधे । २१ ख. षोरवीयौ । ग औरवियौ । २२ ख. रासाहण । ग. रासाहर । २३ ख. बधे । ग वधे । २४ ख विकराल । २५ ख. वाह ।

---

६२७ दुवै – दोनो । ऊद – उदयचद भडारी । कट्टिया – काट दी । भयांण – भयानक ।

६२८ वदन्न – मुख । मजीठ – लाल । औरवियौ – झोका । रतनेस – रतनसिंह भडारी । ( ? ) । सिल्लह-पोस – कवचधारी ।

६२९ किळा – क्रीडा, लीला । किर – मानो । राखस – राक्षस ।

६३०. अभै – महाराजा अभयसिंह । उजवाळ – उज्ज्वल । रणसाह – ( ? ) । रतनागर – रतनसिंह भडारी (?) । त्रिण – वीर ।

६३१ रसाहर – रायसिंहका वशज । रिमराह – शत्रुओको सीधा करने वाला ।

सत्रां[1] दळ ऊपर[2] धोम सरूप ।
रचै जुध[3] 'पोम' तणौ 'घनरूप' ।। ६३१
गाढागुर[4] 'खीम'हरौ गजगाह ।
सझै जुध 'थांन' तणौ 'दळसाह' ।
वहै[5] खग 'दीप' दुहा[6] विकराळ ।
पडै जरदाळ अनै पखराळ ।। ६३२
उगतिय[7] मौसर[8] सूर उदार ।
धुवै 'दलसाह' भयंकर धार ।
हलै नह कौतिक बाज हकार[9] ।
उभौ[10] रवि छत्र तणा[11] उणहार[12] ।। ६३३
सराहथ[13] विक्रम देखि समाथ ।
हजारह[14] हाथ धणी दुय[15] हाथ ।
समोभ्रम ठाकुरसीह सधीर ।
'धरा'[16] हर पूर लडै लख - धीर ।। ६३४
हिवै दळ पूर कढी[17] चँद्रेहास ।
दळा खळ डोहत[18] माहियदास[19] ।

---

१ ख सक्र । २ ख ऊपरि । ग. उपरि । ३ ग युध । ४ ख ग. गाढ़ागुर । ५ ख. बाहै । ग वाहै । ६ ख दुवौ । ग. दुह । ७ ख ऊगतीय । ८ ग मोसर । ९ ख हकारि । १० ख. वूभौ । ग ऊभौ । ११ ख तणी । १२ ख. उणहारि । १३ ख ग. सराहत । १४ ग हझारह । १५ ख. ग. दोय । १६ ख. धारा । १७ ख. कटी । १८ ख होहत । ग डोहित । १९ ख माहीयदास ।

---

६३१. धोम – अग्नि । सरूप – समान । पोम – पेमराज भडारी । घनरूप – पेमराज भडारीका पुत्र ।

६३२ गाढ़ांगुर – वीर, योद्धा । खीम – खीमचद । गजगाह – वीर, योद्धा । थान – थानचन्द । दळसाह – दला नामक व्यक्ति । दीप – दीपचन्द । जरदाळ – कवचधारी योद्धा । अनै – और । पखराळ – कवचधारी घोडा ।

६३३ मौसर – श्मश्रुके वाल । धुवै – जोशमे युद्ध करता है । हलै – चलता है । कौतिक – कौतूहल । बाज – घोडा ।

६३४ विक्रम – शौर्य । समाथ – समर्थ, वीर । दुय – दो ।

६३५. हिवै = हयपति – अश्वपति, बादशाह । दळ – सेना । चँद्रहास – तलवार । डोहत – विलोडित करता है । माहियदास – माईदास भडारी ।

सबासण[1] देव सुतन्न[2] सरीन ।
तिसा सिव नेत्र 'लूण'[3] हर तान[4] ॥ ६३५

सुरायण[5] पूर किया[6] रिणसाज[7] ।
बिढ़ै[8] देविचद[9] अनै बछराज ।
सदा तड वकिय[10] वाकिम[11] सूर ।
मरू[12] मुहणोत[13] मँत्री मगरूर ॥ ६३६

समोभ्रम सामतचद सकाज ।
वहै[14] खग और[15] थटां सिर[16] वाज[17] ।
हिचै 'चद' मेछ थटा हमगीर ।
धरै ग्रब[18] 'सूदर'[19] 'नैण'[20] सधीर ॥ ६३७

गडीर तुरग छिबै[21] भुज गैण ।
रचै जुध सूर पणोहित[22] रैण ।
लालबर[23] नैण अनै मुख लाल ।
उपै[24] वप[25] तेज समुद्र उकाळ ॥ ६३८

भिडै[26] बक्र[27] उजळ[28] मूछ भुहार[29] ।
उभै ससि बीज तणी उणहार[30] ।

---

१ ख ग. साबासण । २ ख सुतन । ग सुत्तन । ३ ख लूणा । ग लूणा । ४ ख. ग तीन । ५ ख ग. सूरायण । ६ ख कीया । ७ ख ग. रणसाज । ८ ग. विढ़ै । ९ ख दिवचद । ग. देवीचद । १० ख वकीय । ग. वकीय । ११ ख. बांकिम । १२ ख. मारू । १३ ख. मोहोणोत । ग मोहणोत । १४ ख छाहै । ग. वाहै । १५ ख ग. वोरि । १६ ख सिरि । १७ ख बाज । १८ ख ग्रव । १९ ख. ग सूदर । २० ख वैण । २१ ख छिवे । ग छिवै । २२ ख. पुरोहित । ग. परोहित । २३ ख लालवर । ग लालवर । २४ ख ओपै । २५ ख बप । २६ ख भिडे । २७ ख ग. वक्र । २८ ख ऊजल । ग उजळ । २९ ख ग भुहार । ३० ख उणिहार ।

---

६३६. अनै – और । तड – दल, पार्टी । वकिय – बाकुरी । वांकिम = विक्रम – शौर्य । मरू – मारवाड़ ।

६३७ थटा – दलों, सेनाओं । हिचै – सहार करता है, युद्ध करता है । मेछ – म्लेच्छ, यवन । ग्रब – गर्व । सूदर – नैणसी मुहणोतका छोटा भाई सुन्दरदास । नैण – नैणसी मुहणोत ।

६३८ गडीर – ( ? ) । तुरग – घोडा । गैण – आकाश । लालबर – लाल ।

६३९ भुहार – भौंहो । ससि – चद्रमा ।

भिड़ै[1] खग 'रैण' करै खळ भूक ।
'रैणायर'[2] ऊपर बाजत[3] रूक ।। ६३९

उडै[4] कटि पेच छिळै[5] जळ ओट ।
चमकत[6] बादळ[7] बीजळ[8] चोट ।
उपै[9] रत चाचर काचर[10] अग ।
चलै जळ गग तरग[11] सुचग ।। ६४०

पँडीस[12] बरग[13] करै खळ पाणि ।
वदै[14] मुखहूत हरै[15] गग वाणि[16] ।
तुटै[17] गज फौज[18] 'विळद'[19] तणीस ।
घणी खग वाहि[20] वहाय[21] घणीस ।। ६४१

तठै पडि खेत किया[22] पिंड तत्र[23] ।
रिणा-जळ गग समेळ रगत्र ।
वडै[24] अवसांण वडा[25] जुध वार ।
धणी छळ झल्लि[26] घणी खग धार ।। ६४२

---

१ ख. भिडे । २ ख रैणाय । ३ ख. ग. बाजत । ४ ग उडे । ५ ख. छिले । ६ ख. चमंकर । ७ ख बादल । ८ ग बीजळ । ९ ख. ओपै । १० ख ग. फाचर । ११ ख. नारग । १२ ख. ग. पाडीस । १३ ग. वरग । १४ ख. ग. वदै । १५ ख. हरे । १६ ख वाणि । १७ ख. तोडे । ग. तोडै । १८ ग फोज । १९ ख बिलव । २० ख बाहि । २१ ख बहाय । २२ ख. कीया २३ ख. तत्र । २४ ख. बडै । २५ ख. बडा । २६ ग. झेलि ।

---

६३९ रैण – रणछोडदास अथवा समुद्रसिंह । भूक – ध्वस, सहार । रैणायर – रणछोड-दास । बाजत – प्रहार होता है । रूक – तलवार ।

६४० बीजळ – बिजली, तलवार । चाचर – मस्तक, शिर । काचर – ककडी ।

४४१ पँडीस – यवन अथवा तलवार । बरग – खड, टूक । वदै – कहता है । हरै – हर हर महादेवका शब्द अथवा हरि हरि । घणीस – बहुत ।

६४२ पिंड – युद्धमें वीर गति प्राप्त करते समय अपने रक्तके साथ मिट्टीका बाधा हुआ गोल लौंदा जो पितरोको अर्पित किया जाता है । रिणा-जळ – रणछोडदास नामक योद्धा । रगत्र – खून ।

सरस्सति[1] द्वारमती विचि[2] सूर ।
पयौ[3] म्रतस[4] 'रैण' वडै ध्रम पूर ।
जठै वरि[5] रभ करै[6] गढ[7] जोड ।
छजै[8] दिव्य देह धरै[9] 'रिणछोड'[10] ।। ६४३

अयौ[11] वैकूठ[12] हुता[13] सु[14] विमाण[15] ।
अयौ[16] सनकादिक ले अवसाण ।
वढै[17] वैकूठ[18] विमांण[19] चलाय ।
परी उधरी[20] जिण[21] सगति[22] पाय ।। ६४४

वँदै[23] पग लच्छि[24] सहेत विसन्न[25] ।
समीप मुकत्ति[26] ज 'देव' सुतन्न[27] ।
अखै प्रथमी[28] जस एम[29] अथाग[30] ।
'भुरा'[31] धनि तूझ तणौ[32] म्रत भाग[33] ।। ६४५

---

१ ख. सरसति । ग सरसत्ति । २ ख. विचि । ३ ख ग. पायौ । ४ ख. मृत । ग. मृतस । ५ ख. वरि । ६ ख. करे । ७ ख. गग । ग. गठ । ८ ख. छजे । ९ ख. ग घरे । १० ख रणछोड । ११ ख ग. आयौ । १२ ख बयकूठ । ग. वैकुठ । १३ ख ग हुता । १४ ख ग सु । १५ ख विमांण । १६ ख. ग आयौ । १७ ख. ग वढ़े । १८ ख वयकूठ । ग वैकुठ । १९ ख. विमाण । २० ख ऊधरी । २१ ख जिणि । २२ ख सगति । ग सगति । २३ ख वदे । २४ ख ग. लछि । २५ ख. बिसन्न । २६ ख. ग सामीपमुकति । २७ ख सुतन्न । २८ ख प्रिथमी । २९ ख येम । ३० ख आग । ३१ ख ग भूरा । ३२ ख. तणै । ३३ ख ग मृत ।

---

६४३ सरस्सति – साबरमती नदीका एक नाम । द्वारमती – द्वारामती, द्वारकानाथ । पयौ – प्राप्त किया । म्रतस – मृत्यु, अवसान । वडै – महान । रभ – अप्सरा । गठ-जोड – गठ-बधन । छजै – शोभित हो कर ।

६४४. विमाण – विमान, वायुयान । वढै – गतिमान हुआ । सगति – साथ । पाय – प्राप्त कर ।

६४५ लच्छि – लक्ष्मी । सहेत – सहित । विसन्न – विष्णु । समीप मुकत्ति – एक प्रकारकी मुक्ति जिसमे मुक्त जीवका ईश्वरके निकट पहुँच जाना माना जाता है, सामीप्य मुक्ति । देव – देवीसिंह । सुतन्न – पुत्र । अखै – कहता है, वर्णन करता है । अथाग – अपार, असीम । भुरा – वीर, योद्धा । धनि – धन्य-धन्य । म्रत – मृत्यु ।

उरै[1] पित आगळ बाज[2] अपाल[3] ।
*लडै तदि 'रैण' तणौ नदलाल ।
जवज्जव[4] कीध सँघाट जवन्न[5]* ।
तिलत्तिल[6] कीध सिलेह[7] खळ तन्न[8] ।। ६४६

कटै[9] पळ कमळ[10] स्रीफळ कीध ।
लुही[11] घट[12] काढ[13] जिकौ[14] घ्रत[15] लीध ।
धुबै[16] रणताळ सझाळ नूधोम[17] ।
हकां धुनि वेद[18] करै इम होम । ६४७

वढै[19] तदि आप तणौ[20] निज बाज[21] ।
सझै[22] असमेध जिगन्न[23] समाज ।
हुवै[24] असि ताम चढै[25] सु दुझाळ ।
लुहां[26] अवधूत[27] दियै[28] नँदलाल ।। ६४८

---

१ ख ग ओरे। २ ग वाज। ३ ख. अपा। ४ ख. जव्वजव। ५ ग जव्वन।
*....*चिन्हांकित पक्तिया इस प्रतिमे नही हैं।
६ ख तिल्लतिल। ७ ख ग सिल्हे। ८ ग तन। ९ ख काटे। ग काटै। १० ख. कम्मल। ११ ख ग लोही। १२ ख. ग षळ। १३ ख काढ़ि। १४ ख ग. जिको। १५ ख ग. घृत। १६ ख धुबे। ग धुवै। १७ ख. ग. नूधोम। १८ ख बेद। १९ ख बढ़े। २० ग. तणो। २१ ग वाज। २२ ख. सझे। २३ ख जिगांन। ग जिगन। २४ ख. ग. हुवे। २५ ख चढ़े। २६ ख. ग. लोहां। २७ ख अवहूति। ग अवहूत। २८ ख. दीयै।

---

६४६ उरै – झोकता है। पित – पिता। आगळ – अगाडी। बाज – घोडा। अपाल – बेरोक-टोक, निर्भय। रैण – रणछोड़दास। जवज्जव – खड-खड, चूर, ध्वस। सँघाट – समूह। जवन्न – यवन, मुसलमान। तिलत्तिल – खड खड, टूक-टूक, ध्वंस। सिलेह – कवच। तन्न – शरीर।

६४७. पळ – मास। कमळ – मस्तक, शिर। स्रीफळ – नारियल। लुही – रक्त। घट – शरीर। धुबै – प्रज्वलित होता है, जोशमे उमडता है। रणताळ – युद्ध-स्थल। सझाळ – आगकी लपट सहित। नूधोम – विना धुआके। हकां – आवाज। होम – यज्ञ।

६४८. वढै – काटता है। सझै – सिद्ध करता है, असमेध – अश्वमेध यज्ञ। जिगन्न – यज्ञ। लुहा – शस्त्र-प्रहारो। अवधूत – मस्त सन्यासी।

उरै[1] असि पांडव[2] जेम[3] अजन्न[4] ।
करै बगसी जुध बाळकिसन्न[5] ।
जुडै खग चोट पड़ै जवनाण ।
पँचोळिय[6] भाण बखाणत पाण ॥ ६४९

वँटै[7] घट मुग्गळ[8] द्रव्य विजार ।
अखै[9] धनि रातळ दाद तियार[10] ।
गिळै पळ मुगळ[11] सामळ ग्रीध ।
लुहां[12] भर[13] पत्र सकत्तिय[14] लीध ॥ ६५०

करै सुध तीरथ वीर करक्र[15] ।
चरव्वर[16] जाणिक जोगणि चक्र ।
जुडै 'हरियद' तणौ मझि जग ।
इसी विध[17] 'बाळ किसन्न'[18] अभग ॥ ६५१

सझै जुध[19] दारुण दौलतसाह[20] ।
अडी खँभ 'माहव' जग अथाह ।
चमू खळ डोहि ख्युसलहचद[21] ।
हिचै दुजडा मुनसी 'हरियद' ॥ ६५२

---

१ ख ओरे। ग ओरे। २ ख पडव। ३ ख जम। ४ ख अज्जन। ५ ख किस्सन। ग किसन। ६ ख ग पचोलीय। ७ ख बाटै। ग वाटे। ८ ख. मूगल। ग. मुगळ। ९ ख ग. आवै। १० ख नियार। ११ ख. मूगल। १२ ख ग लोही। १३ ख. भरि। १४ ख. सकतीय। ग सकतिय। १५ ख. ग. करक्क। १६ ख. चरब्बण। ग. चरवण। १७ ख विधि। १८ ग. किसन। १९ ग. झुध। २० ग. दोलतसाह। २१ ख ग षुस्यालहचद।

---

६४९ अजन्न – वीर अर्जुन। बगसी – सैनिकोको वेतन बाटने वाला, कस्वोमे कर वसूल करने वाला बख्शी। जवनांण – यवन, मुसलमान।

६५० अखं – कहता है। धनि – धन्य-धन्य, शाबाश। रातळ – एक प्रकारका मांसाहारी पक्षी. दाद – धन्यवाद। तियार – उस समय। सांमळ – एक प्रकारका मासाहारी पक्षी। लुहां – रक्त, खून। पत्र – देवीका खप्पर। लीध – लिया।

६५१ करक्र – हड्डियोकी ठठरी या खोपडी। चरव्वर – चुरवन। जाणिक – मानो। जोगणि – रणचडी। जुडै – भिडता है, युद्ध करता है। अभग – पीछे नही हटने वाला, वीर।

६५२. चमू – सेना। डोहि – विलोडित कर के। ख्युसलहचद – खुशालचद नामक व्यक्ति। हिचै – युद्धमे सहार करता है। दुजड़ा – तलवारों।

विढै[1] चडिका पुत्र यू वरणेस ।
कठीरव पौरस जैं-करणैस[2] ।
उरै[3] असि आरण वीर[4] अरोध ।
जुडै सिंघवी[5] खग झाटक 'जोध' ।। ६५३

विजावत[6] दूठ लडै जिणवार ।
तुरी[7] कटि प्रोहित रौ[8] तिणवार[9] ।
'रैणातरऊत' लडे चढि रैण[10] ।
उठै सुत मित्र[11] विलोकिय[12] एण ।। ६५४

दुबै असि आप चढै[13] सु दुझाल ।
निजा[14] असि चाढवियौ[15] नदलाल ।
बिहू[16] झलिया झडता खग बूर ।
'पिथा' हर सूर दता व्रद[17] पूर ।। ६५५

बिढै[18] महता जुधि ओर[19] व्रहास[20] ।
दियै[21] खग झाटक गोकळदास ।
वैरीहर[22] बाढत वीजळ[23] वाह[24] ।
'गोपाळ' कराळ करै गजगाह ।। ६५६

---

१ ख. विढ़ै । २ ख ग जयकरणेस । ३ ख ओरे । ग ओरै । ४ ख बीर । ५ ख. ग. सघवी । ६ ख बिजावत । ७ ग तूरी । ८ ग. रो । ९ ख तिणबार । १० ग. रेण । ११ ख. मित्र । १२ ख बिलोकिय । १३ ग. चढे । १४ ख निज । ग निज । १५ ख चाढ़वीयौ । ग. चाढ़वियो । १६ ख. बिन्हे । ग बिन्है । १७ ख ग. वृद । १८ ग. विढे । १९ ख. ओरि । ग. ओर । २० ख ग. वृहास । २१ ख. ग, दीयै । २२ ख. बैरीहर । २३ ख बीजल । २४ ख बाह ।

---

६५३ चडिका पुत्र – चारण कवि । वरणेस – वर्णन करते है । कठीरव – सिंह । जैं-करणैस – जयकर्ण नामक व्यक्ति । आरण – युद्ध । सिंघवी – ओसवालोका एक गोत्र । खग – तलवार । झाटक – प्रहार । जोध – सिंघवी जोधमल ।

६५४. विजावत - विजयराजका पुत्र । दूठ – वीर, जबरदस्त । तुरी – घोडा । रैणायर-ऊत – रणछोडदासका पुत्र ।

६५५. दुबै – दूसरे । निजां – अपने निजके । झलिया – शोभित हुए । बूर – प्रहार, समूह । व्रद – विरुद ।

५५६. ओर – झोक कर । व्रहास – घोडा । वैरीहर – शत्रु । वीजळ – तलवार । वाह – प्रहार । कराळ – भयकर । गजगाह – युद्ध ।

पछट्टत[1] रौद्रव चंद्रप्रहास[2] ।
दमगळ मांझल माधवदास ।
वधै[3] असि ओरवियौ[4] जुधवार ।
राजा 'जयसाह'[5] तणौ[6] हुजदार[7] ।। ६५७

'घासी' सुत पौरस ग्रीखम धाम ।
रिमा विहडै खगि आणद रांम ।
ओरै[8] असिदूठ छिबै[9] असमान ।
'नरू' हर 'केहर'रौ परधान ।। ६५८

गहम्मह[10] सूर धुबै गजगाह ।
'सदौ' खग वाहत[11] दारुण साह ।
हिचै खग दगळ नौख[12] हुबास[13] ।
खत्री गुर[14] पासहवान खवास ।। ६५९

उदैसिंघ रावत गोकळऊत[15] ।
पछट्टत[16] खाग[17] वडौ रजपूत ।
पछट्टत खाग समोभ्रम 'पाळ' ।
दळै खल खीचिय[18] सूर दयाळ' ।। ६६०

---

१ ख ग पछटत । २ ख. चदपहास । ३ ख बंधे । ४ ख बोरवीयौ । ५ ख. जैयसाह । ६ ख तणै । ७ ख दुजदार । ८ ख ग ओरे । ९ ख छिबे । ग छिवै । १० ख गहमह । ग गहमह । ११ ख बाहत । १२ ख नौहष । १३ ख वास । १४ ख गुरू । १५ ख. ग गोकलऊत । १६ ख पछटते । ग पछटत । १७ ख ग । १८ ख षींचीय । ग षीचीय ।

---

६५७ पछट्टत — पछाडता है । गिराता है । रोद्रव — यवन, मुसलमान । चद्र प्रहास — तलवार । दमगळ — युद्ध । माझल — मध्य, मे ।

६५८ घांम — आतप, धूप । विहडै — सहार करता है ।

६५९ गहम्मह — समूह, भीड । धुबै — जोश पूर्ण तेजीसे युद्ध कर रहे हैं । गजगाह — युद्ध । सदो — सरदारसिंह । दगळ — युद्ध । नौख — श्रेष्ठ । हुबास — घोडा । पासहवान — राजाका कृपा पात्र । खवास — अनुचर ।

६६०. दळै — सहार करता है, ध्वंस करता है । खीचिय — चोहान वशकी खीची शाखाका व्यक्ति । दयाळ — दयालसिंह ।

वाहै[1] खग[2] 'केहर' रोस[3] वधत[4] ।
वंकी[5] खग 'केहर' सीस वहंत[6] ।
फिरै खळ गेहरिया जिम फाग ।
खिवै घण 'केहरिया' पर खाग ।। ६६१

वरंगन[7] कठ धरै[8] वरमाळ ।
रुका[9] उडी[10] सीस चढै[11] रुडमाळ ।
अपच्छर[12] सूर ज़ोडै[13] हिज[14] आय ।
जई[15] रथ बैठि[16] वसै[17] स्रुगि[18] जाय ।। ६६२

अमावड तेज मजेज असाधि[19] ।
वाहै[20] खग धावड पौरस[21] वाधि[22] ।
बगाळक[23] झाटत खाग अबीह ।
सझै[24] जुध दारुण ठाकुरसीह ।। ६६३

दिपै[25] वप[26] लोह वरन्न[27] सिंदूर ।
'सामावत' जाण[28] उदैगिर सूर ।

---

१ ख बाहै । २ ख षगि । ३ ख रोस । ग रौस । ४ ख बधत । ५ ख. बकी । ६ ख. बहत । ७ ख ग वारगन । ८ ख धरे । ९ ख रूका । १० ख ग उडि । ११ ख धरे । ग चढ़े । १२ १२ ख ग. अपछर । १३ ख. जोडे । १४ ग हीज । १५ ग जइ । १६ ख. वैसि । १७ ख वसै । १८ ग. भ्रुगि । १९ ख ग. असधि । २० ख वाहै । २१ ग पोरस । २२ ख ग बाधि । २३ ख बगाल । २४ ख. ग. सझै । २५ दियै । २६ ख बपि । २७ ख बरन । ग वरन । २८ ख जाणि ।

---

६६१ केहर – केसरीसिंह । रोस – जोश । वकी – बाकुरी । वहत – प्रहार होता है । गेहरिया – होलिकोत्सव पर डंडा रास रमने वाले । फाग – फाग उत्सव । खिवै – चमकती है । केहरिया – केसरीसिंह ।

६६२. वरगन – अप्सरा । रूका – तलवारो । जोड़ै – पास । जई – उस, उसी, विजयी । स्रुगि – स्वर्ग ।

६६३ अमावड – अपार, असीम । मजेज – शीघ्र । असाधि – ( असाधारण ? ) । धावड – राजकुमारको दूध पिलाने वाली स्त्री [धाय] का पति । वाधि – विशेष । बगाळक – मुसलमान ।

६६४ दिपै – शोभित हो रहे हैं ।

इसी[1] विध[2] जेठिय[3] जोम अताळ ।
कणैठिय[4] तास लडै कळचाळ[5] ॥ ६६४

झोकै[6] असि देत खळां खग झाड[7] ।
महापति[8] धावड लोह मराड़[9] ।
जिकी जुध वार भोजावत जेम ।
उछट्टत[10] वाज निलागर एम* ॥ ६६५

वहै अस्व गाहटतो धड वाधि ।
अळूभत[11] ओयण अंत असाधि[12] ।
अठी[13] हुसनायक[14] सूत इलाज ।
कसी किर राह सिखावण काज ॥ ६६६

हुवै धरि क्रोध गजांथटहूंत ।
करै हथवाह कूभाथळ कूत ।
ᐡपड़ै रुहिनाळ तणा परनाळ ।
खळक्कत[15] जाणिक गैरुव[16] खाळᐡ ॥ ६६७

---

१ ग. इति । २ ख विधि । ग विधि । ३ ख. ग. जेठीय । ४ ख. ग. कणेठीय ।
५ ख. कलिचाल । ६ ख झोके । ७ ख. झाट । ८ ख. महपति । ९ ख. मराट ।
१० ग उछटत ।

*यह पक्ति ख. प्रतिमे नही है ।

११ ख अलूफत । १२ ख ग असधि । १३ ख. ग. आटो । १४ ख ग. हौसनायक ।
१५ ग खळकत । १६ ग गैरुव ।

ᐡ ᐡचिन्हाकित पक्तिया ख प्रतिमे नही हैं ।

---

६६४. जेठिय – ज्येष्ठ, बडा । जोम – जोश । अताळ – असीम । कणैठिय – कनिष्ठ, छोटा । तास – उसका । कळचाळ – युद्ध, योद्धा ।

६६५. झाड – गिरा कर । लोह – शस्त्र-प्रहार । मराड = मराट–जबरदस्त । उछट्टत–कुदाता है । वाज – घोडा । निलागर – घोडे का नाम जो रग विशेष के कारण होता है ।

६६६ ओयण – चरण, पैर । अत – आत । असाधि – असभव ।

६६७ हुवै – पूर्ण तेजीसे युद्ध करते हैं । गजांथटहूत – हाथी दलके समूह से । हथवाह – प्रहार । कूत – भाला । रुहिनाळ – रक्तका नाला । परनाळ – नाला । खळक्कत – कल-कल शब्द करते हुए पानी आदि चलते हैं । जाणिक – मानो । गैरुव – गेरू नामक धातु । खाळ – नाला ।

तठै करि खीज वहै तरवार[1] ।
अकाळिय[2] बीजतणी उणिहार[3] ।
गजा करि खडळ तडळ गात ।
पिवै[4] जिम कोध हुवा वज्रपात[5] ।। ६६८

खुटै जरदैत जिकै[6] इम खाति ।
तुटै तिम साबण दाबण तांति ।
मँडै[7] कट[8] तेग हुवै मसतान ।
खडै[9] अँगरेज[10] रु नाहर खान ।। ६६९

पछट्टत[11] रूक अमोसह[12] पूर ।
हिचै पडि मीर वरी[13] दोय हूर ।
चहच्चह[14] नारद सकर चड ।
खहै[15] इम गूजर गूजर खड ।। ६७०

अणी सर साबळ फूटत ऊक ।
रुद्रायण[16] वाह[17] करै घण रूक ।
भयाणख भेख सरा छड भार ।
दुहूवळ[18] धार रगत्त[19] दुसार ।। ६७१

---

१ ख तरवारि । २ ख ग अकाळीय । ३ ख. उणिहारि । ग. अणुहार । ४ ख पवै । ५ ख वज्रपात । ६ ख ग जिके । ७ ख मडे । ८ ख झट । ९ ख षडे । १० ग अंगरेझ । ११ ख पछटत । १२ ख अमोसम्ह । १३ ख. वंरी । १४ ख. ग चहचह । १५ ख ग. षहै । १६ ख रौद्रायण । ग रोद्रायण १७ ख बाह । १८ ख दुहूबल । १९ ख. रग

---

६६८ खीज – कोप । अकाळिय – असामयिक, अकस्मात । बीजतणी – बिजलीकी, वज्रपातकी । उणिहार – समान । खडळ – ध्वस । तडळ – सहार । गात – शरीर । पिवै = पवै – पर्वत ।

६६९ खुटै – समाप्त हो गये । जरदैत – कवचधारी । साबण – साबुन । तांति – तार ।

६७० पछट्टत – प्रहार करता है । रूक – तलवार । हूर – अप्सरा । खहै – युद्धकरता है ।

६७१ अणी – नोक । साबळ – भाला विशेष । ऊक – तेज धार । रुद्रायण – यवन । वाह – प्रहार । भयाणख – भयानक, भयावह । सरां – तीरो । छड – भाला । दुहूवळ – दोनो ओर । रगत्त – खून ।

वपा[1] व्रण[2] चोळ वणै[3] तिणवार[4] ।
जोधांपति हूत[5] सभ्भेस[6] जुहार[7] ।
सझै रवि सेस महेस सराह ।
अखै[8] त्रण[9] वार 'अभैमल' वाह[10] ॥ ६७२

तई धख[11] होण[12] परी भरतार ।
विढै[13] असि और[14] चवत्थियवार[15] ।
करै महरापति झाट करोध ।
जुटै घण टूक हुव खळ जोध ॥ ६७३

सुरा[16] गुर पूर झिलै[17] अगि सार ।
तजै[18] असि भोमि वढै[19] तिणवार ।
हरक्खि[20] कटैज[21] धरै[22] रभ हार ।
अँत्रावळि पाय रुळत अपार ॥ ६७४

सत्रा महपति[23] करत सघार ।
घडा पग दे खग वाहत धार ।

---

१ ख बपं । २ ख व्रम । ३ ख. वणे । ग वणे । ४ ख. ग तृणवार । ५ ख हूस । ६ ख ग सभ्भेसु । ७ ख ग जुव्हार । ८ आपे । ९ ख ग. तृण । १० ख. बाह । ११ ख पग । ग घप । १२ ख. ग. होण । १३ ख विढै । ग विढ़े । १४ ख. ओरि । ग ओर । १५ ख ग. चवत्थीयवार । १६ ख सूरा । १७ ख. ग. झिले । १८ ख तजे । १९ ख. वढे । २० ख ग. हरषि । २१ ख कठेज । ग. कठैज । २२ ख ग धरे । २३ ग. महपत्ति ।

---

६७२ वपा – शरीर पर । व्रण – वर्ण, रग । चोळ – लाल । जोधापति – महाराजा अभयसिह । सभ्भेस – करता है । जुहार – अभिवादन । अखै – कहता है । त्रण – तीन । अभैमल – महाराजा अभयसिह ।

६७३. धख – प्रबल आकाक्षा । विढै – युद्ध करता है । चवत्थियवार – चौथी बार । महरापति – गूजर सरदार ।

६७४. हरक्खि – हर्षित हो कर । रभ – अप्सरा । अँत्रावळि – आतें, अत्रसमूह । पाय – पैर, चरण । रुळत – इधर-उधर गिरते है ।

६७५ सत्रा – शत्रुओका । सघार – महार । घडा – शरीरो । धार – तलवार ।

करै नृप[1] वीर जय जय कार ।
हकां करि जाणि रमे[2] होळियार[3] ।। ६७५
दळा अग्रि भोमि जिकै[4] क्रम दीध ।
कई[5] असमेध जिगांनसु कीध ।
परी चड ग्रीध जटी हित पूर ।
समावत खेत पडै[6] इम सूर ।। ६७६
अयौ[7] रथ बैसि[8] समोसर इद ।
वसै[9] सुरधाम अपच्छर[10] वींद[11] ।
विढै[12] जुध[13] 'धाधिल' ओरि व्रहास ।
पेखै[14] हथ वाग कसै[15] सपतास ।। ६७७
'अखौ'[16] खग वाहत[17] सूर अबोह ।
सझै[18] खग[19] हाथळ जाणिक सीह ।
ओरै[20] असि बधव दोय अमान ।
भिड़ै खग झाट 'नरौ' 'भगवांन' ।। ६७८
जुड़ै मगरूर 'मुकद' सुजाव ।
दळा भञ्ज[21] उभळतां दरियाव ।

---

१ ख नृत । ग. नृप । २ ख. ग. रमै । ३ ख ग होलीयार । ४ ख जिके । ५ ख. केई । ग केइ । ६ ख ग. पडे । ७ ख आयो । ग आयो । ८ ख बैसि । ९ ख. बसे । ग. वसे । १० ख ग अपछर । ११ ख व्यद । ग. व्यद । १२ ख. विढ़ै । १३ ख जुधि । १४ ख पेषै । १५ ख. ग कसे । १६ ग अषो । १७ ख बाहत । १८ ख ग. सझै । १९ ख. ग गज । २० ख. ग. ओरे । २१ ख वज्र । ग व्रज्र ।

---

६७५. हकां – आवाज । होळियार – होलिकोत्सव पर चरचरी नृत्य करने वाला ।

६७६. क्रम – चरण पैर । दीध – दिये । असमेध – अश्वमेध । जिगानसु – यज्ञ । चड – रणचडी ।

६७७. अयौ – आया । बैसि – बैठ कर । समोसर – बराबर । वींद – दूल्हा । धांधिल – धाधल शाखाका राठौड । पेखै – देखता है । सपतास – सप्ताश्व ।

६७८ अखौ – अखैसिह । हाथळ – सिंहका पजा जिससे वह प्रहार करता है । अमांन – जबरदस्त । नरौ – नाम है । भगवान – भगवानसिंह ।

६७९ जुडै – भिडता है । सुजाव – पुत्र ।

सत्रां दळ वाहत जग समाथ ।
सौ सौ खग झेलति हेकणि[1] साथ ।। ६७९

वणै[2] वप कुदण माहि वणाव[3] ।
जडै[4] सर सावळ[5] घाव जडाव ।
धरा[6] पुड[7] वेधि[8] रगै[9] अहि धौळ ।
छिलै[10] रुहिराळतणी अति छौळ[11] ।। ६८०

घणा खळ पाडि पड़ै[12] घमसाण ।
वरै[13] बिहुवै[14] रभ बेसि[15] विमांण[16] ।
पिता जिम खाग झटा अत[17] पाय ।
किया[18] स्रुगि[19] वास सुजस्स कहाय[20] ।। ६८१

हुवा स्रुगि[21] वासिय[22] अमर[23] होय ।
पुरासह[24] सराहत धाधल[25] दोय ।
अखै[26] प्रथमी[27] जस भाग असाधि[28] ।
वणै[29] उण[30] जीवण हू अत[31] वाधि[32] ।। ६८२

---

१ ख ग. एकणि । २ ख ग वणे । ३ ख बणाव । ४ ख जठे । ग. जडै । ५ ग सावळ । ६ ख. धडा । ७ ख जुध । ८ ख वेधि । ९ ख ग रगे । १० क विले । ११ ख छोल । ग छोळ । १२ ख ग पडे । १३ ख ग वरे । १४ ख बिहुवं । १५ ख बैसि । ग वैसि । १६ ख. बिमाण । १७ ख ग. मृत । १८ ख कीया । १९ ग भ्रुगि । २० ख सुझ्झस । २१ ग. श्रुगि । २२ ख बासीय । २३ ख अम्मर । २४ ख. पुराह । ग दुरासह । २५ ख धाधिल । २६ ख. ग आषै । २७ ख प्रिथमी । २८ ख. ग असधि । २९ ख ग वणे । ३० ख घण । ३१ ख ग मृत । ३२ ख वाधि ।

---

६७९ समाथ – समर्थ, योद्धा । हेकणि – एक ही ।

६८० कुदण – सोना । वणाव – शृंगार, सजावट । घाव – प्रहार । जडाव – जटित होनेकी क्रिया या भाव । अहि – शेष नाग । धौळ – शिर, मस्तक । छिलै – उमडती है । रुहिराळतणी – खूनकी, रक्तकी । छौळ – धारा ।

६८१ घमसांण – युद्ध । वरै – वरण कर के । रंभ – अप्सरा । वैसि – बैठ कर ।

६८२ सराहत – सराहना करते हैं । धाधल – राठौड वंशकी धाधल शाखाका वीर । अखै – कहता है । असाधि – असाध्य, कठिनतासे प्राप्त होने वाला । वाधि – विशेष, बढ़ कर ।

त्रिहूँ खग वाहत[1] आतस ताप ।
प्रचडक 'आणद' 'जैत' 'प्रताप' ।
जठै किरमाळ झटां जमरांण ।
भिड़ै गहलोत[2] थभै[3] रथ भाण ।। ६८३

जोगावत[4] 'ऊदल'[5] ऊझळ जोस ।
पछट्टत[6] खाग हणै वज्र[7] पोस ।
बिहारियदास[8] अभग व्रजागि ।
लडै सुत 'वीरम'[9] अबर लागि ।। ६८४

नथम्मल[10] नाहर रूप निराट ।
झाडै[11] खळ नाहर खां खग झाट ।
हिचै असि ओर[12] खगा पडिहार ।
सहांणिय रांमति मडत सार ।। ६८५

पछंटत ऊत्तग[13] चँद्रप्रहास ।
साझै[14] खळ[15] मुग्गळ[16] सामळदास ।
'सुभौ'[17] खग वाहि[18] करंत सकाज ।
जठै खग वाह[19] करै 'जसराज' ।। ६८६

---

१ ख बाहत । २ ख गहलोत । ३ ख. थभे । ४ ख जोगाव । ५ ग. उदल । ६ ख. ग पछटत । ७ ख वज्र । ८ ख. ग. विहारीयदास । ९ ख बीरम । १० ख ग. नथमल । ११ ख ग झाडै । १२ ख. ओरि । ग. ओर । १३ ख ऊनग । ग उनग । १४ ख. सझै । १५ ख षग । १६ ख. मूगल । ग मुंगळ । १७ ख. ग सोमो । १८ ख. वाह । १९ ख बाह ।

---

६८३ प्रचडक – जबरदस्त । आणद – आनदसिंह । जैत – जैतसिंह । प्रताप – प्रतापसिंह । किरमाळ – तलवार । झटा – प्रहारो । थभै – रोकता है । भाण – सूर्य ।

६८४. ऊदल – उदयसिंह । ऊझळ – उमडा हुआ, अपार । पछट्टत – प्रहार करता है । हणै – सहार करता है । वज्र पोस – कवचधारी योद्धा (?) अभग – वीर । वज्रागि = वज्राङ्ग – जबरदस्त । वीरम – वीरमदेव । अबर – आसमान ।

६८५. नथम्मल निराट – सिंहके समान भयकर रूप धारण किया हुआ नथमल । झाड़ै – काटता है, गिराता है । खग झाट – तलवारका प्रहार । सहाणिय – घोडेकी देख-रेख करने वाला, घोडो को शिक्षित करने वाला । रांमति–खेल, क्रीडा । सार–तलवार ।

६८६ पछटत – प्रहार करता है । ऊतग – ऊच । चँद्रप्रहास – तलवार । साझै – सहार करता है, मारता है । सुभो – शुभकरण या शुभराम ।

करै जुध बीच[1] अडिग कदम्म[2] ।
पछट्टत वीजळ[3] 'मान' पदम्म[4] ।
मँडे[5] 'बखतेस' अनै भड 'माल'[6] ।
दुऔ भड 'लाल' लडत दुझाल ॥ ६८७

भिड़ै ख(ग)गरूर खत्रीवट भेव ।
दियै[7] खग झाट खळा जयदेव[8] ।
वधै[9] नक[10] और[11] घडा विचि[12] बाज[13] ।
'सुभावत'[14] वाहत[15] खाग सकाज ॥ ६८८

उठै रिणछोड सुजाव अरोड ।
घडा[16] खळ वेधत[17] सेल घमोड[18] ।
विभाडत[19] रोद घडा[20] हळवाह[21] ।
सराहत राह दुहूंदळ साह ॥ ६८९

उभेल बगत्तर[22] पोस अपाल ।
'लखै' धज सेल कियौ[23] रंग लाल ।
जड़ै[24] पहिला खळ साबळ जास ।
दियै[25] खग झाट तुळछियदास ॥ ६९०

---

१ ग. वीच । २ ख कद्दम । ग कदम । ३ ख. बीजल । ४ ख ग पद्दम । ५ ख लडै । ६ ख लाल । ७ ख दीयै । ८ ख जगदेव । ९ ख. बधै । ग. वधै । १० ख. ग छक । ११ ख. ओरि । १२ ख बिचि । १३ ख ग. वाज । १४ ख ग सोभावत । १५ ख वाहत । १६ ख. घडां । १७ ख बेधत । १८ ख ग धमोड । १९ ख विभाडत । २० ख षडा । २१ ख हलवाह । २२ ख बगतर । २३ ख कीयौ । २४ ख नडे । २५ ख. दीयै ।

---

६८७. अडिग – अटल, दृढ । कदम्म – पैर, चरण । मान – मानसिंह । पदम्म – पद्मसिंह । दुऔ – दूसरो । लाल – लालसिंह ।

६८८ खत्रीवट – क्षत्रियत्व । घड़ा – सेना । वाज – घोडा ।

६८९ सुजाव – पुत्र । अरोड – जबरदस्त । वेधत – छेदन करता है । घमोड – प्रहार । विभाडत – ध्वस करता है, सहार करता है । रोद – यवन । हळवाह – बलराम ।

६९० उभेल – उधेड कर, चीर कर । बगत्तर पोस – कवचधारी योद्धा । धज – घोडा ।

महबळ सूर दिनां मकरद ।
चखा करि चोळ[1] लड़ै भड 'चंद'[2] ।
जठै भड 'तेज' हणूमत[3] जाति ।
जुडै हरनाथ[4] करूर जमाति[5] ॥ ६९१

तती खग झाट[6] खळा सिर तांम ।
सझै अबदार[7] चह्वांण संग्राम ।
'अबा' हत[8] खाग जिसी झळ अग्गि[9] ।
विहारियखा[10] नर रांम व्रजागि ॥ ६९२

गाढागुर[11] गूजर रौस[12] गरूर ।
सझै[13] जुध 'सुदर[14]' 'खेतल'[15] सूर ।
वकारत[16] रोद खळा[17] हळ वाहि[18] ।
'मशौ' हरदास लडै जुध माहि ॥ ६९३

'अभैमल' आगळ सूर उदार ।
विढै[19] इम मागळिया[20] जुध वार[21] ।
हिचै रणछोड़[22] 'लखौ'[23] 'हरियद' ।
'विजौ'[24] खग वाढत[25] थाट 'विलँद' ॥ ६९४

---

१ ख चोल। ग चाळ। २ ख वद। ३ ख हणूमत। ४ ख हरिनाथ। ५ ख ग. जमाति। ६ ख झाल। ७ ख ग अवदार। ८ ख ग अवाहत। ९ ख ग आगि। १० ख बिहारीयष। ग विहारीयषां। ११ ख. गाढ़ागुर। १२ ख ग. रोस। १३ ख सझे। १४ ख सूदर। १५ ख. षेलत। १६ ख वकारत। १७ ख षळा। १८ ख. बाहि। १९ ख. बिढै। २० ख ग मांगळीया। २१ ख. बार। २२ ख ग रिण-छोड। २३ ग. लषो। २४ ख बिजो। ग विजो। २५ ख वाढ़त।

---

६९१. चखां – नेत्रों। चोळ – लाल। चद – चद्रसिंह। तेज – तेजसिंह। हणूमत जाति – हनुमानके वशज, जेठवा शाखाका वीर।

६९२ तती – तेज। अबा – अभयसिंह। झळ – आगकी लपट।

६९३. सुदर – सुदरदास गूजर। खेतल – खेतसिंह गूजर।

६९४. अभैमल – महाराजा अभयसिंह। विढै – युद्ध करते हैं, वीर गति प्राप्त होते हैं। मांगळिया – गहलोत वंशकी मागलिया शाखाका वीर। थाट – सेना, दल।

धाधू रिणछोड वाहै[1] खग धार ।
दगावत तोप चह्वाण उदार ।
जिको[2] भड 'खेतल'[3] क्रोध जडागि ।
खपावत मेछ दळा भट खागि ।। ६९५

'बहादर'[4] 'डूगर'[5] सेजब्रदार[6] ।
सत्रा रिण सेल सु वोहत[7] सार ।
इसी विध[8] लूण[9] प्रताप अपार ।
भिडै भड़ रीठ पड़ै गजभार ।। ६९६

कवित्त– ख्वाज-बगस हठिखान[10] निडर[11] मूजायद[12] नायक ।
बलू खान अजमति[13] इनतुल्ला[14] अजरायक ।
ताज बळी जल्लाल छोह नाहर जिम छूटा ।
'अभातणा' भड इता जवन जवनाहू जूटा[15] ।
'भगवत' हजारी 'धनड' भड, रण मझि घोड़ा राळिया[16] ।
खुरसाण देस बिहडै[17] खगां, पूरब देस उजाळिया[18] ।। ६९७

असि 'धनियै' औरियौ[19], 'हरी' 'गोपै' करि हाका ।
'अखै' 'उद'[20] 'आसडै' 'किसन' 'सूजड़ै' काजाकां ।

---

१ ख व्वाहै। २ ख ग जिको। ३ ख. षेलत। ४ ख ग बाहादर। ५ ख. डगर। ६ ख. ग सेझबरदार। ७ ख वाणत। ८ ख. ग विधि। ९ ख. लूंण। १० ख. हठीषान। ११ ख निजर। १२ ख मुजाहिद। ग मुजायद। १३ ख. अजम्मति। १४ ख इनातुल्ला। १५ ख जूटो। १६ ख रालीया। १७ ख. विहडे। १८ ख. उजालीया। १९ ख ओरीयौ। ग ओरियो। २० ख. ऊद।

---

६९५ धाधू – राठोड वशकी एक उप शाखा। दगावत – तोपें छुडाता है। जडागि – ( ? )। खपावत – सहार करता है।

६९६ सेज ब्रदार – राजा महाराजाओ के पलग बिछाने वाला, शैया बिछाने वाला।

६९७ ख्वाज-बगस – ख्वाजाबख्श नामक यवन। मुजायद – ( ? ) इनतुल्ला – इनायतुल्ला या। अजरायक – जबरदस्त। अभातणा – महाराजा अभयसिंहके। राळिया – छोड़ दिये।

महपति 'मुरळी' 'रयण', 'जगड़' 'बगसै' चद्र जैतै ।
'उगर' खेत दौळिय[१] बहसि[२] 'धनियै'[३] विरदैतै[४] ।
ओरिया[५] तुरग जूटा अडर, छूटा बाघ[६] छछोहड़ा ।
सिध 'अभातणी'[७] चेळा सकळ, लडिया[८] वधिवधि[९] लोहडा ॥ ६९८

वारी[१०] भड विरदैत[११] वधै[१२] 'जीवणौ'[१३] विहारी[१४] ।
'वछौ'[१५] 'विजौ'[१६] 'हमीर' 'अणदौ'[१७] 'सिवौ'[१८] अग्रकारी ।
म्रिधो[१९] मवातीखान[२०] सरफ राजखा सिपाही ।
सेख[२१] सीदक्क[२२] सीम, वधे[२३] इतरा खग वाही[२४] ।
वरजागि[२५] वाढ[२६] ओझट[२७] वहै[२८], आगि खळा सिर[२९] ऊपडै ।
पीरसा पैक प्यारौ प्रचंड, 'लाल' सहेत[३०] जुध[३१] लडै ॥ ६९९

'निजरु' अनै 'करीम' बिन्है[३२] पडदार वहादर[३३] ।
नगारची[३४] 'नाहरौ' हाक[३५] करि ओर[३६] 'हैमर'[३७] ।
'राजू' सुतन 'जलाल'[३८] एक[३९] हथि त्रबक वजावै[४०] ।
इक हथ[४१] खागा[४२] उनाग धाय असुरा दळ धावै ।

---

१ ख दौलीयो । ग दोलियै । २ ग वहसि । ३ ख. धनीयै । ४ ख बिरदैतै । ५ ख. ओरीया । ६ ख वाग । ग. वाघ । ७ ख ग. अभातणा । ८ ख लडीया । ९ ख ग वधि वधि । १० ख बारी । ११ ख विरदैत । १२ ख. बधे । ग. वधे । १३ ग. जीवणो । १४ ख बिहारी । १५ ख छठो । ग वछो । १६ ख बिजो । ग विजो । १७ ख अणद । ग अणन्दो । १८ ख. सेवो । १९ ख. म्रिधो । २० ख धवातीषान । २१ ख ग सेषर । २२ ख. ग सीदक । २३ ख बधे । ग वधै । २४ ख बाही । २५ ख बरजागि । २६ ख बाढ़ । २७ ख. ग ओझट । २८ ख बहै । २९ ख. सिरि । ३० ख. ग सहेता । ३१ ख. जुधि । ३२ ग. विन्है । ३३ ख ग बाहादर । ३४ ख नागारची । ग. नगारची । ३५ ख. हवक । ३६ ख ग ओरे । ३७ ख हैम्मर । ग हैमर । ३८ ख ग जलाल । ३९ ग. एके । ४० ख बजावै । ४१ ख हत्थ । ४२ ख ग. षाग ।

---

६९८ ओरिया – आगे बढाए ।

६९९. विरदैत – विरुदधारी, यशस्वी । वरजागि – सुघ्ढ शरीर वाले, वज्राग । ओझट – भयकर ।

७०० बिन्है – दोनो । पडदार = पर्द दार – छिपाने वाला, द्वारपाल । नगारची – नगाडा बजाने वाला । हाक – जोशपूर्ण आवाज । ओरै – झोकता है । हैमर – घोडा । त्रबक – नगाडा । उनाग – नगी । धाय – घाव, प्रहार । धावै – सहार करता है ।

साहू[1] औलगां[2] गोळां[3] समर, आछटि खग हस ऊछळि[4] ।
ध्रपी[5] परणी[6] अपछर अगज, मलानूर हूता मिळै ॥ ७००

दूहौ[7]—वडी[8] फौज इण विध[9] विहद[10], वरण[11] कही विसतार[12] ।
इण आगळ[13] 'अधराज' री, समहर वरणण[14] सार ॥ ७०१

राजाधिराज बखतसींहजीरा जुधरौ वरणण

छंद त्रोटक—जुधि झाल कराळ उठत[15] जठै ।
असि हाकलिया 'बखतेस'[16] अठै ।
चख चोळा[17] झळाहळ रीस चडी ।
भुह[18] ऊपर मौसर जाय भिडी ॥ ७०२
धर-धारक सीस धम[19] धमिया[20] ।
अतळी[21]-बळ वाजिंद[22] उप्रमिया[23] ।
विच[24] फौज रैवंत[25] पसाव वहै[26] ।
कवि ओपम तास प्रकास कहै ॥ ७०३

---

१ ख. साहु । ग साहू । २ ग ओळगा । ३ ख गोलो । ग गोलौ । ४ ख. ऊछले । ५ ख गध्रपी । ६ ख यरणि । ग. परणि । ७ ख दूहा । ग दोहो । ८ ख बडी । ९ ख विधि । १० ख. बिहद । ११ ख. वरण । १२ ख विसतार । १३ ख. आगलि । १४ ख वरणण । १५ ख ग उडत । १६ ग. वषतेस । १७ ग. चौळ । १८ ख ग भौह । १९ ख धम । २० ख. ग घमीया । २१ ख. अतुली । २२ ख. वाजद । २३ ख ऊप्रमीया । ग ऊप्रमीया । २४ ख. बिचि । ग. विचि । २५ ख रेवत । ग. रेवत । २६ ख. बहै ।

---

७०० समर—युद्ध । हस—प्राण । मलानूर—( ? ) ।

७०१. आगळ—अगाडी । अधराज—महाराज बखतसिंहकी उपाधि राजाधिराज थी, उसका संक्षिप्त रूप, अधिराज । समहर—युद्ध ।

७०२. हाकलिया—हाके, चलाये । बखतेस—नागौरपति महाराज बखतसिंह । झळहळ—अत्यन्त तेज, भयंकर । भुह—भौंहें । मौसर—श्मश्रु, मूछ । भिड़ी—स्पर्श की ।

७०३. धर-धारक—शेषनाग । धम धमिया—कंपायमान हुये, प्रहारयुक्त किये (?) । अतळी-बळ—अतुल्य बलशाली । वाजिंद—घोडा । उंप्रमिया—( ? ) । रैवंत-पसाव—महाराजा बखतसिहके डेका नाम ।

असवार सरूप सतेज इसौ ।*
जगचख्ख अनै सपतास जिसौ ।
जुधि नेत्र भडा रंग जावकरा ।
प्रजळै झळ जांणिक पावकरा ।। ७०४

काढिया[1] खग साबळ[2] झोक किया[3] ।
लगिया[4] सिर अंबर वाग[5] लियां[6] ।
आविया[7] अजरायळ सूर इसा ।
जमराव तणा उमराव जिसा ।। ७०५

उण घूमर[8] क्रोध झळा ऊझळी ।
अड़िया[9] असुराण उचार अली ।
सयदाण जुवाण विरांण[10] सज ।
गुमराण उफांण अरोह गज ।। ७०६

करिपाण सुताण कमाण[11] कसै ।
वरसाण[12] सरांण तणा वरसै[13] ।
कमधांण केकाण उडाण कळा ।
झुकिया[14] घमसाण उफांण झळा ।। ७०७

---

*ख प्रतिमें यह पंक्ति इस प्रकार है—
'असवार सतेज सरूप इसौ ।'

१ ख. काढीया । २ ग सावळ । ३ ख कीयां । ४ ख. लगीया । ५ ख बाग । ६ ख ग लीया । ७ ख आवीया । ८ ख घूमर । ९ ख. अडीया । १० ख बीरांण । ग. वीराण । ११ ख कबांण । १२ ख वरसांण । १३ ख. बरसै । १४ ख ग झोकीया ।

---

७०४ जगचख्ख – सूर्य । अनै – और । सपतास – सप्ताश्व । प्रजळै – प्रज्वलित होते हैं । झाळ – आगकी लपट । जाणिक – मानो । पावकरा – अग्निके ।

७०५ सावळ – भाला विशेष । अंबर – आसमान । अजरायळ – जबरदस्त । जमराव – यमराज ।

७०६. घूमर – सेना, दल । झळा – आगकी लपट । ऊझळी – उमडी । सयदांण – यवन । जुवाण – जवान, युवा । गुमराण – गर्व (?)

७०७. सुतांण – तान कर । कमांण – कमान, धनुष । वरसांण – वर्षा । सरांण – तीर, बाण । कमधाण – राठोड । केकांण – घोडा । झुकिया – सलग्न हुए । उफाण – उबाल ।

निनहांण अँगांण वेधांण[1] सरा[2] ।
[illegible] [illegible] अभीच परां[3] ।
[illegible] [illegible] [illegible][4] वरांण वसी[5] ।
[illegible] [illegible] [illegible][6] जिसी ॥ ७०८

हिंदवाण[7] तुरकाण[8] हिवै ।
[illegible] [illegible] वीगांण[9] नृताण[10] रवै ।
[illegible] हुवै सिलहांक [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] घड़ां ॥ ७०९

वधि[11] [illegible] उचक्कन[12] गाहविये[13] ।
[illegible] [illegible][14] [illegible] [illegible][15] किये[16] ।
[illegible][17] [illegible] [illegible] वहै[18] ।
[illegible] [illegible][19] [illegible] [illegible] रहै[20] ॥ ७१०

१ [illegible] । २ [illegible] । ३ ग पर । ४ ग [illegible] । ५ ग [illegible] । ६ ग [illegible] । ७ ग हिंदवाण [illegible] । ८ [illegible] तुरकांण । ९ ग [illegible] । १० [illegible] । ११ [illegible] । १२ [illegible] । १३ ग [illegible] । १४ [illegible] । १५ [illegible] । १६ [illegible] । १७ [illegible] । १८ [illegible] । १९ [illegible] । २० [illegible] ।

७०८. [illegible]

७०९. [illegible]

७१०. [illegible]

चमराळ दळां अति रीस चढी ।
करि क्रोध धिराज नराज कढी ।
सत्र थाट घडां[1] चवगांन सिरै ।
कवियाण रैवत[2] - पसाव करै ।। ७११

तरवार वहै[3] असवार सठै ।
जरदैत हुवै दोय टूक[4] जठै[5] ।
करि[6] जीण सपख्खर बाज[7] कटै ।
दहोडै[8] खळ एम तुरी दवटै[9] ।। ७१२

आय दांत चढै स्रुगि दैत इतां ।
करि झाट उडावत सीस कितां ।
धर हू अंतरीख करी[10] ग्रिधरै ।
करि हार महेस सिगार[11] करै ।। ७१३

धड़ धार अपार लुहा[12] धररै ।
भभरूक[13] भयकर पत्र[14] भरै ।
परिवार सहेत हुवै त्रपती ।
जुगणी त्रवसठ[15] सगति जिती ।। ७१४

कमधज[16] गजा सिर घाव करै ।
जुध मारण दारण दाव धरै ।

---

१ ख घडा। २ ख ग रेवत। ३ ख बहै। ४ ख जूक। ५ ख ग जठै। ६ ख कटि। ग करी। ७ ग. वाज। ८ ख. ग दहोडै। ९ दवटै। १० ख. करिग्र। ग करिग्रि। ११ ख. सिगार। १२ ख. ग. लोही। १३ ख भभरुत। १४ ख. पत्र। १५ ख. चवसठी। १६ ख कमधज्ज।

---

७११. चमराळ – यवन, मुसलमान। धिराज – राजाधिराज, महाराजा वखतसिंह। नराज– तलवार। सत्र – शत्रु। थाट – दल। चवगान – मैदान। कपि – वानर। डांण – छलाग।

७१२. सपख्खर – कवच सहित (घोडा)। बाज – घोडा। दहोड़ै – दौडते हैं। दवटै – दौडता है।

७१३. अंतरीख – आकाश। महेस – महादेव।

७१४. भभरूक – राजस्थानी लोक-कथाओ में प्रसिद्ध एक भूत भाभरो। सहेत – सहित। त्रपती – तृप्त होनेका भाव। जुगणी –रणचडी।

लडतां अँग लोह छछोह लगै[१] ।
जगि[२] जांणिक ज्वाळ अहूति जगै[३] ।। ७१५

अरणाग[४] पतगज ई उफणै[५] ।
वप[६] स्रोवण[७] घाव जडाव वणै[८] ।
सर सोक वजत[९] परा सणणै ।
तिमहीज[१०] जडाव तुरग तणै ।। ७१६

भचके[११]' बखतेस'[१२] गुसै[१३] भरियौ[१४] ।
व्रजराज[१५] उपासक वीफरियौ[१६] ।
जुध[१७] जाणिक क्रोध[१८] मतै अजरै ।
करि दामणि धार सग्राम करै ।। ७१७

करि जाणिक आयुध इद्र करै ।
धडछै[१९] खळ जोम सदेह[२०] धरै[२१] ।
'अभमाल' कणैठिय[२२] ताम[२३] इसौ ।
जुध[२४] लक कणैठिय[२५] राम जिसौ ।। ७१८

---

१ ख. लगे। २ ख जग। ३ ख ग जगे। ४ ख ग. अरणग। ५ ख ग उफणे। ६ ख बप। ७ ख ग सोव्रण। ८ ख वणे। वणे। ९ ख. व्रजत। १० ख. तिमहींज। ११ ख ग भचकै। १२ ग वषतेस। १३ ख. गुणै। १४ ख भरीयौ। १५ ख वृजराज। १६ ख. वीफरीयौ। १७ ख. जुधि। १८ ग क्रोध। १९ ग धडछे। २० सदेह। २१ ख धरे। २२ ख ग कणैठीय। २३ ख ताम। २४ ख जुधि। २५ ख कणैठीय।

---

७१५ लोह – शस्त्र-प्रहार। छछोह – तेज, तीक्ष्ण। अहूति – आहूति।

७१६. अरणाग – लाल शरीर। पतगज – चिनगारिया सी। वप – वपु, शरीर। स्रोवण – रक्त, खून। सर – बाण। सोक – तीरोके तेज चलनेकी ध्वनि। परां – पख। सणणै – ध्वनि करती है।

७१७ भचके – प्रहार करता है। बखतेस – महाराजा बखतसिंह। व्रजराज उपासक – श्रीकृष्णकी उपासना करने वाला महाराज बखतसिंह। वीफरियौ – तेज क्रोधमे हो गये। करि – हाथमे। दामणि – तलवार।

७१८ जांणिक – मानो। धडछै – काटता है, संहार करता है। जोम – जोश। अभमाल – महाराजा अभयसिंह। कणैठिय – कनिष्ठ, छोटा भाई। ताम – तब। लक – लंका।

घमसांण करै धरि पाण घणौ ।
तिण मौसर[1] सूर 'अजीत' तणौ ।
लोह वाहत[2] सीस अकास लगै ।
इम जोध लडै 'बखतेस' अगै ।। ७१९

अति वाहत[3] साबळ खाग अडी ।
वप[4] वेसज छोटिय[5] लाज वडी[6] ।
करनोत 'अभावत' सूर 'क्रन' ।
वधि[7] वाहत[8] साबळ चोळ व्रन ।। ७२०

घण वाहत[9] साबळ[10] तेज[11] घणौ ।
तिण वार[12] 'पतौ'[13] 'महक्रन्न'[14] तणौ ।
सुत 'तेज' 'करन्न' दळा सबळा ।
खग झाट करै 'विसनेस' खळां ।। ७२१

असुरां थट 'देव' क्रनोत[15] अड़ै ।
लोहडा झट 'सूरिजमाल' लडै ।
'अणदेस' सुजाव लड़ै उरड़ै ।
जवना 'सगतेस' छड़ाल जडै ।। ७२२

---

१ ख मोसर । २ ख बाहत । ३ ख. बाहत । ४ ख बप । ५ छोय । ग छोटीय । ६ ख बडी । ७ ख बधि । ८ ख. बाहत । ९ ख बाहत । १० ख. षाग । ग सावळ । ११ ख. सतेज । १२ ख. बार । १३ ख. पतो । १४ ख. ग. महक्रम्न । १५ ख. क्रनोत ।

---

७१९. घमसांण – युद्ध । पांण – प्राण, शक्ति । मौसर – अवसर । अजीत – महाराजा अजीतसिंह ।

७२०. साबळ – भाला विशेष । अडी – आड मे, रोक मे । वेसज – आयु । करनोत – राठौड वशकी एक शाखा । अभावत – अभयसिंह करनोतका पुत्र । क्रन – करणसिंह करणोत । चोळ – लाल । व्रन – वर्ण, रग ।

७२१ पतौ – प्रतापसिंह । महक्रन्न – महकरणसिंह । तेज – तेजसिंह । करण – करणसिंह । विसनेस – विसनसिंह ।

७२२. देव – देवीसिंह । क्रनोत – करणोत शाखा के राठौड । लोहडां – शस्त्रो । झट – प्रहार । अणदेस – आनंदसिंह । सगतेस – शक्तिसिंह । छडाळ – भाला । जडै – प्रहार करता है ।

हथियां[1] खग वाहत[2] रिख[3] हसै ।
बळि[4] क्रन्न तणौ 'सुरतौ'[5] बहसै[6] ।
झाटकै खळ पौरस व्रद[7] झलौ ।
दुजडां 'मुकँदावत' सूर 'दलौ' ।। ७२३

मगरूर[8] जुटै खग आघमणौ ।
तद[9] 'जीवण' जोगियदास[10] तणौ ।
वधि[11] 'नाहर ऊत' खळा विहरै[12]
करिमाळ 'पतौ' घमचाळ[13] करै ।। ७२४

जुध 'माहव' सभ्रम पाथ जिसौ ।
'अनपाल'[14] करै रिणताळ इसौ ।
मछरीक 'मधावत'[15] 'पेम' मँडै[16] ।
खग[17] झाट खळां थट घाट खँडै ।। ७२५

'चतुरेस' 'पतावत'[18] खेत चढै[19] ।
विमरीर खळा खग झाट विढै[20] ।

---

१ ख. हथीया । २ ख. वाहत । ३ रिख्ख । ४ ख. बलिक्रन । ग. वलिक्रन । ५ ग. सुरतो । ६ ग. वहसै । ७ ख. ग वृद । ८ ग. मिगरूर । ९ ख. तदि । १० ख ग जोगीयदास । ११ ख वधि । १२ ख विहरै । १३ ख घण । १४ अनिपाल । १५ ख वधावत । ग. वधावत । १६ ख मडै । ग. मडे । १७ ग षळ । १८ ख फतावत । १९ ख. चढ़ै । २० ख विढ़ै ।

---

७२३ रिख – नारद ऋषि । क्रन्न तणौ – करणोत शाखाका राठौड । सुरतौ – सूरतसिंह । बहसै – जोशमे होता है । झाटकै – प्रहार करता है । व्रद झलौ – विरुदको धारण करने वाला । दुजडा – तलवारो । मुकँदावत – मुकुन्दसिंहका पुत्र । दलौ – दलसिंह ।

७२४ मगरूर – गर्व पूर्ण । आघमणौ – जोशपूर्ण, जोशीला । जीवण – जीवनसिंह । नाहर-ऊत – नाहरसिंहका पुत्र । विहरै – संहार करता है । करिमाळ – तलवार । पतौ–प्रतापसिंह । घमचाळ – युद्ध ।

७२५ माहव – माधोसिंह । सभ्रम – पुत्र । पाथ – पार्थ, अर्जुन । रिणताळ – युद्ध । मछ-रीक – चौहान । मधावत – माधोसिंहका पुत्र । पेम – प्रेमसिंह ।

७२६ चतुरेस – चतुरसिंह । पतावत – प्रतापसिंहका पुत्र । खेत – युद्धस्थल । विमरीर – जबरदस्त, भयंकर । विढै – काटता है, युद्ध करता है ।

घण वीजळ[1] वाहि वहाय[2] घणी ।
पडियौ[3] रिण माहि परी परणी ।। ७२६

नरलोक अखै जस कीध नरां ।
सुरलोक वसै[4] धरि देह सुरां ।
रण मेड़तिया[5] खग झाट रमै ।
भिडजां चव-बध अहेस भमै ।। ७२७

'सिरदार' समोभ्रम जेण सिरै ।
किलमा जुध सूरजमाल[6] करै ।
जवना घट सेल विकट्ट[7] जड़ै ।
पट ऊपर[8] स्रोण उछट पड़ै ।। ७२८

सोहिया[9] घट ऊच[10] स्रोण सबै ।
फुट मद्द रँगट्टचौ दह फबै ।
खळ वाह[11] करै सर सेल[12] खगां ।
लोह वाहत[13] लोह छछोह लगा ।। ७२९

सझि बाजद[14] बद्द दळां सबळा ।
खग झाट उडावत सीस खळां ।

---

१ ख बीजळ । २ ख. बहाय । ३ ख पडीयौ । ४ ख बसे । ग. वसे । ५ ख. ग. मेडतीया । ६ ख. सुरिजमाल । ७ ग विकट । ८ ख ऊपट । ९ ख. ग. सोहीया । १० ख उछट । ग. ऊछ । ११ ख. बाह । १२ ग सैल । १३ ख बाहत । १४ ख बाजह ।

---

७२६. बीजळ – तलवार । पडियौ – वीर गति प्राप्त हुआ । परी – अप्सरा । परणी – पाणिग्रहण किया ।

७२७. अखै – कहता है । रण – युद्ध । भिडजां – घोडो । चव-बध – चारो तरफ(?) । अहेस – शेष नाग ( ? ) ।

७२८ सिरदार – सरदारसिंह । सिरै – पक्तिमे. श्रेष्ठ । किलमां – यवनो । पट – वस्त्र । स्रोण – शोणित, खून ।

७२९ सोहिया – सुशोभित हुआ । घट – शरीर । ऊच – श्रेष्ठ । फुट मद्द – ( ? ) । रँगट्टचौ – रगका ( ? ) । दह – कुण्ड ( ? ) ।

७३०. बाजद – घोडा ।

मुनिराज महेस कहै मोहिया ।
सांमुहै मुख[1] घाव भला सोहिया[2] ॥ ७३०

पछटै खग सिलह[3]-पोस पड़ै ।
लोहडां इम सूरजमाल[4] लड़ै ।
तदि रोस व्रजागि भुजंग तखौ ।
असुरा खग[5] झाडत[6] सूर 'अखौ' ॥ ७३१

अतळीबळ[7] 'भोज'[8] सुजाव इसौ[9] ।
जमरूप गजां[10] घड भीम जिसौ ।
मगरूर खगां झट पूर मझै ।
सुत 'जैत' दमगळ 'रांम' सझै ॥ ७३२

'गिरमेर' तणौ[11] सिवदांन गजां ।
धमचक्क पछट्टत[12] खाग धजां ।
भवसीघ[13] सुतन्न[14] हरीद[15] भिड़ै[16] ।
पछटै खग जांणिक वीज[17] पड़ै ॥ ७३३

---

१ ख. मुषि । २ सोहीया । ग. सोहिया । ३ ख ग सिल्लह । ४ ख सूरिजमाल । ५ ख षगि । ६ ख झाटत । ७ ख अतुळीबल । ८ ख भौज । ९ ख. इसो । १० ख जजा । ११ ग. तणो । १२ ग. पछटत । १३ ख ग. भावसिंघ । १४ ख. ग. सुतन । १५ ख. हरिंद । १६ ख भडै । १७ ख. बीज ।

---

७३० मुनिराज — नारदमुनि । महेस — महादेव ।

७३१ पछटै — प्रहार करता है । सिलह-पोस — अस्त्र-शस्त्रोसे सुसज्जित अथवा कवचधारी योद्धा । लोहडा — शस्त्रोसे । व्रजागि — वज्राग्नि, भयंकर । भुजग तखौ — तक्षक नागके समान । अखौ — अक्षयसिंह ।

७३२ अतळीबळ — अतुल्य बलशाली । भोज — भोजराजसिंह । सुजाव — पुत्र । मझै — मध्यमे । जैत — जैतसिंह । दमगळ — युद्ध । रांम — रामसिंह । गिरमेर — सुमेरसिंह ।

७३३ धमचक्क — युद्ध । पछट्टत — गिरता है, प्रहार करता है । धजा — भालो । भवसींघ— भावसिंह । सुतन्न — पुत्र । हरियद — हरिसिंह ।

जुध खाग झटां घट पीजरियौ[1] ।
हुय[2] खेलत गेहरियौ[3] 'हरियौ'[4] ।
पमँगेस खगां झट तूटि पड़ै[5] ।
चगथां दळ माझिळ[6] भूमि चडै ॥ ७३४

अग ऊपर[7] लोह उडै अजरौ ।
'हरियौ'[8] खग वाहत 'चँद' हरौ ।
कदमेस झडै रण लोह करै ।
विफरै होकरडै[9] डकरै बकरै ॥ ७३५

गहरै[10] 'रँगरेळ'[11] हरै गुमरै ।
भैरवी रतरै जळ पत्र भरै ।
एक[12] हाथ स हाथ अपच्छररै[13] ।
किलमां इक हाथ जु घाव करै ॥ ७३६

कर[14] झाट सिल्है घट दोय करै ।
लोहरै बोहरै[15] छकी 'केल'[16] हरै ।
जुडियौ[17] इम लंगर राव ज्यूही[18] ।
मगरूर पड़ै रिण खेत मही ॥ ७३७

---

१ ख ग. पींजरीयौ। २ ख ग. होय। ३ ख गेहरीयौ। ४ ख हरीयौ। ५ ख. ग. पडे। ६ ख माझिल। ७ ख. ऊपरि। ८ ख हइयां। ग हरयो। ९ ख. होकरै। ग हौकरै। १० ख. गहरै। ११ ख. रंगरैल। १२ ख. यक। १३ ख. ग. अपछररै। १४ ख. करि। ग. कारै। १५ ख. ग. बोहरै। १६ ख ग. कील। १७ ख. जुडीयौ। ग. जुडियो। १८ ख. ग जहीं।

---

७३४. पींजरियौ – जिस प्रकारसे रूईको धुनकीसे धुन कर छोटे छोटे रेशे पृथक कर दिए जाते हैं इसी प्रकार योद्धाका शरीर क्षत-विक्षत कर दिया गया। गेंहरियौ – "गैर" नृत्यमे नाचने वाला। हरियौ – हरिसिंह। पमगेस – घोडा। चगथां – यवनो, मुसलमानो। माझिल – मध्य।

७३५ अजरौ – भयकर। हरियौ – हरिसिंह। चदहरौ – चादावत शाखाका मेडतिया। कदमेस – पैर, चरण। झडै – कट जाते हैं। विफरै – कोप करता है। होकरडै – तेज जोशीली आवाज करता है। डकरै – दहाड करता है। बकरै–क्रोधपूर्ण होता है।

७३६. गहरै – घना। भैरवी – रणचडी। रतरै – रक्तका।

७३७. छकी – ( मस्त ? ) मगरूर – वीर, गर्वीला। रिण-खेत – युद्ध-स्थल।

खित पिंड[1] करै रत हस खड़ै[2] ।
चढि रंभ रथां सुरलोक चड़ै[3] ।
दुहड़ै[4] जुधि[5] 'साहिब' मेछ दळा ।
खगझाट रमै सुत 'नाथ' खळां ॥ ७३८

सुत 'कान्ह' स्वरूप वणै[6] सिधरै[7] ।
किलमां भड 'मोकम'[8] घाव करै ।
तप 'मोहण' जै छक 'पूर' तणौ ।
तड़छै रवदां खगि 'सूर' तणौ ॥ ७३६

जवना दळ दांति चढत जवा ।
सुत 'रांम' हणै जमराण सत्रा ।
धडच्छै[9] खळ[10] मुग्गळ[11] चाड धणी ।
'अणदौ'[12] 'अमरावत' फौज[13] अणी ॥ ७४०

सत्र थाट पळा गळ दे समळा ।
खग झाडत[14] 'ऊदल' थाट खळां ।
कळहै सुत भूप किसू कहणौ ।
त्रिजडां हथ भ्रात 'हरिंद' तणौ ॥ ७४

---

१. क पीड़। २ ख षडे। ३ ख चडे। ४ ख. दुहुवै। ग. दुहडै। ५ ख. जुध। ६ ख कीया। ग वणे। ७ ख ग सिद्धरै। ८ ख ग. मौकम। ६ ख. ग. धडछै। १० ख षग। ११ ख. मूगल। ग मुंगल। १२ ख अणदो। ग अणदो। १३ ग फोज। १४ ख झाटत।

---

७३८. खित – क्षिति, भूमि। पिंड करै रत – अपने रक्तसे भूमि पर पिंड बनाता है और पितरोंका तर्पण करता है। हस – प्राण। रंभ – अप्सरा। साहिब – साहिबसिंह। मेछ – यवन। नाथ – नाथूसिंह।

७३६. कान्ह – कानसिंह। किलमा – यवनो। मोकम – मोहकमसिंह। रवदा – यवनो। सूर – सूरसिंह।

७४०. दांति चढत जवा – जितने ही उसके सम्मुख आ जाते हैं। राम – रामसिंह। सत्रां – शत्रुओ। धड़च्छै – संहार करता है। धणी – धनुष। अणदौ – आनदसिंह। अमरावत – अमरसिंहका पुत्र।

७४१ पळा – मास। गळ – मास-पिंड। समळा – मासाहारी पक्षी, चील। ऊदल – उदयसिंह। थाट – दल। त्रिजडां – तलवारों। हरियद – हरिसिंह।

धडछै खळ वीजळ[1] झाट धजां ।
'सहसावत' 'रांम' अणी सकजां ।
जम रूप 'अनावत' जोर जुटै ।
तिणवार खळां खगि सीस तुटै ।। ७४२

सुत 'ईसर' 'जोर' कियौ[2] सरसौ ।
जवनांण हणै खग पाण 'जसौ' ।
सुत 'वीठल' जोर झळां[3] सझियै[4] ।
दहवाट[5] खळा खग झाट दियै[6] ।। ७४३

भिड लूण[7] उजासत भूप तणौ ।
'मनरूप' महाबळ[8] आघमणौ ।
घण घायक[9] पौरस[10] तेज घणौ ।
हरिनाथ तणौ[11] खगि रौद[12] हणौ[13] ।। ७४४

रिम थाट हणै कुळव्रद रखौ ।
अतुळीबळ 'जैत' सुजाव 'अखौ' ।
तडछै खळ सभव काज तठै ।
जुध सभव 'हीदवऊत' जठै ।। ७४५

---

१ ख बीजळ। २ ख ग. कीया। ३ ख झलां। ४ ख सझीयै। ५ ख दहबाट। ६ ख. दीयै। ७ ख. लूण। ८ ख. माहाबल। ९ ख पायक। १० ख ग. पोरस। ११ ग. तणो। १२ ग. रोद। १३ ख हणो। ग घणो।

---

७४२ वीजळ–तलवार। सहसावत–सहस्रसिंहका पुत्र। रांम–रामसिंह। अनावत–अनाडसिंहका पुत्र।

७४३ ईसर–ईसरसिंह। जोर–शक्ति, बल। सरसौ–पूर्ण। जवनांण–यवन। पांण–प्राण–बल। जसौ–जसवंतसिंह। वीठल–वीठलदास। झळां–आग। सझियौ–सज्जिभूत हुआ। दहवाट–ध्वस।

७४४. उजासत–उज्ज्वल करता है। आघमणौ–जोशीला। घायक–सहार करने वाला। रोद हणौ–यवनोका सहार करता है।

७४५. रिम थाट–शत्रु-दल। कुळव्रद-रखौ–कुलके विरुदकी रक्षा करने वाला। अतुळीबळ–अतुल्य बलशाली। जैत–जैतसिंह। सुजाव–पुत्र। अखौ–अक्षयसिंह।

सुत कांन्ह खळां छडियाळ[1] 'सली'[2] ।
'महिरांण' करै जुध आपमली[3] ।
दहलै[4] खगि 'ऊदल' रौद दळा[5] ।
सुत 'दौलतसाह'[6] दळां सबळां ।। ७४६

रवदा झट रूक करै रमणौ ।
तिणवार उदैसिघ 'वैण'[7] तणौ ।
जुधि[8] वाहि[9] वहाई[10] घणा[11] दुजड़े ।
'पदमौ'[12] रतनावत खेत पडै[13] ।। ७४७

हर सीस ग्रहै[14] रिखराज हसै[15] ।
वरि[16] रंभ सुरांपुर मांहि बसै[17] ।
ग्रहि खाग झटां जवनेस गरै ।
'किरतेस' तणौ[18] 'पदमेस' करै ।। ७४८

खत्रियां[19] गुर 'लाल' दुझाल खंडै ।
वधि रामचदोत[20] खळा विहडै[21] ।

---

१ ख ग छडीयाल । २ ख सलौ । ३ ख ग. आपमलौ । ४ ख. दहडै । ५ ग हर्ला । ६ ग दोलत । ७ ख. वेण । ग. वेरा । ८ ख. जुध । ९ ख बाहि । १० ख. वहाई । ११ ख घणौ । १२ ग. पदमो । १३ ग पडे । १४ ख ग ग्रहे । १५ ख. हसे । १६ ख. वरि । १७ ख. बसे । ग. वसे । १८ ग तणो । १९ ग षत्रीया । २० ख रामचदोत । २१ ख बिहडै ।

---

७४६. कान्ह – कानसिंह । छडियाळ – भाला । सलौ – सलहसिंह । महिरांण – महरावणसिंह । आपमलौ – योद्धा, वीर । दहलै – सहार करता है । खगि – तलवारसे । ऊदल – उदयसिंह । दौलतसाह – दौलतसिंह ।

७४७ रवदा – यवनो, मुसलमानो । रूक – तलवार । रमणौ – खेलना या खेलने वाला । वैण – वेणीसिंह । दुजडे – तलवारें । पदमौ – पद्मसिंह । रतनावत – रतनसिंहका पुत्र ।

७४८ हर – रुद्र, महादेव । रिखराज – नारद मुनि । जवनेस – यवन, बादशाह । गरै – समूहमें । किरतेस – कीर्तिसिंह । पदमेस – पद्मसिंह ।

७४९ लाल – लालसिंह । दुझाल – वीर । खडै – सहार करता है । विहडै – ध्वस करता है ।

घण वाहि[1] वहायज[2] लोह[3] घणौ[4] ।
तदि[5] खेत पडै[6] 'दलसाह'[7] तणौ ॥ ७४९

मधि चार[8] धरै[9] हर हार मही ।
जुध सीस 'पदम्म'[10] पदम्म जही ।
लड़ि एम बरे रभ व्रद लियौ[11] ।
कमधज्ज[12] सुरांपुर वास[13] कियौ[14] ॥ ७५०

'सिलहेत'[15] तणौ[16] पखरैते सुधौ ।
'बखतावत'[17] बाहत[18] खाग 'बुधौ' ।
'मनरूप तणौ'[19] सिवदांन मँडै[20] ।
खग भाट घणा खळ थाट खँडै[21] ॥ ७५१

दुजडा हथ वाहत पाव दिढै[22] ।
'बखतेस'[23] तणौ 'हिमतेस' विढै[24] ।
धसि[25] 'सूर' तणौ[26] गयदा विहरै[27] ।
किरमाळ महाबळ[28] घाव करै ॥ ७५२

---

१. ख बाहि । २ बहायज । ३ ख लौह । ४ ग. घणो । ५ ग. तद । ६ ख. ग पडे । ७ ग साहि । ८ ख वार । ९ ख ग घरे । १० ख. पद्दम पद्दम । ग॰ पदम । ११ ख लीयो । १२ ग कमधज । १३ ख. बास । १४ ख कीयो । ग. [illegible]यो । १५ ख ग. सिलहैत । १६ ख. ग. हृणं । १७ ग. बषातावत । १८ ग वाहत । १९ ग तणो । २० ख मडे । २१ ख. षडे । २२ ख. ग दिढ़ै । २३ ग बषतेस । २४ ख. बिढ़ै । २५ ख. बधि । २६ ग तणो । २७ ख बिहरै । २८ ख महाबल । ग. महावल ।

---

७४९ दलसाह – दलसिंह ।

७५०. पदम्म – पद्मसिंह । बरे – वरण कर के । रभ – रंभा, अप्सरा । व्रद – विरुद, कीर्ति ।

७५१ सिलहेत – सिलहसिंह । पखरैत – कवचधारी घोडा । सुधौ – सहित । बखतावत – बखतसिंहका पुत्र । बुधौ – बुधसिंह ।

७५२. दुजडा हथ – खड्गधारी योद्धा । पाव दिढै – मजबूत पैर रखा हुआ । बखतेस – बखतसिंह । हिमतेस – हिम्मतसिंह । विढै – युद्ध करता है । सूर – सूरसिंह । गयद – हाथी । विहरै – विदीर्ण करता है, सहार करता है । किरमाळ – तलवार ।

रुकडा मुडि झाट त्रबाट रुडै[1] ।
'जयतेस' तणौ 'फतमाल' जुडै ।
'गिरमेर' 'दलावत' मेछ गजा ।
पछटै[2] किरमाळ करै पुरजां ॥ ७५३

असुरा 'अचळावत'[3] 'खीम' इसौ ।
तम पूज[4] सिरै ग्रहराज तिसौ ।
धुर 'जैत' सुजाव अणीधजरौ ।
उण वार[5] 'गुमान' लडै अजरौ ॥ ७५४

'अनपाळ' तणौ[6] छडियाल[7] उरा ।
'सिरदार' दुसार करै असुरा ।
तण 'पीथल' 'काबिलसीघ' तठै ।
जवनाण हणै घमसाण जठै ॥ ७५५

दहडै खगि मेछ[8] हकां दखतौ ।
बधि 'सामळ ऊत' लडै 'बखतौ' ।
सुत 'जोग' भयाण हणै सबळां ।
खग झाट 'गुमान' अमान[9] खळां ॥ ७५६

---

१ ख रूडै। २ ख पछटे। ३ ख अचलाव। ४ ख. पूज। ग पुज। ५ ख ग. उणवार। ६ ग तणो। ७ ख छडीयाल। ८ ख ग. सेछि। ९ ख ग अभान।

---

७५३. रुकडा – तलवारों। मुडि झाट – प्रहार हो कर। त्रबाट – नगाडा। रुडै – बजते। जगतेस – जगतसिंह। फतमाल – फतेहसिंह। जुडै – भिडता है, युद्ध करता है। गिरमेर – सुमेरसिंह। दलावत – दलसिंहका पुत्र। पछटै – प्रहार करता है। पुरजां – पुर्जों, खड।

७५४ असुरा – यवनो। अचळावत – अचलसिंहका पुत्र। खीम – खीमसिंह। तम – अंधेरा। पूर – पूर्ण। ग्रहराज – सूर्य। धुर – अगाडी, प्रथम। जैत–जैतसिंह। अणी – अनीक, सेना। धजरौ – ध्वजाका। गुमान – गुमानसिंह। अजरौ–जबरदस्त, महान।

७५५ छडियाल – भाला। सिरदार – सरदारसिंह। दुसार – आरपार, भाला। पीथल – पृथ्वीसिंह। जवनाण – यवन।

७५६. दहडै – ध्वस करता है। हका – आवाज। दखतौ – कहता हुआ। सांमळ ऊत – श्यामसिंहका पुत्र। बखतौ – बखतसिंह। जोग – जोगसिंह। भयाण – भयकर रूपमें। सबळा – बलवानोको। गुमान – गुमानसिंह। अमान – अपार, बहुत।

मिळ 'राम' हणै खळ खेत मही ।
जुधि 'देव क्रनोत'[1] कठीर जही ।
कहै गोकळदास सुजाव किसौ[2] ।
जुधि 'जैत'[3] हणू विरदेत[4] जिसौ ।। ७५७

पछटै वरसीघ[5] तणौ प्रघळा[6] ।
खग धार अपार 'भुझार'[7] खळां ।
तिण वार 'सिवौ'[8] चलि[9] खाग तणै[10] ।
हरनाथ तणौ[11] खळ साथ हणै ।। ७५८

झट खाग रमै घट सीस झड़ै ।
'लखधीर' तणौ 'सरदार' लडै ।
धज खग्ग खळा दळ ऊधमणौ ।
तिण वार 'जसौ' 'पचमुख'[12] तणौ ।। ७५९

चांपावत—इम जूटत मेडतिया[13] अजरा ।
हद[14] जूटत दारण 'चाप'[15] हरा ।
खळ थाट सिरै खग झाट खिरै ।
'सुरतौ'[16] 'हरियद' सुजाव सिरै ।। ७६०

---

१ ख ग क्रनोत। २ ख किसो। ३ ख दैत। ४ ख. ग बिरदैत। ५ ख बरसिंघ। ग वरसिंघ। ६ ख प्रघला। ७ ख ग. भूझार। ८ ख. ग सिवो। ९ ख वलि। १० ग. तणो। ११ ग तणो। १२ ख पचमुख। १३ ख ग मेडतीया। १४ ख हब। १५ ख. पाच। १६ ग. सुरतो।

---

७५७ देव – देवीसिंह। क्रनोत – करणोत शाखाका राठौड। कठीर – सिंह। हणू – हनुमान। विरदैत – यशस्वी।

७५८ पछटै – गिराता है, मारता है। प्रघळां – बहुतोको। भुझार – जुझारसिंह। सिवौ – शिवदानसिंह।

७५९ झडै – कट कर गिरते हैं। लखधीर – लखधीरसिंह। सरदार – सरदारसिंह। धज भाला ऊधमणौ – ध्वस करने वाला। जसौ–जसवतसिंह। पचमुख – पंचायणसिंह।

७६० जूटत – युद्ध करते है। अजरा – जबरदस्त। दारण – जबरदस्त, वीर। चाप हरा– चापाके वशज, चापावत शाखाके राठौड। खिरै – वीर गति प्राप्त होते हैं। सुरतौ – सूरतसिंह। हरियद – हरिसिंह।

'अचळावत' 'तेज' लडै उरडै ।
पिसणां[1] खग झाट अगुट[2] पडै ।
विहरत[3] खळा खग[4] कीत वनौ ।
वधियौ[5] रघुनाथ तणौ 'विसनौ[6]' ।। ७६१

घण घाय वरावत[7] हूर घणां ।
'पदमौ'[8] 'अनपाळ' तणौ प्रिसणां[9] ।
वधि[10] फीळ[11] हणंत[12] धणी वनकौ[13] ।
किलमां खग 'रूप' तणौ 'कनकौ' ।। ७६२

तप तेज खगां जिम भांण तणौ ।
जुध जूटत 'दांन' 'सुजांण' तणौ ।
वधि[14] बाहत वीजळ[15] थाट बिचै ।
'हिमतेस' 'सदावत' सूर हिचै ।। ७६३

जुध खाग वहै[16] झळ जोप तणौ ।
उण मौसर[17] 'बाघ'[18] 'अनोप' तणौ ।

---

१ ख. प्रिसुणा । ग पिसुणा । २ ख. भृगुट्ट । ग भृगुट । ३ ख. बिहरत । ४ ख. षगि । ५ ख बधीयौ । ६ विसनौ । ७ ख बरावत । ८ ग. पदमो । ९ ख. प्रिसुणा । ग प्रिसणा । १० ख ग वधि । ११ ख. फीण । १२ ख. हुण । १३ ख. धणी वनिकौ । १४ ख. बधि । १५ ख ग, बीजळ । १६ ख. बहै । १७ ग. मोसर । १८ ग वाग ।

---

७६१ अचळावत – अचलसिंहका पुत्र । तेज – तेजसिंह । पिसणां – शत्रुओ । अगुट – शिर, मस्तक । विहरत – सहार करता है । कीत – कीर्ति । वनौ – दूल्हा, पति । वधियौ – आगे बढा । विसनौ – विसनसिंह ।

७६२ वरावत – वरण कराता है । हूर – अप्सरा । पदमौ – पद्मसिंह । प्रिसणां – शत्रुओं । फीळ – हाथी । हणत – सहार करता है । धणी वनकौ – सिंह । किलमां – यवनो । रूप – रूपसिंह । कनकौ – कनकसिंह ।

७६३ दान – दानसिंह । सुजाण – सुजानसिंह । बधि – बढ कर । बाहत – प्रहार करता है । हिमतेस – हिम्मतसिंह । सदावत – शार्दूलसिंहका पुत्र । हिचै – युद्ध करता है, सहार करता है ।

७६४ मौसर – अवसर, मौका । बाघ – बाघसिंह । अनोप – अनोपसिंह ।

खग[1] पूर 'सुजांण' सुजाव खरै[2] ।
करिमाळ बहादर जंग करै ॥ ७६४

दळ रौद विभाड़ण[3] 'पीथ' दुप्रौ ।
हिमतौ[4] भड मांडणोत[5] हुप्रौ[6] ।
ग्रहि चद्र प्रहास झटां चुगला[7] ।
मुकँदावत सूर हणे मुगळा ॥ ७६५

थट मेछ[8] करै धर[9] पाथ रणौ ।
त्रिजडा 'अनपाळ' 'सगत्त'[10] तणौ ।
अणियाळ[11] अत्राळ[12] खळां उळझै ।
सुत 'कान्ह' महाजुध 'खीम' सझै ॥ ७६६

चँद्रहास करै जुध चूप[13] तणौ ।
तिण वार 'जुरावर'[14] 'कूप'[15] तणौ ।
विहँडै[16] खळ वाघ[17] जही विरतौ[18] ।
पछटै खग 'नादलऊत' 'पतौ' ॥ ७६७

---

१ ख घष । २ ख. ग घरै । ३ ख. बिभाडण । ४ ग हिमतो । ५ ख. ग. मांडण ऊत । ६ ग. हुम्रो । ७ ख वगुला ८ ख. मैच । ग. मेच । ९ ख ग थर । १० ख सगति । ग. सगत । ११ ख. ग. अणीयाल । १२ ख अत्राल । १३ ख. चुप । १४ ख ग जोरावर । १५ ख. कूप । १६ ख. बिहडै । १७ ख बाघ । १८ ख. बिरतौ ।

---

७६४. सुजाण – सुजानसिंह । खरै – वीर-गति प्राप्त हो गया । करिमाळ – तलवार । जग – युद्ध ।

७६५. दळ – सेना । रौद – यवन । विभाड़ण – सहार करनेको । पीथ – पृथ्वीसिंह । दुप्रौ – दूसरा, वशज । हिमतौ – हिम्मतसिंह । माडणोत – राठौड वशकी माडणोत शाखाका वीर । चद्रप्रहास – तलवार । चुगलां – यवनो । मुकदावत – मुकुदसिंहका पुत्र ।

७६६ थट – सेना, दल । मेछ – म्लेच्छ, यवन । घर – पृथ्वी । पाथरणौ – बिछौना । त्रिजडा – तलवारो । सगत्त – शक्तिसिंह । अणियाळ – भाला । अत्राळ – आतें । कान्ह – कानसिंह । खीम – खीमसिंह ।

७६७. चद्रहास – तलवार । चूप – यहाँ चांपावत शाखाका वीर अर्थ ठीक बैठता है । जुरावर – जोरावरसिंह । कूप – कूपावत शाखाका राठौड़ वीर । विरतौ – भयंकर रूपयुक्त । नादल-ऊत – नादलसिंहका पुत्र । पतौ – प्रतापसिंह ।

इण भात[1] चापावत सूर अड़ै ।
लोह झाट कूपावत[2] एम लडै ।
जुध 'सामत-ऊत' सक्रोध जगां ।
खळ पाडत देवियसीघ[3] खगां ।। ७६८

सुत 'राम' खत्रीवट काम सचै ।
रघुनाथ समाथ भराथ रचै ।
सुत 'सामत' मेछ हणै सबळा[4] ।
कमधज्ज[5] 'जवान' भयान कळा ।। ७६९

खग वीजळ[6] मेघ[7] घडा खमतौ[8] ।
हद जूटत 'वाघ'[9] तणौ 'हिमतौ' ।
मगरूर हठावत खेत मही ।
जुध भीम गजा घड भीम जही ।७७०

तप दीसत सूरज[10] व्रन[11] तणौ ।
तदि 'लाल' लडै 'जसक्रन्न'[12] तणौ ।
वप वेस[13] सवाइय[14] सोभ वधै ।
*सूत 'मान' 'सवाइय'[15] जंग सधै ।। ७७१

---

१ ख भाति । २ ख ग कूपावत । ३ ख. ग देवीयसिघ । ४ ग सवला । ५ ग कमधज । ६ ख वीजल । ७ ख ग मेछ । ८ ख ग षिमतौ । ९ ख बाघ । १० ख सूर । ११ ख. व्रजन । १२ ख. ग जसक्रंन । १३ ख वपि वेस । १४ ख सवाईय । १५ ग सवाईय ।

---

७६८ चांपावत – चापावत शाखाके राठौड । सूर – वीर । कूंपावत – कूपावत शाखाके राठौड । सामत-ऊत – सावतसिंहका पुत्र ।

७६९ राम – रामसिंह । खत्रिवट – क्षत्रीयत्व । समाथ – समर्थ । भराथ – युद्ध । सामत – सावतसिंह । जवान – जवानसिंह । कळा – प्रकार ।

७७० खमतौ – सहन करता हुआ । वाघ – वाघसिंह । हिमतौ – हिम्मतसिंह । मगरूर – वीर । हठावत – हटाता है । खेत – युद्धस्थल ।

७७१ लाल – लालसिंह । जसक्रन्न – जसकरणसिंह । वप = वपु – शरीर । वेस – आयु उम्र । सवाइय – सवैया । सोभ – शोभा, कीर्ति । मान – मानसिंह । सवाइय – सवाईसिंह । सधै – प्राप्त करता है ।

*चिन्हांकित पंक्तियां 'ख' प्रतिमें नहीं हैं ।

धज साबळ वाहत मेछ दहै ।*
'खड़गावत' सूर गुमान' खहै ।
इम जूटत[1] 'कूपहरा' अजरा ।
हद जूटत घायक जोध हरा ।। ७७२

गज-भार 'महेस' तणौ[2] गहणौ ।
तिण वार 'करन' 'झुझार'[3] तणौ ।
रिण झाट किवाण[4] उफाण रत्रा ।
'सुरताण' करै घमसाण सत्रां ।। ७७३

असुरा खग[5] झाट हणै 'उरड़ै ।
'जगतेस' तणौ[6] 'दळसाह' जुडै ।
त्रिजडा खळ झाटत घाट तठै ।
जुधि 'जोध' तणौ सुरताण जठै ।। ७७४

पछटै[7] खग चाढत देव-पुरा ।
सिवदान तणौ 'पदमौ' असुरा ।
खग वाहत[8] गैण भुजां खगतौ ।
जवना सिर 'जैत' तणौ[9] 'जगतौ' ।। ७७५

---

१ ग जुटत । २ ख. तणं । ३ ग झूझार । ४ ख किवा । ५ ख. षगि । ६ ख. तणो । ७ ख पछटे । ८ ख. बाहत । ९ ग. तणो ।

---

७७२ धज – तलवार । साबळ – भाला विशेष । ढहै – वीर-गति प्राप्त होते हैं । खड़गावत – खड्गसिंहका पुत्र । गुमान – गुमानसिंह । खहै – युद्ध करता है । कूपहरा– कूपावत शाखाके राठौड । घायक – सहार करने वाला । जोधहरा – जोधा शाखाके राठौड ।

७७३ गज-भार – हाथी-समूह । महेस – महादेव । गहणौ – आभूषण । करन – करण-सिंह । झुझार – जुझारसिंह । रिण – युद्ध । झाट – प्रहार । किवाण – कृपाण, तलवार । उफाण – उबाल । रत्रा – रक्त, खून । सुरताण – सुल्तानसिंह । घमसांण – सहार । सत्रा – शत्रुओ ।

७७४. असुराण – मुसलमान । जगतेस – जगतसिंह । दळसाह – दलसिंह । जुड़ै – भिडता है, युद्ध करता है । त्रिजडां – तलवारो । झाटत–प्रहार करता है । जोध– जोधसिंह ।

७७५. पछटै – प्रहार करता है । पदमौ – पद्मसिंह । गैण – आकाश । खगतौ – स्पर्श करता हुआ । जैत – जैतसिंह । जगतौ – जगतसिंह ।

निजडां जडकै जरदैत नभौ ।
अतळीबळ[1] 'नाथ' सुजाव 'अभौ' ।
'महराण' 'हरी' सुत राड़[2] मही ।
जुध[3] जूटत पंडव भीम जही ।। ७७६

'करणौ'[4] 'अणदावत' क्रोध कळा ।
त्रिजड़ा खळ थाट करै तडळा ।
झळळाहत पावक क्रोध झळा ।
खग वाहत[5] भारथसिंघ[6] खळा ।। ७७७

जुध धांवत सूर घणा वजरै ।
कळचाळ[7] 'अनावत' हाक करै ।
'बहबा'[8] हत[9] वीजळ[10] धार[11] वरौ ।
'सरदार'[12] महाबळ 'सामत' रौ ।। ७७८

खग झाटक टूक करै खळ है ।
'करणेस' तणौ 'बखतेस'[13] लहै ।
कमधज्ज[14] खळा गजबोह करै ।
'किसनावत' 'ईसर' लोह करै ।। ७७९

---

१ ख अतुलीवल । २ ख राडि । ३ ग जूध । ४ ख करनौ । ग. करणो । ५ ख बाहत । ६ ख भारथसींघ । ७ ख ग कळिचाल । ८ ख बदौ । ग. बोहौ । ९ ख ग बाहत । १० ख वीजल । ११ ख धारि । १२ ख. ग. सिरदार । १३ ख ग. बपतौ । १४ ख कमधज्ज ।

---

७७६. निजडां – तलवारो । जडकै – प्रहार करता है । जरदैत – कवचधारी योद्धा । नभौ = (?) नाथ – नाथूसिंह । अभौ – अभयसिंह योद्धा । महराण – समुद्रसिंह । हरि – हरिसिंह । राड – युद्ध । जूटत – सलग्न होता है, लगता है ।

७७७ करणौ – करणसिंह । अणदावत – आनदसिंहका पुत्र । त्रिजडां – तलवारो । थाट – दल । तडळा – ध्वस, सहार । झळळाहत – प्रज्वलित होता है । झळा – अग्नि, आग ।

७७८. धावत – संहार करते हैं । वजरै – जोशमे होते हैं । कळचाळ – योद्धा, वीर, युद्ध । अनावत – अनाडसिंहका पुत्र । हाक – जोशपूर्ण आवाज, दहाड । वरौ – वरण करने वाला, स्वीकार करने वाला । सरदार – सरदारसिंह । सामतरौ – सावतसिंहका । करणेस – करणसिंह । बखतेस – बखतसिंह । गजबोह – गज-व्यूह, सहार (?) ।

७७९. किसनावत – किसनसिंहका पुत्र । ईसर – ईसरसिंह ।

विहँडै खळ[1] झाटक लोह बहा[2] ।
'दळ क्रन्न'[3] 'प्रताप' तणौ दुसहा ।
सुरनाथ[4] केवाण सुरग करै ।
कळिचाळ सवाइय[5] जग करै ॥ ७८०

भचकै खग दाखत भाण भलौ ।
दळ मेछ हणै 'करणोत'[6] 'दलौ' ।
तडछै मुहरै[7] गज ढाल तणौ ।
*त्रजडा[8] झट 'हिंदवमाल' तणौ ॥ ७८१

धर धूजत सीस धरा-धरनौ ।
कळहै 'अनपाळ' तणौ 'करनौ' ।
घमसाण वीराण[9] रोसाण[10] घणौ ।*
त्रिजडा हथ 'धीरज' 'लाल' तणौ ॥ ७८२

खग वाहत[11] हेक जिसा[12] खग सौ ।
बहसै[13] जुध 'दूद' तणौ 'बगसौ' ।

---

१ ख ग. षग । २ ख हबहा । ३ ख ग. क्रन । ४ ख सुतनाथ । ५ ख. सवाईय ।
६ ख करणोत । ७ ख मोहोरो । ग मोहोरो । ८ ग त्रिजडा । ९ ग विरांण ।
*चिन्हांकित पंक्तियां 'ख' प्रतिमें नहीं है ।
१० ग रौसाण । ११ ख बाहत । १२ ख जिसी । १३ ख वहसं ।

---

७८० दळक्रन्न – दलकरणसिंह । प्रताप – प्रतापसिंह । दुसहा – शत्रुओं । सुरनाथ – इन्द्रसिंह । केवाण – तलवार । सुरग – लाल । सवाइय – सवाईसिंह ।

७८१ भचकै – प्रहार करता है । दाखत – कहता है । भाण – सूर्य । भलौ – उत्तम, बढिया । दळ मेछ – यवन सेना । करणोत – राठौड वंशकी शाखा विशेषका वीर । दलौ – दलसिंह । तडछै – काटता है । मुहरै – अगाडी । त्रजडां – तलवारों । झट – प्रहार । हिंदवमल – हिंदूसिंह ।

७८२. धरा धरनौ – शेषनागका । कळहै – युद्ध करता है । करनौ – करणसिंह । घमसांण – युद्ध । वीराण – वीरतापूर्ण, शौर्यपूर्ण । रोसाण – क्रोध, जोश । त्रजड़ा-हथ – खड्गधारी योद्धा । लाल – लालसिंह । धीरज – धीरजसिंह । लाल – लालसिंह ।

७८३ वाहत – प्रहार करता है । बहसै – जोशपूर्ण होता है । दूद – राव दूदाका वंशज, मेडतिया राठौड । बगसौ – बख्शीसिंह ।

सत्र खाग हणै जम हू सरसौ ।
'नरसीघ'[1] 'फतावत' 'नाहर' सौ ॥ ७८३

जुध मेछ चढात[2] धकै जमरौ[3] ।
कळि 'सोढ' तणौ भड 'सेर' करौ ।
शेखावत– वधि[4] हेक शेखावत फौज वनौ ।
धडछे खळ 'नधलवूत'[5] 'धनौ' ॥ ७८४

तुरकाण हणे खग 'जोर' तणौ ।
तदि जूटत 'राम' 'किसोर' तणौ ।
जुडि 'सोढ' समोभ्रम थाट जडा ।
विहँडै[6] खगि सभव सूर वडा ॥ ७८५

वढि[7] वाहत[8] खाग झळा वरणौ ।
तदि[9] झूझ[10] लडै 'चँद्रभाण' तणौ ।
सुत झूझ छका उजळा[11] सबळां ।
खग बाहत 'लाल' दुझाल खळां ॥ ७८६
सुझ 'ग्यांन' दलावत तेण समै ।
रिम थाटहुता खग झाट रमै ।

---

१ ख ग नरसिंघ । २ ख. चढ़त । ३ ख. ग. जमरै । ४ ख वधि । ५ ख. नव्वल । ग नव्वल । ६ ख. विहडै । ७ ख. ग. वधि । ८ ख. वाहत । ९ ख. तवि । १० ख ग झूल । ११ ख. ग उझला ।

---

७८३ जमहू सरसौ – यमराजके समान भयकर रूप धारण करने वाला । नरसिंघ – नृसिंहावतार । फतावत – फतहसिंहका पुत्र ।

७८४ वनौ – दुल्हा, पति । धडछै – सहार करता है । नधळवूत – नदलालसिंहका पुत्र । धनौ – धनसिंह ।

७८५ तुरकाण – यवन, मुसलमान । राम – रामसिंह । किसोर – किशोरसिंह । जडा – घने । विहँडै – सहार करता है । सभव – ( ? )

७८६. झळा – अग्नि । वरणौ – वर्णका, रगका । झूझ – जुझारसिंह । लाल – लालसिंह दुझाल – वीर ।

७८७. ग्यान – ज्ञानसिंह । दलावत - दलसिंहका पुत्र । रिम – शत्रु । थाटहुता – दलसे ।

झटकै खग सीस उडै झिलमा[1] ।
'रतनावत' 'रूप' वढत[2] रिमा ॥ ७८७

ग्रह[3] साबळ सीस उडै गजरौ ।
'अणदावत' सूर 'अभौ'[4] अजरौ ।
सुत 'पीथल' 'माहव' तेण समै ।
रण खाग उनागज फाग रमै ॥ ७८८

पछटै खग मूगळ सीस पडै ।
'लखधीर' 'सुजाण' सुजाव लडै ।
तदि थाट हणै मुगळाण तणौ[5] ।
त्रिजडा हथ 'भोम' 'सुजाण' तणौ ॥ ७८९

सुत सूरजमाल सग्राम करै ।
किलमा खग[6] तडळ 'राम' करै ।
सुत सूर पराक्रम क्रोध सचै ।
रिणढाण[7] खगा 'सुद्रसेण' 'रचै' ॥ ७९०

जुध 'दूजण'[8] 'बाघ' कराळ जसौ ।
जवना खग बाहत काळ जसौ ।

---

१ ख झिमला । २ ख बाढत । ३ ख. ग्रहि । ग. ग्रहा । ४ ग अभो । ५ ख ग मुगलांणतणो । ६ ख. ग षगि । ७ ख. रिणटांण । ८ ख. ग. दुजण ।

---

७८७. झिलमा – युद्धके समय शिर पर धारण करनेके टोपी । रतनावत – रतनसिंहका पुत्र । रूप – रूपसिंह । रिमा – शत्रुओ । गजरौ – हाथीका ।

७८८. अणदावत – आनदसिंहका पुत्र । अभौ – अभयसिंह । अजरौ – जबरदस्त । पीथल – पृथ्वीसिंह या पृथ्वीराज । माहव – माधोसिंह ।

७८९ लखधीर – लखधीरसिंह । सुजाण – सुजानसिंह । त्रिजडा हथ – खड्गधारी योद्धा । भोम – भोमसिंह ।

७९० किलमा – यवनो, मुसलमानो । तडळ – ध्वस । रांम – रामसिंह । रिणढाण – युद्धस्थल । सुद्रसेण – सुदर्शन चक्र ।

७९१ दूजण – शत्रु । बाघ – बाघसिंह । कराळ – भयकर ।

रिण रूप[1] किया बनराव तणौ ।
तद[2] 'जैत' लडै भड 'भाउ'[3] तणौ ॥ ७९१

हुय[4] घायक जांणि मजेज हिचै ।
हरिनाथ तणौ इम 'तेज' हिचै ।
सुत 'भाउ'[5] सिवौ[6] उणवार[7] इसौ ।
जुडि भारथ पारथ पिड[8] जिसौ ॥ ७९२

रिम[9] खाग हणै खगि झेलि रतौ ।
पडियौ रिण 'राजडऊत' 'पतौ' ।
वरि[10] रभ रथा चढि नेह वधै[11] ।
सुर लोक आवास[12] निवास सधै[13] ॥ ७९३

रिम[14] थाट सु झाट खगां रण मे[15] ।
रायसीघ[16] तणौ[17] सिवसिंघ रमै ।
वधियौ[18] चित धार[19] परि[20] वरणौ ।
कळ है हरिनाथ तणौ 'करणौ' ॥ ७९४

वढ[21] झाट खगा खळ थाट वहै ।
सर सावळ खाग अथाह[22] सहै ।

---

१ ख ग कीयां । २ ख. तदि । ३ ग भाऊ । ४ ख ग होय । ५ ख. ग. भाऊ । ६ ख ग सिवो । ७ ख. उणवार । ८ ख पड । ९ ग. रिमा । १० ख बरि । ११ ख बधे । १२ ख अवास । १३ ख सधे । १४ ख रिम । १५ ख ग मैं । १६ ख ग. रार्यासघ । १७ ग तणो । १८ ख बधीयो । ग वधियो । १९ ख धारि । २० ख. ग परी । २१ ख वढ । २२ ख अथाग ।

---

७९१ वनराव – सिंह । जैत – जैतसिंह । भाउ – भाऊसिंह ।

७९२ मजेज – शीघ्र । हिचै – युद्ध करता है । तेज – तेजसिंह । सिवौ – शिवसिंह । भारथ – भारत, युद्ध । पारथ = पार्थ – अर्जुन ।

७९३ रतौ – रक्त, लीन । राजडऊत – राजसिंहका पुत्र । पतौ – प्रतापसिंह । सधै – प्राप्त किया ।

७९४. परि – अप्सरा । वरणौ – वरण करना । करणौ – करणसिंह ।

पडियौ[1] रण खेत परि[2] परणे ।
वधि खेड रथा सुर देह वणे[3] ॥ ७९५

हुव[4] क्रोध लडै जम[5] क्रोधहरा[6] ।
उदावत– इण[7] आगळि[8] 'ऊदह' रा[9] 'अजरा' ।
खग झाट करै खळ सीस खिरै ।
सुभराम समोभ्रम 'चैन' सिरै ॥ ७९६

पाडता[10] पहुँतौ[11] जवना प्रचँडा ।
झिलमा सहिता सिर खास झँडा[12] ।
कळिचाळि[13] इसी विध[14] जग कियै[15] ।
लुह[16] झेल[17] सुभावत[18] व्रँद[19] लियै[20] ॥ ७९७

अछटै[21] रिम खाग चखा[22] अरणौ ।
तिण मौसर 'ऊद' 'प्रताप' तणौ ।
थट कासिम[23] मोड[24] विलद[25] थटा ।
विहँडे[26] गिरमेर तणौ विकटा[27] ॥ ७९८

---

१ ख पडीयौ । २ ख ग परी । ३ ख वणे । ४ ग हुव । ५ ख यम । ६ ख. योधहरा । ७ ख इणि । ८ ख आगल । ९ ग उद । १० ख पाडतौ । ११ ख ग. पहुँतौ । १२ ख. झडां । १३ ख कलचाल । ग कलिचाळ । १४ ख. विधि । ग विधि । १५ ख कीयै । १६ ख ग लोह । १७ ख. झोलि । १८ ख. सभावत । १९ ख ग वृद । २० ख लीयै । २१ ख. पाछटै । २२ ख. चषौ । २३ ख ग कासीय । २४ ख मोड । २५ ख बिलद । २६ ख विहडे । २७ ख विकटा ।

---

७९५ पडियौ – वीरगति प्राप्त हुआ । परणे – पाणिग्रहण कर के ।

७९६ हुव – जोशमे हो कर, आवेशमे हो कर । आगळि – अगाडी । खिरै – गिरते है । चैन – चैनसिंह ।

७९७. पहुतौ – पहुच गया । झिलमां – युद्धके समय सिर पर धारण करनेके टोपो । सुभावत – शुभरामका पुत्र । व्रद – विरुद, यश ।

७९८. अछटै – प्रहार करता है । रिम – शत्रु । चखा-अरणौ – लाल नेत्र । मौसर – समय । ऊद – उदयसिंह । प्रताप – प्रतापसिंह । थट ···विलद – सर-बुलद । गिरमेर – सुमेरसिंह ।

तदि वाहत[1] खाग झुलाल तना[2] ।
'किरतेस' समोभ्रम 'खीमक्रना'[3] ।
जवनाण विचाण[4] पडै जुधरै ।
करणोत[5] 'मधौ' वधि[6] लोह करै ॥ ७६६

सबळावत[7] 'सागण' घाव सझै ।
मुगलाळ पडै घमचाळ मझै ।
छक वाहत[8] खाग पतग छुटै ।
जवना 'अजबावत' जोर जुटै[9] ॥ ८००

कळहै 'पदमौ' खग बोळ[10] किये[11] ।
दुसहाण 'दलावत'[12] झाट दियै[13] ।
गहतत 'अजावत' गेहरियौ[14] ।
करमाळ[15] वजावत[16] 'केहरियौ'[17] ॥ ८०१

विधि[18] वैर[19] हरा अजरा विरतौ[20] ।
हुचकै खग 'राम' तणौ 'हिमतौ' ।

---

१ ख. वाहत । २ ख ग तन । ३ ख षीमक्रन । ४ ख. विचाण । ५ ख. करणोत ६ ख वधि । ७ ख सबलात । ८ ख वाहत । ९ ग जुट्टै । १० ख ग चोल ११ ख कीयै । १२ ख दलाव । १३ ख दीयै । १४ ख गेहरीयौ । १५ ख करिमाल । १६ ख वजावत । १७ ख ग केहरीयौ । १८ ख. वधि । १९ ख बैर २० ख. बिरतौ ।

---

७९९ झुलाल तना – कवचधारी योद्धा । किरतेस – कीर्तिसिंह । खीमक्रना – खीमकरणसिंह । जवनाण – यवन । विचाण – मध्य, बीच । करणोत मधौ – माधोसिंह करणोत शाखाका राठौड वीर ।

८०० सबळावत – सबलसिंहका पुत्र । सागण – सग्रामसिंह । घमचाळ – युद्ध । मझै – मध्यमे । छक – जोश, तेजी । पतग – फँवारा । अजबावत – अजबसिंहका पुत्र ।

८०१ पदमौ – पद्मसिंह । खग बोळ किए – तलवार रक्तरजित किए हुए । दुसहाण – शत्रु । दलावत – दलसिंहका पुत्र । झाट – प्रहार । गहतत – मस्त, रणोन्मत्त । गेहरियौ – होलिका पर 'गैर' नृत्य करने वाला । करमाळ = करवाल – तलवार । वजावत – प्रहार करता है, ध्वनित करता है । केहरियौ – केसरीसिंह ।

८०२ वैर हरा – शत्रुओ । अजरा – जबरदस्त योद्धाओ । विरतौ – भयकर रूपसे, भयावह रूपसे । हुचकै – युद्ध करता है, प्रहार करता है । राम – रामसिंह । हिमतौ – हिम्मतसिंह ।

इण भांत[1] करम्मसियोत[2] लडै[3] ।
लख धूहड ऊहड एम लड़ै ।
तन पीरस तेज दुझाल तणौ ।
मगरूर करै जुध 'माल' तणौ ॥ ८१०

भड 'माहव' 'सुदरऊत'[4] भडां ।
धज सेल जड़ै जरदैत धडा ।
लडि[5] लोह 'हरिंद' सुजाव 'लखौ' ।
पिसणांण[6] करै घड सीस पखौ ॥ ८११

असुरा दळ खागि हणै अपलौ ।
दुति दारण[7] 'सुदरऊत'[8] 'दलौ' ।
मडि खेलत खाग झटा 'मडळौ' ।
सुत 'भारहमाल' 'अभौ' सबळौ[9] ॥ ८१२

हुव वीजळ[10] जूटत 'रूपहरा' ।
धड़छे[11] खळ राळत गज धरा ।

---

१ ख. भाति । २ ख करमसीयोत । ग. करमसीयोत । ३ ख. अडै । ४ ख ऊन । ५ ख लड । ६ ख प्रिसणणा । ७ ख. दारुण ८. ख सूदर । ग सूदर । ९ ग सुवलो । १० ख वोजल । ११ ग घडचे ।

---

८१०. धूहड – राव धूहडके वशज, राठौड । ऊहड – राठौड वशकी ऊहड शाखाका वीर । दुझाल – वीर । मगरूर – वीर । माल – मालदेव ।

८११ माहव – मावोसिंह । सुदरऊत – सुदरसिंहका पुत्र । धज – तलवार । सेल – भाला । जरदैत – कवचधारी योद्धा । धडा – शरीर । हरिंद – हरिसिंह । सुजाव – पुत्र । लखौ – लक्ष्मणसिंह । पिसणाण – शत्रु । घड – सेना । सीस – ऊपर । पखौ – प्रहार (?) ।

८१२. असुरा – यवनो, मुसलमानो । अपलौ – स्वतन्त्रतापूर्वक, मुक्तहस्त । सुदरऊत – सुदरसिंहका पुत्र । दलौ – दलसिंह । मडळौ – राठौड वशकी मडला शाखाका वीर । भारहमाल – भारमल । अभौ – अभयसिंह । सबळौ – बलवान ।

८१३ वीजळ – तलवार । रूपहरा – रूपसिंहका वशज अर्थात् रूपावत शाखाका राठौड़ । धड़छे – काटता है । राळत – गिराता है, डालता है । गंज – समूह ।

जुध 'केहर' 'ऊद' तणौ[1] जुड़ियौ[2] ।
'अणदौ' दुरगावत आहुडियौ[3] ।। ८१३

पिंड पूर 'पतावत' सूरपणौ ।
तदि 'पेम' जुडै भड 'मेघ' तणौ ।
रायपाळ कळोध खगा रणदौ ।
उरडै 'वनराज'[4] तणौ 'अणदौ' ।। ८१४

**चौहान** – फवजा[5] धज खान अणी फबियौ[6] ।
पिसणाण[7] हणै[8] जुध पूरबियौ[9] ।
'कुसळावत' 'रूप' वणास[10] कढै[11] ।
चगथा विहडै[12] रण रूप चढै[13] ।। ८१५

मसतान[14] गयद जहीज[15] मुडै ।
जिण वार जसावतसिंह[16] जुडै ।
कहसै[17] खग घाट खडै[18] वाहकौ[19] ।
मगरूर 'चवांण'[20] लडै 'मुहकौ'[21] ।। ८१६

---

१ ख आहुडीयौ । २ ख बनराज । ३ ख फवजा । ४ ख ग फबीयौ । ५ ख प्रिसुणाण । ग पिसुणाण । ६ ख हणे । ७ ख पूरबीयौ । ग पूरवीयौ । ८ ख. बणास । ९ ख कढै । १० ख बिहडै । ११ ख चढे । १२ ख मसताण । १३ ख हिज । १४ ख ग सीह । १५ ख बहसे । १६ ग वहसे । १७ ख षडे । १८ ख बौहकौ । १९ ख चव्हाण । २० ग मोहकौ ।

---

८१३ केहर – केसरीसिंह । ऊद – उदयसिंह । अणदौ – आनंदसिंह । दुरगावत – दुर्गसिंहका पुत्र । आहुडियौ – युद्ध किया, भिडा ।

८१४. पतावत – पातावत शाखाका राठौड । सूरपणौ – शौर्य, वीरता । पेम – प्रेमसिंह । मेघ – मेघसिंह । रायपाल – राठौड वंशकी रायपाल शाखाका वीर । कळोध – वंशज । रणदौ – ( ? ) उरडै – जोशपूर्वक घसता है । वनराज – वनराज सिंह । अणदौ – आनंदसिंह ।

८१५ फवजा – फौजो । खान – यवन । अणी – अनीक, सेना । फबियौ – शोभित हुआ, भिडा । पिसणाण – शत्रु । पूरबियौ – पूर्बिया शाखाका चौहान । कुसळावत – कुशलसिंहका पुत्र । रूप – रूपसिंह । बणास – तलवार । चगथा – यवनो, मुगलो । विहडै – सहार करता है ।

८१६ मसतान – मस्त, उन्मत्त । गयद – हाथी । जसावतसिंह – जसवन्तसिंह । वाहकौ – घोडेको । मगरूर – वीर । चवाण – चौहान । मुहकौ – मोहकमसिंह ।

गज ढाल दुझाल अमीर गरै ।
कवरां गुर 'लाल' सुजाव करै ।
महुओ[1] सुत 'लाल' करै उमगा ।
खुरसांण हणै जमरांण खगा ।। ८१७

तुरकां खग घाव अजबा[2] तणौ ।
तदि 'राजड' दत 'अजब्ब' तणौ ।
जवना घण लोह करत जठै ।
तण 'लाल' लड़ै इद्रसीघ तठै ।। ८१८

धुबि 'धीर'[3] 'दलावत' सार धजा ।
गज भार करै सरदार[4] 'गजा' ।
लडि 'राम' समोभ्रम क्रीत[5] लियौ[6] ।
दुजडा झड ओझड 'तेज' दियौ[7] ।। ८१९

हुबि खाग अथाग हणतई[8] ।
तण 'रूप' 'भवानियदास'[9] तई[10] ।
वधि[11] खाग सवाइय'[12] गैबहणौ ।
तदि वाहत[13] सूर 'हरीद'[14] तणौ ।। ८२०

---

१ ख. माहुओ । ग माहुओ । २ ख अजव्व । ग अजव्व । ३ ख. ग धार । ४ ख ग सिरदार । ५ ख. कीति । ६ ख. ग लीयै । ७ ख ग दीयै । ८ ख हणत हई । ९ ख. ग. भवांनीयदास । १० ग. तइ । ११ ग. वधि । १२ सवाईय । १३ ख. बाहत । १४ ख ग हरिद ।

---

८१७ गज ढाल – युद्धके समय हाथीके मस्तक पर धारण कराया जाने वाला उपकरण विशेष । गरै – ढेर लगाता है । लाल – लालसिंह । महुओ – माधोसिंह । लाल – लालसिंह । उमगा – जोश । खुरसाण – यवन, मुसलमान । जमरांण – वीर (?)

८१८ अजबा - अजबसिंह । राजड – राजसिंह । अजब्ब – अजबसिंह । तण – तनय, पुत्र । लाल – लालसिंह ।

८१९. धुबि – जोशमे आ कर । धीर – धीरसिंह । दलावत – दळसिंहका पुत्र । सार – प्रहार । सरदार – सरदारसिंह । राम – रामसिंह । दुजडा – तलवारो । झड – लवार । ओझड – भयकर रूपसे । तेज – तेजसिंह ।

८२० तण – तनय, पुत्र । रूप – रूपसिंह । भवानियदास – भवानीदास । सवाइय – सवाईसिंह । गैबहणौ – गुप्त रूपसे, अकस्मात । सूर – सूरसिंह । हरींद – हरिसिंह ।

मुगळां दळ खाग हणै 'अमलौ' ।
सुत सांमळदास लड़ै 'कुसळौ' ।
पछटै खग 'मछ' पतग पड़ै ।
इम 'ईसर' 'तेजल' ऊत अड़ै ।। ८२१

धख हीदवसीघ[1] सुजाव[2] धरै ।
करिमाळ बहादर राडि करै ।
रिण एम चुवाण[3] निसाण रुड़ै ।
जिण आगळ[4] जादव वस जुड़ै ।। ८२२

**जादववंस** – झट वीजळ[5] मूगळ सीस झड़ै ।
इम सामळ 'सूर' सुजाब[6] अड़ै ।
धज धार[7] जुड़ै चवधार धजां ।
गिरमेर सुजाव झुझार गजा ।। ८२३

मगरूर खगा झट झूझ मलौ ।
कलहै 'सुद्रसेण' सुजाव 'कलौ' ।
'जगमाल' सुजाव ,दुझाल जठै ।
तडछै खळ 'खेमकरन्नि'[8] तठै ।। ८२४

---

१ ख हिंदुव । ग हीदुव । २ ख. सजाव । ३ ख. ग चुहाण । ४ ख आगलि । ग आग । ५ ख बीजल । ६ ख ग. सुजाव (सुझाव) । ७ ग रार । ८ ख षेमकरन्न । ग षेमकरनि ।

---

८२१ अमलौ – ( ? ) । कुसळौ – कुशलसिंह । पतग – फव्वारा । ईसर – ईश्वरीसिंह । तेजल-ऊत – तेजसिंहका पुत्र ।

८२२ धख – जोश । हींदवसींघ – हिंदूसिंह । सुजाव – पुत्र । करिमाळ = करवाल – तलवार । राडि – युद्ध । रिण – युद्ध । चुवाण – चौहान । निसांण – नगाडा, बाजा विशेष । रुडै – बजवाता है । जादव-वस – यादव वश । जुडै – भिडते हैं, युद्ध करते हैं ।

८२३ झडै – प्रहार करता है । सांमळ – श्यामसिंह । सूर – सूरसिंह । धज-धार – तलवार । चवधार – भाला । गिरमेर – सुमेरसिंह । झुझार – जूझारसिंह ।

८२४ झूझ मलौ = युद्ध – मल्ल = योद्धा अथवा झूझारसिंह । सुद्रसेण – सुदर्शनसिंह । कलौ – कल्याणसिंह । जगमाल – जगमालसिंह । तडच्छै – काटता है । खेमकरन्न – खेमकरणसिंह ।

अणभग 'मधावत' सूर अडै ।
जवना सिवसीघ छडाल जडै ।
जुध[1] तेज 'गुमान' झळाहळसू ।
सत्र वेधि[2] 'जसावत' साबळसू[3] ॥ ८२५

जुध[4] 'भीम' समोभ्रम जाहरसो ।
हथळै खळ 'नाहर' नाहर सो ।
जगमाल सुजाव लड़ै जुजवौ[5] ।
हुलिका[6] थँभ हिम्मतसीघ[7] हुवौ[8] ॥ ८२६

नर मेछ खपत पडत नही ।
जुध ताळ उडै खग झाट जही ।
विढिया[9] खगि मेछ खगा विढियौ[10] ।
अछरा वरि[11] देवपुरा चढियौ[12] ॥ ८२७

सुत 'जैत' 'सरूप' कियौ[13] सधरौ ।
'हरियद' लडै भड सेख हरौ ।
धर राज पुरोहित रीत धुरौ ।
उचकत[14] विजैमल 'माहव'रौ ॥ ८२८

---

१ ख. जुधि । २ ख. वोधि । ३ ग साबळसू । ४ ख. जुधि । ५ ख ग जुजवो । ६ ख. ग. हूलिका । ७ ख. हिम्मतसिंघ । ग हिर्मसिंघ । ८ ख. हुग्रो । ९ ख. वढ़ीया । ग विढ़ीया । १० ख. वढियौ । ११ ख बर । १२ ख चढ़ीयौ । १३ ख. कीया । १४ ख. ग. हुचकत ।

---

८२५. अणभग – वीर, योद्धा । मधावत – माधोसिंहका पुत्र । छडाल – भाला । जडै – प्रहार करता है । गुमान – गुमानसिंह । झळाहळ – अग्नि, आग । जसवत – जसवन्तसिंह । साबळसू – भालेसे ।

८२६ भीम – भीमसिंह । हथळै – प्रहार करता है, मारता है । नाहर – नाहरसिंह । जगमाल – जगमालसिंह । सुजाव – पुत्र । जुजवौ – पृथक । हुलिका – होलिका ।

८२७. मेछ – यवन । खपत – यत्न करते हैं । ताळ – समय । विढिया – कट गये, वीर गति प्राप्त हुए । विढियौ – कट गया, वीर गति प्राप्त हुआ । अछरा – अप्सराएँ । वरी – वरण कर के । देवपुरा – स्वर्गमे ।

८२८. जैत – जैतसिंह । स्वरूप – स्वरूपसिंह । अथवा अपना रूप । सधरौ – दृढ, अटल । हरियद – हरिसिंह । सेख हरौ – शेखावत वशका वीर । धर राज – राजाधिराज, महाराजा बखतसिंह । धुरौ – प्रथम, अग्रगण्य । माहवरौ – माधोसिंहका ।

खगि सावज ध्रज[1] विहडि[2] खळां ।
अखतेस जरद करै उजळा[3] ।
उण वार खळा थट आहुडियौ[4] ।
रिण राव धसै[5] जुध रोहडियौ[6] ।। ८२९

पछटै खग हैमर तूट[7] पडै ।
लोहडां झट बारहट[8] 'क्रन्न'[9] लडै ।
गिरजावर पूर करै[10] गहणौ ।
कुळ मारग सूर किसौ कहणौ । ८३०

चढियौ[11] अनि हेमर[12] रोस चडै ।
लगियां धख 'केहर' ऊत लडै ।
वप[13] पांण उपाण[14] चडी वरणौ[15] ।
किलमांण वखाण कियौ[16] करणौ[17] ।। ८३१

---

१ ख ग धज्झ । २ ख बिहडी । ३ ख ग. ऊजला । ४ ख. ओहडीयौ । ५ ख धसे । ६ ख ग रोहडीयो । ७ ख तूटि । ८ ख ग. बारट । ९ ख ग क्रन । १० ख करे । ११ ख चढ़ीयो । १२ ख. ग. हैभर । १३ ख बप । १४ ख उफाण । ग ऊपाण । १५ ख. वरनो । १६ ख कीयौ । १७ ख ग करनौ ।

---

८२९ खगि – तलवारसे । सावज – यहा साबल शब्द होना चाहिए अथवा श्यामज = हाथी । (?) ध्रज – भाला । विहडि – सहार करता है । अखतेस = अक्षत – अखडित चावल जो विवाहादि मागलिक अवसरो पर पीले रग कर इष्ट-मित्रोके यहाँ निमत्रणके रूपमे भेजे जाते हैं । जरद – पीला । उजळा – उज्ज्वल । आहुडियौ – भिडा, युद्ध किया । रिण-राव – वीर । रोहडियौ – रोहडिया शाखाका चारण वीर ।

८३०. पछटै – प्रहार करता है । हैमर – घोडा । लोहडा – तलवारो । झट-बारहट क्रन्न – करणीदान वारहठ जो मूदियाड़ ठाकुरका पूर्वज था । गिरजावर – महादेव । गहणौ – आभूषण ।

८३१. अनि – अन्य । हेमर – हयवर, घोडा । धख – जोश, उमग । केहर ऊत – केसरीसिहका पुत्र । वप = वपु – शरीर । पाण – काति, दीप्ति । चंडी वरणौ – चारण कवि । किलमाण – यवन । वखाण – प्रशसा, तारीफ । करणौ – करणीदान वारहठ ।

वधिदेव[1] पराक्रम[2] 'वीर' तणौ ।
तदि जूटत 'ग्रासल' 'धीर' तणौ ।
सादुवा[3] पति 'पीथ' ग्रणी समही ।
जुड़ियौ[4] 'सबळावत'[5] वाघ[6] जही[7] ॥ ८३२

करनी-कुळ 'माहव' नाम कवी ।
चढि खेत[8] 'हिमत्त'[9] उकत्ति[10] चवी ।
थळ जेम 'कुभावत'[11] भाग थिया[12] ।
कर[13] मेळ झळाहळ लोह किया[14] ॥ ८३३

झड़ ग्रौझड[15] सूत दियै[16] झटका ।
कर[17] वाणिय[18] हाक खळां कटका ।
पिसणा[19] रण ग्रतक गीत पढै ।
चगथा[20] दळ वीजळ[21] पूज चढै ॥ ८३४
पिंड चौसर धार[22] परी परणी ।
सभि राड[23] करी ग्रत[24] सेझ वणी ।

---

१ ख वधिदेव । २ ग पुराक्रम । ३ ख सादुवा । ग. सादूवा । ४ ख. जुडीयौ । ५ ग सवलावत । ६ ख बाघ । ७ ख. जही । ८ ख षेति । ९ ख. हिंमति । १० उकति । ११ क कूभावह । १२ ख ग. नागथीया । १३ ख करि । १४ ख ग. कीय। । १५ ग. ग्रोझड । १६ ख दीयै । १७ ख. करि । १८ ख. बांणीय । १९ ख प्रिसणा । २० ख. चगया । २१ ख. बीजळ । २२ ख धारि । २३ ख ग राडि । २४ ख ग. मृत ।

---

८३२. ग्रासल – ग्रासिया गोत्रका चारण । धीर – धीर, ग्रासिया गोत्रका चारण । सादुवा – चारणोंकी सादू गोत्रके वीर – । पीथ –पृथ्वीसिंह सादू । ग्रणी = ग्रनीक – सेना । समही – सम्मुख । जुडियौ – भिडा । सबळावत – सबलसिंहका पुत्र ।

८३३ करनी-कुळ – जिस वशमे करणी देवीने ग्रवतार लिया, चारण वश । माहव – माधोसिंह । खेत – युद्ध-स्थल । हिमत्त – हिम्मतसिंह । चवी – कही ।

८३४. ग्रौझड – भयकर । झटका – प्रहारो । कर - हाथ । वाणिय = बाण – तलवार । हाक – जोशपूर्ण ग्रावाज । पिसणा – शत्रुग्रो । ग्रतक – ग्रत करने वाला, सहारक । गीत – डिंगल भापाका छद विशेष । पढै – सुनाता है । चगथा – मुगलो, यवनो । पूज – पूजा ।

८३५ चौसर – पुष्पहार । परी – ग्रप्सरा । परणी – पाणिग्रहण किया । सेझ – शय्या ।

सुत 'जीवण' पात पणी सझियौ[1] ।
लहि[2] अम्मर लोक उदक्क[3] लियौ[4] ॥ ८३५

उण वार लड़ंत 'फतै'[5] अजरौ ।
गह पूर 'हरी' सुत सोनँगिरौ ।
हुचकै[6] जुध 'केहरि' 'ईंद'[7] हरौ ।
वळिवत 'अनावत' धार वरौ[8] ॥ ८३६

भचकै वळ धारि भुजांण तणौ ।
त्रिजड़ां 'विजपाल'[9] 'सुजांण' तणौ ।
हद वाहत[10] खाग झळहळियौ[11] ।
मुगळा सिर[12] 'साहिब' मांगळियौ[13] ॥ ८३७

वहसै[14] जुध लोदिय[15] खान वळां ।
खग वाह[16] करंत सिपाह खळा ।
भचकंत पंचोळिय[17] भूप तणौ[18] ।
रवदाळ[19] हणै वड 'रूप' तणौ ॥ ८३८

---

१ ख. सझीयौ । २ ख. ग. लहि । ३ ख. उद्दक्क । ग. उद्दक । ४ ख. ग. लीयौ । ५ ख ग. फतौ । ६ ग. हुचकै । ७ ख. ग. इंद । ८ ग. वरो । ९ ख. बिजपाल । १० ग. वाहत । ११ ख. झलाहलीयौ । १२ ख. सिरि । १३ ख. मांगलीयौ । १४ ग वहसै । १५ ख. ग. लोदीय । १६ ख. वाह । १७ ख. पचोलीय । १८ ख. ग. तणा । १९ ग. रववाल ।

---

८३५. जीवण – जीवणदास नामके चारण कवि । पात पणौ – चारण कविका कार्य । सझियौ – प्राप्त किया, सिद्ध किया । उदक्क – जल ।

८३६. फतै – फतहसिंह । अजरौ – जबरदस्त । गह-पूर – पूर्ण जोश या गर्व वाला । हरी – हरिसिंह । सोनँगिरौ – चौहान वंशकी सोनिगरा शाखाका वीर । हुचकै – भिड़ता है, युद्ध करता है । केहरि – केसरीसिंह । ईंद – इन्द्रसिंह । हरौ – वंशज । अनावत – अनाड़सिंहका पुत्र । वरौ – जोश, कांति ।

८३७. भचकै – शीघ्र । भुजाण – भुजाओं । त्रिजड़ां – तलवारों । विजपाल – विजयसिंह । सुजांण – सुजानसिंह । झळहळियौ – पूर्ण जोशमें आया हुआ । साहिब – साहिबसिंह । मांगळियौ – गहलोत वंशकी मांगळिया शाखाका वीर ।

८३८. भचकत – धक्का करता है । पंचोळिय – कायस्थ । रवदाळ – यवन । रूप – रूपसिंह ।

वधि 'रूप'[1] कियौ[2] खग चोळ-व्रनौ
धड़छै वरदा[3] 'महिक्रन्न'[4] 'धनौ' ।
धख 'लाल' हरीद[5] सुजाव धरै ।
किलमा हुजदार सघार करै ।। ८३९

वधि[6] व्यास दुहूँ[7] रिम थाट बिचै[8] ।
हरिलाल अनै नँदलाल हिचै ।
हद खाग करै जुध वेहदरौ[9] ।
वधि[10] धावड चाक लडै 'बदरौ' ।। ८४०

हद जूटत धाधल[11] क्रोध हुवै ।
दइवाण[12] 'सुजाण' 'कल्याण' दुवै ।
अति वाहत[13] खाग छका उजळौ[14] ।
किलमा 'नरपाळ' सुजाव[15] 'कलौ' ।। ८४१

तद[16] 'धारि' सहाणिय[17] रोस धतौ[18] ।
हुचकै खगि 'नाथ' 'जसौ' 'हिमतौ' ।

---

१ ख वधिरूप। २ ख. कीया। ग कीयौ। ३ ख. रवदा। ४ ख ग महिक्रन्न। ५ ख ग हरिंद। ६ ख. वधि। ७ ख. दुहुँ। ग. यूह। ८ ग विचै। ९ ख. बेदहरौ। १० ख वध। ग वधि। ११ ख धाधिल। १२ ग. दईवाण। १३ ग. वाहत। १४ ख उछलौ। ग. उभलौ। १५ ख. ग. सुजाव। १६ ख तदि। १७ ख सहाणीय। १८ ख ततौ। ग. घतो।

---

८३९ चोळ-व्रनौ – लाल वर्ण, लाल रंग। धडछै – सहार करता है। महिक्रन्न – महकरण। धनौ – धनराज। धख – जोश, क्रोध। हरियद – हरिसिंह।

८४० रिम – शत्रु। धावड – राजाको दूधपान कराने वाली स्त्रीका पति। बदरौ – बद्रीदास।

८४१ धांधल – राठौड वंशकी एक शाखा। दूइवांण – वीर। सुजाण – सुजानसिंह। कल्याण – कल्याणसिंह। दुवै – दोनो। नरपाळ – नरपालसिंह। कलौ – कल्याणसिंह।

८४२ सहाणिय – घोडेको चाल सिखाने वाला, घोडोका शिक्षक। रोस-घतो – जोशीला। नाथ – नाथूसिंह। जसौ – जसवंतसिंह। हिमतौ – हिम्मतसिंह।

अति जूटत पौरस ऊझळियौ[1] ।
महि 'खीचिय'[2] 'सूरज' मांगळियौ[3] ।। ८४२

चहुवांण[4] केवांण रत्रां चरचै ।
रिण[5] साहिब खा अबदार[6] रचै ।
हद वाजत[7] लोह जगा[8] हवदा ।
रसियौ[9] जिण ठोडि हणै रवदा ।। ८४३

दुति 'ईसर'[10] दौढियदार[11] दळा ।
*खग झाट करै इतिमाम खळां ।
पडिहारज आतस मीर पळा ।*
झटका 'गिरधीर'[12] हणै दुझला ।। ८४४

वधियौ[13] गहलोत[14] छकां वणदौ ।
'देवराज' सुजाव[15] लडै 'अणदौ' ।
घण वाहत लोह छछोह घणा ।
तिण वार इता 'अधराजतणा' ।। ८४५

---

१ ख. ऊझलीयौ । २ ख ग षींचीय । ३ ख गमलीयौ । ४ ख. चहुवाण । ५ ख. ग. रिण । ६ ख अवदार । ७ ख बाजत । ८ ख. ग जंगी । ९ ख रासीयौ । ग. रसियौ । १० ग इसर । ११ ख ग दौढ़ीयदार । १२ ख गिरधार । १३ ग. धांधयौ । १४ ख ग गहलौत । १५ ख ग सुजाव ।

*चिन्हांकित पंक्तियां 'ख' प्रतिमे नहीं हैं ।

---

८४२ पोरस – पौरुष, बल । ऊझळियौ – उभडा हुआ । महि – महासिंह । खीचिय–चौहान वंशकी खीची शाखाका व्यक्ति । मांगळियौ – गहलोत वंशकी मांगळिया शाखाका व्यक्ति ।

८४३. केवांण – कृपाण, तलवार । रत्रा – रक्त, खून । साहिब खा – साहिबखानसिंह । अवदार – राजा-महाराजाओंको जलपान कराने वाला । रसियौ – रसिक । हणै – सहार करता है । रवदा – यवनों ।

८४४. दुति – द्वितीय, दूसरा । ईसर – ईसरसिंह । दोढीदार – राजा-महाराजाओंके ड्योढी (द्वार) पर देख-रेखका कार्य करने वाला । ड्योढीका अफसर । गिरधीर–गिरधारीसिंह । दुझलां – योद्धाओं ।

८४५ वधियौ – बढा । छकां – जोश । वणदौ – ( ? ) । देवराज – देवराजसिंह । अणदौ – आनन्दसिंह । छछोह–तेज, फुर्तीला । अधराजतणा–राजाधिराज महाराजा वखतसिंहका ।

रिण जूटत सूर त्रँबाळ[1] रुडै ।
जुध[2] जांणक[3] दांणव देव जुड़ै ॥ ८४६

दूहौ–[4]

विजयराज–'वखत' थाट इण विध[5] विढै[6], इण[7] अगि[8] क्रोध उपाडि ।
विकट फौज'विजपाळरी'[9], रचै खगां झट[10] राड़ि ॥ ८४७

छंद सारसी–

धुवि राग सीधव वव[11] धूसा[12] तूर भेरि त्रहक्कए[13] ।
जोगणी चवसठी[14] वीर जय जय चड वाम चहक्कऐ[15] ।
हुवि[16] नास सास त्रहास धमहम स्रोणि[17] धम धम हैखुरा[18] ।
घूघरा पाखर रोळ[19] घम घम झोळ झम झम झज्झरा ॥ ८४८
झडवाण[20] खडहड ग्रीध झडफड भूत खेचर भूचरा ।
सिकोत्र[21] डाकणि मिळै साकणि करै रास भयकरा ।

---

१ ग त्रांबाल । २ ख जुधि । ३ ख ग. जांणिक । ४ ख ग. दोहा । ५ ख. विधि । ग विधि । ६ ख. ख. विढै । ७ ख इणि । ८ ख. अग्र । ९ ख. बिजपालरी । १० ख. झाटि । ११ ख वव । ग वव । १२ ख. धूसा । १३ ख त्रहक्कए । १४ ख. ग. चवसठि । १५ ख. चहक्कए । १६ ख. हुवि । १७ ख ग. स्रोणि । १८ ख ग हेखुरा । १९ ग रौल । २० ख झडवाण । २१ ख. ग सीकोत्र ।

---

८४६ त्रंबाळ – नगाडा । रुडै – वजते हैं । जांणक – मानो । दाणव – दानव । जुडै – भिडे ।

८४७ वखत – वखतसिंह । विढै – युद्ध करते हैं ।

८४८ धुवि – पूर्ण जोशमे हो कर । सींधव – वीररस पूर्ण राग । वव – नगाडा । धूसा – धौंसो । तूर – फूकवाद्य विशेष । त्रहक्कऐ – बाजे बजते है । जोगणी – रणचडी । वीर – युद्धप्रिय भैरव जिनकी सख्या राजस्थानीमे ५२ मानी जाती है । चड – एक प्रकारका युद्धप्रिय पक्षी विशेष । चहक्कण – चहचहाते हैं । नास – नाक । सास – श्वास । त्रहास – घोडा । धमहम – ध्वनि । स्रोणि – क्षोणि = क्षोणी, पृथ्वी । रोळ – ध्वनि विशेष । झोळ – ध्वनि विशेष । झज्झरा – घोडेके पैरके आभूषणो ।

८४९ झडवाण – ( ? ) । खडहड – ध्वनि विशेष । झडफड – पक्षियोके पर फडफडाने की क्रिया या ध्वनि । सिकोत्र – शाकिनी । रास – एक प्रकारका नृत्य ।

अरडाव घोर अधार ओद्रव[1] रूप रौद्रव राहरा ।
घण ईस[2] हौफर करै घाथल निस गिरवर नाहरा ॥ ८४६

'विजपाळ'[3] हाकलि जेण वेळा[4] सूरवीर सकज्जय ।
धख पूर धसिया[5] समर धोरग[6] धोम चख कमधज्जय ।
उण वार सांमतसीघ[7] उरडै करै[8] चाळौ काळरौ ।
खुरसाण थाटा वीच[9] खेलै[10] पछट खग 'विजपाळ'[11]रौ ॥ ८५०

उडि बाह मुगळा जिरह ऊगळि नारग रग नक्कली[12] ।
बळि[13] कीया[14] जाणै[15] रगतवसी[16] चील[17] तजि कजि[18] कच्चळी[19] ।
अधसीस धड विहरंत[20] असिमर फबै[21] इम खळ फाडिया[22] ।
वधि[23] जाणि करवत[24] काढ विहरै[25] पाट करि धर पाडिया[26] ॥ ८५१

अणभग 'सामत' धणी आगळ[27] ओपमा[28] व्रद[29] आवतौ ।
धावतौ 'हरि' हर धसै घूमर[30] झल लोह झिलावतौ ।

---

१ ख. औद्रव । २ ख ग. इसा । ३ ख बिजपाल । ग. विजपाल । ४ ख वेला । ५ ख. ग धसीया । ६ ख ग धोरग । ७ ग. सामतसिंघ । ८ ख. करो । ९ ख वीचि । ग वीच । १० ख पेल्है । ग. पेलै । ११ ख. बिजपालरो । १२ ख. ग नीकली । १३ ख. वल । १४ ग. किया । १५ ख ग. जाणे । १६ ख वंसी । १७ ख. चाल । १८ ख तजि । १९ ख. ग कच्चली । २० ख. विहरत । २१ ख. फवै । २२ ख फाबीया । व फाडीया । २३ ख. बाधि । २४ ख. करवत । २५ ख विहरे । २६ ख ग. पाडीया । २७ ख आगलि । २८ ख ग वोपमा । २९ ख. ग. व्रूद । ३० ख. घूमर ।

---

८४९ अरडाव – ध्वनि विशेष । ओद्रव – भयावह । रौद्रव – रौद्ररसपूर्ण । हौफर – ध्वनि विशेष ।

८५०. विजपाळ – सभव है विजयराज भडारी हो जिसकी सेनामे मेडतिये राठौडोका बडा भारी दल था (?) हाकलि – चलाई । जेण-बेळा– जिस समय । धख – प्रबल जोश । समर – युद्ध । खुरसाण – यवन, मुसलमान । थाटां – दलो, सेनाओ ।

८५१. जिरह – कवच । ऊगळि – फट गई, टूट गई । नारग – रक्त । रगत-वसी-चील – रक्तवशी जातिका सर्प विशेष । कच्चली – कचुकी । असिमर – तलवार ।

८५२ अणभग – वीर । सामत – सावतसिंह । हरि – हरिसिंह = हर – वशज । घूमर – सेना । झल लोह झिलावतौ – लोहो (शस्त्रो)का प्रहार सहन करता हुआ और शत्रु पक्ष पर प्रहार करता हुआ ।

'सत्रसाल' भड इद्रसीघ सभ्रम 'दलौ'[1] 'पदमावत' दुवै ।
वधि[2] जारिए खेलै[3] भगळ विद्या[4] जडलगां धड जूजवै[5] ॥ ८५२

तिण वार 'जालम'[6] 'केहरी' तण करै खग भट खळ[7] कटै ।
उतबग[8] असुरा बढै[9] आछट[10] अधर धडहू ऊछटै ।
आवता झेलै जटी आयस करण-माळा सज कियै[11] ।
अहि गवड विदिया[12] जाणि गोळा लाल बाजीगर लियै[13] ॥ ८५३

पग[14] हाथ झड[15] झड जरदपोसा उग्रर[16] बळधड ऊससै ।
बह[17] जाणि राकसतणा बाळक हरख करि करि हूलसै ।
'जालिमां' ऊपरि मीरजादा धहुर सायक धरहरै ।
मूसळा धारी[18] जाणि मडियौ[19] इद्र व्रज[20] गिर ऊपरै ॥ ८५४

लह लागिया[22] लोहाळ लसकर भयकर गज भाररौ ।
व्रहम ही पार न लहै वरणै[23] 'जालमौ'[24] जिण वाररौ ।

---

१ ग. दलो । २ ख. वधि । ३ ख षेल्है । ४ विदीया । ग विदिया । ५ ख जूजुटै । ग. जूजुवै । ६ ख जालिम । ७ ख ग षलकटै । ८ ख ग. उतबग । ९ ख. ग बाढि । १० ख ग आछट । ११ ख कीयै । १२ ख विदीया । १३ ख लीयै । १४ ख. पगि । १५ ख झटि झटि । १६ ख. ऊग्रर । १७ ख बहो । ग बोहो । १८ ख. ग धारह । १९ ख. ग. मडीयो । २० ख व्रज । ग वृज । २१ ग उपरै । २२ ख. लागीया । २३ ख वरणे । २४ ख जालिमो ।

---

८५२. दलौ – दलसिह । पदमावत – पदमसिहका पुत्र या वशज । जडलगां – तलवारो । जूजवै – पृथक ।

८५३ जालम – जालिमसिह । केहरी – केसरीसिह । उतवग = उत्तमाङ्ग – सिर । बढै – कटते हैं । ऊछटै – उछल कर दूर पडते हैं । जटी-आयस – महायोगी रुद्र । करण-माळा – मुडमाला बनानेको । सज – सामान । गवड विदिया – ऐन्द्रजालिक विद्या ।

८५४. जरदपोसां – कवचधारी । उग्रर – उर, वक्षस्थल । ध्रड – शरीरका मध्यम भाग । ऊससै – जोशमे आ कर । बह – बहुत । हूलसै – उमडते है, हर्ष कर के उमडते हैं । जालिमां – जालमसिह । मीरजादा – यवन । धहुर – ( ? ) । सायक – तीर । मूसळांधारी – मूसलके समान भारी धार (जल-धारा) ।

५५ व्रहम – ब्रह्मा । जालमौ – जालमसिह ।

'सुरतेस' दारुण 'सेर' संभ्रम 'पेम' सुत रज पाळयं ।
^रवदाळ दळ किरमाळ रहचै 'काळ रूप कराळयं ।।^ ८५५

दइवाण[1] सिभूसिंघ दारुण[2] दुसह वारण निरदळै[3] ।
वधि[4] रूक टूक भभूक वध वध, ऊक धारण[5] ऊकळे ।
सभ्रम 'सवाइ'[6] धमक[7] साबळ[8] 'गजण' पाडै मूगळां ।
जरदैत रत मझि पडै जाणै[9] वारिधी[10] मझि वादळां[11] ।। ८५६

वाहै[12] 'विजावत'[13] बहादर[14] वधि वाढ[15] झळहळ[16] वीजळै[17] ।
जुधि पडै तड़फै मुगळ[18] जांणै[19] ओछि[20] जळ मछ उच्छळै ।
सुत 'हठी' 'सिवपति' घाव साझै तेग पछट सतेजरा ।
*फुट[21] भ्रगुट[22] ऊछट[23] रत फुहारा जाणि मट रगरेजरा ।। *८५७
ईंद्रसीघ[24] सुत भड 'जोध' अणभग 'लाल' 'सुत' 'गजबध' लड़ै ।
धुबि खाग झडझड नाग धड-धड प्रिसण दडदड[25] सिर पड़ै ।

---

१ ख. ग दईवांण । २ ख. दारण । ३ ख ग निरदलै । ४ ख धुवि । ग. वुधि ।
^यह पक्ति 'ख' प्रतिमे नही है ।

५ ख ऊक आरण । ६ ख. सवाई । ग सवाइ । ७ ख कमध । ८ ग सावल । ९ ख जांणे । १० ख ग धर । ११ ख बादला । १२ ख. बाहै । १३ ख विजावत । १४ ख बाहादर । ग वाहादर । १५ ख. बाढ । १६ ख जलहल । १७ ख वीजलै । १८ ख ग मुगल । १९ ख ग जाणे । २० ख ग. ओछ । २१ ख ग फुट । २२ ग भृगुट । २३ ग ऊछट । २४ ख ग इद्रसींघ । २५ ख ग दडदड ।
*यह पक्ति 'ख' प्रतिमे नही है ।

---

८५५ सुरतेस – सूरतसिंह । सेर – शेरसिंह । सभ्रम – पुत्र । पेम – पेमसिंह । किरमाळ – तलवार । रहचै – ध्वस करता है । कराळय – भयकर ।

८५६. दारुण – भयकर । दुसह – शत्रु । वारण – हाथी । निरदळै – विध्वस करता है । रूक – तलवार । टूक – खड । भभूक – ध्वस । ऊक – ( ? ) । सवाइ – सवाईसिंह । धमक – प्रहार । गजण – गजसिंह । रत = रक्त – खून । वारिधी – समुद्र ।

८५७ वाहै – प्रहार करता है । वाढ – शस्त्रका पैना भाग, शस्त्रकी धार । वीजळै – तलवारे । मछ – मत्स्य, मछली । हठी – हठीसिंह । सिवपति – शिवसिंह । तेग – तलवार । पछट – प्रहार कर के । भ्रगुट = भृकुटि – मस्तक । मट – मिट्टीका बना वडा पात्र, पात्र ।

८५८ जोध – जोधसिंह । लाल – लालसिंह । गज-बध – गजसिंह । धुबि – तेज । नाग – हाथी । प्रिसण – शत्रु । दडदड़ – गेंदके समान गिरनेकी क्रिया या ध्वनि ।

'सालिमौ' भड़ 'सरदार' सभ्रम धार खगि खळ धोखळै[1] ।
डमरू[2] डहुडुह[3] चड चहच्चह[4] काळ क्रह क्रह कळकळै ॥ ८५८

'अमर'[5] रौ 'मोहकम'[6] रा[7] असूरा बह[8] हणै धड बेहडा[9] ।
खग[10] झाट जुधि[11] होळियार[12] खेलै[13] हरखि जाणि डडेहडां ।
जिण वार सूर 'गुलाब' जूटै खडै दळ खुरसाणरौ ।
सत्रु वरै[14] हूरा हस सूरां भिदै मंडळ भाणरौ ॥ ८५९

उरडिया[15] मुगळ[16] 'गुलाब' ऊपर[17] रवद रूपड रामणा ।
जागिया[18] भूत मसांण जाणै इसा खळ अध्रियामणा ।
धमजगर असिमर फूलधारां उडै कमधज[19] ऊपरां ।
सिवराति पूजै जांण[20] सकर भूत-गण[21] भैरा हरा ॥ ८६०

सिर उडै फूटै[22] वहै स्रोणित, लोहि 'हठमल' सुत लडे ।
जटहत धारा छूट[23] जाणै सदासिव गंग सापडै ।

---

१ ग. घोषलै । २ ख. ग. डवरू । ३ ख. ग डहडह । ४ ख. ग चहचह । ५ ख. ग. अमर । ६ ख. मोहकम । ग मोहोकम । ७ ख. राम । ८ ख ग बहो । ९ ख वेहडां । १० ख. खगि । ११ ख. जुध । १२ ख ग. डोलीयार । १३ ख. ग षेलै । १४ ख. वरै । १५ ख. उरडीया । १६ ख ग. मुगल । १७ ख. ग. ऊपरि । १८ ख ग जागीया । १९ ख. ग. कमघज । २० ख. जांणि । २१ ख. ग भुतगण । २२ ख फिडै । २३ ख. छूटि । ग छूट ।

---

८५८ सालिमौ – सालमसिंह । सरदार – सरदारसिंह । धोखळै – ध्वंस करता है, काटता है । डहुडह – डमरू वाद्यकी ध्वनि । चड – रणचडी । चह-चह – ( ? ) । क्रहक्रह – प्रसन्नताकी हँसी या हँसनेकी ध्वनि । कळकळै – कोलाहल करते हैं ( ? )

८५९ अमरौ – अमरसिंहका । मोहकम – मोहकमसिंह । बेहडा – एक के ऊपर एक, इस प्रकार ढेर देनेकी क्रिया । होळियार – होलिका पर नृत्य करने वाला । डडेहडां – होलिका नृत्यमे खेलते समय हाथमे धारण करनेका डडा । गुलाब – गुलाबसिंह ।

८६० उरडिया – बडी तेजीसे जोशमे आकर आक्रमण किया । रूपड – रूप । रांमणा – रावण । अध्रियामणा – भयकर । धमजगर – युद्ध । असिमर – तलवार । फूलधारा – तलवारों ऊपरां – ऊपर

८६१ स्रोणित = शोणित – रक्त । हठमल – हठीसिंह । गग – गगा । सांपडै – स्नान करते हैं ।

खग झळळ दमगळ भगळ खेले मगळ रूप अमंगळां ।
रवि[1] मडळकरि करि तडळ रवदा[2] कियौ[3] जिम नट कुडळा ।। ८६१

रसलूध लखि इम घडा रवदा अछर घूमर आवियौ[4] ।
चाढिया[5] कठ 'गुलाब' चौसर वर[6] 'गुलाव' वधावियौ[7] ।
धर पडै[8] इम दिव्य देह धारै[9] सूरवीर सकज्जय[10] ।
दुसमणा सैणा[11] कहै[12] जिण दिन धन्य अत्त[13] कमज्जय[14] ।। ८६२

सभ्रम 'वहादर'[15] अडर[16] समरथ धोम धरहर धौखळां ।
रहचत जम जम रूप रवदा समर धम धम सावळा ।
सुत 'बहादर'[17] कुळ विरद[18] 'सालिम' बनी छर छक छोहडा ।
उडि पड़ै खळ सिर रत उभाळिम लडै 'जालिम' लोहडां ।। ८६३

सज्झै[19] 'सवाई'[20] 'सुरत' सभ्रम घटा खळ खग झट घणी ।
भैरवी रत पत्र पीयै भर[21] भर जाम चौसठ[22] जोगणी ।
'सगतेस'[23] गोकळदास सभ्रम जोय अरिजण जामळा[24] ।
बीजळा झालक खळां विहडै[25] सिलह धारक सामळा ।। ८६४

---

१ ख. ग. रवि । २ ख. रदा । ३ ख. ग कीयौ । ४ ख. आवीयौ । ५ ख. चाढ़ीया । ६ ख. ग. वर । ७ ख वधावीयौ । ८ ख पडे । ९ ख ग. धारे । १० ख सकझय । ग सकङ्झयं । ११ ख. ग सयणा । १२ ख कहे । १३ ख-ग मृत । १४ ख ग कमधङ्झय । १५ ग वाहादर । १६ ख. अरड । १७ ख ग वाहादर । १८ ख विग्द । १९ ख. साझै । २० ग. सवाइ । २१ ख भरि भरि । २२ ख. चौमठि । २३ ख ग. सकतेस । २४ ख सामलां । २५ ख विहडै ।

---

८६१ दमगळ – युद्ध । मगळ – अग्नि । तंडळ – ध्वस ।

८६२ रसलूव – उलझा हुआ, फसा हुआ ( ? )। घडा – सेना । अछर – अप्सरा । घूमर – समूह । चौसर – पुष्पहार । वर – पति । गुलाब – गुलाबसिंह ।

८६३ वहादर – बहादुरसिंह । धाम – अग्नि । धरहर – ध्वनि । धोखळां – युद्धोमे, युद्धमे । रहचत – ध्वस करता है । जम जम – जिस प्रकारसे । समर – युद्ध । धम-धम – प्रहार या प्रहारकी ध्वनि । सावळां – भ लो । जालिम – जालिमसिंह । लोहड़ा – तलवारो, शस्त्रो ।

८६४ सवाई – सवाईसिंह । सुरत – सूरतसिंह । भैरवी – रणचडी । रत – रक्त । जाम – प्याला, कटोरा (यहाँ देवीके खप्परके लिये प्रयोग हुआ है) । सगतेस – सगतसिंह । अरिजण – शत्रु । वीजळा – तलवारो । झालक – धारण करने वाला । सिलह-धारक – कवचधारी । सांमळां – ( ? ) ।

तिण वार 'भगवत' 'केहरी' तण वणै[1] त्रिजडां वाहतौ[2] ।
'भीमड़ा'[3] पाडव जेम भारथ गज घडा भड गाहतौ ।
सुध जोध करि खग वाह सत्रा चाह कमळ चढावियां[4] ।
गजगाह[5] ईस अथाह गहणा 'सेर साह' सभावियां[6] ।। ८६५

हद लडै 'सामत' 'तेज' झळहळ ओप वयळ[7] ऊजासरौ ।
सत्र घडा बरघळ करै साबळ दुझल गोकळदासरौ ।
खळ थटां सिर झट बूर खागा करै सूर सकाजरौ ।
कळहणि करूर लडत 'किसनौ' पूर छक प्रथिराजरौ[8] ।। ८६६

तन जतन न करै लडै त्रिजड़ां सझै कारिज सांमरौ ।
खळ नतन करि जस उतन खाटै 'रतन' 'दारण' रामरौ ।
सुत 'अजन' वाहत[9] दुजड़ सत्रहा इसौ जगपति[10] ओपियौ[11] ।
चाणूर मरदन धकै चाढण 'किसन' जाणिक कोपियौ[12] ।। ८६७

'सुरतेस' 'अखमल'[13] सुतण साबळ जरद पोसा उर जडै[14] ।
'अमर'रौ धीरजसीध अणभग उरस छिब[15] भुज आहुडै ।

---

१ ख वणे । २ ख. बाहतो । ३ ख. ग. भीमडा । ४ ख. ग चढ़ावीया । ५ ख. गहगाह । ६ ख. ग. सभावीया । ७ ख वैल । ग. वेयल । ८ ख ग. प्रिथीराजरौ । ९ ख. बाहत । १० ख. जुगपति । ११ ख. ओपीयौ । १२ ख ग. कोपीयौ । १३ ख. अषल । १४ ग झडै । १५ ग. छिव ।

---

८६५ भगवत – भगवतसिंह । केहरी – केसरीसिंह । त्रिजडां – तलवारो । वाहतौ – प्रहार करता हुआ । भीमडा – भीम पाडव । गाहतौ – रौंदता हुआ । गजगाह – युद्ध, वीर । ईस – रुद्र, महादेव । सेर-साह – शेरसिंह ।

८६६ सांमत – सांवतसिंह । तेज – तेजसिंह । झळहळ – ( प्रभापूर्ण ? ) । वयळ – सूर्य । बरघळ – खड, टूक । झट – प्रहार । बूर – समूह । कळहणि – युद्ध मे । किसनौ – किसनसिंह । छक – जोश ।

८६७. जतन – रक्षा । सझै – सिद्ध करता है । सामरौ – स्वामीका । जस उतन – जन्म-भूमिका यश ( ? ) । रतन – रतनसिंह । रांमरौ – रामसिंहका । अजन – अर्जुन । दुजड – तलवार । जगपति – जगतसिंह । ओपियौ – शोभायमान हुआ ।

८६८. सुरतेस – सूरतसिंह । अखमल – अक्षयसिंह । अमररौ – अमरसिंहका । उरस – आकाश । छिबि – स्पर्श कर के । आहुडै – युद्ध करता है ।

सुत 'भीम' अर सुखराज सभ्रम दहू 'केहरि' दारणा ।
वधि[1] खीज करी[2] करमाळ[3] बाही[4] वीज[5] हाथळ वारणा ।। ८६८

सुत भावसिघ 'भगोत'[6] साबळ[7] धड जड़ै भड[8] असि धरा ।
चित्राम लिखिया[9] जिम नर चालत हस उडि धुज हेमरा[10] ।
'भूपाळ' देवीसीघ सभ्रम वीच[11] ताळव[12] जामणौ ।
रवदाळ हण रत्राळ रौद्रव[13] भरै ताळ भयामणौ ।। ८६९

वधि 'जसौ' 'सभव' सुतण वाहत चोळ खगि कळि चाळिका ।
किलमाण हय गय पड़ै कटि कटि कहै जय जय काळिका ।
जिणवार[14] 'अरजण'[15] सुतन[16] 'जगपति' पिसण[17] रण घण पाडतौ ।
सोहियौ[18] दारण तरण समसर झळळ वीजळ[19] झाडतौ ।। ८७०

वीजळा[20] हाथळ गजा विहडत करत समहर कामरौ ।
सादूळसीह सरूप सूरत राजसीह ज 'राम'रौ ।

---

१ ख वधि । २ ख. ग. करि । ३ ख ग किरमाल । ४ ख. बाही । ५ ख. बीज । ६ ख भंगोत । ग. भगौत । ७ ख सावलि । ८ ख. भडा । ९ ख. लिषीया । १० ख ग. हैमरा । ११ ख बीज । १२ ख तालव । १३ ख. रोद्रव । १४ ख. जिणवार । १५ ख. अरिजण । १६ ख सुतण १७ ख. प्रिसण । १८ ख. सोहीयौ । १९ ख प्रतिमें यह शब्द नहीं है । २० ख. बीजला ।

---

८६८ भीम – भीमसिंह । केहरी – केसरीसिंह । करमाळ = करवाल – तलवार । हाथळ – हाथका प्रहार । वारणा – हाथियो ।

८६९ भगोत – भगवतीसिंह । जड़ै – प्रहार करता है । असि – तलवार । हस – प्राण । हेमरा – घोडो । भूपाळ – भूपालसिंह । वीज – बिजली । ताळव – ( ? ) । जामणौ – ( ? ) । रवदाळ – मुसलमान । रत्राळ– रक्त । रौद्रव – भयकर । भयामणौ – भयकर ।

८७०. जसौ – जसवतसिंह । संभव – शभुसिंह । सुतण – पुत्र । किलमाण – मुसलमान । अरजण – अर्जुनसिंह । जगपति – जगतसिंह । पिसण – शत्रु । पाड़तौ – सहार करता हुआ । सोहियौ – शोभित हुआ । समसर – समान । झळळ – अग्नि । वीजळ – तलवार । झाडतौ – गिराता हुआ, प्रहार करता हुआ ।

८७१. विहडत – सहार करता है । समहर – समर, युद्ध । रामरौ – रामसिंहका ।

विमरीर 'भैरव' 'सुतण' 'वैरौ'[1] सूर बहौ खग साहतौ ।
पिसणरा[2] खासा[3] झड़ा पहुतौ[4] विखम खग झट वाहतौ[5] ॥ ८७१

वरमाळ[6] गळ अत्राळ पग विच[7] झाळ व्रन[8] खग ओझटै[9] ।
अति धजर खग सिर गजर उड्डत[10] अरण धरहर ऊछटै ।
घूमत्त वाहत[11] लोह व्रिद घण[12] पड़ै[13] रिण[14] म्रत[15] पावियौ[16] ।
रचि देह सुरवरि अछर चढि[17] रथ अमरपुर मझि आवियौ[18] ॥ ८७२

तिण वार 'हिंदव'[19] 'बहादर'[20] तण[21] सेल धडखळ सालवै ।
जुध सूर चाकै चढै जितरै हूर वर होय हालवै ।
हद सूर 'अखमल' 'सुतन' 'हीदुव' 'सँभु' वधा सीस भ्रमं ।
खग गजर[22] उजबक हणै[23] खाटत अरक मुन्यद अचभ्रमं ॥ ८७३

---

१ ख वैरो। २ ख प्रिसुण। ग. पिसुण। ३ ख षा। ४ ख पडतौ। ग. पहुतौ। ५ ख वाहतौ। ६ ख. वरमाल। ७ ख विचि। ८ ख. व्रनण। ९ ख. ओझटै। १० ख ग ऊडत। ११ ख वाहत। १२ ख. व्रद। १३ ख. पडे। १४ ख ग. रण। १५ ख. ग मृत। १६ ख ग पावीयो। १७ ख. चढ़ीरथ। १८ ख. आवीयो। १९ ख. हींदव। २० ख ग बाहादर। २१ ख ग. तण। २२ ख ग जरक। २३ ख कहणे।

---

विमरीर – भयकर, जवरदस्त। भैरव – भैरवसिंह। वैरौ – वैरीशालसिंह। साहतौ– प्रहार करता हुआ। पिसण – शत्रु। पहुतौ – पहुच गया। वाहतौ – प्रहार करता हुआ।

८७२. अत्राल – आँतें। झाळ व्रन – रक्त वर्ण। ओझटै – प्रहार करता है। धजर – भाला। गजर – प्रहार। अरण – रक्त, खून। ऊछटै – उछलता है। पावियौ – प्राप्त किया। आवियौ – आया।

८७३. हिंदव – हिंदूसिंह। बहादर – बहादुरसिंह। सालवै – प्रहार करता है। जुध ... हालवै – युद्धमे शूरवीर जब सेनाका सामना करते हैं ठीक उसी समय वीरगति प्राप्त हो कर और अप्सराका वरण कर के स्वर्गकी ओर चल देते हैं। अखमल – अक्षयसिंह। हींदुव – हिंदूसिंह। गजर – प्रहार। उजबक – तातारियोकी एक जाति या इस जातिका व्यक्ति। खाटत – प्राप्त करता है। अरक – अर्क, सूर्य (यहा सूर्य-मडल अर्थ है) मुन्यद – मुनीद्र, महर्षि नारद ऋषि। अचभ्रम – आश्चर्ययुक्त।

'दांनरौ' 'अभमल' झाट दुजडा[1] 'कान्ह' 'सुत'' देवौ' करौ ।
'राम'री 'वुध' वधत[2] रवदा सूर धज फळ सेलरौ[3] ।
'राम'री हिम्मतसीघ[4] रणवट करै खग झट केवियां[5] ।
सेविया[6] जेम असीस साझत दुरत भर पत्र देविया[7] ।। ८७४

मगरूर 'मान'[8] 'अनोप'[9] सभ्रम 'अखौ' 'मान' 'सुजावयं' ।
खळ थाट क्रोव[10] उपाट[11] खडत घाट घण खग घावय ।
इम लडै भड थट दुझड[12] ओझट[13] हाथिया घड़[14] हेडतौ ।
धर[15] वस[16] धूहड गरव धारत मडोवर गढ मेडतौ ।। ८७५

दईवाण[17] 'जोध' कळोध दारण हिचै आरण हडवडै[18] ।
'किसन'रै अरि[19] घड वसत[20] कीधौ रूक अवझड 'राजड़ै'[21] ।
खग झाट 'किसन' सुजाव खेलत पुणत रवि सिव[22] पारखौ ।
उण वार[23] 'सामत' एक अणभग सोल[24] सामत सारिखौ ।। ८७६

---

१ ख. दुझडा । २ ख ग वेधत । ३ ख सेलरै । ४ ख. हींमतसींघ । ग हीमतसिघ । ५ ख. केवीया । ६ ख ग. सेवीयां । ७ ख ग. देवीया । ८ ख. मान । ९ ग अनोत । १० ग. क्रोध । ११ ख उपाड । १२ ख. ग. दुजड । १३ ख. ओझट । १४ ख. थाहीया । ग. हाथीया । १५ ख ग. घड । १६ ख वस । १७ ख. ग दईवाण । १८ ख. ग हडहडै । १९ ख. ग अरि । २० ख वसत । २१ ख राजरै । २२ ख सि । २३ ख. वार । २४ ख. सौल ।

---

८७४. दान – दानसिंह । अभमाल – अभयसिंह । दुजडां – तलवारो । कान्ह – कानसिंह । देवौ – देवीसिंह । रांमरी – रामसिंहका । वुध – वुधसिंह । बधत – सहार करता है । रणवट – युद्ध । केविया – शत्रुओ । असीस – आशीर्वाद । साझत – प्राप्त करता है । दुरत – जबरदस्त ।

८७५ मगरूर – वीर । मान – मानसिंह । अनोप – अनोपसिंह । अखौ – अक्षयसिंह । सुजावय – पुत्र । खडत – सहार करता है, खडित करता है । दुझड – तलवार । हेडतौ – हाकता हुआ । धूहड – राव धूहडका वशज राठोड ।

८७६. जोव – राव जोधा । कळोव – वशज । दारण – जबरदस्त । हिचै – युद्ध करता है । हडवडै – हडवडाते कपित होते है । किसन – किसनसिंह । रूक – तलवार । अवझड – प्रहार । राजडै – राजसिंह । किसन – किसनसिंह । सुजाव – पुत्र । पुणत – कहते है । पारखौ – परीक्षा करने वाला । सामत – सामन्तसिंह । अणभंग – वीर । सांमत – योद्धा । सारखौ – समान ।

समहर 'सवाइय'[१] 'राजसी' सुत धजर खग चवधारका ।
जुडि हणै रवदा रायजादौ मीरजादां मारका ।
पत्र ओक करि करि सगत[२] पीवत घोख रत घट घायलां ।
तायलां मुगळां झाट त्रिजडा 'ऊदहर' अजरायलां ॥ ८७७

सुत 'कांन्ह' मानड जोस समहर 'नाथ' भड रुघनाथरौ ।
'हरिकिसन' अभमल सुतण झळहळ सझै[४] जुध समराथरौ ।
मगरूर 'अभमल' 'सुतन'[५] महपति उरड जोम[६] अछेहडां ।
जेहडां पडव पच जूटत[७] 'ऊदहर' भड़ ऐहडां[८] ॥ ८७८

सुत 'भाउ' झळहळ घाव साबळ रह चदळ रवदाळरै ।
विच[९] लडै 'कूप'[१०] कळोध 'क्रन्न'[११] बधि चाळबंध घमचाळरै ।
सभरीक 'पातल' 'अभा' सभ्रम 'जोर' सुत बुध जामळा ।
'सकतौ' विंद्रावनदास[१२] सभ्रम बधि[१३] लडै झट वीजळा[१४] ॥ ८७९

हर सिखर कूरम घणा खळ हणि धजर साबळ[१५] धौहडां[१६] ।
'किसनेस' सुतण गज ढाल कळहण 'लाल' त्रिहडत लोहडां ।

---

१ ख सवाईय । २ ख सकत । ३ ख रघुनाथरो । ४ ग. सझे । ५ ख. सुतण । ६ ख जेम । ७ ग झूटत । ८ ख ग एहडा । ९ ख. बिचि । ग विचि । १० ग कूप । ११ ख. ग क्रन । १२ ख ब्रिदावनदास । ग विद्रावनदास । १३ ख बधि । १४ ख बीजलां । १५ ख साबल । १६ ख ग. धोहडा ।

---

८७७ सवाइय — सवाईसिंह । राजसी — राजसिंह । धजर — भाला । चवधार — भाला । मारका — जबरदस्त । ओक — अजलि । सगत — रणचडी, शक्ति । घोख — प्रवाह, धारा, धाराकी ध्वनि । रत — रक्त । तायलां — आततायी, शत्रु । त्रिजड़ा — तलवारो । ऊदहर — उदावत शाखाका राठौड । अजरायलां — जबरदस्त ।

८७८ कान्ह — कानसिंह । मानड — मानसिंह । समहर — युद्ध । नाथ — नाथूसिंह । सुतण — पुत्र । अभमल — अभयसिंह । उरड — साहस । जोम — जोश । अछेहडा — अपार । पंडय — पाण्डव । ऐहडा — ऐसे ।

८७९ भाउ — भाऊसिंह । झळहळ घाव — घावोसे परिपूर्ण । कूंप — राव कूपा राठौड । कळोध — वशज । क्रन्न — करणसिंह । घमचाळरै— युद्धके । सभरीक — चौहान । पातल — प्रतापसिंह । अभा — अभयसिंह । जोर — जोरावरसिंह । सकतौ —शक्तिसिंह ।

८८०. हर — वशज । सिखर — शेखा कछवाह जिसके वशज शेखावत कहे जाते हैं । कूरम — कछवाह । धौहड़ां — प्रहारो । किसनेस — किसनसिंह । कळहण — युद्ध । लाल — लालसिंह । त्रिहडत — सहार करता है । किसनेस — किशनसिंह ।

'विसनेस' 'अना' सुजाव वधि[1] वधि विकट[2] खग झट बाहतौ ।
'विलद'रा[3] खासा गजा विढतौ[4] गयौ खळ दळ गाहतौ ॥ ८८०

सर धजर सावळ गजर असिमर असुर सिर पर आछटै ।
धज खजर पंजर जडै जमधर पड़े नह खग पाछटै ।
उरसहू राळत हार अपछर फूल खग झट फणहणै ।
पळ समर उड्डुत[5] तेण ऊपर भमर[6] रातल[7] भणहणै ॥ ८८१

इधिकाय[8] इसडौ गजर उडियौ[9] घाय खग जुडि[10] घूमरा ।
पहराय न[11] सकै माळ कठ परि आय न सके[12] अपछरा ।
इण चूक ऊपर हसै मुनि-इद्र सझै जोगिद चौसरां ।
रोसरा घाव करंत किरमर[13] मिळै भौहर[14] मौसरा ॥ ८८२

इम लड़े[15] चुख[16] चुख होय पडियौ[17] भांण[18] कौतिक[19] भाळियौ[20] ।
तजि देह नर सुर देह को तदि बीद रभ[21] वरमाळियौ[22] ।

---

१ ख वधि वधि । २ ख विकट । ३ ख. विलद । ४ ख विढ़तौ । ५ ग ऊडत । ६ ख भमर । ७ क रायतल । ८ ख. ग. अधिकाय । ९ ख. ग उडीयौ । १० ख जडि । ११ ख. ग न । १२ ख ग सकै । १३ ख किरमल । १४ ख ग. भौहट । १५ ख. लडे । १६ ग जषचुष । १७ ग. पडीयौं । १८ ख. भांडि । १९ ग. कौतिग । २० ख ग. भालीयौ । २१ ख रीभ । २२ ख. वरमालीयौ । ग वर-मालीयौ ।

---

८८० अना – अनाडसिंह । विढतौ – युद्ध करता हुआ । गाहतौ – संहार करता हुआ ।

८८१ सर – तीर, वाण । धजर – भाला विशेष । गजर – प्रहार, समूह । असिमर – तलवार । आछटै – प्रहार करता है । धज – तलवार । पजर – शरीर । जमधर – कटार । उरसहू – आकाशसे । राळत – डालती है । फणहणै – ( ? ) । रातल – मासाहारी पक्षी विशेष ।

८८२ इधिकाय – अधिक हो कर । इसडौ – ऐसा । गजर – प्रहार । घूमरा – समूह, दल । चूक – सभ्रम, गफलत । मुनि-इद्र – नारदमुनि । सझै – तैयार करता है । जोगिद – योगीन्द्र, महादेव । चौसरा – मुड-माला । किरमर – तलवार । भौहर – भौहो । मौसरा – श्मश्रु या श्मश्रुके वाल ।

८८३. भांण – सूर्य । कौतिक – कौतूहल । भाळियौ – देखा । बींद – दुल्हा । वर-माळियौ – वरमाला पहनाई, पति स्वीकार किया ।

चढि रथां चालै[1] हुतां[2] चमरां अमर-पुर निज अंदरां ।
'विसनेस'[3] कूरम एम[4] बसियौ मजुघोखा[5]-मदरां ॥ ८८३

कळहै नरू हर 'पदंम' कूरम औरिया[6] अजरायकां ।
तायकां मुगळां करे तंडळ घाय[7] खग घण घायकां ।
अणथाह जोम दुबाह उजबक मरद 'पदमै' मारियां[8] ।
गजगाह[9] करिय[10] सराह गजपति[11] तण बखत तरवारियां[12] ॥ ८८४

केवांण पांण विभाड़[13] कलमां[14] सार धड़ भड़ साहियां[15] ।
पडि खेत रावत लोहपूरां परिहार[16] पराहिया[17] ।
वर अछर अमरापुरां वसियौ परम सुख जदि[18] पावियौ[19] ।
धर अमर वाता रहै[20] धूजिम[21] आप वस[22] अजसावियौ[23] ॥ ८८५

'महिरांण' 'भगवत[24] सुतण असिमर रवद थट पाधोरियौ[25] ।
घूमरै जाडै बीच[26] घोडौ[27] एक[28] हाडै[29] औरियौ[30] ॥ ८८६

---

१ ख चोले । २ ख. हुतां । ३ ख बिसनेस । ४ ख. ग येम । ५ ख. जमघोषां ग. मजघोषा । ६ ख ओरि । ग ओरि । ७ ख. बग । ८ ख ग मारीया । ९ ख ग ग्राह । १० ख करे । ११ ख यहमति । ग ग्रहपति । १२ ख. ग तरवारियां । १३ ख बिभाड । १४ ख. ग किलमां । १५ ख. ग. साहीया । १६ ख. ग. परीहार १७ ख. ग पराहीया । १८ क दीघु । १९ ख. पावीयो । २० ख रहे । २१ ख. ग. धूजिम । २२ ख बंस । २३ ख ग अजसावीयो । २४ ख ग. भगवत । २५ ख. ग पाघोरीयो । २६ ख ग वीचि । २७ ख घोडो । २८ ख. पेक । २९ ख हडै । ३० ख. ओरीयो ।

---

८८३ अमर-पुर – स्वर्ग । अंदरा – इन्द्रके । विसनेस – विष्णुसिंह । कूरम – कछवाहा राजपूत । मजुघोखा-मंदरा – मजुघोषा नामक अप्सराके भवनमे ।

८८४. नरु – नरूका । हर – वशज । पदम – पद्मसिंह । औरिया – झोंक दिये । अजरायका – वीरो । तायकां – आततायी, दुष्टो, असुरो । घायकां – घाव या प्रहार करने वालो अथवा घायलो । पदमै – पद्मसिंह । गजगाह – युद्ध । गजपति – राजा (?) । तरवारियां – तलवारधारी योद्धाओं । केवांण – तलवार । पांण – प्राण, बल । विभाड़ – सहार करने वाला । सार – तलवार । साहियां – धारण किये हुए ।

८८५. अंजसावियौ – गर्वयुक्त किया । महिरांण – समुद्रसिंह । भगवत – भगवतसिंह ।

८८६. असिमर – तलवार । रवद – मुसलमान । थट – सेना । पाधोरियौ – सीधा किया, सरल किया । घूमरै जाडै-बीच – घनी सेनाके बीच । हाडै – चौहान वशकी हाडा शाखाका वीर ।

दूहौ[1]–

त्रिहुवै घड 'अभमल' तणी, अर घड़ 'विलँद'[2] असाधि ।
जूटै जिम वरणी[3] जियै[4] वीजळ[5] झाटा वाधि[6] ।। ८८७

छंद रोमकंद–

घड भूप 'अभा' र विलँद[7] तणी घड़ रीठ झडज्झड खाग रमै ।
दळ कध कडक्कड़ सीस दडद्दड भीच लडत्थड केक भ्रमै ।
धुम्र केक बडब्बड़ नृत्त[8] धडध्धड चडि गड़ग्गड़ रत्त चडै ।
'अभमाल' विलँद[9] तणा मुह[10] आगळ लौह इसी विध[11] जोध[12] लडै ।।८८८
*होय रिख हडाहड पावहथज्झड धूम त्रवध्धड मेछ घडां ।
तस रूप तडत्तड़ नीझक नज्झड़[13] तूटत अतड़ रोद तडां ।
फिफराळ फडप्फड कूद कळज्झड आय भडब्भड़ मल्ल अडै ।
'अभमाल' 'विलँद' तणा मुह आगळ लोह इसी बिध[14] जोध लड़ै* ।। ८८९

---

१ ख दोहा । ग दोहो । २ ख विलद । ३ ख. अरणी । ४ ग जीयै । ५ ख. बीजळ । ६ ख. बाधि । ७ ख बिलद । ८ ख. ग. नृत । ९ ख बिलद । १० ख. मुह । ११ ख ग विधि । १२ ख. जोड । १३ ग नक्झड । १४ ग विधि ।

*चिन्हाकित पक्तिया 'ख' प्रतिमे नही है ।

---

८८७. त्रिहुवै – तीनों । अभमल – महाराजा अभयसिंह । अर – अरि-शत्रु, अथवा और । असाधि – असाध्य, अपार । वीजळ – तलवार । झाटां – प्रहारो । वाधि – विशेष ।

८८८. घड – सेना । अभा – अभयसिंह । झडज्झड – कटाकट, मारकाट । कड़क्कड – कटाकटकी ध्वनि । दड़द्दड – गेंदके समान ठुकराये जानेकी क्रिया या ध्वनि । भीच – योद्धा । लडत्थड – लडखडाते है । धुम्र – शिर । बडब्बड – बकझक, प्रलाप । नृत – नृत्य, नाच । धड़ध्धड़ – विना शिरका-शरीर, अथवा विना शिर-पैरका शरीरका मध्य भाग । चडी – रणचडी । गग्गडग – गटगट । रत्र – रक्त । चड़ै – पान करती है ।

८८९ रिख – नारद ऋषि । हडाहड – हँसनेकी ध्वनि । पावहथज्झड – पैर और हाथ कट कर गिरते है । धूम – कोलाहल । त्रवध्धड – तीनो ओरकी सेनासे । तस – हाथ । तडत्तड – कटनेकी क्रिया या ध्वनि अथवा भूमि पर गिरनेकी ध्वनि । नीझक – ( ? ) । नज्झड – ( ? ) । अतड – आतें । रोद – यवन । तडां – दलो । फिफराळ – फेंफडा । फडपफड – ध्वनि विशेष । फळज्झड – कलेजा । भडब्भड – प्रति भट अथवा ध्वनि विशेष । मल्ल – योद्धा ।

हाथियां[1] घड हूचक भूल अकज्झक रभ तकत्तक हूर रहै ।
करि केयक कतक[2] उभक अंत्रक[3] वीद[4] विमाणक[5] धारि बहै[6] ।
आछटै खग सूरवि छाहड़[7] ऊपर पाहड़ ऊपर वीज[8] पड़ै ।
'अभमाल' 'विलँद'[9] तणा मुह आगळि लोह इसी विध[10] जोध लडै ।।८९०

बोहौ[11] सीस उडक्क हिचक्क उवासक[12] अधक[13] केड हुचक्क उडै ।
भुकि[14] जीह सकल्लर नारग भल्लर रल्लर[15] बासग[16] जेम लड़ै ।
हुचकत पटत[17] फटां अगटां[18] हिक घाव करे[19] किरि लोह धडै ।
'अभमाल''विलँद'[20] तणा मुख[21] आगळि लोह इसी विध[22] जोध लड़ै।।८९१

उपराळ हौदाळ लकाळ चढै अति काळ कराळ भळा भभकै ।
वहि[23] खाळ रत्राळ ग्रिभाळ[24] परा[25] वजि छाक बबाळ लकाळ छकै ।
मतिवाळ[26] कराळ कराळ महाबळ जोर भुजाळ धराळ जडै ।
'अभमाल' विलँद तणा मुह आगळि[27] लोह इसी विध जोध लडै ।।८९२

---

१ ख हाथीया। २ क कत्रक। ३ ख अतक। ४ ख बींद। ५ ख बिमांणक। ६ ख बहै। ७ ख बेछाहड। ८ ख. बीज। ९ ख बिलद। १० ख. बिधि। ग विधि। ११ ख ग, बौहौ। १२ ख. ग. उवासक्क। १३ ख ग अधक्क। १४ ख भकि। १५ ख ग. लल्लर। १६ ख. वासग। १७ ख पटत। १८ ख. ग भृगुटा। १९ ख ग करे। २० ख. बिलद। २१ ख ग मुह। २२ ख ग विधि। २३ ख ग वही। २४ ख ग्रिभाल। २५ क पळा। २६ ख. मतिबाल। २७ ग आगल।

---

८९० हूचक – प्रहार, टक्कर। अकज्झक – अस्त-व्यस्त होती है, अलूझती है। रभ – अप्सरा। तकत्तक – ताकती है। कतक – कात, पति। अत्रक – आतें। विमाणक – विमान। वीज – वज्र।

८९१ बोहौ – बहुत। उडक्क – उडते है, कट कर गिरते हैं। हिचक्क उवासक – हिचकिया लेते हैं और उवासिया लेते हैं। अधक – अधकासुर दैत्य। केड – वश। हुचक्क – प्रहार, युद्ध। सकल्लर – ( ? )। नारग – रक्त। भल्लर – ( ? )। वासग – वासुकि नाग।

८९२. उपराळ – ऊपर। हौदाळ – हौदा, अम्मारी। लकाळ – वीर। भळां – आगकी लपटें। भभकै – उमडती है। खाळ – नाला। रत्राळ – खून, रक्त। ग्रिभाळ – गिद्ध पक्षी। परां – पख, पाखें। छाक – प्याला। बबाळ – जबरदस्त। लकाळ – सिंह पर सवारी करने वाली, रणचंडी। छकै – तृप्त होती है। मतिवाळ – मस्ती। भुजाळ – वीर। धराळ – भूमि।

रवताळ रौदाळ[1] रोसाळ महा रिण[2] झाळ खडाळ आताळ[3] करै ।
झिलमाळ कधाळ कराळ पड़ै झडि[4] धू मझि माळ जटाळ धरै ।
जटियाळ[5] छुटाळ[6] परै पत्र जोगणि पै जिम खाळ रत्राळ पडै ।
'अभमाल' विलँद तणा मुह आगळि लोह इसी विध[7] जोध लडै ।। ८९३

*करि काळ भडा तिह काळ किता करिमाळ झडा जरदाळ कटै ।
धमचाळ अत्राळ पगा विचि धौ सळिलूथळ बथा लहु वैन लटै* ।
प्रतिमाळ कराळ जडत घडा पर झाळ चखां विकाराळ झडै ।
'अभमाल' विलँदतणा[8] मुह आगळि लोह इसी विध जोध लडै ।। ८९४

करिमाळ[9] झुलाळ बगाळ घणा कटि केक[10] खराळ झफाळ कटै[11] ।
विकराळ मसाळ हाडाळ वळोवळ[12] पखणि गाळ लियै[13] झपटै ।
रणताळ सपेखत वाग[14] कसै[15] रथ खैग क्रनाल जठै न खडै ।
अभमाल विलँदतणा[16] मुह आगळि लोह इसी विध[17] जोध लड़ै ।। ८९५

---

१ ख. ग रोसाल । २ ख ग महारण । ३ ख. आताल । ४ ख जडि । ५ ख. ग जटीयाल । ६ ख. ग. छूटाल । ७ ख. विधि । ग. विधि । ८ ख. विलदतणा ।

*रेखाकित पक्तिया 'ख' प्रतिमे निम्न प्रकार हैं—

'धमचाल अत्राल लोहाल लगा घट पाण कराल पगा पछटै ।
वरमाल कठाल अत्राल पगा विचि लूथवथा लहू ओन लटै ।

९ ख करमाल । १० ख कॅप । ११ ख कटे । १२ ख. वलावल । १२ ख लीयै । १४ ख. षाग । १५ ख ग. कसे । १६ ख बिलदतणा । १७ ख विधि । ग. विधि ।

---

८९३ रवताळ – वीर । रौदाळ – यवन । रोसाळ – रोसपूर्ण । झाळ – भयकर । खडाळ – खड, टूक । आताळ – आत्र समूह (?) । झिलमाळ – युद्धके समय शिर पर धारण करनेका टोप । कधाळ – कधा । झडि – गिर कर । धू – मस्तक । मझि – मध्य । माळ – मुडमाला । जटाळ – महादेव । जटियाळ – जटा, शिरके वाल । छुटाळ – छुटे हुए विखरे हुए । पै – पर्वत । रत्राळ – खून ।

८९४ तिह – उस । करिमाळ – तलवार । झडां – प्रहारो । जरदाळ – कवच । धमचाळ– युद्ध । अत्राळ – आतें । सळिलूथ – (?) । बथां – बाहुपाश । लहु वैन – रक्तसे (?) । प्रतिमाळ – कटार । जड़त – प्रहार करते हैं । झाळ – क्रोधाग्नि । अभमाल – महाराजा अभयसिह ।

८९५ झुलाळ – समूह, दल । बगाळ – यवन । खराळ – शत्रु । झफाळ – ( ? ) । मसाळ – मासाहारी, मासपिंड । हाडाळ – हड्डियो । वळोवळ – चारो ओर । पखणि – मासाहारी पक्षी, चिल्ल, गिद्धादि । गाळ – कौर । रणताळ – युद्धस्थल । सपेखत – देखता है । खैग – घोडा । क्रनाळ – किरण+आळ (रा.प्र ) सूर्य

धमछट्ट[1] विकट्ट[2] गरट्ट पडै धड[3] घट्ट उछट्टत भट्ट[4] घणा ।
होय पद्द उपट्ट चौसट्ट पियै[5] हद तट्ट उपट्ट नरद्दतणा ।
खळकट्ट[6] उछट्ट कंधट्ट कहै खग खजर दहत हंस खडै ।
'अभमाल' विलँदतणा[7] मुह आगळि[8] लोह इसी विध[9] जोध लडै ।। ८६६

छप्पै[10] कवित्त[11]

एक वार ओरियौ[12] झाट वीजूजळ[13] झाडै[14] ।
रोद[15] थाट रोसग[16] प्रिसण[17] पनरासै[18] पाडै[19] ।
विखम[20] दूसरी वार ऊक झल खाग अताळे ।
एक सहस[21] एक सौ रवद विहडै[22] धर[23] राळे[24] ।
'अभमाल' वार तीजी अडर[25] जवन देखि[26] सिर जोरियौ[27] ।
सूरजपसाव[28] खिखते[29] समर औसर तीजै ओरियौ[30] ।। ८६७

डसण जजर डोलचा भळळ उजळळ भाला ।
साहि बाहि स्री-हथा लाल समसेर गुलालां ।

---

१ ख धमछट । २ ख बिकट्ट । ३ ख घर । ४ ख सट्ट । ५ ख ग. पीयै । ६ ख ग षलषट्ट । ७ ख. विलँदतणा । ८ ग आगळि । ९ ख बिधि । ग. धि । १० ख. कवित्त । ११ ख छपै । ग छद । १२ ख. ओरीयौ । १३ ख वीजूमल । १४ ख. ग झाडे । १५ ख. ग रौद । १६ ख ग. रौसग । १७ ख ग. प्रि । १८ ख पनरहसै । ग. पनरहसै । १९ ख ग पाडे । २० ख विषेम । २१ ख. सहस । २२ ख बिहडे । २३ ख धव । २४ ग राले । २५ ख. अरड । २६ ख देष । २७ ख जोरीयौ । २८ ख सुरिजपसाव । २९ ख ग षिषते । ३० ख ओरीयौ । ग ओरीयौ ।

---

८६६ धमछट्ट – युद्ध । विकट्ट – भयकर । गरट्ट – समूह । घट्ट – शरीर । उछट्टत – उछलते हैं । भट्ट – योद्धा । पद्द – पैर । उपट्ट – उमड कर । चौसट्ट – रणचडी । कंधट्ट – कधा । हस – प्राण ।

८६७ रोसग – रोषपूर्ण । प्रिसण – शत्रु । विहडै – सहार करके । धर – पृथ्वी । राळे – डाल दिये । अभमाल – महाराजा अभयसिंह । सूरजपसाव – महाराजा अभयसिंहके घोडेका नाम । खिखते – क्रोधपूर्ण होते हुए । औसर – अवसर, समय ।

८६८. डसण = दशन – दात । जजर – यमराज । डोलचा – (?) भळळ – देदीप्यमान ।

बरिमाळा गळ बिचै[1], ओयण उभ्रळता[2] अत्राळा ।
घण घायां[3] घूमतां, करै धमचक कळिचाळा ।
सेला हिया दुसार लोह वाहै लालरता ।
वीखरता बाबरा[4], अगुट[5] फाटा[6] हौफरता ।
रजपूत मुगळ भभरूप[7] वरणि[8], दुजड़ां झाटक दौढिया[9] ।
अवधूत जाणि करि करि अमल, दत्त अखाड़ै पोढिया[10] ॥ ६०३

केयक रुधिर-पिड करै, तडछ खावै रवताळा ।
माथा विण[11] धड मुगळ केयक[12] लोटै[13] कळिचाळा ।
केयक फूटि धड़ कून, पड़ै वाहै प्रतिमाळा ।
कियक[14] लोह छाकिया[15], मसत घूमै मतिवाळा ।
जगनाथ तणा अटका[16] जही, बिगसै सिर झटका[17] बहै[18] ।
अहमदाबाद[19] हिंदू[20] असुर, खेध वाद लागा खहै ॥ ६०४

उडि पड़ै अग अरध, अरध अग जुडै अपछर ।
रांमति जाण[21] रमै, अरध - नारी - नाटेसुर ।

---

१ ग विचै । २ ख. उलझता । ३ ख. घावा । ४ ग. वाघरा । ५ ख भुगुट । ग भिगुट । ६ क. काटा । ७ ख. भभरूत । ८ ख. ग. तरणि । ९ ख ग. दौढ़ीया । १० ख. ग पोढ़ीया । ११ ख. विण । १२ ख. केय । १३ ग. लाटै । १४ ख. केयक । १५ क. छीकीया । १६ ख अटका । १७ ख फटका । १८ ग. वहै । १९ ख. अहमदावाद । २० ख. हींदू । ग हीदू । २१ ख. जांण ।

---

६०३ ओयण – चरण, पैर । अत्राळा – आर्ते । धमचक – युद्ध । कळिचाळा – वीर । दुसार – आरपार । लालरता – लडखडाता । बावरां – बालो, केशो । अगुट – मुख । हौफरता – हांफते हुए । भभरूप – भाभरे भूत की भांति, भयकर । वरणि – वर्ण, रग । दुजड़ा – तलवारों । झाटक – प्रहार । दत्त – दत्तात्रय ऋषि ।

६०४. रुधिर-पिड – युद्धमे वीर गति प्राप्त होने वाले वीर द्वारा अपने रक्त और मिट्टीके साथ बनाया हुआ पिंड जो पितरोंके तर्पणार्थ अर्पण करता है, इसे राजस्थानमे एक बड़ा पुण्यकार्य मानते थे । तड़छ – तड़फडाहट । रवताळा – योद्धा । कूत – भाला । प्रतिमाळा – कटार । छाकिया – छके हुए, मस्त । खहै – युद्ध करते हैं ।

६०५. अपछर – अप्सरा । रांमति – खेल, क्रीडा । अरध-नारी-नाटेसुर – तत्रमे शिव और पार्वतीका एक रूप ।

करै घाव कोपरा, उडै खोपरा अद्धकर[1] ।
जोगि[2] जांणि जमाति, खिजै[3] पट्टकै धर खप्पर ।
के क यक खगा माथा किलम, झिलम टोप सूधा झडै ।
जे जाणि बाज तीतर जकडि, पकडि दाव धरती पडै ।। ६०५

बीज हजारा[4] वहै[5] सेल हजारां[6] दुसारां ।
घटा[7] हजारा घाव[8] करद खंजरां कटारां ।
इतौ लोह आतरौ सुरां असुरा सिरदारा ।
वीसा[9] अपछर वरै[10], हूरवर[11] वरै[12] हजारा ।
नर कध हजारा नीभुडै उभै करां जाय[13] न लिया[14] ।
तिण वार लियण[15] सिर तायका, करह[16] हजारां[17] सकर[18] किया ।।६०६

साधन कजि सिवराज, सकौ[19] सिर मौहरि[20] सधारै[21] ।
वधि[22] वधि बावन[23] वीर आगि सिर मौहरि अधारै ।
जुध चौसर[24] जोगणी, अडर सूरा सर[25] आणै ।
सिरमाळा गिर-सुता, पोय गूथ परमाणै ।

---

१ ख ग अद्धक्कर । २ ख ग जोगी । ३ ख षिजै । ४ ख. हजारां । ५ ख. वहै । ६ ख हज्झार । ७ क घटा । ८ क घीव । ९ ख बीसा । १० ख बरं । ११ ख बर । १२ ख. बरं । १३ ख. ग जाय । १४ ख ग. लीया । १५ ख. जीवण । ग लीयण । १६ ख कर । १७ ख ग हजार । १८ ख. कीया । १९ ग. सका । २० ख. मौरि । ग मोहोरि । २१ ख. सधारे । २२ ख वधि वधि । २३ ख बावन । २४ ख चोसठि । ग चौसठ । २५ ख. ग सिर ।

---

६०५. कोपरा = कूर्पर – कोंहनी घुटना । खोपरा – नारियलकी सूखी गिरीके सम दो भाग । खिजै – कोप करता है । के धरती पडै – कई यवनोके मस्तक युद्धस्थलमे झिलम टोप सहित भूमि पर गिर रहे है, वे ऐसे प्रतीत होते हैं मानो उडते हुए तीतर पक्षीको पकड कर बाज पक्षी भूमि पर गिर गया हो ।

६०६. बीज – तलवार । करद – तलवार । नीभुडै – कटते हैं, कट कर गिरते हैं । तायकां – योद्धाओ ।

६०७. सिवराज – शंकर, रुद्र । सकौ – वह, सब । मौहरि – अगाडी, प्रथम । अधारै – रखते हैं । सिरमाळा – मुडमाला । गिर-सुता – पार्वती ।

पतग स्रोणि[1] पिचरका बोह मद धार दुबारां ।
खेलै[2] पियै[3] खिल्हार पडै उजबक्क अपारां ।
पोटला रीठ गुरजा पडै, सिव नारद हसि[4] तिण समै ।
सिर विलदहूत[5] 'अभमल' सुपह-रण वसंत होळी रमै ।। ८९८

परी हूर[6] परणीय तठै नृत[7] भाव वतावै ।
तबल म्रदँग[8] बजि तठै वीण[9] रिख राज वजावै ।
नटवर वीर[10] नचत तठै रातल पर ताळी ।
गावै जोगण[11] गीत, पढै सगीत[12] कपाळी ।
सिर पडै रीझ जेही सत्रा, बीजळ ताळ वजावणौ[13] ।
मारुवा अनै मुगळां मडै, इसौ खेल अध्रियामणौ[14] ।। ८९९

पाखर फूटि[15] पमग बोळ[16] निकलै[17] बरछी ।
काढै जाणै[18] कमळ जाळ झीवर मझि मछी ।
वहै[19] लोह बेझडा[20] धजर चवधार धमोड़ा ।
भिदि खिपाट[21] भेवड़ा, घाट फूटै[22] भड़ घोड़ां ।

---

१ ख. ग. श्रोण । २ ख. ग खेल्है । ३ ख ग पीयै । ४ ख. सि । ५ ख विलदहूत । ६ ख हूण । ७ ख ग नृत । ८ ख. ग मृदग । ९ ख बींण । १० ख बीर । ११ ख ग जोगणि । १२ ख. सीगत । १३ ख बजामणौं । १४ ख अध्रीयमणो । १५ ख. फूट । १६ क. छोळ । ग बोल । १७ ख. ग नीकलै । १८ ख. ग जाणे । १९ ख. वहे । २० ख बेफडां । २१ ख. षपाट । २२ ख. फूटै ।

---

८९८ पतग – फव्वारा । स्रोणि – शोणित, रक्त । खिल्हार – खेलाडी । उजबक्क – यवन । पोटला – ( ? ) । रीठ – प्रहार । गुरजां – गुर्ज । अभमल-सुपह– महाराजा अभयसिंह ।

८९९. वीण – वीणा नामक वाद्य । रिखराज – नारद ऋषि । वीर – युद्धप्रिय भैरव देव जिनकी सख्या राजस्थानीमे ५२ मानी जाती है । रातल – लाल रगकी चचु वाला मासाहारी पक्षी विशेष । कपाळी – रुद्र । बीजळ – तलवार । अध्रियामणो – भयंकर, भयावह ।

९०० पमग – घोडा । बोळ – लाल । बरछी – भाला विशेष । कमळ – मुख । झीवर – मछुआ । बेझडा – ( ? ) धजर – भाला । चवधार – चारो ओर पैनी धारका भाला । धमोडा – प्रहारी । खि-पाट – ( ? ) भेवड़ा = बेवडा—दो तहका ।

अति रुधिर धडक्के उछटै टूक फडक्के[1] हेमरा[2] ।
तरवारी[3] कडक्कै बीज तक, हाड बडक्कै गेमरा[4] ।। ६००

कमध करै केवाण, झाट दोय विहर[5] झिलमा[6] ।
विहर[7] टोप[8] सिर विहर[9] कगळ धड विहर कलमा[10] ।
विहर सपख्खर जीण, अग होय विहर[11] उत्तगा[12] ।
विहर[13] कडा वजरग[14], विहर दुतग[15] चौतगा ।

अग सूर विहर[16] अरधोअरध पमग विहर पखराइया ।
अगहटा[17] जाणि[18] कीधा उभै, भाई बटा भाइया ।। ६०१

सरा खगा साबळा, घाव पूरा घट घाया ।
जुधि लोटै जाणजै[19], लाल लोटण लुटवाया[20] ।
यम तड़फड़ता[21] अडै, वाहि[22] जम दाद[23] वहाडै[24] ।
डाव घाव डोरियां[25], जाणि जगजेठ अखाडै ।

पडि बत्थ गळत्थिय[26] हथ[27] पडी[28], चगदायळ मुख चीबरा ।
बीबरा[29] तबल-बधा[30] बहसि[31], खांगी बधा[32] खीमरा[33] ।। ६०२

---

१ क. फवड़कै । २ ग हैमरा । ३ ख ग तरवारि । ४ ख ग गैमरा । ५ ख. विहर । ६ ख ग झिलम्मा । ७ ख बिहर । ८ ख ग टोप । ९ ख विहर । १० ख. ग. किलम्मा । ११ ख विहर । १२ ख. उतगा । १३ ख बिहर । १४ ख बजअग । १५ ख ग दुतगा । १६ ख बिर । १७ ख अगहठां । १८ ख जां । १९ ख जाणिजै । २० ख लूटवाय । २१ ख. तडफता । २२ ख बाहि । २३ ख. ग दांढ । २४ ख. वहाडै । २५ ख ग डोरीया । २६ ख ग गलत्थीय । २७ ख. ग. हत्थ । २८ ख ग पडि । २९ ख बीवरां । ३० ख बधो । ३१ ग. वहसि । ३२ ख-बधी । ३३ ख ग. षीवरां ।

---

६००. हेमरां – घोडो । तक – समान । गेमरां – हाथियो ।

६०१ केवाण = कृपाण – तलवार । विहर – विदीर्ण । झिलमां – युद्धके समय धारण करनेका टोप । कगळ – कवच । कलमा – मुसलमानो । सपख्खर – पाखर सहित । अगहटा – चारणोकी जागीरका गाव ।

६०२ लोटण – कबूतर विशेष । डाव – दाव, वार । जग-जेठ – पहलवान । गळत्थिय – गलेकी पकड । चगदायळ – घावोसे परिपूर्ण, घायल । चीबरां – मुसलमान । बीबरां – (?) । तबल बधां – तबल नामक कुल्हाडीके आकारका शस्त्र धारण करने वाला । बहसि – (?) । बधा – राठोडों । खीमरा-खी – अप्सरा । बरां-पतियो – योद्धाओ ।

सिव चूणै[1] सीस पूतां सहित भूता सहित अभ्यासिया[2] ।
तरबूज खेत लूटै तिकरि स्वबळ[3] जमाति सन्यासिया[4] ॥ ६०७

जरद पोस जमराण, छागि[5] सिर विलँद[6] सभारा[7] ।
खास[8] गज खानरा, अड़ै उमराव[9] 'अभारा' ।
अति बळ करि आचार[10], कमंध भाटकै किरम्मर[11] ।
चोळ बोळ चाचरा, उडै फाचरा अद्धकर[12] ।
जिण दीह सीस भद्र जातिया[13], जुधि पड़िया[14] कटि जूजवा[15] ।
उण वीर चुगै मोती अमुख[16], हस ग्रीध भेळा हुआ[17] ॥ ६०८

आय आय आछटै, कमध दारण कळिचाळा[18] ।
घूमै घाय त्रिघाय मसत बारण मति[19] बाळा[20] ।
वाढ[21] भडै वीजळा[22] बढ़ै[23] पाखर बेछाडा ।
इद्र वजर[24] वही[25] उडै पख जाणिजै[26] पहाडां ।
वढि[27] सूडि घणा[28] रत हौद[29] बिचि[30], उडि[31] पडै पडि उछळै[32] ।
जनमेज जाग[33] जाणै[34] भुजग अगनि कुड मझि आकुळै[35] ॥ ६०९

१ ख चुणै । २ ख. ग अभ्यासीया । ३ ख. सबल । ४ ख सन्यासीयां । ग सन्यासीया । ५ ख छागि । ६ ख. विलद । ७ ख. ग छभारा । ८ ख पासा । ९ ख अमराव । १० ख आचरा । ११ ख. ग किरम्मर । १२ ख ग. अधक्कर । १३ ख जातीया । १४ ख. ग पडीया । १५ ख ग. जूजुवा । १६ ख. ग अमष । १७ ख ग हुवा । १८ ख. कलिचालौ । ग कळिचाळ । १९ ख मत । २० ख. वालौ । ग. वाला । २१ ख वाट । २२ ख वीजला । ग. वीझला । २३ ख बढ़े । २४ ख. वजर । २५ ख. वहि । ग बहि । २६ ख. ग. जाणिजे । २७ ख. ग. वढ़ि । २८ ख घणी । २९ ख. होत । ३० ख विधि । ग. विचि । ३१ ख. ग. ऊडि । ३२ ग. ऊछलै । ३३ ख ग. ज्याग । ३३ ख जांणे । ३५ ख. आसलै ।

६०७. चूणै – चयन करते हैं । स्यवळ – सबल ।
६०८ जरद-पोस – कवचधारी । जमराण – योद्धा । छागि – काट कर । अडै – भिडते हैं, युद्ध करते है । किरम्मर – तलवार । चाचरा – मस्तक । फाचरा – फच्चर, खड । भद्रजातिया – श्वेत रगके हाथियो । जूजवा – पृथक । अमुख – आमिष, मास ।
६०९ घाय – घाव । त्रिघाय – ( ? ) । बारण – हाथी । मतिबाळा – उन्मत्त, मस्त । वाढ – शस्त्रका पैना भाग । भड़ै – कट कर गिरते हैं । वढै – कटते हैं । बेछाडा – ( ? ) । घणा – बहुत, अधिक । रत – रक्त । जनमेज – जनमेजय । जाग – यज्ञ । अकुळै – तडफडाते हुए इधर-उधर डोलते हैं ।

सूडि झाडि समसेर, मारि साबळां महावत ।
ओण जांण[1] आधार, एम[2] उभौ[3] है वह रावत ।
जडि कपोळ जमदाढ, ठीक जिण कर ठहरायै[4] ।
*दंतूसळा पग दियै[5], जगी हौदां चढि जाए[6] ।
घमरोळ[7] मीर खजरां धजर, पटकै धर इण विध पडै[8] ।
किलकिला चोट[9] जांणे[10] करण, गिरिया नट चढि गोखडै[11] ॥ ६१०

छिबता उरस छछोह, चुरस वीरारस[12] चाळै ।
एक[13] हत्थी[14] आछटै[15] भाण कौतग[16] रणभाळै ।
पछटि घाव उडि[17] पडै, पाव निरलग पटाझर ।
देवळ कजि डोळियौ[18] खभ जाणै कारीगर ।
धड[19] फाड वहै घड सिंधुरा[20], पडि बराड[21] लोही पडै ।
गैरुवां[22] खानि[23] जांणै[24] गिरा, इद्र वज्र[25] पडि ऊधडै । ६११

जुधस्थळरौ समुद्रसूं रूपक बाधणौ

प्रळै काळ घण पडै, खाळ रुहिराळ[26] खळक्कै[27] ।
मिळि घटाळ[28] मुगळाळ विहड[29] झाफाळ वळक्कै[30] ।

---

१ ख जीण। ग जाण। २ ग. ऐम। ३ ख उभा। ग ऊभा। ४ ख ग ठहराऐ। ५ ग. दीयै। ६ ग जाऐ। *यह पक्ति ख प्रतिमें नहीं है। ७ ख. घमरोलि। ८ ख. बिधि। ग विध। ९ ख. चोटि। १० ख ग जाणे। ११ ख ग गोषडै। १२ ख. बीरारस। १३ ख ऐक। १४ ख ग हथी। १५ ग आछटौ। १६ ख. कौतिग। १७ ख ग उडि। १८ ख डोलीयां। ग डोलियां। १९ ख धज। ग धझ। २० ख. ग. सींधुरा। २१ ग वराड। २२ ख. गेरूवां। २३ ख षाणि। २४ ख जाणे। २५ ख बजर। २६ ख ग रुहिराल। २७ ख षलक्कै। ग षळक्कै। २८ ख ग थटाल। २९ ख बिहड। ३० ग वलकै।

---

६१० समसेर – तलवार। ओण – पैर। आधार – रख कर। रावत – योद्धा। घमरोळ – प्रहार। धजर – भाला। किलकिला – ( बन्दूक-या तोप ? )

६११. छछोह – योद्धा। चुरस – श्रेष्ठ। वीरारस – वीर रस। एकहत्थी – शस्त्र-विशेष। निरलग – पूर्ण रूपसे काटने या कटनेकी क्रिया। पटाझर – हाथी। देवळ॰ कारीगर – हाथीके पैरको काट कर इस प्रकार पृथक कर दिया मानो किसी देवालयके निमित्त वढईने किसी बडे काष्ठके लट्ठेको चीर-फाड कर साफ-सुथरा उपयोगके लिए बना दिया हो। सिंधुरां – हाथियो। बराड़ – सूराख, छेद, दरार।

६१२. रुहिराळ – रुधिरयुक्त। खळक्कै – नाले आदिके प्रवाहकी कलकलकी ध्वनि या क्रिया। घटाळ – सेना। मुगळाळ – मुसलमान, मुगल। झांफाळ – ( ? ) घळक्कै – ( ? )

वहि[1] अनेक विकराळ[2] भांति विकराळ विभत्ती[3] ।
इसौ[4] दाय अणपार, मिळै जाय साबरमत्ती ।

तदि चढै रुधिर नदी[5] गज तिरै रेखग विणि[6] विड[7] रूपरा ।
तारिया[8] जाणि रघुकुळ[9] तिलक[10], गिरवर सरवर ऊपरा ॥ ६१२

गज भिड़ज[11] पडि गरट्ट[12] प्रगट बध[13] सुजि[14] पाजा ।
धड भड मच्छ कच्छ ढाल, जगी हवदा-स जिहाजा ।
मिळि अंत्राबळ सीमाळ, कमळ फूलै[15] खळ कम्मळ[16] ।
हरखि भरै पिणहार[17] जुग्गिण पत्र घड़ा रुधर[18] जळ ।

हस जेम ग्रीध पकती[19] हुई, दीसै घाट डरामणौ ।
असुराण विहड[20] कीधौ[21] 'अभै', रिण[22] समद[23] अध्रियामणौ ॥ ६१३

पड़े[24] 'अली आबध'[25] 'अली जमाल'[26] बहादर[27] ।
पड[28] 'तरीन'[29] 'अभराम' 'मान' 'चूहड' खां निडर ।
पडै[30] खान सिरदार, सैद काय[31] मात्र एह[32] सुत ।
पड़ं[33] सेख अलियार[34], जवन बधव[35] हफत[36] जुत ।

---

१ ख बहि । २ ख विकराल । ३ ख बिभत्ती । ४ ख. ग. इसैं । ५ ख. ग. नदि । ६ ख विण । ७ ख विड । ८ ख. ग. तारीया । ९ ख रघुकुल । १० ख. क । ११ ख भिजड । १२ ख ग गरट । १३ ख ग बधे । १४ ख. सुणि । १५ ख ग फूले । १६ ख कम्मल । १७ ख. पिणहारि । १८ ख रुधिर । १९ ख. ग पकति । २० ख विहंड । २१ ग. किधो । २२ ख रण । २३ ख. ग समुद्र । २४ ख पडे । २५ ख. आवद्द । ग आवद्द । २६ ख जम्माल । ग जम्माल । २७ ख वाहादर । २८ ख. ग पडि । २९ ख. तनीर । ३० ख. ग. पडे । ३१ ख. कायम । ३२ ख ग एहे । ३३ ख. ग पडे । ३४ ख ग अलीयार । ३५ ख. फवघवा । ३६ ग. हफतै ।

---

६१२ विभत्ती – वीभत्स । रेखग – ( ? ) । विड रूपरा – भयावह रूपके । सरवर – समुद्र ।

६१३. गरट्ट – समूह । अंत्रावळ – आंते । सीमाळ – शैवाल, काई । कम्मळ – शिर । डरांमणौ – भयावना । असुरांण – यवन । विहड – सहार कर के । अध्रियामणौ – भयकर, भयावह ।

६१४ ( ? ) ।

कसमीरखांन मौतब कुतब, झट[1] खाग महमद झडै[2] ।
'फेजुला' हदातुल्ला[3] फरस, पीरसाह काजम पडै[4] ।। ६१४

आसाखा[5] गुलहुसन, मुगळ दरवेस महम्मद[6] ।
सुजि महम्मद[7] इसथान, 'सेख' मायल[8] हर हमद[9] ।
रहमतुल्ला, पीरोज, अलाबदा[10] तुक तुमस्स ।
हैदर बेग हुसेन, साह आलम दळ[11] सेरस ।

कुजरक्कबग[12] गौहर बंदा, उजबक[13] दोय इरानरा ।
रोसन अलाह अबदुल[14] रजा, खेत पड़े[15] भड खांनरा ।। ६१५

नवलखान अगरेज खांन, हमसेर[16] सुनाहर[17] ।
सेर विदारखांन. खांन बहलोल उज्जबर[18] ।
असतखान अलमसतखान, बुलाखान[19] सबघर[20] ।
जमी खान जमसेरखान समसेर बहादर ।

सिर विलदखान घायल 'समर' झाट लेख[21] बळि नह झडै[22] ।
आगा अजाद[23] बचिया[24] उभै, पूर लोह अनि स्रब पडै[25] ।। ६१६

इसौ ताव ईखियौ[26], घाय मुगळ[27] दळ घावा ।
बोहौ[28] गजि[29] असि उजबका[30], टूक दीठा उमरावां ।

---

१ ख झाट । २ ख भडे । ३ ख. हद्दातुल्ला । ४ ख पडे । ५ ख. आसीषां । ६ ख ग महमद । ७ ख ग महमद । ८ ख माफल । ९ ख ग. हमद । १० ख अलीवंदा । ११ ख ग दिल । १२ ख. बुजरक्कबेग । १३ ख. ऊजवक । १४ ख अवदुल रजा । १५ ख ग. पडे । १६ ख. हिल षान । १७ ख. सनाहर । १८ ख ग हुलब्बर । १९ ख. बुलषांन । ग वुलषांन । २० ख. सवब्बर । ग सवब्बर । २१ ख षेल । २२ ख. ग झडे । २३ ख. मुजाव । २४ ख. वचीया । ग वचिया । २५ ख पडे । २६ ख ईषीयौ । २७ ख. मूगल । २८ ख ग वौहौ । २९ ख. गज । ३० ख उजवकां ।

---

६१४. ( ? ) ।
६१५. ( ? ) ।
६१६. पूर ··· पडै — शस्त्र-प्रहारोसे पूर्ण क्षत-विक्षत हो कर अन्य सब वीर-गति प्राप्त हुये ।

जुड़े[१] मुगळ जांणियो[२], मारि नांखै[३] पळ मांहै[४] ।
माण डाण तजि मुगळ, लाज लंगरा तुडाहै[५] ।
वीजळा[६] झाट हाथळ विखम, थाट पडै[७] व्याकुळ थयो ।
'अभमाल' मयंद देखै[८] उरड़, गयंद[९] 'विलंद'[१०] बहुवे[११] गयो ॥ ६१७

पाळा होय विण[१२] पमग, जवन हालै पमंगा जिम ।
उडै[१३] पमग असवार, तिकै[१४] ऊडाण पवन तिम ।
कध घड फूटा किलम, रुधिर छूटां[१५] रातबर ।
जूटा[१६] भग्गा जाय केयक[१७] तूटा विहुंवै[१८] कर ।
जुध मांहि केयक बाचिया[१९] जिके, सर चवधारां सग लिया[२०] ।
सिर विलंद[२१] खान तिण समै, हाथी म्रग[२२] जिम हालिया[२३] ॥ ६१८

आव जोम तजि असुर, सुर विहडाए[२४] साथां ।
नाटो राम नवाव, हीण मद पडतां हाथा ।
जाय किसू[२५] जीवतो, धाय असि 'अभो' धुबावै[२६] ।
लगै न मागा लार, विरद[२७] रघुवस[२८] बुलावै ।
नासतां[२९] खळा मारै नही, 'अभमल' विरद[३०] दईव तो ।
सिर विलंद[३१] भाजि अहमद सहर, जिणहू[३२] पहुतो जीवतो ॥ ६१९

---

१ ग जडे । ग जुडे । २ ग जाणीयो । ३ ग नाखे । ४ ख माये । ५ ख ग तुडाए । ६ ग बीजरां । ७ ग पडे । ८ ख ग देखे । ९ ग. गय । १० ख विलंद । ११ ग [illegible] । ग. [illegible] । १२ ग विणि । ग विण । १३ ख उडे । १४ ग ग तिके । १५ ग ग छूटां । १६ ख ग जूटां । १७ ग. केय । १८ ग. [illegible] । १९ ग बचिया । २० ग सालीया । २१ ग विलंद । २२ ग ग मृग । २३ ग हालीया । २४ ग विहडाए । २५ ग. कीसू । २६ ग धुवावे । २७ ग [illegible] । २८ रघुवस । २९ ग. नासतां । ३० ग. विर । ३१ ग विलंद । ३२ ग [illegible] ।

**कवित्त दोढौ**

इम जीतौ 'अभमाल' वार[1] नबत्ति[2] बजाए[3] ।
लूटि आरबा लिया[4] लूटि, असि गज बहौ[5] लाए ।
'विलँद'[6] तणा बाढिया[7], रूक झाटां रवदायण[8] ।
च्यार सहस[9] च्यारसै, असी तेरा असुरायण[10] ।
जिण मझि[11] विवरौ[12] जुदौ, मुगळ पडि रूप मयदा[13] ।
सौ[14] पालखीनसीन[15] आठ असवारा[16] गयदा ।
अै पडै साह जांणै इसा, आवै आम[17] दीवाणमे ।
ताजीम तणा भड़ तीनसै, घणा अवर घमसांणमे ।। ६२०

**छप्पय कवित्त**

भड[18] पयदळ गज भिडज पड़ै[19] विलँदरा[20] अपारां ।
नकौ[21] पार[22] घायला, हुवा लोह मै सुमारां ।
उला[23] भड एकसौ वीस पडिया[24] जिण वारां[25] ।
पमंग पडै पचसै[26], घमक[27] सेला खग धारां ।
सातसै हुवा घायल सुभट[28], लड़ै[29] 'अभै' जस व्रद[30] लियौ[31] ।
आजरा[32] वार[33] मझि पोहौ[34] अवंर, जुध इम किणै न जीपियौ[35] ।।६२१

---

१ ख. बीर । २ ख नवबत्ति । ग. नववत्ति । ३ ख बजाए । ४ ख लीया । ५ ख ग बोहौ । ६ ख बिलद । ७ ख. बाढ़ीया । ग. वाढ़िया । ८ वरदायण । ९ ख सहस । १० ख असरायण । ११ ख. मझ । १२ ख बिवरौ । १३ ख ग मयदा । १४ ख पौ । १५ ख सालषीनसीन । १६ ख ग असवार । १७ ख ग आब । १८ ख भय । १९ ख. पडे । २० ख. बिलद । २१ ख को । २२ ख. पाय । २३ ख ग ऊला । २४ ख ग. पडीया । २५ ख जिणबारा । २६ ख पाचसै । २७ ख घमष । २८ ख सुभड । २९ ख लडे । ३० ख ग व्रद । ३१ ख लीयौ । ३२ ख ग आजरो । ३३ ख बार । ३४ ख. ग पौहौ । ३५ ख जीपीयौ ।

---

६२० अभमाल – महाराजा अभयसिंह । नवत्ति – नौबत, नगाडा । आरवा – तोप । असि – अश्व, घोडा । वाढिया – काट डाले । रवदायण – मुसलमान । असुरायण – मुसलमान । विवरौ – वृतान्त, भेद । मयद – ( ? ) घमसाण – युद्ध ।

६२१. पयदळ – पदाति, प्यादे । भिड़ज – घोडा । घमक – प्रहारो । अभै – महाराजा अभयसिंह । पोहौ – प्रभु, राजा । अवर – अन्य । जीपियौ – जीता, विजयी हुआ ।

भोमि मिळै धड़ भार, मिळै[1] दळ 'विलँद'[2] 'गिरँदा'[3] ।
ग्रिभा[4] मिळै[5] पळ गूद[6] मिळै[7] हाका सरहद्दां[8] ।
मिळै[9] ईस रुडमाळ[10], मिळै[11] रत त्रपत सकत्ती[12] ।
मिळै[13] भाण रिख अचभ, मिळै[14] पीरा बळमत्ती[15] ।

आसीस मिळै[16] दीधी हूता, रिधु[17] कोड़[18] जुग राजनू ।
जुध जीत विरद मोटा जिकै[19], मिळै 'अभा' महाराजनू[20] ।। ६२२

मिळै[21] सुवर[22] रंभ हूर, प्रेत भख मिळै[23] अपपर ।
मिळै[24] भख[25] नहराळ मिळै[26] भख खेचर भूचर ।
सोच मिळै[27] सिर विलँद[28] भीच खळ मिळै[29] मिसत्ती[30] ।
मिळै[31] दाह इराण[32] मिळै[33] मुरधर कीरत्ती[34] ।

दळ जीत[35] मिळै[36] बधत्र दहु[37] सुभट[38] मिळै[39] समाजनू ।
जुध जीत विरद[40] मोटा जिकै[41] मिळै[42] 'अभा' महाराजनू[43] ।। ६२३

---

१ ख मिले। २ ख विलद्द। ३ ख गिरद्दां। ४ ख. ग्रिफा। ५ ख. मिले। ६ ख गाल। ७ ख ग मिले। ८ ग. सरहदा। ९ ख. मिले। १० ख. रुडमलि। ११ ख ग मिले। १२ ख सकती। १३ ख मिले। १४ ख. ग. मिले। १५ ख. वलिमत्ती। १६ ख मिले। १७ ख रिघू। १८ ख कोडि। १९ ग जिके। २० ग. माहाराजनू। २१ ख मिले। २२ ख सुबर। २३ ख मिले। २४ ख. ग. मिले। २५ ख. भष्व। २६ ख ग मिले। २७ ख ग. मिले। २८ ख विलद। २९ ख ग मिले। ३० ख भसभिसती। ३१ ख ग. मिले। ३२ ख ग ईरान। ३३ ख मिले। ३४ ख कीरती। ३५ ख. जीत। ३६ ख. ग. मिले। ३७ ख. वुहु। ग दूहू। ३८ ख. सुभडां। ३९ ख ग मिले। ४० ख. विरद। ४१ ख. जिके। ग जीके। ४२ ख. मिले। ४३ ख माहाराजनूं। ग. राजनू।

---

६२२ भोम – भूमि। गिरँदा – गर्द, धूलि। ग्रिभा – गिद्ध पक्षी। पळ-गूद – मास-पिंड। ईस – महादेव। रत – रक्त। त्रपत – तृप्त। भांण – सूर्य। रिख – नारद ऋषि। अचभ – आश्चर्य। पीरा बळमत्ती – ( ? )। अभा – महाराजा अभयसिंह।

६२३. सुवर – सुन्दर पति। रभ – रंभा, अप्सरा। हूर – परी, अप्सरा। नहराळ – मांसाहारी हिंसक पशु। भीच – योद्धा। मिसती – बहिश्त, स्वर्ग। दाह – जलन। कीरत्ती – कीत्ति, यश। अभा – महाराजा अभयसिंह।

इम जीपै[1] आवियौ[2], महाराजा[3] राजेस्वर[4] ।
सैदांना[5] वाजता[6] गयद गाजतां पटाभ्रर ।
फरहरतां गज धजां, घणा ग्रह महतां घूमर ।
घरहरता कोतिला, चमर होता सिर चौसर ।
भरि मुगत थाळ वधावियौ[7], कामण[8] कळस वँदावियौ[9] ।
अँगू[10] जोम पूर छिबतौ[11] उरस 'अभमल' डेरा आवियौ[12] ॥ ६२४

राति वसे[13] महाराज[14] दीत ऊगै[15] सझिया[16] दळ ।
काळ रूप कठठिया[17], होय विकराळ[18] झळाहळ ।
अजै[19] 'अभौ' आवियौ[20] पूर वजि[21] विखम त्रंबाळा[22] ।
वप धूजै[23] 'सिर विलँद'[24] वीच[25] फेरे[26] विसटाळा[27] ।
तदि कहे ताप माने[28] तुरक, तिहू[29] छक छाडि तराजका ।
महि सरब[30] अराबा दे मिळू, म्है[31] बंदा महाराजका[32] ॥ ६२५

---

१ ख. जीपे । २ ख आवीयो । ३ ख. ग माहाराज । ४ ख ग राजेसुर । ५ ख सायदांनां । ग सैदांना । ६ ख बाजतां । ७ ख बाधावीयौ । ८ ख कामणि । ९ ख. वंधवीयो । १० ख अग । ११ ख छिवतौ । १२ ख आवीयौ । १३ ख बसे । १४ ख. ग. माहाराज । १५ ख उगै । १६ ग सझीया । १७ ख कठठीयो । १८ ख विकराल । १९ ख अजे । २० ख. आवीयो । २१ ख वजि । २२ ग त्राबाला । २३ ख धूजे । २४ ख बिलद । २५ ख बीच । २६ ख फरै । २७ ख. बिसटाला । २८ ग मानै । २९ ख. त्रिहूं । ३० ख ग सहर । ३१ ख. ग मैं । ३२ ग माहाराजका ।

---

६२४. जीपै – विजयी हो कर । सैदाना = शादियाना – मगल वाद्य । पटाभ्रर – मस्त हाथी । फरहरतां – फहराते हुए । गहमहतां – भीड या समूह बनाते हुए । घूमर – सेना, दल । चौसर – चारो ओर । मुगत – मोती । वधावियौ – स्वागत किया । कांमण – कामिनी, स्त्री । वंदावियौ – अभिवादन करवाया । अगू – शरीर । अभमल – महाराजा अभयसिह ।

६२५. दीत – आदित्य । कठठिया – प्रस्थान किया, रवाने हुए । अजै – (अजय, जिसको कोई जीत न सके ?) । विखम – विषम, भयकर । त्रबाळा – नगाडो । विसटाळा – मध्यस्थ । ताप – रौब, आतंक । छक – (?) । वदा – सेवक ।

पड़ै[1] पाय सिर विलँद[2], जांणै[3] सरणाय सधारां ।
म्है[4] बदा हुकमका एम[5] कहियौ[6] उण वारा ।
अवर रखत आरबां किले वचिया[7] 'अधिकारा' ।
जिकै[8] किया[9] सहौ निजर, किला[10] सहित[11] कोठारां ।
जदि होय रूख[12] पतझड जिही, सुभडा विणि[13] दुख सालियौ[14] ।
आगरा दिसी सिर-विलँद[15] इम, हीण माण होय हालियौ[16] ॥ ६२६

घायल उजबक घणा, मरे[17] मुक्काम मुक्कामा[18] ।
तियां[19] हले[20] गाडतौ[21] गाम ठामां गढ गामा ।
मजल मजल मेलतौ[22] मीर खाना उमरावा ।
हाथियां[23] जिम मदहीण गयौ[24] पौरस[25] तजि गावा ।
अहमदाबाद[26] बिचि[27] आगरै, घोर[28] हुई मुगळां घणी ।
कहता न पार आवै तिकौ[29], गिणता नह[30] जावै[31] गिणी[32] ॥ ६२७

दूहौ[33]

इजति[34] भग ह्वैगौ असुर, मिळै[35] न तिण मूहमद[36] ।
गयौ दिली तजि आगरै, विध[37] इणहूत 'विलँद' ॥ ६२८

---

१ ख. ग, पडे । २ ख. विलद । ३ ख. ग जाणि । ४ ख ग. मैं । ५ ग. ऐम । ६ ख ग. कहीयौ । ७ ख वंचीया । ग. वचीया । ८ ख ग. जिके । ९ ख ग कीया । १० ख किला । ११ ख सहिता । १२ ख ग. रूष । १३ ख विणि । १४ ख. ग सालीयौ । १५ ख विलद । १६ ख. ग. हालीयौ । १७ ख ग. मरै । १८ ख ग. मुकांमा । १९ ख. ग तीयां । २० ख ग हले । २१ ख. गागाडतौ । २२ ख मेल्हतौ । २३ ख. ग हाथी । २४ ग. गयो । २५ ग. पोरस । २६ ख ग. अहमदावाद । २७ ग विचि । २८ ख. घोरि । २९ ख ग तिका । ३० ग. नहैं । ३१ ख जाए । ३२ ख ग. गणी । ३३ ख दोहा । ग. दोहौ । ३४ ख ग ईजति । ३५ ग मिले । ३६ ख. महमद । ग. गहमद । ३७ ख बिधि । ग विधि ।

---

६२६ सरणाय = सधार – शरणमें आये हुएकी रक्षा करने वाला । रखत – धन-दौलत । आरबा – तोप, बंदूक, अस्त्र-शस्त्र आदि सामान । वचिया – अवशिष्ट रहे । सुभड़ा – योद्धाओ । हालियौ – चला, चला गया ।

६२७. मुक्काम मुक्कामा – स्थान-स्थान पर । मजल – यात्रामें ठहरने का स्थान, मजिल । घोर – गोर, कब्र ।

६२८ इजति – इज्जत, प्रतिष्ठा । विध इणहूत – इस प्रकारसे ।

### कवित्त छप्पय[1]

अहमदपुर ओपिया[2], अमल वजीर[3] 'अभारा' ।
इळा वधै[4] आणद प्रजा सुख वधै अपारा ।
धाडायत धूजिया[5], सहत मरहटा[6] सकाजा ।
सतरि सहस धर सकळ, मडै[7] थांणा महाराजा[8] ।
साहरै वाग[9] 'अभमल' सुपह करि मुकाम ऊछब[10] कियौ[11] ।
ज्योतिख[12] त्रिकाळदरसी तिया[13], दीपमाळ मुहरत[14] दियौ[15] ॥६२६

दीपमाळ दिन उभळ[16], सकौ[17] दळ बहळ[18] सिगारे ।
सहर उछव सिणगार, जरी जवहूर[19] जरतारे ।
आवादान अवास[20] करै[21] छिडकाव[22] गुलाबां ।
साहवान[23] जरकसी, मडै[24] पडदा महरावां ।
छजि[25] गिलम विछायत तखत छत्र, तारकसी चद्र ताणिया[26] ।
महाराज[27] पधारण मत्रिया[28], किला बीच[29] डबर[30] किया[31] ॥ ६३०

---

१ ख ग प्रतियोमें यह शब्द नहीं है । २ ख. ओपीया । ३ ख वज्जीर । ४ ख. बधे । ५ ख धूजीया । ६ ग मरहाटा । ७ ख. ग. मडे । ८ ग माहाराजा । ९ ख वागि । १० ख ग. उछव । ११ ख ग कीयो । १२ ख. ग जोतिष । १३ ख. जीया । ग. दरसीतीया । १४ ख ग. महुरत । १५ ख ग. दीयो । १६ क. युभळ । १७ ख. ग. सको । १८ ख. वह । १९ ख. जहूर । ग. जव्हर । २० ख आवास । २१ ख. करे । २२ ख. छडकाव । २३ ख. ग. साईवान । २४ ख ग. मडे । २५ ख. छकि । २६ ख तागीया । २७ ख. ग माहाराज । २८ ख मत्रीया । २९ ख बीचि । ग. वीच । ३० ख. ग. डब्बर । ३१ ख. ग कीया ।

---

६२६. अभारा – महाराजा अभयसिंहका । इळा – पृथ्वी । धाड़ायत – डाकू, डकैत । अभमल – महाराजा अभयसिंह । त्रिकाळदरसी – त्रिकालको देखने वाले ( त्रिकालज्ञ ) दीपमाळ – दीपावली ।

६३० महरावां – द्वार आदिके ऊपर का अर्द्ध-मडलाकार भाग । तारकसी – धातुके तारोका वना काम । चद्र – चन्दोवा, सायवान ( ? ) । डबर – सजावट ।

पहरि[1] तास पौसाक[2], झळळ जवहर धर[3] भूखण ।
अबर गुलाबां अतर घणा करि डबर[4] विरद घण ।
साज कनक नग ससत्र[5] करै[6] बुलगार[7] सकाजा ।
सुभट[8] मत्री दुज सुकवि, महा[9] उछब महाराजा[10] ।
गज भिडज जरी जवहर गरक, दीप मुसाळां वणि[11] डबर ।
उण वार चमर होतां 'अभौ', गज चढियौ[12] धारै[13] गुमर ।। ६३१

वजि[14] नौबत[15] मुरसळां, हलै[16] चतुरग झळाहळ ।
जोति मुसाला जगै झळळ पोसाक झळाहळ ।
पूरि[17] घरि घरि दीपक[18], कोडि कोडेक अणकळ ।
अहमदपुर ओपियौ[19], कनक द्वारका[20] तणी कळ ।
आवियौ[21] सहर मझि पोहौ[22] उछप, लखां धमळ मगळ लभौ ।
*तदि धरै छत्र बैठौ तखति, अहमदपुर छत्रपति अभौ ।। ६३२

---

१ ख. परहि । २ ग पोसाक । ३ ख धरि । ४ ख डब्बर । ५ ख ग. सस्त्र । ६ ख कसे । ग करे । ७ ख बुलगार । ८ ख सुभड । ९ ख. ग. माहा । १० ख. ग माहाराजा । ११ ख वणि । १२ ख चढ़ीयो । ग चढ़ियो । १३ ख धारे । १४ ख बजि । १५ ख. नौबति । १६ ख ग हले । १७ ख. ग. पुरि । १८ ख. ग दीपक्क । १९ ख ओपीयो । २० ख द्वारिका । २१ ख आवीयो । ग आवीयो । २२ ख ग पोहो ।

*यह पक्ति 'ख' प्रतिमे नहीं है ।

---

६३१ तास – एक प्रकारका बहुमूल्य जरदोजीका कपडा । झळळ – देदीप्यमान, चमकयुक्त । जवहर – जवाहिरात । भूखण – आभूषण । अबर – एक प्रकारकी सुगधित वस्तु । बुलगार – ( ? ) । मुसाळा – मोटी बत्ती जिसके नीचे पकडनेके लिए काठका मोटा दस्ता लगा रहता है, मशाल । डबर – चकाचौंध, प्रकाश । अभौ – महाराजा अभयसिंह । गुमर – गर्व ।

६३२ मुरसळां – वाद्य विशेष । चतुरग – सेना । झळाहळ – देदीप्यमान । झळळ – चकाचौंध करती हुई, देदीप्यमान । कोडि – उमग, उत्साह । कोडेक – उमगमे । अणकळ – वीर । ओपियौ – शोभित हुआ । कळ – प्रकार, भाति । पोहौ – राजा । धमळमगल – मागलिक गायन । लभौ – प्राप्त हुआ । छत्रपती – राजा ।

नृति[1] रग राग अनेक*, करै नृतिकार[2] कळावत ।
करै सलाम अनेक, निडर अनमी सिर नावत[3] ।
असपतिरा आपरा, सुभड बहु[4] मत्री सकाजा ।
साझै निजर सलाम रजै इण विध[5] महाराजा[6] ।
करि करि असीस कवि गुण कहै, सोया ऊच समाजरौ ।
रवि चंद जितै कायम रहौ, राज तेज महाराजरौ[7] ॥ ६३३

दूहा[8]

चक्रबति[9] दिन दिन चौगणौ, सुख तप तेज सकाज ।
सतरि सहस मुरधर सहित, माणै धर महाराज[10] ॥ ६३४
जोतां जोड़ न दूसरौ, धर हिंदुवांणा धाम ।
'अभमल' सूर[11] हुवै[12] 'उरै' 'साहू' जसौ सग्राम ॥ ६३५
दातरा दाता दुभ्रल, सूरां सूर सकाज ।
अतुळीबळ राजै 'अभौ', इसे[13] तेज तप आज[14] ॥ ६३६

छंद मोतीदांम

सकौ अन राज सदीठ समाज ।
'अभैमल' जोड करै कुण[15] आज ।[+]

---

१ ख ग नृति । २ ग नृतिकार । ३ ख नामत । ४ ख बोहो । ५ ख. बिधि । ग विधि । ६ ख ग माहाराजा । ७ ख माहाराजरो । ८ ख. दोहा । ग दोहा । ९ ख ग चक्रवति । १० ख ग माहाराज । ११ ख. ग. सूं । १२ ख ग तूहुवै ।

*चिन्हांकित पद्यांश 'ख' प्रतिमे नहीं है ।

[+]यहासे आगे 'ख' प्रतिमे निम्न पक्तिया और प्राप्त हुई है—

"साहू पोहो देषि जिकै तपसार ।
हेला जिम मोकलियौ हुजदार ॥"

१३ ख ग इसै । १४ ख. आप । १५ ख कुण ।

नोट—ये पक्तिया 'ख' प्रतिमे दो बार लिखी हुई हैं ।

---

६३३ न्रतिकार — नृत्य या नाच करने वाला । कळावत — गायक-समुदाय, दक्ष, प्रवीण । नावत — झुकाते है । रजै — प्रसन्न होता है । असीस — आशीष । गुण — कविता ।
६३४ चक्रबति — राजा । मांणै — उपभोग करता है ।
६३५ जोड — समान, तुल्य ।
६३६ दुभ्रल — वीर । राजै — शोभायमान होता है । तप — ऐश्वर्य ।
६३७. सकौ — सब । अन राज — अन्य राजा । अभैमल — महाराजा अभयसिंह । जोड — समानता ।

सहू[1] पहू[2] आप[3] जिसै मँत्रवेस[4] ।
पगां लगि[5] कीध धणी जिम पेस ।। ६३७

छळै दिखणी दळ पौरस बाधि[6] ।
अयौ[7] 'कँठराज' करूर असाधि ।
सूवा[8] जिम[9] मार[10] दिया[11] झट सार ।
सुरत्ति[12] उजैणतणा[13] सिरदार ।। ६३८

इसौ[14] 'कँठराज' जिकौ[15] दइवांण[16] ।
अयौ[17] दळ पूरब[18] छिबै[19] असमांण ।
साम्हां तिण हूत सग्राम सकाज ।
मिळै[20] उवराज[21] मंत्री महराज[22] ।। ६३९

जुटा तिणहूत जिकै[23] जमराण ।
दळा करि भूझ लुटै[24] दखिणाण ।
लाहा खळमारि[25] डेरा[26] असि लीध ।
कमध्रज भूपतणौ जस कीध ।। ६४०

लडायक 'कठ' धिखतिय[27] लाय ।
भडा 'मँत्रिय'[28] सुज[29] दीध भजाय ।

---

१ ख ग साहू । २ ख. ग पोहो । ३ ख आय । ४ ख. मत्रवेस । ५ ख. लग । ६ क. बधि । ७ ख ग आयो । ८ ख सुबा । ९ ख ग. जिण । १० ख मारि । ११ ख दीया । १२ ख. सूरत्ति । १३ अजेणतण । ग उजेण । १४ ख. ईसो । ग इसो । १५ ख. ग जिको । १६ ख दईवाण । १७ ख आयो । ग आयो । १८ ख ग. पूर । १९ ख छिवे । ग छिवै । २० ख. ग. मिले । २१ ख. युवराज । २२ ख. माहाराज । २३ ख जिके । ग. तिके । २४ ख. लूटे । ? २५ ग मार । २६ क. ख देरा । २७ ख. धिषतीय । ग. धिषती । २८ ख मत्रीयां । ग मत्रीय । २९ ख. सुजि ।

---

६३७, ( ? ) ।

६३८ छळै (वळै) ? कठराज – कठाजी नामक मरहठा । सुरत्ति – सूरत नगर । दइवाण – वीर ।

६३९ सांम्हां – सामने ।

६४० जमरांण – जबरदस्त । भूझ – युद्ध । दखिणांण – दक्षिण दिशा, दक्षिण दिशाका ।

६४१ लडायक – लडाई करने वाला, लडाकू । कठ – कठाजी । धिखतिय – प्रज्वलित । लाय – दावाग्नि, आग । सुज – उस, वह । दीध – दिये ।

मारै[1] दळ लूटैय[2] पच[3] मुकाम ।
नवै[4] खड सीस हुवौ[5] जस नांम ॥ ६४१

भडारिय[6] ता[7] मँत्री कुळिभांण ।
दिली[8] 'अमरेस' हुतौ[9] दइवाण[10] ।
जिकौ[11] पिड[12] सूर दसा परवीण[13] ।
रहै दत[14] स्याम धरम सु-लीण[15] ॥ ६४२

लिया[16] सुत 'खीम' भुंजां रज लाज[17] ।
असप्पतिहूत सू कीध[18] अरज्ज[19] ।
जिकै विध कीध फतै महाराज[20] ।
कही धर गुज्जर[21] कथ्थ[22] सकाज ॥ ६४३

सुणै कथ एह[23] महम्मदसाह[24] ।
अखै[25] आम[26] खास विचै[27] पह[28] वाह ।

---

१ ख ग मारे। २ ख ग लूटेय। ३ ख. पाच। ४ ग नमै। ५ ख हूवो। ग हुवो। ६ ख ग भडारीय। ७ ख. ताम। ८ ग. दीली। ९ ख. हुंतो। ग हुतो। १० ख दईवाण। ११ ख ग जिको। १२ ख. पिंड। १३ ख. परवीर। १४ ख. दिढ़। ग दितु। १५ ग सुलीन। १६ ख ग. लीया। १७ ख लझ्झ। ग लज। १८ ख ग सुकीध। १९ ख अरझ्झ। ग. अरज। २० ग माहाराज। २१ ख. गुझ्झ। ग. गुजर। २२ ख कत्थ। ग. कथ। २३ ख. ऐह। २४ ख. महमदसाह। ग. महमदसाह। २५ ख आषे। ग. आषै। २६ ख अब। ग. आव। २७ ख बिचै। २८ ख. पौहो। ग. पौह।

---

६४१. सीस – ऊपर, पर ।

६४२ भडारिय – ओसवाल वशका एक गोत्र। कुळि-भांण – अपने वशका सूर्य। अमरेस – अमरसिंह भडारी जो दिल्लीमे बादशाहके पास महाराजा अभयसिंहजीकी ओर से वकीलके रूपमे रहता था। दइवांण – दीवान। जिकौ – वह (अमरसिंह भडारी) रहे। सु-लीण – वह स्वामिभक्त था।

६४३. खीम – अमरसिंह भडारीका पिता खीमसी भडारी। रज – राज्य। असप्पतिहूंत – बादशाहसे। जिकै – जिस। विध – प्रकार। कथ्थ – वृत्तान्त, हाल।

६४४. अखै – कहता है। पह – प्रभु, राजा। वाह – शाबास, धन्य-धन्य।

पुण[1] पह[2] पाण ग्रहंताइ[3] पांण ।
सभै तिम हीज कहै सुरताण ।। ६४४

दिया[4] फुरमांण सनेह दिलेस ।
दिया[5] मुनसब[6] बधाराइ देस[7] ।
सारौ[8] जोवतां अनि हिंदुसथांन[9] ।
दुवौ[10] नह जोड़ कौ खग दान ।। ६४५

फतैपुर झूझण नाथ अफेर ।
जवन्न[11] नबाब[12] रहै नित जेर ।
विकापुर[13] जेसळमेर विलँद[14] ।
अहैपुर आन दुरंग उमेद[15] ।। ६४६

वळे[16] पुर डूगर[17] वांसहवाळ[18] ।
सेवै पग रावळ भेजि रसाळ ।
लुणापुर[19] नायक जेर लगांण ।
रहै पग सेवक चाळक रांण ।। ६४७

---

१ ख पुणे। २ ख ग पोहौ। ३ ख ग ग्रहंताई। ४ ख. दीयां। ५ ख. दीया। ६ ख मुनसप्प। ७ ख वधाराईदेस। ग वधाराइदेस। ८ ग. सारो। ९ ख. हीदुसथान। १० ग दुवो। ११ ख जव्वन। ग जवन। १२ ख नवाव। १३ ख. बीकापुर। ग वीकापुर। १४ ख बिलद। १५ ख ग. उमद। १६ ख बले। ग वले। १७ ख डुगर। १८ ख. बासबाहाल। ग. वांसहवाल। १९ ख. लूणापुर।

---

६४४ पुणै – कहता है। पाण – ही।

६४५ फुरमाण – परवाना, आज्ञापत्र। दिलेस – दिल्लीश, बादशाह। बधाराइ – बढती, वृद्धि। सारौ – सब। अनि – अन्य, दूसरा। दुवौ – दूसरा। जोड़ – समान। खग-दान – वीरता और वदान्यता।

६४६ अफेर – वीर। जवन्न – यवन। जेर – आधीन। विकापुर – बीकानेर। विलँद = बुलद – बड़ा अथवा सर बुलेंद। अहैपुर – अहिपुर, नागपुर, नागौर।

६४७. वळे – और, फिर। पुर डूगर – डूगरपुर। वांसहवाळा – वासवाडा। रसाळ – भेंट ? चाळक रांण – चालुक्य वंशका राजा।

सिरोहिय[1] ईडर राज समाज ।
रिधू हळवद[2] झालापति राज ।
जाड़ेचा[3] सिंगारज रावळ जाम ।
वळै[4] भुजनेरतणौ[5] वरियाम ॥ ६४८

सुराचँद[6] पारकरेस सधेस ।
हुवै[7] पग[8] सेवक आय हमेस ।
सरा लगि साभरि तीर समद ।
नमै पगि आय इता नर इंद ॥ ६४६

भरै डँड रैत[9] तणी विध[10] भाय ।
*प्रथीपति[11] फेरि लगावत पाय ।
सु सौ[12] गजहूत करत सलांम ।
महा हम तम्म सहै अतिमांम ॥ ६५०

दखै[13] तदि नीजर[14] दौलतिदास ।*
प्रथीपत[15] दीठ करत प्रकास ।
इसी[16] विध[17] पाय नमत अपार ।
जिया पल हूत करंत जुहार ॥ ६५१

---

१ ख ग सीरोहीय। २ ख हलवद्द। ३ ख जाडेच। ४ ख ग वले। ५ ख भुजनैरतणौ। ६ ख. ग सूराचद। ७ ख. हुअै। ग हूअै। ८ ख पगि। ६ ग रैति।
*चिन्हांकित पंक्तिया 'ख' प्रतिमे नहीं हैं।
१० ख विधि। ग विघि। ११ ख. ग. प्रिथीपति। १२ ग सो। १३ ग दाखै। १४ ग निझ्झर। १५ ख ग प्रिथीपति। १६ ग. इसि। १७ ख. विधि। ग वधि।

---

६४८ रिधू – निश्चय। जाड़ेचा – यादव वंशकी एक शाखा। रावळ-जाम – जामनगरका राजा जामरावल। भुजनेर – भुजनगर। वरियाम – श्रेष्ठ।

६४६ सुराचंद – एक प्रदेशका नाम। पारकरेस – एक प्रदेशका नाम। सधेस – सिंध प्रदेश, सिंधुदेश। सरां समद – साभर झीलसे लेकर समुद्रपर्य्यन्त। पगि – चरणोंमे। नर-इंद – नरेन्द्र, राजा।

६५०. विध – प्रकार। भाय – समान। हम तम्म – रौब, आतक। अति-माम = एहतमाम – अधिकार-क्षेत्र अथवा इन्तजाम, प्रबंध ( ? )

६५१. दखै – कहते हैं। नीजर दौलतिदास – आपकी नजर - दौलतके हम दास हैं। जियां – जैसे। जुहार – अभिवादन।

इसै[1] तप तज 'अभैमल' आज ।
रजै 'अजमाल'[2] तणौ महराज[3] ।। ६५२

**कवित्त छप्पै[4]**

इसै तेज तपि[5] आज, रजै 'अभमल' महराजा[6] ।
वरण[7] हूंत वसेस[8] सुदन खग राज समाजा[9] ।
सतर सहंस गुजरात धरा नव सहस मुरद्धर ।
एक[10] सहस धर अवर, अमल इतरी धर ऊपर[11] ।
वणि समद हद[12] चक्रवति विभौ, उरड रीझ छक आवियौ[13] ।
सुरिजप्रकास गुण इण[14] समै, कहै स्री मुख[15] कहावियौ[16] ।। ६५३

खड-प्रसस्त-बलमीक, हणू नाटक[17] अध्यातम ।
द्रोण परब[18] रघुवस[19], सारसुत व्यायकरण[20] हिम ।
हठ प्रदीप अस्टंग[21] वळै[22] तप सार ग्रथ वर ।
आठ ग्रथ ज्योतिस[23], सरस सगीतह सागर ।

---

१ ख. इतै । २ ख रजमाल । ३ ख. महाराज । ग. माहाराज । ४ ख तथा ग प्रतियोमें यह शब्द नहीं है । ५ ख. तव । ६ ख ग. माहाराजा । ७ ख वरणण । ८ ख बिसेष । ग. वसेष । ९ ख. ग ससाजा । १० ख. ग. एक । ११ ख ग. उप्पर । १२ ख. ग हद्द । १३ ख ग. आवीयौ । १४ ख इणि । १५ ख श्रीमुष्षि । ग श्रीमुषि । १६ ख. ग कहावीयौ । १७ ग. नाटिक । १८ ख. परव । १९ ख. ग रुघवस । २० ख वैयायकरण । ग वयायकरण । २१ ख ग. अष्टग । २२ ख. ग. वले । २३ ख ग जोतिस ।

---

६५२. तप – ऐश्वर्य । अभैमल – महाराजा अभयसिंह । रजै – शोभायमान होता है । अजमल – महाराजा अजीतसिंह ।

६५३. तपि – ऐश्वर्य । रजै – शोभित होता है । अभमल – महाराजा अभयसिंह । सुदन – श्रेष्ठ दान । खग – तलवार । मुरद्धर – मारवाड । अमल – अधिकार, राज्य, हुकूमत । विभौ – वैभव । उरड – साहस । रीझ – दान । छक – पूर्ण । सुरिजप्रकास – सूरजप्रकास नामक ग्रथ । गुण – काव्य । कहावियौ – कहलवाया ।

६५४. खंड-प्रसस्तबलमीक – वाल्मीकि रामायण । हणूं नाटक – हनुमद् नाटक । अध्यातम – अध्यातम रामायण । द्रोण परब – महाभारतान्तर्गत द्रोण पर्व नामक अश । सारसुत – सारस्वत नामक व्याकरण । हिम – हेमचद्र जैनका व्याकरण । हठप्रदीप – ( योग का ग्रन्थ ? ) ।

सूर स्रगार[1] त्रिनोद[2] वीर[3] धरम[4] सासत्र धारण ।
अलकार खट भाख, विवध[5] भाखा विसतारण ।
कवि किसव[6] रागमाळा सकळ, ब्रहम गीनान वतावसी[7] ।
सूरिजप्रकास[8] गुण सीखसी, अतरा गुण तैं आवसी ।। ६५४

कळपव्रिछ सुभ करण, सूर[9] दाता रिझवारा ।
नाट - साल उर तणौ, सूब कायरा गवारा ।
गहर पूर बह[10] गुणा[11], महा कविता मन मोहै ।
राजा अनि राइया[12], सीस गज अकुस सोहै ।

प्रगट सी[13] दस[14] दिस ऊपर[15], तिकौ[16] अमर धर अबर तिम ।
सूरजिप्रकासि[17] 'अभसाहरौ', जास सूरज[18] प्रकास[19] जिम ।। ६५५

दूहा[20]

सत्रैसै[21] समत[22] सत्यासियै[23], विजै[24] दसमी[25] सनि जीत ।
वदि[26] कातिक[27] गुण वरणियौ[28], दसमी वार अदीत ।
वणियौ[29] गुण इक वरस[30] विच[31], उकति अरथ अणपार ।
छद अनुस्टुप[32] करिउ जन, सत पच सात हजार ।

---

१ ख ग श्रृंगार । २ ख विन्नोद । ३ ख ग बीर । ४ ख ग ध्रम । ५ ख विविध । ग. बिविघ । ६ ख ग किसव । ७ ख ग वतासी । ८ ख. सुरि । ९. ख सूरि । १० ख ग वहो । ११ ख. गुणि । १२ ख ग राईया । १३ ख सीस । १४ ख ग दसै । १५ ख ग ऊपरा । १६ ख. ग. तिको । १७ ख सूरज-प्रकास । ग सूरजप्रकासि । १८ ख सूरिज । १९ ख ग परकास । २० ख दोहा । ग दोहा । २१ ख ग. सत्रसै । २२ ख सवत । २३ ख. ग. सत्यासीयै । २४ ख. विजै । २५ ख ग दसमि । २६ ख बदि । २७ ख ग कातिग । २८ ख बर-णीयौ । ग वरणीयौ । २९ ख ग बणीयौ । ३० ख. बरस । ३१ ख ग विचि । ३२ ख अनुष्टुप् । ग अनुष्टुप ।

---

६५४ ब्रहम-गीनान – ब्रह्म-ज्ञान ।

६५५. कलपव्रिछ – कल्पवृक्ष । नाटसाल – जबरदस्त । गहर – गांभीर्य । अभसाह – महाराजा अभयसिंह ।

'अभा'तणो सुभ नजर अति, वधि[1] छक सुकवि विधांन[2] ।
कुरव दान लहियौ[3] अधिक, कहियौ[4] करणीदान ।। ९५६

## कवित्त छप्पय

हरख घणा छक हूत, कहै गुण घणा कवेसर[5] ।
जग घणा जीतसी, महाराजा[6] राज[7] ईसुर ।
मुलक घणा दावसी, घणा करसी सुख व्रिद घणा ।
घणा लाख पसाव, घणा देसी गज सासण ।
'अभमाल' घणा करसी उछब, कवि गुण घणा कहावसी ।
इम घणा वरसी[8] तपसी 'अभौ' प्रसिध घणा व्रद[9] पावसी ।। ९५७

## दूहा[10]

ध्रुव सुमेर अबर धरा, सूरज[11] चद सकाज ।
महाराजा[12] 'अभमाल'रौ, रिधू इता जुगराज ।। ९५८

*सूरज[13] हूत प्रगटची करण[14], सुण्यौ[15] सवेही[16] लोइ ।
'करणै'[17] सूरज[18] प्रकास किय, रस अदभुत[19] है सोइ[20] ।। ९५९

---

१ ख वधि । २ ख. ग विधान । ३ ख ग लहीयो । ४ ख. ग. कहीयौ । ५ ख ग. कवेसुर । ६ ख ग माहाराजा । ७ ख राजेसुर । ८ ख. वरस । ९ ख वृद । ग वृद । १० ख प्रति में यह शीर्षक नहीं है । ग दोहा । ११ ख सूरिज । ग सूरभ । १२ ख. ग माहाराजा । १३ ग सूरभ । १४ ग करन । १५ ग सुन्यौ ।

*चिन्हांकित पक्तियां 'ख' प्रति में नहीं हे ।

१६ ग. सवेही । १७ ग करनै । १८ ग. सूर । १९ अद्भूत । २० ग सोई ।

---

९५६. अभा — महाराजा अभयसिंह । छक — जोश, उत्साह ।

९५७ कवेसर — कवीश्वर, महाकवि, कवि । दावसी — अधिकार मे करेगा । अभमाल — महाराजा अभयसिंह । गुण — काव्य, कविता । तपसी — ऐश्वर्य का उपयोग करेगा । अभौ — महाराजा अभयसिंह

९५८ ध्रुव — ध्रुव । सुमेर — सुमेरू पर्वत । अबर — आकास । रिधू — अटल ।

९५९ लोइ — लोक । करणै — कवि करणीदान ।

ग्रहपति सूर प्रकासतै, बहिर[1] दिवस प्रकास ।
रूपक सूरज प्रकासतै, अतर नित्त उजास ॥ ९६०

इति श्री महाराजाधिराज[2] महाराज[3] राजेस्वर[4] स्री स्री स्री स्री
स्री अभैसींघजी[5] री ग्रथ नाम सूरज[6]-प्रकाम कविया[7]
करणीदान[8] रो कहियो सपूरण[9] स०[10] १८०७ ॥

---

१ ग बाहिर । २ ख माहाराजाधिराज । ३ ख ग महाराजा । ४ ख. राजराजेश्वर । ५ ख ग अभैसिघजी । ६ ख सूरिज । ग सूरभ । ७ ख ग कवीया । ८ ग करनीदान । ९ ख ग सपूर्ण । १० 'ख' प्रति में नहीं है । सवत १८४१ वर्षे मासोतम । यहा पर 'ख' प्रति में–॥ श्री रस्तु ॥ ॥ श्रुभभवनु ॥ ॥ श्री ॥

नोट – 'ख' तथा 'ग' प्रतियो में यहा से आगे लिपिको के लिखे हुए निम्न वर्णन अलग-अलग मिलतें है.—

'ख' प्रति में :—

सवत् १८८४ रा फाल्गुण शुक्ला । १५ । शनिवासरे ॥ लिखितं बोडा मगदत । योध नगरे । मानसिह राजे श्रुभम् ॥ सूरजप्रकास ग्रथ सख्या । ६२२४ ॥ लेखक पाठकयो ।

'ग' प्रति में —

मासे आसाढ़ मासे शुक्ल पक्षे षष्टी ६ तिथौ गुरुवारे पोथी महाराजा श्री श्री श्री श्री अषैसींघजीरी ॥ लिषत । रामचद सेवक चोथरांम सुध करतव्य वषनोर नगर मध्ये लिपि कृत चातुर्मास करतव्य । माहाराजाजी श्री अषैसींघजी दीर्घायु । मगल लेषकानांच । पाठकानाच मगल । मगलं सर्वलोकाना भूमि भूपति मगल ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

तुम प्रवीन विध्य जथा योग्य जानु सब ,
गुन के गहिया हित सब सु विचारो हों ।
लीये सुभ रीत विपरीत कहु दीसै नाह्य ,
परम सुग्यान विध्य सबै उर धारो हों ।
पर उपगारी रीत सत सब मिल आई ,
सोय अब तुम धरे कारज्य सुधारो हों ।
सकल अरथ ठाकुर श्री अषैसिघजीकु सुफल ,
फलो थिरता हमारी करो सबै गुन धारों हों । १

इति श्रुभ भवतु कल्याणमस्तु लेषक पाठक दीर्घायु वाचै भणै त्यांनु आसीवचन राम रांम वाचसी ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

---

९६०. ग्रहपति – सूर्य । उजास – प्रकाश ।

# परिशिष्ट १

## नामानुक्रमणिका

आ

ख



# परिशिष्ट २

## छंदानुक्रमणिका

| छंद का नाम | प्रथम पंक्ति | पृ० | प्रकरण | पद्यांक |
|---|---|---|---|---|
| त्रोटक | 'करणो' अणदावत क्रोध कळा | २१६ | ७ | ७७७ |
| | करनी कुळ'माहव' नांम कवि | २३१ | ७ | ८३३ |
| | करि जाणक आयुध इंद्र करै | २०० | ७ | ७१८ |
| | करिपाण सुताण कमांण कसै | १९७ | ७ | ७०७ |
| | कळहे 'पदमो' खग बोळ कियै | २२२ | ७ | ८०१ |
| | काढिया खग सावल झोक किया | १९७ | ७ | ७०५ |
| | खग झाटक टूक करै खळहे | २१६ | ७ | ७७६ |
| | खग वाहत हेक जिसा खग सौ | २१७ | ७ | ७८३ |
| | खग बीजळ मेघ घडा खमतो | २१४ | ७ | ७७० |
| | खगि सावज भ्रज विहडि खळा | २३० | ७ | ८२९ |
| | खत्रिया गुर 'लाल' दुझाल खडै | २०८ | ७ | ७४९ |
| | खित पिंड करै रत हंस खडै | २०६ | ७ | ७३८ |
| | गज ढाल दुझाल अमीर गरै | २२७ | ७ | ८१७ |
| | गजभार महेस तणो गहणो | २१५ | ७ | ७७३ |
| | गहरै 'रगरेल' हरै गुमरै | २०५ | ७ | ७३६ |
| | 'गिरमेर' तणो सिवदान गजो | २०४ | ७ | ७३३ |
| | ग्रह सावल सीस उडै गजरो | २१९ | ७ | ७८८ |
| | घण धाय वरावत हूर घणा | २१२ | ७ | ७६२ |
| | घण वाहत सावल 'तेज' घणो | २०१ | ७ | ७२१ |
| | घमसाण करै घरि पांण घणो | २०१ | ७ | ७१९ |
| | चद्रहास करै जुध चूंप तणो | २१३ | ७ | ७६७ |
| | चढियो अनि हैमर रोस चडै | २३० | ७ | ८३१ |
| | 'चतुरेस' 'पतावत' खेत चढ़ै | २०२ | ७ | ७२६ |
| | चमराल दला अति रोस चढ़ा | १९९ | ७ | ७११ |
| | चहुवाण केवाण रत्रा चरचै | २३४ | ७ | ८४३ |
| | छक ऊदल छोह छछोह छळा | २२३ | ७ | ८०४ |
| | जवनां दळ दाति चढत जवा | २०६ | ७ | ७४० |
| | जुध खाग झटा घट पींजरियो | २०५ | ७ | ७३४ |
| | जुध खाग वहै झल 'जोप' तणो | २१२ | ७ | ७६४ |
| | जुध-'दूजण' 'वाघ' कराळ जिसो | २१९ | ७ | ७९१ |
| | जुध धावत सूर घणा वजरै | २१६ | ७ | ७७८ |
| | जुध 'भीम' समोभ्रम जाहर सो | २२९ | ७ | ८२६ |
| | जुध 'माहव' सभ्रम पाय जिसो | २०२ | ७ | ७२५ |
| | जुध मेछ चढात घकै जमरो | २१८ | ७ | ७८४ |
| | जुधि भाल कराळ उठत जठै | १९६ | ७ | ७०२ |

# परिशिष्ट ३

## भौगोलिक टिप्पणियाँ

[सूरजप्रकास के तीनो भागो में आये हुए ऐतिहासिक महत्व के स्थानो आदि का परिचय]

### अजमेर

राजस्थान के अजमेर जिले का मुख्य नगर है, जो अरावली पर्वत श्रेणी की तारागढ पहाडी की ढाल पर स्थित है। यह नगर १०४५ ई० मे अजयपाल नामक चौहान राजा द्वारा बसाया गया था। ई० सन् १३६५ मे मेवाड के शासक, १५५६ मे अकबर और १७७० से १८८० तक मेवाड तथा मारवाड के भिन्न-भिन्न शासको द्वारा शासित हो कर अत मे १८८१ मे अग्रेजो के आधिपत्य मे चला गया।

### अन्हिलवाड़ (अणिहलवाडा)

यह अन्हिल पाटन गुजरात के सोलकी वश के राजाओ की राजधानी था। इसे प्रसिद्ध चालुक्य मूलराज ने बसाया था और यह महमूद गजनी के हमले के पूर्व तक सोलकी राजाओ की राजधानी बना रहा। सोमनाथ का प्रसिद्ध शिव मदिर भी वही था जिसे महमूद गजनी ने १०२४-२५ ई० मे आक्रमण कर के नष्ट कर दिया था। उसके बाद पुन इस पर चालुक्यो का अधिकार हो गया और उन्होने पर्याप्त काल तक राज्य किया। बाद मे बाघेलो ने इसे जीत कर अपना राजकुल वहा प्रतिष्ठित किया। यह नगर वैभव की चरम सीमा तक पहुँच चुका था। १३वी सदी के अत मे अल्लाउद्दीन खिलजी ने गुजरात पर आक्रमण कर के उसे जीता, तब यह उसी के साम्राज्य का नगर बन गया।

### अरब

एशिया के दक्षिण पश्चिम में एक प्रायद्वीपी पठारी भाग है जो $12^0$ उत्तर अक्षाश से $32^0$ उ० अ० तक तथा $35^0$ पूर्वी देशान्तर से $66^0$ पू० दे० तक फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल दश लाख वर्गमील है। यह ससार का अति उष्ण प्रदेश है। इसकी गणना ससार के प्रसिद्ध मरुस्थलो में की जाती है। यमन, असीर एव ओमान के क्षेत्रो को छोड सम्पूर्ण अरब शुष्क एव उष्ण है। यहाँ वर्षा बहुत कम होती है। कुछ भागो में सर्दियो में वर्षा होने से पैदावार हो जाती है। रियाध सऊदी अरब गणराज्य की राजधानी है। यह प्रायद्वीप खनिज तेल का भडार है। यहा के लोग घोडा ऊट, बकरी, भेड, गदहा आदि पशु अधिक पालते हैं। मुसलमानो के पवित्र तीर्थ-स्थान मक्का और मदीना इसी देश के हेजाज प्रान्त में है।

### आडौ-वळौ (अरावली)

यह एक भजित पहाड है जो पृथ्वी के प्रारभिक काल में ऊपर उठा था। यह पर्वत-श्रेणी समस्त गुजरात राजस्थान से ले कर देहली तक, उत्तर पूर्व से ले कर दक्षिण पश्चिम तक

लगभग ४०० मील की लम्बाई मे फैली हुई है। इसकी औसत ऊँचाई १००० फीट से लेकर ३००० फीट तक है। इसका सर्वोच्च शिखर आबू पर्वत है जो ५६५० फीट ऊँचा है। इसका अधिकाश भाग वनपूर्ण है और आबादी भी अल्प है। इसके विस्तृत क्षेत्र अधिकाश मे मध्यस्थ घाटियां एव बालू के मरुस्थल है। इस पर्वत की कई विच्छिन्न-शृ खलायें भी बन गई है, जिनका ढाल तीव्र है और शिखर समतल है। इसमे पाई जाने वाली शिलाओ मे स्लेट, शिस्ट, नाइस, सगमरमर, क्वार्ट जाइट, शेल और ग्रेनाइट विशेष है।

## अवधपुरी (अयोध्या)

उत्तरप्रदेश का एक भाग जो प्राचीन काल मे कौशल राज कहलाता था। इसकी राजधानी अवधपुरी (अयोध्या) थी। यह नगर घाघरा (सरयू) नदी के दाहिने किनारे पर फैजाबाद जिले मे स्थित है। इसका महत्त्व इसके प्राचीन इतिहास मे ही निहित है। प्राचीन उल्लेखो के अनुसार इसका क्षेत्रफल ९६ वर्ग मील था। सातवी शताब्दी मे चीनी यात्री ह्वेनसाग यहा आया था। उसके लेखानुसार यहाँ बीस बौद्ध मन्दिर थे तथा ३००० भिक्षु रहते थे। इस प्राचीन नगर के अवशेष अब खडहरो के रूप मे रह गये है, जिसमे कहीं-कही कुछ अच्छे मदिर भी है। इनमे सीता-रसोई तथा हनुमान-गढी प्रसिद्ध है। अब अयोध्या एक तीर्थस्थान के रूप मे रह गया है।

## अहमदाबाद

यह नगर २३°१″ उत्तर अक्षाश और ७२°३७″ पूर्व देशान्तर गुजरात राज्य मे बम्बई से ३०९ मील उत्तर मे साबरमती नदी के बायें तट पर स्थित है। यह प्रमुख औद्योगिक, व्यापारिक तथा वितरण केन्द्र है।

साबरमती तट पर एक भील सरदार के नाम पर असावल नामक रम्य स्थान था जो युद्ध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था, जहाँ ई० स० १४११–१२ तदनुसार वि० स० १४६९ मे तातार खा के पुत्र अहमदशाह ने सांचल नामक ग्राम के स्थान पर अहमदाबाद नगर बसा कर इसे अपनी राजधानी बनाया। १४११ ई० से १५११ ई० तक की मध्य की शताब्दी मे इसकी उत्तरोत्तर उन्नति हुई। मुगलकाल मे भी यह नगर उन्नति की चरम सीमा पर था। यह व्यापार, शिल्प, चित्र, स्थापत्य आदि विभिन्न कलाओ का केन्द्र था। किन्तु मराठा काल मे इसका वैभव चौपट हो गया जिसका अग्रेजी शासन काल मे पुनरुत्थान हुआ।

## आंबेर

यह नगर जयपुर से सात मील उत्तर मे पहाडो के बीच बसा हुआ है। नगर के पश्चिमी किनारे पर आबेर का सुदृढ दुर्ग है और शिलादेवी का मन्दिर है जो बहुत सुन्दर ढग से बना हुआ है। कछवाहा राजा काकिल ने वि० स० १०९३ मे सूसावत मीनो से छीन कर आबेर की नीव डाली। इसका प्राचीन नाम अम्बिकापुर था जिसका अपभ्रश आबेर है। यहा प्राचीन समय का बना अम्बिकेश्वर महादेव का मन्दिर भी है।

## आगरा

यमुना नदी के दायें किनारे पर स्थित उत्तरप्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर है। वर्तमान आगरा का इतिहास लोदी काल से आरभ होता हैं । सिकदर लोदी और इब्राहीम लोदी के समय मे आगरा ही भारत की राजधानी था। वि० स० १४६६ मे यह नगर मुगल-साम्राज्य के सस्थापक 'बाबर' के अधिकार मे चला गया। ई० सन १५७१ मे अकबर महान ने आगरे के किले का निर्माण कराया। किन्तु किले की अधिकाश इमारतें जहागीर और शाहजहाँ द्वारा निर्मित हुई हैं। इस काल मे नगर की दशा अच्छी थी। नगर मे सोलह प्रवेश द्वार थे। नगर का क्षेत्रफल ११ वर्गमील था। आगरा ताजमहल का नगर कहलाता है। यहाँ कई विशाल एव भव्य इमारतें है जिनसे मुगलकालीन वास्तुकला की महत्ता प्रकट होती है। आगरा पश्चिमी-उत्तर प्रदेश का सब से बडा शिक्षा-केन्द्र है।

## आबू (आबू पर्वत)

आबू का प्राचीन नाम अरबुद्ध है। यह ४००० फीट की ऊँचाई पर बसा है। इसकी सबसे ऊँची चोटी का नाम गुरुशिखर है, जो ५६५० फीट ऊँची है। प्राचीन परम्परा के अनुसार यह वसिष्ठ ऋषि का निवास-स्थान था। आर्यों के गुरु का निवास होने के कारण यह बुद्धिवादियो के आवागमन का केन्द्र हो गया। यहाँ वसिष्ठ द्वारा अनार्यों की शुद्धि की जा कर उन्हे आर्य बनाया जाता था। इसी से इसे अरबुद्ध कहने लगे। इस पहाड का उल्लेख मैगस्थनीज ने भी अपनी भारत-यात्रा मे किया था। प्राप्त अभिलेखो के द्वारा यह कहा जा सकता है कि यहाँ पहले शैव मत का प्रभाव था, बाद मे यहाँ जैन मत का प्रभाव हो गया। ११वी शताब्दी मे यहाँ परमारवश के क्षत्रियो का शासन था। इन्ही पहाडियो की महायता से सिरोही के राव सुरताण अकबर के विरुद्ध गुरिल्ला रणनीति द्वारा मुगलाई फौजो को तग करता रहा। १९वी शताब्दी मे आबू, अग्रेजो के पोलिटिकल एजेन्टो का, गर्मी के लिये निवास-स्थान बना रहा। आबू, मदिरो का गृह और कला का केन्द्र है।

## आसोप

यह ठिकाना आसोप का मुख्य नगर है। उत्तारी-रेलवे के गोठन स्टेशन से १५ मील की दूरी पर तथा जोधपुर नगर से ५० मील उत्तर दिशा मे स्थित है।

## ईडर

यह गुजरात का एक प्राचीन नगर है। इसके उत्तर मे सिरोही और मेवाड, पूर्व मे डूगरपुर, दक्षिण और पश्चिम मे अहमदाबाद और गायकवाड है। साबरमती नदी इसकी पश्चिमी सीमा बनाती है। ईडर का किला बहुत ऊँची पहाडी पर बना हुआ है। यह पहाडी अरावली और विध्य से मिली हुई है। इसको वेणी वच्छराज ने बनवाया था। बाद मे यह नगर जगली भील लोगो का निवास-स्थान रहा। ईडर के परिहार वश का अतिम राजा अमरसिह शहाबुद्दीन गोरी की लडाई मे पृथ्वीराज के साथ लड कर मारा गया और ईडर का राज सावलिया सोड को मिला। बाद मे राव सीहा के पुत्र सोनग ने सावलिया सोड को मार कर वि० स०१३१३

मे ईडर का राज्य अपने अधिकार मे कर लिया। इस प्रकार ईडर पर राठौडो का अधिकार हो गया। बाद मे इस पर मुसलमानो का अधिकार लम्बे अर्से तक रहा। किन्तु ई० स० १७२६ मे महाराजा अजीतसिंह के पुत्र आनन्दसिंह व रायसिंह ने ईडर पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार यह पुनः राठौडो के अधिकार मे आ गया जो भारत स्वतत्र हुआ तब तक राठौड राजाओ के शासन मे रहा।

## ईरान

पश्चिमी एशिया का अति प्राचीन भाग जो फारस कहा जाता था। इसका प्राचीन नाम आर्याना था। यह फारस, तुर्की, ईराक और रूस आदि देशो से घिरा हुआ हैं। प्राचीन काल से ही यह कला, सभ्यता और सस्कृति का केन्द्र रहा है। यह एलाम के नाम से पुकारा जाता है। इसका शासन पुरोहितो के हाथो मे था। यहाँ की सभ्यता भारत की प्राचीन सभ्यता से मिलती-जुलती थी। ये सूर्य और अग्नि की पूजा करते थे। अरबो की ईरान-विजय से लेकर अब तक इसकी सास्कृतिक आत्मा अपनी महानता का परिचय देती रही है। ईरान और खुरासान वौद्ध धर्म का केन्द्र रहा है। इस्लाम के आगमन के वाद यह इस्लामी सभ्यता का महान केन्द्र रहा हैं। इस धर्म का महान विद्वान 'अलगिजाली' यही का रहने वाला था, जिसने कई पुस्तकें लिखी हैं। वर्तमान ईरान पेट्रोल, सूखे मेवे, गरम और रेशमी वस्त्रो के उत्पादन करने के कारण ससार भर मे प्रसिद्ध है।

## उज्जैन

इसका प्राचीन नाम उज्जयिनी था जो उज्जनता सस्कृत के उज्जैन्त का पाली रूपान्तर है। इसकी पुष्टि वौद्धो के पाली साहित्य से होती है। उस समय भारत के सोलह महा-जनपदो मे अवती का विशिष्ठ स्थान था और उज्जयिनी उसकी राजधानी थी। उस समय यह नगर सस्कृति और कला का केन्द्र था। मौर्य काल मे भी इसका महत्त्व कम नही था। अशोक राजगद्दी पाने के पूर्व यही का शासक था। भारत से मध्य देश की ओर आने वाले मार्गों पर होने के कारण इसकी व्यापारिक एव राजनीतिक महत्ता सदा वनी रही। विक्रमादित्य के समय मे यह मालव गणतत्र की राजधानी थी। यहाँ अनेको युद्ध हुए, उनमे मुगल-कालीन धरमत का युद्ध इतिहास-प्रसिद्ध है।

मुगलो और अग्रेजो के समय मे इसका राजनीतिक महत्त्व नही रहा।

## उदयपुर

ई० सन् १५६८ मे अकवर द्वारा चितौड के विजित होने पर महाराणा उदयसिंह ने अरावली की गिर्वा नामक उपत्यका मे उदयपुर बसाया। यह समुद्र की सतह से लगभग २००० फीट ऊँची पहाडी पर स्थित है एव जगलो द्वारा घिरा है। पहाडी के सर्वोच्च शिखर पर महाराणा के राज-प्रासाद है, जिनका प्रतिविंव पिछोला झील मे पडता है। प्राचीन नगर प्राचीर द्वारा आवद्ध है जिसके चर्तुदिक रक्षा के लिये खाई खुदी है। कुछ दूरी पर दक्षिण मे एकलिंग की चोटी पर उदयपुर का प्रसिद्ध किला है। यह राजस्थान के उन्नतिशील नगरो मे से एक है।

## कन्नौज

यह नगर उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद जिले मे है। इसकी स्थिति २७°३" उत्तर अक्षाश तथा ७६°५६" पूरब देशान्तर है। प्राचीन काल मे गगा नदी इस नगर के बाजू मे बहती थी। ईसा की पाँचवी शताब्दी मे यह गुप्त साम्राज्य का प्रमुख नगर था। इस नगर को छठी शताब्दी मे हूणो ने आक्रमण कर के नष्ट कर दिया था। चीनी यात्री ह्वेनसाग ने भी इस नगर का उल्लेख किया है। ११वी शताब्दी के प्रारभिक काल मे यवनो के आक्रमण के कारण यह नगर नष्ट-भ्रष्ट हो गया। इसके बाद ई० सन् ११६४ मे मुहम्मद गोरी ने आक्रमण कर के इस नगर पर अपना अधिकार जमाया। अकबर के समय मे भी यह उत्तरप्रदेश के मुख्य नगरो मे था। वर्तमान समय मे यह नगर सुगधित इत्र आदि के लिये प्रसिद्ध है।

## करौली

यह राजस्थान का छोटा-सा राज्य था जो पूर्वी सीमा पर २६°३" व २६°४९" उत्तर अक्षाश और ७६°३५" व ७७°२६" पूर्व देशान्तर के मध्य मे स्थित है। इसका क्षेत्रफल १२०८ वर्ग मील है। इस नगर को वि० स० १४०५ मे राजा अर्जुनदेव ने बसाया था और कल्याणराय के मन्दिर के कारण इसका नाम करौली रक्खा गया। प्राचीन काल मे यहाँ मीनो की आबादी अधिक थी। ये लूट-पाट अधिक किया करते थे जिससे इस नगर की तरक्की नही हुई। राजा गोपाललाल ने इन मीनो को दबा कर शहर की तरक्की की।

## कागो

यह स्थान जोधपुर से १ मील उत्तर दिशा मे स्थित है। प्राचीन ग्रथो के आधार पर यह कहा जाता है कि यहाँ काकभुसुण्डजी ऋषि ने तपस्या की थी। इसी से इसे कागा कहते है। यहाँ का जल बडा स्वच्छ तथा स्वास्थ्यप्रद है। यहाँ शीतलादेवी का बडा सुन्दर मन्दिर है, जो पहाड काट कर उसकी चट्टान के नीचे बनाया गया है। यहाँ प्रति वर्ष चैत्र कृष्णा अष्टमी को शीतला का मेला लगता है, जो तीन-चार दिन तक रहता है। इसके समान जोधपुर मे जन-समूह के लिहाज से दूसरा मेला नही लगता। यहाँ के पुजारी गहलोत वश के माली है। यहाँ का बाग पहले बडा सुन्दर था और इस बाग के अनार भारत भर मे प्रसिद्ध थे, किन्तु महाराजा सर प्रतापसिंह के द्वारा यह बाग समूल नष्ट करवा दिया गया। यहाँ एक गौशाला भी है। कागा के पास श्मशान भी है। कागा जोधपुर के तीर्थ-स्थानो मे गिना जाता है।

## किशनगढ़

यह नगर राजस्थान के पूर्वी भाग मे बसा हुआ है। मोटा राजा उदयसिंह के १४ पुत्रो मे से किसनसिंह जहाँगीर के पास रहता था। बादशाह जहाँगीर ने उसकी सेवाओ से प्रसन्न हो कर सेठोलाव जागीर मे दिया था, जिसके खडहर अब भी किशनगढ के पश्चिम की तरफ मौजूद है। उसी स्थान पर वि० स० १६६६ मे किसनसिंह ने किसनगढ बसाया। यह नगर फुलेरा से अजमेर जाने वाली पश्चिमी रेलवे का स्टेशन है। नगर छोटा होने पर भी बहुत सुन्दर ढग से बसाया गया है।

## कोटा

कोटा नगर राजस्थान के पूर्वी दक्षिणी भाग मे हाडोती के पठार पर २४°३०″ उत्तर अक्षाश और ७५°४० पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। यह नगर राजस्थान की प्रसिद्ध नदी चम्बल के दक्षिणी पूर्वी किनारे पर बसा हुआ है। यह नगर चौदहवी शताब्दी मे कोटिया भील के नाम से बसाया गया था। उस समय यहाँ भीलो का अधिकार था। प्राचीन लेखो के अनुसार यहाँ नागवशी और मौर्यवशी राजाओ का भी राज्य रहा है। इसके बाद वि० स० १६८८ तदनुसार ई० स० १६३१ मे यह चहुवान वश के हाडा राजपूत राव रतनसिंह के कनिष्ठ पुत्र माधवसिंह के अधिकार मे आ गया। तब से भारत के स्वतन्त्र होने के पूर्व तक यहा इसी वश का राज्य रहा।

## गिरनार

यह बहुत प्राचीन स्थान है। काले पत्थर की पर्वत-श्रेणी जो लगभग १२ मील तक चली गई है। इसके मध्य भाग मे एक बडा दुर्ग है। इसे ग्रहरिपु ने बनवाया था। इसकी सुन्दर घाटी के मुख पर नेमिनाथ का पवित्र पर्वत गिरनार खडा है, जहाँ कई जैन मदिर है।

इसके मुख्य भाग पर ही प्राचीन नगर जूनागढ है। पहले यह सोरठ कहलाता था, वहाँ का स्वामी राव खगार था। इस नगर के दरवाजे से ही यात्रियो के पद-चिन्हो से बनी हुई पगडडी सोनरेखा नदी के किनारे किनारे उसके उद्गम स्थान गिरनार के शिखर तक चली गई है, जहाँ समतल भू-भाग है। यहाँ पर जैन तीर्थंकरो के चैत्य बने हुए है। इस मैदान से गिरनार के शिखर तक चढने का झाडियो मे हो कर एक बीहड मार्ग अम्बादेवी के मन्दिर तक चला गया है। गिरनार पर्वत की छः अलग-अलग चोटियाँ है जिनमे सबसे ऊँची चोटी गोरखनाथ नाम से प्रसिद्ध है।

## गोलकुण्डा

बहमनी सुलताना के समय मे गोलकुण्डा तैलगाना प्रदेश की राजधानी था। १५वी शताब्दी मे बारा मलिक कुल कुतुब-उल मुल्क (Barra Malick Kull Kutbul Mulk) जो सुलतान मुहम्मद बहमनी की मातहती मे आया, जिसे गाजी का खिताब दिया गया और उसे तैलगाना का शासक बना दिया। १५१० ई० मे यह स्वतत्र हो गया। उसके बाद १५७६ ई० मे सम्राट अकबर ने राजा मानसिंह को भेज कर इसे मुगल साम्राज्य मे मिला लिया। शाहजहाँ के समय मे इसके शासक पुन स्वतत्र हो गये थे। औरगजेब ने गोलकुण्डा के नवाब को, जो शिया मुसलमान था, नष्ट कर के गोलकुण्डा को पुन मुगल-साम्राज्य मे विलीन कर दिया।

## खेड़

यह प्राचीन नगर उत्तरी रेलवे की बाड़मेर शाखा के बालोतरा स्टेशन से कुछ दूरी पर है। नगर उजडी दशा मे अब तक मौजूद है। यहाँ के प्राचीन विष्णु और शिव-मन्दिर १२वी शताब्दी के उत्कृष्ट नमूने है। उस समय यहाँ गुहिलो का अधिकार था। डाभी इनके मन्त्री थे। इनका परस्पर वमनस्य था। इस वैमनस्य से लाभ उठाने के लिये राव सीहाजी ने इस

पर अधिकार करने के लिये आक्रमण किया किन्तु बीच मे ही लौटना पडा परन्तु उनके पुत्र ग्रासथान ने खेड पर अधिकार कर के इसको अपनी राजधानी बनाया ।

## खेतड़ी

यह जयपुर राज्य के एक बडे जागीरदार के ठिकाने की राजधानी का नगर है। यहाँ पहाडी पर एक किला है। यहाँ की पहाडी मे तावे की खानें है।

## चाटसू

यह जयपुर राज्य का एक कस्वा है। यहाँ पर डूगरी-शेलर माता का बडा मेला लगता है।

## चित्तौड़गढ

यह दुर्ग पहाडी पर वना हुआ है जो समुद्र की सतह से १८५० फुट ऊँचा है। इसकी लम्वाई लगभग साढे तीन मील और चौडाई करीव आधा मील है। यह अति प्राचीन दुर्ग है। इसको मौर्यवशी राजा चित्रागद ने वनवाया था। मौर्यो के वाद विक्रम की आठवी शताव्दी के अत मे गुहिलवशीय राजा वाप्पा रावल ने अतिम मौर्यवशी राजा मान से छीन लिया था। यह अनेको वार वसा और उजडा है। इस पर कुछ समय तक मालवे के परमारो तथा गुजरात के सोलकियो व मुसलमानो का आधिपत्य भी रहा है। महाराणा उदयसिह के समय वि० स० १६२४ तक यह मेवाड की राजधानी भी रहा है।

## जयपुर

राजस्थान का प्रसिद्ध नगर जयपुर जो २६°५६ उत्तर अक्षाश तथा ७५°५८ पूर्व देशान्तर पर स्थित है। इस नगर को महाराजा सवाई जयसिह द्वितीय ने वि० स० १७८४ पोष वदि १ वुधवार को वसाया था। इसके पूर्व इस राज्य की राजधानी आवेर थी जो वर्तमान राजधानी से ७ मील दूर पहाडियो से घिरा हुआ है। जयपुर नगर अपनी सुन्दरता और वनावट के लिये भारत भर मे प्रसिद्ध है, अत यह भारत का पेरिस कहलाता है। वर्तमान जयपुर समस्त राजस्थान की राजधानी है। आवादी के लिहाज से यह नगर राजस्थान मे सर्व प्रथम है।

## जहाजपुर

यह अति प्राचीन स्थान है। लोगो का कथन है कि जनमेजय का नागयज्ञ यही हुआ था, अत इसका नाम यज्ञपुर हुआ और उसका अपभ्र श जहाजपुर है। नागेला तालाव और नागदी नदी उस यज्ञ की परिचायिका है। जहाजपुर के इर्दगिर्द अनेको प्राचीन स्थान है, जहाँ चौहानो के शिलालेख मिलते है। धौड गाव के रूठी राणी के मन्दिर के वि० स० १२२५ के लेख मे पृथ्वीराज की राणी का नाम सुहवदेवी लिखा है जो रूठी राणी के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अलावा भी वि० स० १२२८ और १२२६ के शिलालेख है। इस कस्वे के लोहारी व आवलदा गावो मे वि० स० १२११ और १२३४ का चौहान राजा वीसलदेव और सोमेश्वरदेव के राज्यकाल के शिलालेख मिले हैं, जिनमे सिंदराज और जेहड की मृत्यु का उल्लेख है।

## जालोर

जोधपुर के जालोर परगने का मुख्य स्थान है और सूकडी नदी के किनारे पर बसा हुआ है। प्राचीन सुदृढ गढ के भग्नावशेष हैं। पहले इसे परमारो ने बसाया था। बाद मे जालोर चौहानो की राजधानी रहा। शिलालेखो के अनुसार इसका नाम जावालीपुर और किले का नाम सुवर्णगिरि मिलता है। यहा की प्राचीन वस्तुओ मे तोपखाना है, जो अलाउद्दीन खिलजी के समय मे चौहानो से मुसलमानो के हाथ मे चला गया। इसके उत्तरी द्वार पर फारसी मे एक लेख है जिसमे मुहम्मद तुगलक का नाम है। इस नगर से जैन तथा हिन्दुओ से सम्बन्ध रखने वाले कई लेख मिले हैं। एक वि० स० ११७४ का बीसल की राणी मेलरदेवी द्वारा सिन्धु राजेश्वर के मदिर पर सुवर्ण कलश चढाये जाने का उल्लेख है। इस प्रकार इसकी प्राचीनता के अनेक शिलालेख मिले है।

## जैतारण

यह प्राचीन स्थान जोधपुर के जैतारण तहसील का मुख्य स्थान है। यहाँ प्राचीन काल मे सीधलो का अधिकार था। किन्तु सूजाजी के पाँचवें पुत्र राव ऊदाजी ने वि० स० १५३९ मे सीधलो को हरा कर जैतारण पर अपना नया राज्य कायम किया था। जैतारण राव ऊदा को सूजाजी ने जागीर के रूप मे नही दिया था वरन् अपने बल-विक्रम से नया राज्य कायम कर के ऊदावत शाखा का इतिहास प्रारम्भ किया। बाद मे जैतारण खालसे हो गया और ऊदावतो को नीबाज मिल गया जो आज भी ऊदावतो का बडा ठिकाना है। जैतारण वि० स० १६१४ मे ऊदाजी के वशजो के हाथ से निकल गया और उस पर मुसलमानो का अधिकार हो गया। मुसलमानो से पुन राठौडो ने जीत लिया।

## जैसलमेर

यह नगर राजस्थान के पश्चिम मे अन्तिम सीमा पर २६°५ उत्तर अक्षाश और ६९°३० पूर्व देशान्तर पर स्थित है। यह नगर इस राज्य की राजधानी है, जिसको चद्रवशी भाटी राजपूत रावल जैसल ने वि० स० १२१२ मे बसाया था। इसका प्राचीन नाम जैसल नगर, बल्लदेश और माड भी मिलता है। ई० स० १२९४ मे बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी ने इस पर आक्रमण कर इस नगर को वीरान कर दिया था। इसके बाद ई० स० १२९९ मे रावल दूदा द्वारा यह पुन आबाद किया गया, किन्तु रावल घडसी के समय मे नगर अधिक उन्नत हुआ।

## जोधपुर

यह मारवाड राज्य की राजधानी था। यह २४°३० व २७°४० उत्तर अक्षाश और ७०° व ७५°२० पूर्व देशान्तर पर स्थित है। इस नगर को राव जोधाजी ने वि० स० १५१५ तदनुसार ई० स० १४५८ मे बसा कर आबाद किया। इसके पूर्व राज्य की राजधानी मडोवर थी जो जोधपुर नगर ६ मील दूर है। यह नगर महाराजा यशवन्तसिह की मृत्यु के बाद कुछ समय तक मुगलो के अधिकार मे भी रहा। किन्तु महाराजा अजीतसिह ने इसे पुन प्राप्त कर लिया, तब से इस पर उन्ही के वशजो का अधिकार रहा। यह आबादी की दृष्टि से राजस्थान का दूसरा नगर है।

## डीडवाना

यह डीडवाने परगने का मुख्य नगर है। चित्तौड के कीर्तिस्तम्भ से ज्ञात होता है कि यह प्रदेश महाराणा कुम्भा के आधीन था और वह यहाँ की नमक की झील व खानो से कर लिया करता था। यह नगर उत्तर रेलवे का रेलवे स्टेशन है। यहाँ के प्राचीन और नवीन मन्दिर व हवेलियाँ देखने योग्य है।

## डूगरपुर

यह नगर भूतपूर्व डूगरपुर राज्य की राजधानी था, जो कि २३°२५" उत्तर अक्षाश और ७३°४०" पूर्व देशान्तर पर स्थित है। इसकी उत्तरी सीमा मेवाड और माही नदी से मिलती है। यह नगर चारो ओर पहाडियो से ढका है जिस पर कि प्राचीन काल मे मेरो का अधिकार था। इन मेरो के स्वामी डू गरिया मेर को मार कर रावल करण के वेटे माहप ने अपना अधिकार कर डू गरपुर नगर बसाया। इस नगर को बसाने मे राहप ने भी सहायता दी थी, यह मेवाड की ख्यातो से प्रमाणित होता है।

## ढूढाड़

ढूँढाड जयपुर राज्य का प्राचीन नाम है। इसके विषय मे कई कल्पनाएँ की गई हैं। हिन्दी विश्व कोश के अनुसार गलता के ढुढु दैत्य से ढूढाड विख्यात है।[1] टाड् साहब के अनुसार जोवनेर के एक प्रसिद्ध शिखर ढूँढ पर चौहान राजा वीसळदेव ने दैत्य रूप मे तपस्या की थी तव से ढूँढाड विख्यात हुआ है।[2] जयपुर से १५ मील उत्तर मे अचरौल के पास की पहाडियो से ढूढ नदी निकलती है। अत सम्भवत इस नदी के नाम पर राज्य का नाम ढूढाड हुआ हो।[3] जयपुर के समीप ढूँढ नाम की एक वस्ती है और उसी के समीप आमेर के पर्वत का एक अति उच्च शिखर ढुढाकृति मे दृष्टिगोचर होता है, इस कारण से भी आमेर राज्य ढूँढाड के नाम से विख्यात हो सकता है।[4]

## तारागढ़

यह इतिहास-प्रसिद्ध दुर्ग राजस्थान के अरावली पर्वतश्रेणी की तारागढ नामक पहाडी पर स्थित है। इसी पहाडी की तलहटी मे अजमेर नगर वसा हुआ है। कहते हैं कि इस दुर्ग का निर्माण छठी शताव्दी मे महाराजा अजयपाल चौहान ने किया था। यह सुदृढ और सुरम्य दुर्ग जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के अधिकार मे भी रहा था। मुगलकाल मे यह मुगलो के अधिकार मे और वाद मे अग्रेजो के अधिकार मे चला गया। इस समय यह दुर्ग भारत सरकार के अधिकार मे है।

## तूरान

फारस के उत्तर पूर्व मे आया हुआ मध्य एशिया का भू-भाग जो तुर्क, तातारी, मुगल आदि जातियो का निवास-स्थान है।

---

१ हिन्दी विश्वकोश, पृष्ठ ९३
२ टाड् राजस्थान, पृष्ठ ५६०
३ वीर-विनोद, भाग २ पृष्ठ १२५०
४ जयपुर का इतिहास, भाग १, पृष्ठ १३, ई० सन् १९३७, हनुमान शर्मा

प्राचीन इतिहास के अनुसार 'शक' तूरानी जाति के ही थे, जिनका ईरान वाले आर्यों से हमेशा युद्ध होता रहता था। ईरानियो ने तूरानियो को पराजित कर कई स्थानो पर अधिकार किया था। प्राचीन तूरानी अग्नि की पूजा करते थे और पशुओ की बलि चढाते थे। वे आर्यों की अपेक्षा असभ्य थे। इन तूरानियो के उत्पातो से एक बार सारा यूरोप और एशिया तग था। भारत पर आक्रमण करने वाले चगेजखाँ, तैमूर, उसमान आदि इसी तूरानी जाति के अन्तर्गत थे, जिन्होने सारे एशिया को अपने अत्याचारो से विचलित कर दिया था।

## दिल्ली

भारत का बहुत प्राचीन और प्रसिद्ध नगर जो यमुना नदी के किनारे बसा हुआ है और बहुत समय तक हिन्दू सम्राटो और मुसलमान बादशाहो की राजधानी रहा। यह नगर १९१२ ई० से ब्रिटिश भारत की राजधानी भी बनाया गया। दिल्ली नगर कई बार बसा और कई बार उजडा। कहते हैं कि इन्द्रप्रस्थ के मयूरवशी राजा दिलू ने सर्व प्रथम इसे बसाया था, इसी से इसका नाम दिल्ली पडा। यह भी प्रवाद है कि राजा अनगपाल के पुरोहित द्वारा इस नगर की नीव रखने के पूर्व एक कीली शेष नाग के फण पर गाडी गई। राजा के द्वारा निकाले जाने पर लहू-धारा निकली तो राजा ने पुन उस कील को गाड दिया पर वह ढीली रह गई जिससे उसका नाम ढीली पड गया जो बिगड कर दिल्ली हो गया। वर्तमान समय मे यह भारत की राजधानी है।

## द्वारका

यह गुजरात व काठियावाड की एक प्राचीन नगरी है। पुराणानुसार यह सात पुरियो मे मानी जाती ह। यह हिन्दुओ के चार धामो मे है। हिन्दू तीर्थ-यात्री यहा आ कर वडी श्रद्धा से द्वारकानाथ की छाप लेते है। राजस्थानी मे इसे द्वारामती, द्वारावती भी कहते है। श्री कृष्ण भगवान जरासध के उत्पातो के कारण मथुरा से यहा आ कर बस गये थे और इसे अपनी राजधानी बना ली थी। इसका दूसरा नाम कुशस्थली भी है।

## नागौर

नागौर इसी विभाग का मुख्य नगर है और राजस्थान के वहुत प्राचीन नगरो मे से एक है। सस्कृत ग्रथो मे इसे अहिछत्रपुर या नागपुर लिखा है। नाम से ही ज्ञात होता है कि यहाँ नागवशियो का राज्य था और यह जागल देश की राजधानी था। बिजोल्याँ 'मेवाड' के वि० स० १२२६ के शिलालेख से ज्ञात होता है कि यह चौहानो के भी अधिकार मे रहा था। यही से जा कर चौहानो ने साभर को अपनी राजधानी बनाया। प्राचीन काल मे साभर, अजमेर और नागौर आदि का राज्य सपादलक्ष कहलाता था, जिसका अपभ्र श रूप सवाळक (सवाळख) है। नागौर के आसपास के भाग को आज भी सवाळख कहते है। नागौर के बरमायो के मदिर के स्तम्भो पर खुदे ई० स० १५६१ के और १५६४-६५ के हसन कुलीखाँ की मसजिद मे और १६७७ के अकवरी मस्जिद के लेख इसकी प्राचीनता के प्रमाण हैं। आईन-ई-अकवरी के लेखक अब्दुल फजल और शेख फैजी नागौर के शेख मुवारक के पुत्र थे

श्रौर श्रकबर की सभा के नौ रत्नो मे थे। यहाँ के कई फारसी लेख शहर के परकोटे की चुनाई मे उल्टे-पुल्टे लगे हुए विद्यमान है।

## नाडोल (नाडूल)

यह बहुत प्राचीन ऐतिहासिक नगर पश्चिमी रेलवे के राणी स्टेशन से १४ मील की दूरी पर है। यह गोडवाड के जैनो के ५ तीर्थो मे से एक है। यह नगर मारवाड के चौहानो की मूल राजधानी थी। कर्नल टॉड को इस नगर से वि० स० १०२४ श्रौर १०३९ के चौहान वश के सस्थापक राजा लक्ष्मण के समय के लेख मिले थे। उसने इनको लदन की रॉयल सोसायटी को प्रदान कर दिया। पुरातत्त्व की दृष्टि से यहाँ का सूरजपोल नामक दरवाजा महत्त्वपूर्ण है। इसे राव लाखण ने बनवाया था। इसके पास ही नीलकठ महादेव का मदिर है जो बहुत प्राचीन है। नगर के बाहर उत्तरी किनारे पर सोमेश्वर का मदिर है जिसमें वि० स० ११४७ का चौहान राजा जोजलदेव के समय का लेख है जिसमे यहाँ का पद्मप्रभ का जैन मदिर भी बहुत प्राचीन श्रौर दर्शनीय है। नगर के बाहर के मदिर श्रब नष्ट प्राय हो गये है।

## नारनौल

पजाब के पटियाला राज्य मे महेन्द्रगढ निजामत के श्रन्तर्गत नारनौळ तहसील का मुख्य नगर जो २८°३'' उत्तर श्रक्षाश श्रौर ७६°–१०'' पूर्व देशान्तर पर छल्लक नदी के किनारे पर स्थित है। पटियाला राज्य मे पटियाला के बाद दूसरा यही महत्त्वशाली नगर रहा है। कहते है कि राजा लूनकरन ने श्रपनी स्त्री नारलौन के नाम पर इस नगर का नाम नारनौळ रखा। किन्तु कई लोगो का मत है कि महाभारत-काल मे दिल्ली के दक्षिणी भाग का देश नर-राष्ट्र कहलाता था। शायद इसी का श्रपभ्र श नारनौल हो। मुसलमान इतिहासकारो का मत है कि यह श्रलतमस के द्वारा बसाया गया था। यह नगर इतिहास-प्रसिद्ध शेरशाह श्रौर इब्राहिम खान की जन्म-भूमि है। इसके दादा की मृत्यु यही हुई थी जिसका स्मारक श्रब भी इस नगर मे मौजूद है। यह नगर श्रनेको बार उजडा श्रौर बसा है। महाराजकुमार श्रभयसिंह ने भी इस नगर को लूटा था।

## पालनपुर

यह नगर श्राबू पर्वत से ३४ मील दूर पाटन जिले में धनेरा के पास माहीकाँटा, सिरोही श्रौर दाँता के पूरब में बनास नदी के किनारे पर स्थित है। इस नगर के श्रासपास सरस्वती श्रादि श्रन्य नदियाँ भी बहती है। यह नगर समतल मैदान में है। नगर से १२ मील दूर उत्तर में ऊँची पहाडियें है जो श्राबू तक चली गई है।

प्राचीन समय में यह नगर प्रह्लादन पाटन के नाम से प्रसिद्ध था। चन्द्रावती के राजा धारावर्ष के भाई प्रह्लादनदेव ने इस नगर को बसाया था। किन्तु इसके नष्ट होने के बाद १४ वी शताब्दी के मध्य में चौहान वश के राजा पालनसी द्वारा पुन बसाया गया। कई लोग इसे पाल परमार द्वारा बसाया हुश्रा मानते हैं। ई० स० १३०३ मे देवडा चौहानो ने श्राबू श्रौर चद्रावती पर श्रधिकार कर लिया था। इसके बाद ई० स०

१३७० में झालोरी (जालोरी) अफगान मलिक युसुफ ने जो विहार का सूवेदार था, मक्का जाते हुए रास्ते में डीसा और पालनपुर पर अधिकार कर लिया। कई लोग इसे वीसलदेव की विधवा पत्नी पोपा वाई से लिया बताते है।

## पाली

यह पाली जिले का मुख्य नगर है। राजपूताने में रेल का प्रवेश होने के पहले यह नगर व्यापार का केन्द्र था। यहाँ के व्यापारियो की कोठियाँ गुजरात के सूरत, माडवी, नवानगर और अहमदावाद तक में थी। पाली के व्यापारी प्राचीनकाल से ही ईरान, अरविस्तान, अफ्रीका, यूरोप आदि देशो से माल मगवाते और यहाँ का माल वहाँ भेजते थे। अव भी यहाँ कपडे की वडी मील है व कपडे की रगाई व छपाई का काम सुन्दर होता है। यहाँ के ब्राह्मण पालीवाल नाम से प्रसिद्ध हुए। इनमे नदवाने वोहरे वडे धनाढ्य थे। यहाँ के प्राचीन मन्दिरो मे सोमनाथ का मदिर मुख्य है। दूसरा आनन्दकरणजी का मदिर है। तीसरा प्राचीन मदिर नौलखा है। यहाँ की मूर्तियो के आसनो पर वि० स० ११४४ से १७०६ तक के जीर्णोद्धार के लेख खुदे है।

## पीछोला

इस झील को विक्रम की १५ वी शताब्दी मे महाराणा लाखा के समय मे पीछोली गाव के निकट बनवाया था। यह उदयपुर के राजमहलो के पश्चिमी किनारे पर विस्तीर्ण सरोवर है। इस झील मे कई छोटे-वडे टापू है, जिन पर भिन्न-भिन्न समय के अनेको सुदर स्थान वने हुए है, जिनमे जग-निवास और जग-मदिर नामक महल जल के मध्य मे बने हुए हैं। इन्हे महाराणा जगतसिंह द्वितीय व महाराणा कर्णसिह ने बनवाया था। जग-निवास की अपेक्षा जग-मदिर प्राचीन है और इसमे ऐतिहासिक सामग्री अधिक है। इसमे प्राचीनता ही है– आधुनिक सजावट दृष्टिगोचर नही होती। पीछोला के दक्षिणी किनारे पर पहाडियो की शृ खला चली गई है जहा मत्स्य शैल पर एकलिंग गढ नामक प्राचीन दुर्ग बना हुआ है। जिससे तालाव की शोभा और भी वढ गई है।

## फतहपुर

शेखावाटी जिले का एक प्रमुख नगर है। यह शेखावत कछवाहो का ठिकाना था। इसको रावराजा लक्ष्मणसिह ने आवाद किया था।

## वदनौर

यह मेवाड राज्य का प्रथम श्रेणी का ठिकाणा है और राठौड वश की मेडतिया शाखा के आधीन है। वदनौर पश्चिमी रेलवे के व्यावर स्टेशन से २६ मील की दूरी पर है। इस नगर के चारो ओर पक्का शहरपनाह है। नगर मे प्रवेश के लिए पूर्व दिशा मे सूरजपोल नामक दरवाजा है। इसके अलावा रेवतजी का दरवाजा और पश्चिम मे चादपोल दरवाजा भी है।

## बांसवाड़ा

यह राजस्थान के साधारण और छोटे नगरो मे है। यह २३°१०" उत्तर अक्षाश और ७४°२" पूर्व देशान्तर पर स्थित है। इसका पश्चिमी भाग ऊपजाऊ और घना बसा हुआ है, शेष भाग चारो तरफ पहाडो और जगलो से घिरा होने के कारण कम आबाद है। इसके आस-पास भीलो की वस्ती अधिक है। प्राचीन शिलालेखो के अनुसार यह नगर वि० स० १५३६ से पूर्व बसाया गया मालूम होता है जिसकी पुष्टि डूगरपुर के चितली गाव से मिले शिलालेख से होती है। अकबर के शासनकाल मे इस पर मुगलो का अधिकार हो गया था किन्तु थोडे ही समय बाद पुन इस पर रावल उग्रसेन ने अधिकार कर लिया।

## बीकानेर

राजस्थान का यह मरुस्थलीय नगर इस प्रदेश के ठीक उत्तर मे २७°१२" उत्तर अक्षाश और ७२°१५" पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। जोधपुर के राव जोधाजी के पुत्र बीकाजी ने वि० स० १५४५ मे इस प्रदेश के जाटो को दबा कर वहाँ एक नगर बसाया जिसका नाम बीकानेर रक्खा और उसे अपनी राजधानी बनाया। इस नगर के आस पास के इलाके को जागल प्रदेश कहते है। इसीलिये यहाँ के राजा जगलधर बादशाह कहलाते थे। यहाँ का पानी खारा है और पानी की बहुत कमी रहती है।

## बुरहानपुर

यह ऐतिहासिक नगर भारत के दक्षिणी भाग मे खानदेश मे स्थित है। मुगलकाल मे यह नगर वाणिज्य का केन्द्र था। फरुखीवश का बादशाह अलीखान के राज्य की राजधानी यही नगर था। यह उस समय रेशम और सूत के व्यापार के लिये प्रसिद्ध था। यह राज्य भारत के प्रसिद्ध सम्राट अकबर के समय मे अलग इकाई के रूप मे था। ई० सन् १५९१ मे शेख-फैजी को अकबर ने अपना राजदूत बना कर बुरहानपुर भेजा था।

सवाई राजा सूरसिह के देहावसान के बाद महाराजा गजसिह का यही राज्याभिषेक हुआ था।

## बून्दी नगर

यह नगर राजस्थान के दक्षिण पूर्व मे स्थित है। यह नगर प्राचीन काल मे एक मुख्य नगर था और कोटा राज्य इसी के अन्तर्गत था। किन्तु ई० सन् १६३१ मे कोटा राज्य अलग हो गया। बादशाह शाहजहाँ ने इसे बून्दी के राव रत्नसिह के दूसरे पुत्र माधवसिह को सौंप दिया। तब से बून्दी और कोटा दो अलग-अलग राज्य हो गये। प्राचीन काल मे बून्दी नगर पर मौर्यवशी राजाओ का अधिकार था। उनसे चौहान वश के हाड़ा राजपूतो ने अपने अधिकार मे कर लिया। यह नगर तीन ओर पहाडियो से घिरा है। इसके उत्तर मे तारागढ नामक सुदृढ दुर्ग बना हुआ है और इसके नीचे ही बून्दी नगर बसा हुआ है। इस दुर्ग को राव नरसिह ने वि० स० १४११ मे बनवाया था।

## भीनमाल (श्रीमाल नगर)

यह जालोर जिले का प्राचीन नगर है जो जसवन्तपुरा से २० मील उत्तर पश्चिम

मे बसा हुआ है। इसको श्रीमाल नगर भी कहते थे। यहाँ के निवासी ब्राह्मण श्रीमाली नाम से अब तक प्रसिद्ध हैं। वि० स० ६६७ के करीब प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वानसाग गुजरात होता हुआ यहाँ आया था। उस समय यह नगर गुजरात की राजधानी था। यहाँ वैदिक धर्म को मानने वालो की सख्या अधिक थी। यह नगर विद्या की भी एक पीठ था। 'ब्राह्मस्फुट-सिद्धान्त' के रचियता ब्रह्मगुप्त ने वि० स० ६८५ मे इसी नगर मे उपरोक्त ग्रन्थ की रचना की थी। 'शिशुपाल-वध' महाकाव्य का कर्ता माघ कवि यही का रहने वाला था। यहाँ अति प्राचीन जय स्वामी नामक सूर्य का मन्दिर है, जिसका जिर्णोद्धार वि० स० ११९७ मे पर-मार वशीय राजा कृष्णराज के समय मे हुआ था। विक्रम की ११ वी शताव्दी के आस-पास बने जैन मन्दिर भी देखने योग्य है।

## मंडोर

यह जोधपुर नगर से ५ मील उत्तर मे है। यहाँ का किला पहाडी पर है। इसका प्राचीन नाम माडवपुर मिलता है। कहते है कि जहाँ पचकुण्ड स्थान है, वहाँ माडव्य ऋषि का आश्रम था। पचकुण्ड के पास ही राजकीय श्मशान है जहा प्राचीन राजाओ और रानियो के स्मारक बने हुए है। मडोर मे भी प्राचीन राजाओ के स्मारक बने हुए है। जिनमे महा-राजा अजीतसिहजी का देवल विशाल और दर्शनीय है। यहाँ से थोडी दूर महाराजा अभय-सिहजी के समय का बना तेतीस करोड देवी-देवताओ का देवालय है, जो एक पत्थर की चट्टान काट कर उसके नीचे बनाया गया है। यहाँ १६ मूर्तियाँ है जिनमे ७ देवताओ की और ६ बडे वीर पुरुषो की है। इनके पास ही काळा-गोरा भैरू व गणेशजी की बडी प्रतिमायें है। मडोर के भग्नावशेषो मे एक जैन मन्दिर भी है जो दशवी शती का प्रतीत होता है। मडोर का बगीचा बडा सुन्दर है। यह पहले नागवशी क्षत्रियो के अधीन रहा, इसी से इसके पास नागकुण्ड और नागाद्रि नदी है। यहाँ प्रतिवर्ष भादो कृष्णा ५ को नागपचमी का मेला लगता है। बाद मे यह प्रतिहारो (ईदो) और उनसे राठौडो को दहेज मे मिला। तब से यहाँ राठोडो का अधिकार हुआ।

## माँडलगढ

मेवाड की राजधानी उदयपुर से १०० मील उत्तर पूर्व मे माँडलगढ का किला है। इसको किसने बनवाया था यह अनिश्चित है। इसकी आकृति मडल के समान होने से ही यह माँडलगढ कहलाया।

यह गढ पहले अजमेर के चौहानो के राज्य मे था, किन्तु बाद मे पृथ्वीराज के भाई हरिराज से कुतुबुद्दीन एबक ने छीन लिया। पुन इसे हाडौती के चौहानो ने अपने अधिकार मे कर लिया। हाडो से यह किला मेवाड के महाराणा खेता के अधिकार मे आया। यह गढ १८५० फुट ऊँची पहाडी पर बना हुआ है। इसके चारो ओर आधा मील लम्बाई का कोट बना हुआ है। गढ मे दो जलाशय भी है जो दुष्काल मे सूख जाते थे, इस कारण इन जला-शयो मे दो कुए खुदवा दिये, जिनमे जल कभी नही टूटता। यहाँ ऋषभदेव का जैन मन्दिर और ऊँडेश्वर और जलेश्वर के शिवालय दर्शनीय हैं।

## मेड़ता

यह एक प्राचीन नगर है। इसका प्राचीन नाम मेडन्तक मिलता है, जिसका अपभ्रंश मेडता है। मडोवर के प्रतिहार सामन्त वाउक ने वि० स० ८९४ मे मेडते को अपनी राजधानी बनाया था। राव जोधाजी के पुत्र राव दूदाजी को यह नगर जागीर मे मिला था। बाद मे इसे राव मालदेव ने जैमल मेडतिया से छीन कर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। अब यहाँ प्राचीन वस्तुओ मे केवल १२ वी शताब्दी के आसपास के दो स्तभ, लक्ष्मी का मदिर व उसकी प्राचीन मूर्तिये शेष है। मुसलमानो के समय की बहुत सी मस्जिदे भी है। यहाँ के जैन मदिर नवीन है किन्तु उनकी मूर्तियें प्राचीन है जिन पर १५ वी व १७ वी शताब्दी के लेख खुदे हुए है।

## रेवा नदी (नर्मदा)

अति वेगवान प्रवाह वाली यह नदी नर्मदा के नाम से प्रसिद्ध है। इसका प्राचीन ऐतिहासिक नाम रेवा है। यह विन्ध्याचल पर्वत की शाखा अमरकटक पर्वत से निकल कर गुजरात के पश्चिमी भाग मे बहती है। गुजरात प्रान्त का एक प्राचीन व्यापारिक नगर भडोच इसी के किनारे पर स्थित है।

## लालकोट

इस नाम के दो प्राचीन किले है जिनमे से एक आगरे मे और दूसरा दिल्ली मे है। इनमे से प्रथम आगरे के किले का निर्माण सम्राट अकबर के समय मे हुआ था किन्तु इस किले मे कुछ इमारतें जहांगीर और शाहजहाँ के समय मे भी बनी थी। दूसरा किला दिल्ली मे शाहजहाँ के समय मे बनवाया गया था। ये लाल पत्थर के बने हुए है।

## विंझगिर (विन्ध्याचल पर्वत)

विन्ध्याद्रि प्रसिद्ध पर्वत श्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य भाग मे पूर्व से पश्चिम को फैली हुई है। यह पर्वत आर्यावर्त देश की दक्षिण सीमा पर है। इसके दक्षिण का प्रदेश दक्षिण पथ कहलाता है। इससे दो प्रसिद्ध नदियें नर्मदा और ताप्ती दक्षिण और पश्चिम दिशा मे बह कर अरब की खाडी में गिरती है। इस पर्वत की अनेक शाखाएँ सतपुडा, हिन्दकुश आदि नाम से विख्यात है। पुराणानुसार यह सात कुल पर्वतो मे है और मनु के अनुसार मध्य प्रदेश की दक्षिणी सीमा है। यह पर्वत अनेक प्रकार की वनस्पतियो और फल-फूलो से भरा पडा है। इसी पर्वत के भाग मे एक टीले पर विन्ध्यवासिनी का मदिर है जो अति प्राचीन प्रतीत होता है।

## सखोधार (शंखोद्धार)

यह प्राचीन भू-भाग द्वारिकापुरी के निकट है और ओखा मडल के नाम से प्रसिद्ध है। पहले यह प्रसिद्ध बदरगाह था और ओखापोर्ट कहलाता था।

राव आसनाथजी के तीसरे भाई अज ने यहाँ के शासक (स्वामी) भोजराजजी को मार कर अपना अधिकार कर लिया। अज ने स्वय अपने हाथ से वहाँ के राजा का मस्तक

काटा था, इसलिए उसके वश के लोग वाढेल राठोड के नाम से प्रसिद्ध हुए जो अब भी उस भाग मे कही-कही आबाद हैं।

## सफरा (क्षिप्रा नदी)

भारतीय इतिहास की यह प्रसिद्ध नदी विन्ध्याद्रि पर्वतमाला की क्षिप्र नामक झील से निकल कर मध्य भारत मे बहती है। मालव प्रदेश का प्राचीन नगर उज्जयिनी इसी के किनारे है। राठोड वश के देश-भक्त व पराक्रमी वीर दुर्गादास ने अपने जीवन का अतिम समय यही व्ययतीत किया था और उनकी मृत्यु भी इसी के किनारे पर हुई थी। आज भी उनकी छत्री यहाँ मौजूद है।

## सरस्वती नदी

यह नदी माही काँटा से निकल कर पालनपुर के दक्षिणी भाग मे सिद्धपुर के पास से बहती हुई कुछ दूर पाटण के पास भूमि के अन्दर ही अन्दर बहती है। वहाँ से बनास के साथ साथ अनवरपुर के दक्षिण मे बहती हुई पाटण मे आती है।

यह वर्षा ऋतु मे तेजी से बहती है। शेष समय मे इसकी धारा बहुत क्षीण और मद गति से चलती है और रेतीली भूमि के अन्दर ही अन्दर बहती हुई कच्छ के रन मे गिरती है। इसे सस्कृत मे अन्त सलिला कहते हैं।

## साभर

यह नगर जोधपुर और जयपुर राज्यो की सीमा पर राजपूताने मे २६°-५५ 'उत्तर अक्षाश और ७५°११' पूर्व देशान्तर साभर झील के किनारे बसा हुआ है। यहाँ की प्रमुख साभर झील जो समुद्र की सतह से १२०० फुट ऊँचाई पर है, भरने पर इसका क्षेत्रफल ९० वर्गमील हो जाता है। यहाँ का नमक भारत मे सब जगह प्रसिद्ध है। यहाँ चौहानो की कुल देवी शाकभरी का प्राचीन मदिर है। इसीलिए शाकभरी का परिवर्तित रूप नाम साँभर पडा। यह नगर ८ वी शताब्दी से ही चौहानो की प्रधान राजधानी माना जाता है। अतः आज भी चौहानो को साँभर राव, साँभरी, सभरी आदि से सम्बोधित करते है। यह १३ वी शताब्दी से १७०८ ई० तक मुसलमानो के अधिकार मे रहा। बाद मे जोधपुर और जयपुर के शासको ने पुनः इसे अपने अधिकार मे कर लिया।

## साहजहांपुर (शाहजहाँपुर)

यह नगर आगरे के पास हरदोई जिले मे है। प्राचीन समय मे यह वैभवशाली नगरो मे से एक था किन्तु अब यह साधारण नगर है। जोधपुर के महाराजकुमार अभयसिहजी ने आगरे की ओर जाते हुए इस नगर को लूटा था और इसे बिलकुल नष्ट कर दिया था।

## सिरोही

शिवभाण के पुत्र सहसमल्ल गद्दीनशीन होकर सहसमल के नाम से प्रसिद्ध हुए। इन्होने वि० स० १४८२ (ई० स० १४२५) मे वैशाख सुदी २ को वर्तमान सिरोही नगर बसाया। यह शहर सिरणवा नामक पहाडी के नीचे बसाया हुआ है और पूर्व सिरोही

राज्य की राजधानी है। यह पश्चिमी रेलवे के पिंडवाडा स्टेशन से १६ मील दूर है। महाराव सेसमल ने इसे बसाया था। राजमहल पहाड पर बसे हुए है जिनका सौन्दर्य दूर-दूर से दिखाई देता है। इनमें से मुख्य और पुराना हिस्सा (भाग) जो अपने सौंदर्य के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध है महाराव अखेराज ने बनाया था। शेष हिस्से भिन्न-भिन्न समय मे बने हुए है। राजमहलो के नीचे थोडी दूर पर जैन-मंदिरो का समूह है। जो देरासरी नाम से प्रसिद्ध है। इन जैन-मदिरो मे चौमुखीजी का मन्दिर मुख्य है जो विक्रम स० १६३४ (ई० स० १५७७) मार्गशीर्ष सुदी ५ को बना था। यहाँ शिव और विष्णु के मन्दिर भी है। शहर के निकट मान-सरोवर नामक एक वडा तालाव भी है जो अति सुदर है।

## सिवपुरी (शिवपुरी)

महाराव सिवभाण ने जिनका नाम शोभा था सिरणवा नामक पहाडी के नीचे वि० स० १४६२ मे सिवपुरी नामक नगर वसाया और उक्त पहाडी पर किला भी बनवाया। यह शहर महाराव सिवभाण के नाम से सिवपुरी कहलाया गया जो वर्तमान सिरोही से अनुमानत. दो मील पूर्व मे खण्डहर के रूप मे अद्यावधि विद्यमान है जिसको लोग पुरानी सिरोही कहते है। कालान्तर मे यही सिवपुरी सिरोही कहलाया जाने लगा।

## सूरत

यह गुजरात का एक प्रसिद्ध बन्दरगाह था। थेवनोट (Thevenot) के लेखानुसार १६६६ मे इसकी आमदनी १२००००० थी। यह बडा समृद्धिशाली नगर था। इसका किला ताप्ती नदी पर बना हुआ है जो समुद्र तट से १२ मील दूर है। ह्वेनसाग के कथनानुसार 'सूरत' या 'सौराष्ट्र' सातवी सदी मे उत्थान की चरम सीमा पर था। उस समय यह नगर इस प्रायद्वीप के सम्पूर्ण भाग को घेरे हुए था और वल्लभी नगर भी इसी के अन्तर्गत था। प्राचीन लेखानुसार इसकी ख्याति भी पूर्ण प्रायद्वीप के लिए सन् ६४० तक थी।

## सोजत

इस तहसील का मुख्य नगर है। यह पश्चिमी रेलवे के सोजत रोड स्टेशन से करीब ६ मील दूर है। इसका सुदृढ प्राचीन किला पहाडी पर बना हुआ है। यहाँ प्राचीन समय मे सोनगरा वश के चौहानो का अधिकार था। बाद मे महाराजा अजीतसिंह ने इसे अपने कब्जे मे कर लिया जो बहुत समय से राठोडो के अधिकार मे रहा।



# परिशिष्ट ४

**[सूरजप्रकाश के तीनों भागों में आये हुए ऐतिहासिक, पौराणिक और साहित्यिक व्यक्तियो का परिचय]**

## अधक

इसकी उत्पत्ति पार्वती के पसीने से बताते है। हिरण्याक्ष के तप से प्रसन्न होकर शिव ने इसे यही पुत्र दिया था। इसके सहस्र बाहु, सहस्र सिर और दो सहस्र नेत्र थे। यह अधो की तरह झूम-झूम कर चलता था। इसीसे अधक कहलाया। पार्वती की अवज्ञा के कारण शिव का इससे घोर युद्ध हुआ। इसके रक्त-बिन्दुओ से अनेको राक्षस पैदा होने लगे। तब मातृका की उत्पत्ति की गई जो रक्त को पी जाती थी। मातृका के तृप्त होने पर पुन नये अधक पैदा होने लगे। विष्णु की युक्ति से सारे अधक विलीन हो गये। मुख्य अधक को शिव ने त्रिशूल पर लटका दिया। स्तुति करने पर शिव ने उसको गनाधिपत्य बनाया। मतातर से यह दिति का पुत्र था। जब दिति के समस्त पुत्रो का वध हो गया तब दिति की प्रार्थना पर अधक की उत्पति हुई। यह इतना अत्याचारी हुआ कि इसके आतक से त्रैलोक काँप उठा। अत मे यह शिव के हाथो मारा गया।

## कल्याणदास मेहड़ू

ये डिंगल के कवि मेहडू जाडा के पुत्र थे और जोधपुर के महाराजा गजसिंहजी के कृपा-पात्रो मे थे। ये असाधारण गुण-सम्पन्न प्रतिभावान व्यक्ति थे। इनकी रचनाएँ अधिकतर वीर जातियो और वीर पुरुषो की प्रशसा मे लिखी मिलती है। इनकी असाधारण काव्य-प्रतिभा के कारण ही महाराजा गजसिंहजी ने इनको लाख पसाव प्रदान किया था।

बूदी के वीर हाडा राव रतनसिंह पर लिखी हुई कविता "राव रतनसिंह री वेलि" इनकी प्रसिद्ध रचना है।

## कवि भारवि

जीवन परिचय :— पह्लव राजा सिंह विष्णु वर्मा का सभा-पण्डित था। इसका रचित ग्रन्थ किरातार्जुनीय महाकाव्य है। इसके चरित्र के विषय मे लोगो को बहुत कम मालूम है। अवन्ति सुन्दरी कथा के अनुसार भारवि का दूसरा नाम दामोदर था। यह कौशिक गोत्रीय नारायन स्वामी का पुत्र था। यह एलिचपुर (Ellichpore) का था। इसका समय ई० स० ५७० का अनुमान किया जाता है। ई० स० ६३४ के आपहोल के शिलालेख मे कालि-दास के साथ इसका भी नाम खुदा है। इसलिये सप्तम शतक के आरभ मे भारवि की कीर्ति प्रसृत थी। कीथ के कथनानुसार ई० ६६० के लगभग रचित काशी के वृत्ति ग्रथ मे भारवि का निर्देश आया है। इसलिये यह मान लेना आवश्यक होगा कि ई० ६२४ के कम से कम

१०० वर्ष पहले भारवि विद्यमान था। आपहोल के शिलालेख से यह भी अनुमान हो सकता है कि भारवि दक्षिण का निवासी था। कीथ ने भारवि का समय ई० स० ५०० के लगभग माना है। दूसरे ५५० के लगभग मानते है।

## कालयवन

यह वडा पराक्रमी राजा हुआ है। इसके जन्म के विषय मे यह कथा प्रचलित है कि महर्षि गार्ग्य को यादवो ने भरी सभा मे नपुसक कह कर अपमानित किया था। इससे क्षुब्ध हो गार्ग्य ने वारह वर्ष तक केवल लोहचूर्ण खा कर पुत्रप्राप्ति के लिये शिव की घोर तपस्या की। इसी के फलस्वरूप गोपाली नाम की अप्सरा के गर्भ से कालयवन का जन्म हुआ। इसका पालन एक यवन राजा ने किया था, इसी से इसका नाम कालयवन पडा। काल बडा पराक्रमी था। इसने जरासध के साथ यादवो पर आक्रमण किया, जिससे भयभीत हो सारे यादव कृष्ण के कहने से द्वारिका भाग गये। स्वय कृष्ण भी हिमालय मे जा छिपे। कालयवन भी कृष्ण का पीछा करता हुआ वहाँ पहुँचा, जहाँ मान्धाता का पुत्र मुचकुद सो रहा था। इसने मुचकुद को ही कृष्ण समझ कर पाँव की ठोकर मार कर उसे जगाया। निद्रा भग होने पर मुचकुद ने नेत्र उठा कर कालयवन की ओर देखा जिससे वह भस्म हो गया।

## किसनाजी आढ़ा

दुरसा आढा का पुत्र महान् प्रतिभावान् कवि किसनाजी आढा महाराजा गजसिंह का कृपापात्र था। इसकी फुटकर रचनाये व गीतो का सग्रह मिलता है। इसकी कविता से प्रभावित हो कर महाराजा गजसिंह ने इसको सोजत तहसील का गाव पाचेटिया प्रदान किया।

## केसोदास गाडण

यह गाडण शाखा का चारण कवि था। इसका जन्म जोधपुर राज्यान्तर्गत गाडणो की बासणी मे सदामल के घर वि० स० १६१० मे हुआ था। यह सदैव साधुओ की तरह गेरुआ वस्त्र पहिनता था। "वेलि कृष्ण रुक्मणी री" के रचयिता राठौड पृथ्वीराज ने इसकी प्रशसा मे यह दोहा कहा था—

> 'केसौ' गोरख नाथ कवि, चेलौ कियौ चकार।
> सिध रूपी रहता सवद, गाडण गुण भडार ॥१॥

केसोदास जोधपुर के महाराजा गजसिंह के कृपापात्रो मे था। गुण रूपक वध' की रचना पर प्रसन्न हो कर महाराजा गजसिंह ने इसको लाख पसाव का पुरस्कार दिया था। इसके रचित ग्रथ (१) गुण रूपक वध, (२) राव अमरसिंह रा दूहा, (३) नीसाणी विवेक वारता, (४) गज गुण चरित्र आदि है।

## माघ कवि

इसका समय ई० स० ६६० से ६७५ तक का माना है। सस्कृत साहित्य की प्राचीन

परम्परा में माघ कवि की अत्यन्त प्रशसा की गई है। इसका विरचित 'शिशुपाल-वध' नामक एक महाकाव्य उपलब्ध है।

माघ कवि ने अपने विषय मे बहुत कुछ कहा है। इसके पिता दत्तक सर्वाश्रय और पितामह सुप्रभदेव थे। यह सुप्रभदेव राजा वर्मलात का मंत्री था। इस राजा का उल्लेख ई० स० ६२५ के एक शिलालेख में विद्यमान है इसलिए माघ कवि का समय इसके अनुसार सप्तम शतक का उत्तरार्ध (ई० स० ६५० से ७००) निश्चित होता है। यह कवि गुर्जर देश की उत्तर सीमा पर दक्षिण मारवाड मे आबू पहाड और लूनी नदी के बीच में विद्यमान भीनमाल या श्रीमाल नगर मे जन्मा था। इसी गाव का निवासी प्रसिद्ध ज्योतिषी ब्रह्मगुप्त भी था। यह माघ कवि चित्तौड के राजा द्वितीय भोज का समकालीन था। भोज नाम के तीन राजा हुए है। द्वितीय भोज चित्तौड में ई० स० ६५० से ६७५ तक राज्य करता था। माघ श्रीमाली ब्राह्मण था। यह बडा ही दानी था। इसने अन्त समय मे भी दान देकर ही प्राण छोडा था।

## माधोदास दधवाड़िया

केसोदास गाडण के समकालीन भक्त कवियो मे माधोदास दधवाडिया का नाम भी बडे आदर के साथ लिया जाता है। इसका जन्म जोधपुर राज्य के बलूदा ग्राम मे हुआ था। इसके पिता का नाम चूडाजी था। इसका जन्मकाल निश्चित तो नही है पर कई विद्वान अपनी अटकल से वि० स० १६१० और १६१५ के मध्य मानते है। जोधपुर के नरेश सूरसिह इसके आश्रयदाता था। पृथ्वीराज राठौड से भी इसका परिचय था। 'वेलि' को सुन कर यह बडा प्रसन्न हुआ और मुक्त कठ से इसकी प्रशसा की, इस पर पृथ्वीराज ने भी इसकी प्रशसा मे यह दोहा कहा—

चूडै चत्रभुज सेवियो, ततफळ लागो तास।
चारण जीवो चार जुग, मरो न माधोदास॥

इसका रचनाकाल सत्रहवी शताब्दी का मध्य माना जाता है किन्तु मिश्र बधुओ ने वि० स० १६६४ माना है। जीवन के अतिम काल मे यवन इसकी गायें चुरा कर ले गये। पता लगने पर अपने पुत्र सहित उनका पीछा किया और उनसे युद्ध करते हुए वि० स० १६६० मे वीरगति को प्राप्त हुआ।

## मुंणोत नैणसी

नैणसी का जन्म वि० स० १६६७ (ई० स० १६१० ता० ६ नवम्बर) को हुआ था। इसका पिता जयमल महाराजा गजसिह के शासनकाल मे राज्य के दीवान था। नैणसी भी वीर, विद्यानुरागी, नीतिज्ञ और इतिहास-प्रेमी व्यक्ति था। इसने राज्य के विद्रोही सरदारो का दमन कर के अपनी वीरता का परिचय दिया। उसका लिखा हुआ ऐतिहासिक ग्रथ 'नैणसी री ख्यात' के नाम से प्रसिद्ध है। इसमे राजपूताना, गुजरात, काठियावाड, कच्छ, मध्यभारत, बघेलखड और बुदेलखड के इतिहास की पूर्ण सामग्री है। नैणसी का अन्य ग्रथ 'जोधपुर राज्य का गैजेटियर' है जिसमे इस राज्य के सारे परगनो का हाल है। यही नही नैणसी ने जोधपुर की फसलो और आमदनी के लिहाज से मर्दुमशुमारी कर रेखचाकरी नियत की।

इसी कारण से नैणसी को राजपूताने का अब्दुल फजल कहा जाता है। ऐसे वीर पुरुष ने वि० स० १७२७ (ई० स० १६७० मे) अपने पेट मे कटार मार कर शरीरात कर दिया।

## राजसिंहजी बारहठ

महाराज गजसिंह के समय के प्रसिद्ध कवि राजसी गाव जालीवाडा के रहने वाले थे। इसकी मृत्यु पर महाराजा गजसिंह ने बहुत शोक प्रकट किया। एक समय दिल्ली जाते हुए महाराजा की सवारी जालीवाडे से निकली तो महाराजा को बारहठ राजसिंह की याद आ गई। महाराजा हाथी से उतरे और चार दोहे मरसिए के कहे—

इण खूनी रहमाण सू, परतन लागौ पाण।
रतन अमोलक 'राजसी,' जो किम दीजे जाण ॥ १
हथ जोडा रहिया हमै, गढवी काज गरत्थ।
ऊ 'राजड' छत्रधारिया, गयौ जोडावण हत्थ ॥ २
'रोहड' रूपग रच्चणौ, मो वस करणौ मन्न।
मुरधर रयणायर माह, 'राजड' गयौ रतन्न ॥ ३

## हेम सामोर

कवि हेम, सामोर गोत्र का चारण वीकानेर राज्यान्तर्गत सीथल गाव का निवासी था। यह जोधपुर के महाराजा गजसिंह का कृपा-पात्र था। सस्कृत, प्राकृत और फारसी का विद्वान् होने के कारण इसका विशेप सम्मान था। इसका रचनाकाल सवत् १६८५ के आसपास माना जा सकता है। इसका लिखा हुआ 'गुण भाखा चरित्र' नामक ग्रथ मिलता है जिसमे महाराजा गजसिंह का चरित्र वर्णित है।

## लखौ बारहठ

यह रोहडिया शाखा के चारण मारवाड राज्य के साकडा परगने के गाव नानणियाई के रहने वाले थे। यह बादशाह अकबर के कृपापात्रो मे थे। ऐसा कहा जाता है कि बादशाह अकबर ने इनको मथुरा के पास साढे तीन लाख की जागीर प्रदान की थी, और इसे 'वरण पातसाह' की उपाधि भी दी थी। इनका रचित 'पाबू-रासौ' प्रसिद्ध है। जोधपुर के महाराजा सूरसिंह ने इन्हें लाख पसाव दिया था।

## संकर बारहठ

सतरहवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध के कवियो मे बारहठ सकर भी उल्लेखनीय कवि हुए है। ये रोहडिया शाखा के चारण थे। वि० स० १६४३ मे जोधपुर के महाराजा उदयसिहजी के समय राज्य के चारणो ने आऊवा गाव मे धरना दिया था उसमे ये भी मौजूद थे। वीकानेर के प्रसिद्ध राजा रायसिंह द्वारा इनको सवा करोड का दान दिया गया था जो सर्व प्रसिद्ध है। जोधपुर महाराजा सूरसिंह ने इसकी रचनाओ से प्रभावित होकर इसको लाख पसाव दिया था।

## खेतसी लालस

शेरगढ तहसील का गाव जुडिया के रहने वाला था। महाराजा सूरसिंह और उसके

बाद महाराजा गजसिंह का कृपापात्र रहा। महाराजा गजसिह ने अपने समय के प्रसिद्ध व प्रतिभावान पन्द्रह कवियो को लाख पसाव प्रदान किए उनमे से एक यह भी था। इसको जोधपुर तहसील का गाव भाटिलाई प्रदान किया गया। यह गाव अब तक इसके वशजो के अधिकार मे रहा।

## चाणूर

यह वडा पराक्रमी राक्षस हुआ है। यह कस का अनुचर था। भागवत पुराण की कथा के अनुसार यह पिछले जन्म मे मय नामक दानव था। यह मल्ल युद्ध मे वडा निपुण था। कृष्ण को मारने के लिये कस ने इसको धनुपयज्ञ के समय मुख्य द्वार पर रक्षक के रूप मे रक्खा था, जहाँ इसने कृष्ण को मल्ल युद्ध के लिये ललकारा था। कृष्ण ने वही पर चाणूर का वध किया। इसीलिये कृष्ण को चाणूर-सूदन भी कहते है।

## जालधर (जलधर)

शिव के तृतीय नेत्र की अग्नि से उत्पन्न एक अति पराक्रमी राक्षस था। एक समय इन्द्र शिव के दर्शनार्थ कैलाश गया, वहाँ एक भयकर पुरुष को बैठे देखा, उससे पूछने पर कुछ भी उत्तर न मिला तो इन्द्र ने वज्र-प्रहार किया, जिससे वह नीलकठ हो गया और भाल का तृतीय नेत्र खुल गया। उसकी ज्वाला इन्द्र को भस्म करने लगी। इन्द्र की प्रार्थना पर शिव ने वह ज्वाला समुद्र मे फेक दी। उससे एक बालक पैदा हुआ जिसके रोने की ध्वनि से ससार वहरा हो गया। उसे ब्रह्मा को सौपा गया। उसने ब्रह्मा की गोद मे लेटे-लेटे ब्रह्मा की मूछ नोच दी। उसका नाम जालधर रखा और वर दिया कि शिव के सिवाय उसे कोई मार न सके। इसकी उत्पत्ति गगा के व समुद्र के सयोग से भी वताते हैं। ब्रह्मा ने इसे असुरो का राज्य दिया। मय दैत्य ने इसकी राजधानी की रचना की। वृन्दा के साथ इसका विवाह हुआ। पार्वती के रूप से मुग्ध हो इसने कैलाश पर आक्रमण किया। उस समय विष्णु ने जालधर का रूप बना वृन्दा के सतीत्व को नष्ट कर के चक्र द्वारा इसका सिर छेदन किया। वृन्दा सती हो गई और शाप दिया कि त्रेता मे विष्णु की पत्नी राक्षस द्वारा अपहरण की जायेगी और विष्णु को वन-वन भटकना पडेगा। जालधर के शव से निसृत तेज शिव के तेज मे विलीन हो गया।

## दक्ष प्रजापति

सती इनकी पुत्री थी। ये कारणवश शिव से द्वेष रखते थे। एक समय दक्ष के द्वारा रचित यज्ञ मे शिव का भाग नही रखा गया, न उन्हे निमन्त्रित ही किया गया। सती विना निमन्त्रित किये भी अपने गणो को साथ लेकर पिता दक्ष के यज्ञ मे गई। वहाँ शिव का भाग न देख कर अति क्रोधित हुई। उसी समय यज्ञ कुण्ड मे कूद कर जीवन का अत कर दिया। शिव के गणो ने दक्ष के यज्ञ को विध्वस कर दिया।

## दुरसो आढ़ौ

दुरसा आढा गोत्र के चारण मेहा का पुत्र था। इसका जन्म सवत् १५९२ मे जोधपुर राज्य के धूदला गाव मे हुआ था। इसकी माता धनीवाई ने जो बोगसा गोविन्द की वहिन

थी, निर्धनता के कारण इसका पालन-पोषण वडी कठिनता से किया। बगडी ठाकुर प्रताप-सिंह सूडा द्वारा इसका पालन-पोषण व शिक्षा-दीक्षा हुई। इसी का एक दोहा निम्न है—

माथै मावीताह, जनम तणौ क्यावर जितौ।
'सूडौ' मुध पाताह, पाळणहार प्रतापसी ॥

इसको बीकानेर के राजा रायसिह द्वारा चार गाव, एक करोड का पुरस्कार और एक हाथी प्राप्त हुआ था। काव्यरचना के फलस्वरूप दुरसा को धन, यश एव सम्मान बहुत प्राप्त हुआ। अकबर के दरबार मे भी इसकी बहुत प्रतिष्ठा थी। इसके रचित ग्रथो मे 'विरुद छिहत्तरी, किरतार बावनी, श्री कुमार अजाजीनी भूचरमोरी नी गजगत' प्रसिद्ध हैं। यह हिन्दू धर्म, हिन्दू जाति और हिन्दू सस्कृति का अनन्य उपासक था। राजस्थानी साहित्य मे दुरसा का स्थान बहुत ऊँचा है।

## नरहरदास (नरहरिदास)

यह रोहडिया गोत्र के चारण लक्खा का पुत्र था। इसका जन्म वि० सवत् १६०० के उत्तरार्द्ध मे हुआ था। अठारहवी शताब्दी के प्रारम्भिक काल के भक्त कवियो मे इसका नाम उल्लेखनीय है। इसका लिखा हुआ 'अवतार चरित्र' एक प्रसिद्ध ग्रथ है। इसके अतिरिक्त कवि की राजस्थानी मुक्तक रचनाये भी उपलब्ध हैं। 'अमरसिंह रा दूहा' और अनेक फुटकर गीत इसकी काव्य-प्रतिभा का प्रमाण देने मे पूर्ण समर्थ है। भक्ति इसका मुख्य विषय था।

## मल्लिनाथ

प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ का समय ई० की १४वी शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना गया है। इसका पूरा नाम 'कोलाचल मल्लिनाथ सूरि' था। कृष्णमाचारी के अनुसार यह तेलगु ब्राह्मण था। इसने कई सस्कृत काव्यो की टीका की है। इसके रचित काव्यो मे 'रघुवीर चरित' महाकाव्य है जिसमे राम के वनगमन से लेकर राज्याभिषेक तक की कथा है।



# परिशिष्ट ५

## (यवनराज्य की कुछ विशेष बातें)

### जेजियौ (जजिया कर)

यह एक धार्मिक कर था जो इस्लाम को स्वीकार नही करने वाले नागरिको पर लगाया जाता था। इस्लाम के अनुसार खलीफा धर्म और राज्य दोनो का सचालक माना जाता था। उनका धर्म-ग्रन्थ कुरान ही धर्म और कानून दोनो का प्रतिपादक ग्रन्थ माना जाता है। मुसलमान जिस देश को विजय करते थे वहाँ के नागरिको से जो इस्लाम को मजूर नही करते थे उनसे एक प्रकार का कर लिया जाता था, जो जजिया कहलाता था। यह कर आमदनी के अनुसार लिया जाता था। यह अधिक आमदनी वालो को अधिक और कम आमदनी वालो को कम देना पडता था।

### नवरोजौ (नौ रोज का मेला)

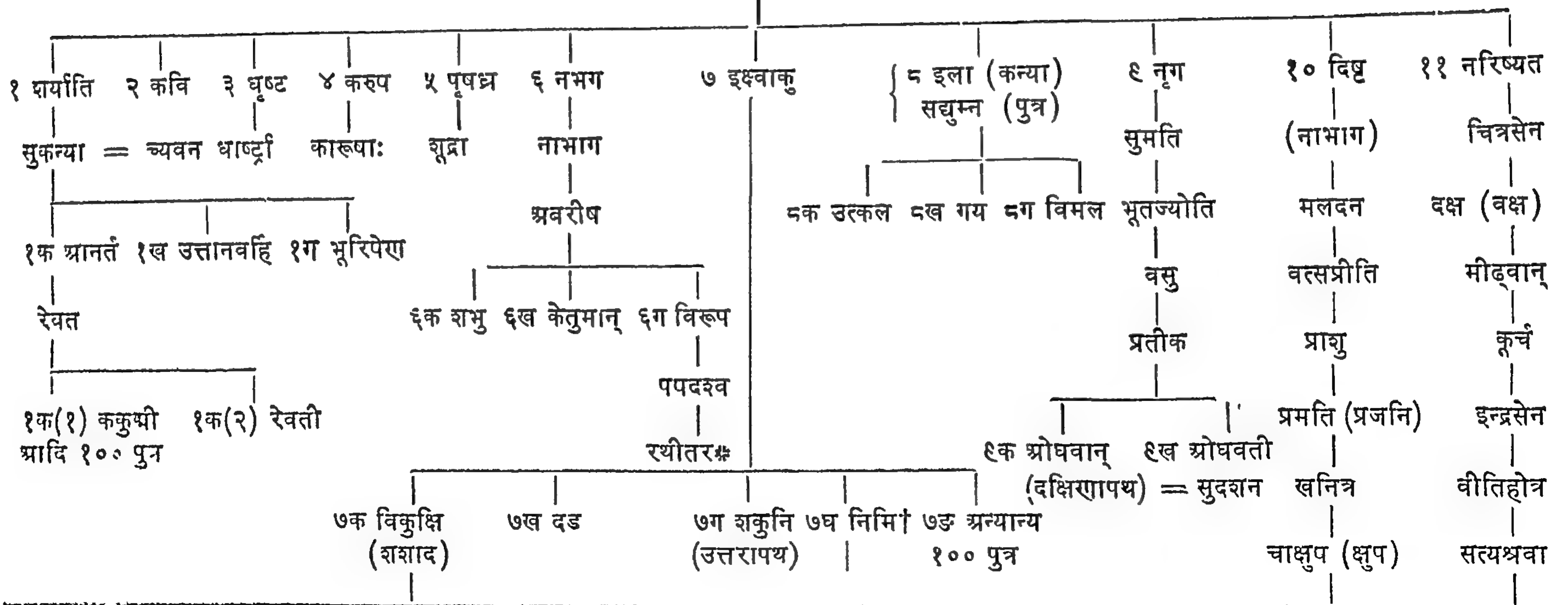
यह मुसलमानो का धार्मिक उत्सव था, जो ईरानी प्रथा के अनुसार प्रति वर्ष, वर्ष के प्रारभ के दिन से मनाया जाता था। पहले यह उत्सव ६ दिन तक चलता था। भारत मे यह उत्सव अकबर ने ही अपने राज्य मे प्रारभ किया था और उसने १६ दिन तक बढा दिया था। मुगल शाही के युग मे यह उत्सव गर्मियो मे मनाया जाता था। इस उत्सव मे स्त्रियाँ और पुरुष समान रूप से सम्मिलित होते थे, किन्तु इनके स्थान अलग-अलग होते थे। उस उत्सव के अवसर पर सम्राट् का शानदार दरबार लगता था। इस अवसर पर प्रदर्शनी भी लगती थी। इस नुमाइश मे मुगल कारीगरी की अनेको वस्तुऐ बिकने आती थी। इस उत्सव मे मुगल साम्राज्य के अधीनस्थ राजा भी शरीक होते थे।



# परिशिष्ट ६

## सूर्य-वंश

[ग्रंथ के प्रथम भाग मे आए हुए सूर्यवंश का पुराणानुसार वंश-वृक्ष]




* आंगिरस ब्राह्मण इन्ही की भार्या से उत्पन्न हुए थे।

† इन्होने एक हजार सावत्सरिक सत्र किये थे।

**७क**
- ककुत्स्थ (पुरजय)
- अनेनाः
- पृथु
- विश्वगश्व (विष्टराश्व-विश्वगन्धि)
- आर्द्र
- युवनाश्व (प्रथम)
- शावस्त (श्रावस्त)‡
- बृहदश्व
- कुवलयाश्व (धुधुमार)
  - ७क(१) कपिलाश्व
  - ७क(२) भद्राश्व
  - ७क(३) दृढाश्व
    - प्रमोद
    - हर्यश्व (प्रथम)

**७घ**
- मिथि (जनक)
- उदावसु*
- नन्दिवर्धन
- सुकेतु
- देवरात
- बृहदुक्थ (बृहद्रथ)
- महावीर्य
- धृतिमत
- सुधृति
- धृष्टकेतु
- हर्यश्व
- मरु

**१०**
- विश
- विविंश
- खनीनेत्र
- करन्धम
- अविक्षित
- मरुत्त (चक्रवर्ती)
- नरिष्यत
- दम
- राष्ट्रवर्धन (राज्यवर्धन)
- सुधृति
- नर
- केवल

**११**
- ऊरुश्रवा
- देवदत्त अग्निवेश्य या कानीन या जातूकर्ण्य

---

* इन्होने एक हजार सावत्सरिक सत्र किये थे।

‡ श्रावस्ती नगरी बसाई।

- ७क(३)
  - त्रिकुक्ष
    - [illegible] ([illegible])
      - ७क(३१) [illegible] (रानी [illegible])
        - प्रसेनजित (सेनजित)
          - युवनाश्व (रानी गौरी)
            - मान्धाता (बिन्दुमती)
              - अम्बरीष ७क(३।१।अ)
                - यौवनाश्व
                  - हरित
                    - हारीताः
              - पुरुकुत्स (नर्मदा) ७क(३।१।आ)
                - त्रसद्दस्यु
                  - सम्भूत
                    - अनरण्य
              - मुचुकुन्द ७क(३।१।इ)
              - ५० कन्या (सौभरि) ७क(३।१।ई)
                - १५० सौभरेयाः‡
      - ७क(३२) [illegible]

- ७ख
  - प्रतीपक ([illegible])
    - कृतिरथ
      - देवमीढ
        - विबुध ([illegible])
          - महाधृति
            - कृतिरात
              - महारोमा
                - स्वर्णरोमा
                  - ह्रस्वरोमा
                    - सीरध्वज (जनक)
                      - कुशध्वज
                        - धर्मध्वज

- १०
  - [illegible] ([illegible])
    - वेगवान्
      - बुध ([illegible])
        - तृणबिन्दु ([illegible])
          - विशाल
            - हेमचन्द्र
              - सुचन्द्र
                - धूम्राश्व
                  - सृञ्जय ([illegible])
                    - सहदेव
                      - कृशाश्व

‡ उत्तर-पूर्व एशिया मे साइबेरिया के राजागण।

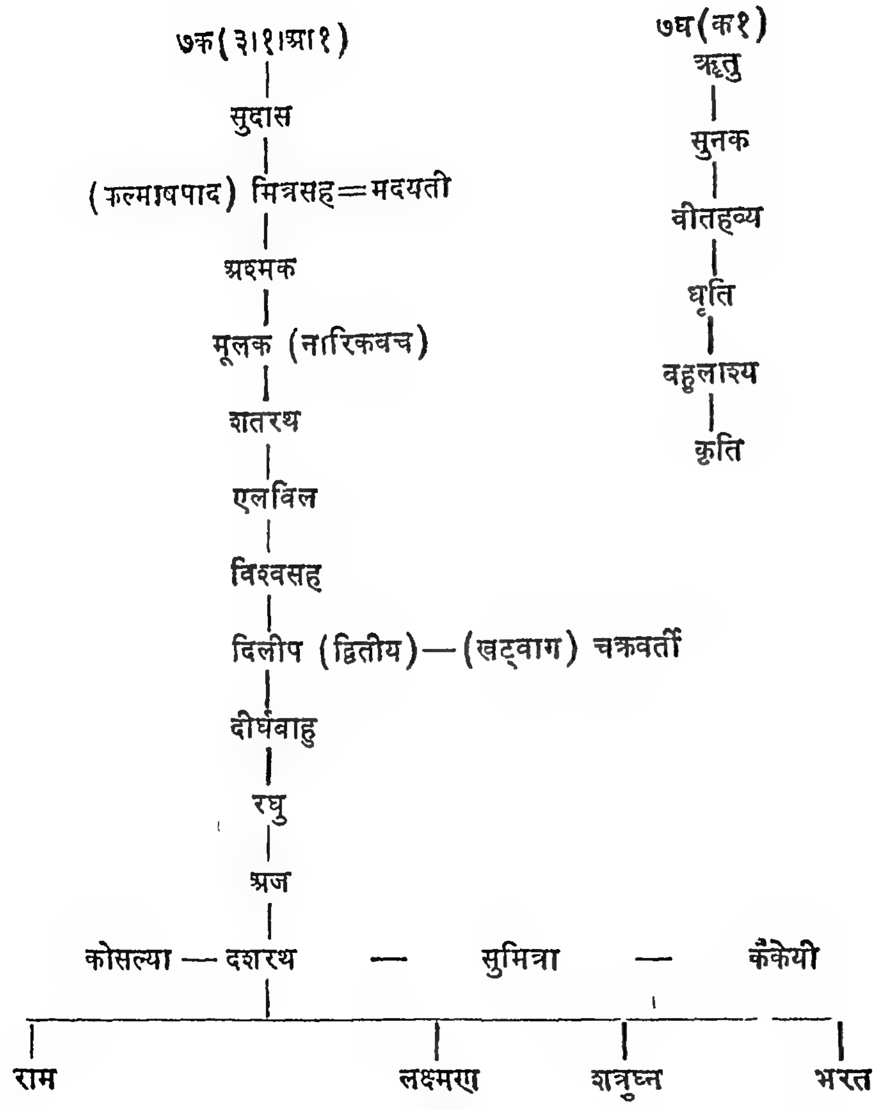
७क(३।१।आ)
- असदश्व
  - हर्यश्व (द्वितीय) दृषद्वती
    - वसुमना (वसुमत)
      - त्रिधन्वा
        - त्रैयारुण
          - सत्यव्रत (त्रिशंकु) सत्यरता
            - हरिश्चन्द्र
              - रोहित
                - हरित
                  - चचु (चप)
                    - विजय ७क(३।१।आ।१)
                      - रुरुक (भरुक)
                    - सुदेव ७क(३।१।आ२)

७घ
- ७घ(क१) कृतध्वज
  - केशिध्वज
    - द्रुत (भीत) (ऋतु)
      - भानुमान्
        - शतद्युम्न (प्रद्युम्न)
          - शुचि मुनि
            - सनद्वाज (ऊर्जवह)
              - ऊर्ध्वकेतु (शकुनि)
                - अज (अजन)
                  - पुरुजित् (ऋतुजित्)
                    - अज
                      - अरिष्टनेमि
                        - श्रुतायु
- ७घ(क२) मितध्वज
  - खाण्डिक्य

१०
- सोमदत्त
  - सुमति (स्वमति)
    - जनमेजय

७क(३।१।आ१)
वृक (धृतक)
|
यादवी=बाहु (असित)
|
केशिनी=सगर=सुमति
|
साठ हजार पुत्र    असमंजस
|
अंशुमान्
|
दिलीप (प्रथम)
|
भगीरथ
|
श्रुत
|
नाभ (नाभाग)
|
अंबरीष
|
सिंधुद्वीप
|
अयुताश्व (अयुतायु, अयुताजित)
|
ऋतुपर्ण
|
सर्वकाम (आर्तपर्णी)

७घ(क१)
|
सुपार्श्वक
|
चित्ररथ
|
क्षेमधि
|
समरथ
|
सत्यरथ
|
उपगुरु
|
उपगुप्त
|
वस्वनत
|
युयुध
|
सुभाषण
|
श्रुत
|
जय
|
विजय
|


७क(३।१।आ१)
सुदास
(कल्माषपाद) मित्रसह=मदयती
अश्मक
मूलक (नारिकवच)
शतरथ
एलविल
विश्वसह
दिलीप (द्वितीय)—(खट्वाग) चक्रवर्ती
दीर्घबाहु
रघु
अज
कोसल्या — दशरथ — सुमित्रा — कैकेयी
राम
लक्ष्मण
शत्रुघ्न
भरत
७घ(क१)
ऋतु
सुनक
वीतहव्य
धृति
बहुलाश्व
कृति

७क(३-१-आ१क): लव, कुश

७क(३-१-आ१ख): अगद, चन्द्रकेतु

७क(३-१-आ१ग): सुबाहु, सूरसेन

७क(३-१-आ१घ): तक्ष, पुष्कर

| कुश | ७क(३-१-आ१ख-१) अगद / ७क(३-१-आ१ख-२) चन्द्रकेतु | ७क(३-१-आ१ग-१) सुबाहु | ७क(३-१-आ१ग-२) सूरसेन | ७क(३-१आ१घ-१) तक्ष / ७क( -१-आ१घ-२) पुष्कर |
|---|---|---|---|---|
| | वज्रनाथ | सुसधि | भानुरथ (भानूमान् | रणजय |
| अतिथि | शखन | मर्ष (मर्षण) | प्रतीकाश्व | सजय |
| निषध | द्युपिताश्व | सहस्वान् | सुप्रतीक | शुद्धोधन |
| नल (नभ) | विश्वसह | विश्रुनवान् | मरुदेव | शाक्य |
| पुडरीक | हिरण्यनाभ | बृहद्बल × | सुनक्षत्र | लागल (राहुल) |
| क्षेमधन्वा | पुष्य | बृहद्रथ | किन्नर | प्रसेनजित |
| देवानीक | ध्रुवसन्धि | बृहत्क्षय | अतरीक्ष | क्षुद्रक |
| अहिनगु (अहीन) | सुदर्शन | क्षय | सुतपा (सुपर्ण) | रणक (क्षुलिक) |
| पारियात्र (पारिपात्र) | अग्निवर्ण | वत्सव्यूह | अमित्रजित | सुरथ |
| दल | शीघ्र | दिवाकर | बृहद्राज | सुमित्र |
| बल | मरु | सहदेव | बर्हि (धर्मी) | |
| औक | प्रसुश्रुत | बृहदश्व | कृतजय | |
| (शेष कालम २ पर) | (शेष कालम ३ पर) | (शेष कालम ४ पर) | (शेष कालम ५ पर) | |



× यह महाभारत युद्ध मे अभिमन्यु के द्वारा मारा गया ।

पुराणो के अनुसार इक्ष्वाकु वश सुमित्र से समाप्त हो जाता है । उसके आगे वशवृक्ष निम्न प्रकार चलता है—

| बीकानेर का शिलालेख स० १६५० | नैणसी की ख्यात | प्राचीन ख्यात स० १७२५ | प्राचीन ख्यात स० १७१५ |
|---|---|---|---|
| .. | | वपुल | पपुल्ली |
| ... | . | ननपाल | नरपाल |
| तुगनाथ | तुगनाथ | मीतुग | सेतुग |
| भरत | भरत | भरत | भरत |
| पुजराज | पुजराज | पुज | पज |
| वभ | वभ | वभ | वभ |
| अजेयचद्र | अजैचद्र | | .. |
| अभड यश्व | अभैचद | अभैचद | अभयचद |
| विजयचद्र | विजैचद | उदैचद | विजयचद |
| जयचद्र | जैचद | नरपति | जयचद |
| | | कनकसेन | .. |
| . | .. .. | सहजसेत (सेन) | . |
| . | .. | मेधमेन | |
| ... | ... .. | वीरभद्र | .. |
| | . . | देवसेन | |
| | ... . | विमलसेन | .. |
| | | दानसेन | .. |
| . | .. . | मुकुदसेन | |
| | . . | भूधरसेन | . |
| . | | राजसेन | . |
| | .. | थिरपाल | . |
| . . .. | . | श्रीपुज | . |
| वरदायीसेन | वरदाईसेन | वरदाईसेन | वरदाईसेन |
| सीतराम | सेतराम | सेतराम | सेतराम |
| सीह | सीहो | सीहो | सीहो |
| | आसथान | आसथान | आसथान |



[1] उपर्युक्त वशवृक्ष का सबध दान-पत्रो से मिलने वाले शुद्ध वशवृक्ष से जोडने के साथ दिया गया है । यहा से आगे महाराजा अभयसिंह व महाराजकुमार रामसिंह तक का वशवृक्ष दान-पत्रो के अनुसार है जो शुद्ध माना जाता है।

दान-पत्रो के अनुसार शुद्ध वशावली—

| | | | |
|---|---|---|---|
| १ | यशोविग्रह | | (वि० सवत्) ? |
| २ | महीचन्द्र | (न० १ का पुत्र) — | वि० सवत् ? |
| ३ | चन्द्रदेव | (न० २ का पुत्र) | वि० स० ११४८–११५६ |
| ४ | मदनपाल | (न० ३ का पुत्र) | वि० स० ११५४ |
| ५ | गोविन्दचन्द्र | (न० ४ का पुत्र) | ,, ११६१–१२११ |
| ६ | विजयचन्द्र | (न० ५ का पुत्र) | ,, १२२४ |
| ७ | जयचन्द्र | (न० ६ का पुत्र) | ,, १२२६–१२५० |
| ८ | हरिश्चन्द्र [हरसू, वरदाईसेन, प्रहस्त] | (न० ७ का पुत्र) | वि० स० १२५३ |
| ९ | सेतराम | (न० ८ का पुत्र) | वि० स० ? |
| १० | राव सीहो | (न० ९ का पुत्र) | ,, १२६८–१३३० |
| ११ | आसथान | (न० १० का पुत्र) | ,, १३३०–१३४८ |
| १२ | धूहड़ | (न० ११ का पुत्र) | ,, १३४८–१३६६ |
| १३ | रायपाल | (न० १२ का पुत्र) | ,, |
| १४ | कनपाल | (न० १३ का पुत्र) | ,, |
| १५ | जालणसी | (न० १४ का पुत्र) | ,, |
| १६ | छाडो | (न० १५ का पुत्र) | वि० स० १३८५–१४०१ |
| १७ | तीडो | (न० १६ का पुत्र) | ,, १४०१–१४१४ |
| १८ | सलखो | (न० १७ का पुत्र) | ,, १४२२–१४३१ |
| १९ | वीरम | (न० १८ का पुत्र) | ,, १४४० .. |
| २० | चूडो | (न० १९ का पुत्र) | ,, १४५१–१४८० |
| २१ | रणमल्ल | (न० २० का पुत्र) | ,, १४८४–१४९५ |
| २२ | जोधो | (न० २१ का पुत्र) | ,, १५१०–१५४५ |
| २३ | सातल | (न० २२ का पुत्र) | ,, १५४५–१५४८ |
| २४ | सूजो | (न० २३ का भाई) | ,, १५४८–१५७२ |
| २५ | राव गागो | (न० २४ का पुत्र) | ,, १५७२–१५८८ |
| २६ | मालदेव | (न० २५ का पुत्र) | ,, १५८८–१६१९ |
| २७ | चन्द्रसेण | (न० २६ का छोटा पुत्र) | ,, १६१९–१६३७ |
| २८ | राजा उदैसिंह | (न० २६ का ज्येष्ठ पुत्र) | ,, १६४०–१६५१ |
| २९ | सूरसिंह | (न० २८ का पुत्र) | ,, १६५१–१६७६ |
| ३० | गजसिंह | (न० २९ का पुत्र) | ,, १६७६–१६९५ |
| ३१ | महाराजा जसवन्तसिंह | (न० ३० का पुत्र) | ,, १६९५–१७३५ |
| ३२ | अजीतसिंह | (न० ३१ का पुत्र) | ,, १७६३–१७८१ |
| ३३ | अभैसिंह | (न० ३२ का पुत्र) | ,, १७८१–१८०५ |
| ३४ | रामसिंह | (न० ३३ का पुत्र) | ,, १८०५–१८०८ |

# राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

++++++++++

## प्रकाशित ग्रन्थ

### १ सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश

१. प्रमाणमजरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक – मीमासान्यायकेसरी प० पट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर। मूल्य—६ ००

२ यन्त्रराजरचना, महाराजा सवाईजयसिह-कारित। सम्पादक—स्व० प० केदारनाथ ज्योतिर्विद्, जयपुर। मूल्य—१ ७५

३ महर्षिकुलवैभवम्, स्व० प० मधुसूदनओझा-प्रणीत, भाग १, सम्पादक—म० म० प० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी। मूल्य—१०.७५

४ महर्षिकुलवैभवम्, स्व० प० मधुसूदन ओझा प्रणीत, भाग २, मूलमात्रम् सम्पादक—प० श्रीप्रद्युम्न ओझा। मूल्य—४ ००

५ तर्कसंग्रह, अन्नभट्टकृत, सम्पादक—डॉ. जितेन्द्र जेटली, एम ए, पी-एच डी., मूल्य—३ ००

६ कारकसबधोद्योत, प० रभसनन्दीकृत, सम्पादक—डॉ० हरिप्रसाद शास्त्री, एम ए, पी-एच. डी.। मूल्य—१ ७५

७. वृत्तिदीपिका, मौनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक—स्व.प पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य—२ ००

८. शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक—डॉ हरिप्रसाद शास्त्री, एम ए, पी-एच.डी। मूल्य—२.००

९. कृष्णगीति, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका—डॉ प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच डी, डी लिट्। मूल्य—१.७५

१० नृत्तसग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका—डॉ प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच. डी., डी लिट्। मूल्य—१ ७५

११. शृङ्गारहारावली, श्रीहर्षकवि-रचित, सम्पादिका—डॉ प्रियबाला शाह, एम. ए, पी-एच डी, डी लिट्। मूल्य—२.७५

१२ राजविनोदमहाकाव्य, महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक—प० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम ए., उपसञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य—२ २५

१३ चक्रपाणिविजय महाकाव्य, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक—प० श्रीकेशवराम काशीराम शास्त्री। मूल्य—३ ५०

१४. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक—प्रो रसिकलाल छोटालाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच. डी., डी लिट्। मूल्य—३ ७५

१५. उक्तिरत्नाकर, साधसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक—पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजयजी, पुरातत्त्वाचार्य, सम्मान्य सचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य—४ ७५

१६ दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० प० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक—प० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य—४ २५

१७ कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथविरचित, इन्ही कविवर की अपर सस्कृत कृति श्रीकृष्णलीलामृत सहित, सम्पादक—प० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए, मूल्य—१.५०

१८ ईश्वरविलासमहाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक—भट्ट श्रीमथुरानाथशास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर। स्व पी के गोडे द्वारा अग्रेजी मे प्रस्तावना सहित। मूल्य—११ ५०

१९ रसदीर्घिका, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक—प० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम.ए मूल्य—२ ००

२०. पद्यमुक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक—भट्टश्रीमथुरानाथशास्त्री, साहित्याचार्य। मूल्य—४ ००

२१ काव्यप्रकाशसकेत भाग १ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०—श्रीरसिकलाल छो० पारीख, अग्रेजी मे विस्तृत प्रस्तावना एव परिशिष्ट सहित मूल्य—१२ ००

२२. काव्यप्रकाशसंकेत, भाग २ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०-श्रीरसिकलाल छो० पारीख, मूल्य-८ २५
२३. वस्तुरत्नकोष, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०-डॉ० प्रियबाला शाह। मूल्य-४-००
२४. दशकण्ठवधम्, प० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पा०-प० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी। मूल्य-४.००
२५. श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्र, सभाष्य, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कवि पद्मनाभकृत भाष्य-सहित पूजापञ्चाङ्गादिसवलित। सम्पा०-प. श्रीगोपालनारायण बहुरा। मूल्य-३.७५
२६. रत्नपरीक्षादि-सप्तग्रन्थ-सग्रह, ठक्कुर फेरू विरचित, सशोधक-पद्मश्री मुनि जिन-विजय, पुरातत्त्वाचार्य। मूल्य-६ २५
२७. स्वयंभूछन्द, महाकवि स्वयभूकृत, सम्पा० प्रो० एच डी. वेलणकर। विस्तृत भूमिका (अग्रेजी मे) एव परिशिष्टादि सहित मूल्य-७.७५
२८ वृत्तजातिसमुच्चय कवि विरहाङ्करचित, ,, ,, ,, मूल्य-५.२५
२९ कविदर्पण, अज्ञातकर्तृक, ,, ,, ,, मूल्य-६ ००
३०. कर्णामृतप्रपा, भट्टसोमेश्वरकृत सम्पा०-पद्मश्री मुनि जिनविजय। मूल्य-२.२५
३१. त्रिपुराभारती लघुस्तव, लघुपण्डितविरचित, सम्पा० ,, मूल्य-३ २५
३२ पदार्थरत्नमञ्जूषा, प० कृष्णमिश्रविरचिता, सम्पा० ,, मूल्य-३ ७५
३३. वृत्तमुक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट कृत; स० प० भट्टश्रीमथुरानाथ शास्त्री। मूल्य-३ ७५

## २. राजस्थानी और हिन्दी

३४ कान्हडदेप्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पा०-प्रो० के.बी व्यास, एम. ए। मूल्य-१२.२५
३५ क्यामखां-रासा, कविवर जान-रचित, सम्पा०-डॉ दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहटा। मूल्य-४.७५
३६ लावा-रासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पा०-श्रीमहताबचन्द खारैड। मूल्य-३ ७५
३७. वाकीदासरी ख्यात, कविराजा वाकीदासरचित, सम्पा०-श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम ए., विद्यामहोदधि। मूल्य-५ ५०
३८ राजस्थानी साहित्यसग्रह, भाग १, सम्पा०-श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम ए। मूल्य-२ २५
३९ राजस्थानी साहित्यसग्रह, भाग २, सम्पा०-श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम ए, साहित्यरत्न। मूल्य-२ ७५
४० कवीन्द्र कल्पलता, कवीन्द्राचार्य सरस्वतीविरचित, सम्पा०-श्रीमती रानी लक्ष्मी-कुमारी चूडावत। मूल्य-२ ००
४१. जुगलविलास, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पा०-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत। मूल्य-१ ७५
४२. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारण कृत, सम्पा०-श्री उदैराजजी उज्ज्वल। मूल्य-१ ७५
४३ राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिखित ग्रथोकी सूची, भाग १। मूल्य-७ ५०
४४. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची, भाग २। मूल्य-१२ ००
४५ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, मुहता नैणसीकृत, सम्पा०-श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया। मूल्य-८ ५०
४६ , ,, ,, ,, २, ,, ,, ,, मूल्य-६ ५०
४७ रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढाकृत, सम्पा०-श्री सीताराम लाळस। मूल्य-८ २५
४८ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग १ स० पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय। मूल्य-४.५०
४९ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ-सूची, भाग २—सम्पा०-श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया एम ए, साहित्यरत्न। मूल्य-२ ७५
५० वीरवांण, ढाढी बादरकृत, सम्पा०-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत। मूल्य-४ ५०
५१ स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रन्थ-सग्रह-सूची, सम्पा०-श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम ए और श्रीलक्ष्मीनारायणगोस्वामी दीक्षित। मूल्य-६.२५

५२. सूरजप्रकास, भाग १–कविया करणीदानजी-कृत, सम्पा०–श्री सीताराम लाळस। मूल्य–८.००
५३ „ „ २ „ „ „ „ मूल्य–९.५०
५४. „ „ ३ „ „ „ „ मूल्य–९.७५
५५. नेहतरग, रावराजा बुधसिंहकृत—सम्पा०–श्रीरामप्रसाद दाधीच, एम.ए. मूल्य–४.००
५६ मत्स्यप्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन, प्रो मोतीलाल गुप्त,एम.ए ,पी-एच डी. मूल्य–७ ००
५७. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–श्री एम सी. मोदी। मूल्य–५ ५०
५८. राजस्थान में सस्कृत साहित्य की खोज–एस. आर भाण्डारकर, हिन्दी-अनुवादक श्री ब्रह्मदत्त त्रिवेदी, एम ए, साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ मूल्य–३ ००
५९ समदर्शी आचार्य हरिभद्र, श्रीसुखलालजी सिंघवी, मूल्य ३.००

## प्रेसों में छप रहे ग्रंथ

### संस्कृत

१ शकुनप्रदीप, लावण्यशर्मारचित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
२. बालशिक्षाव्याकरण, ठक्कुर सग्रामसिंहरचित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
३ नन्दोपाख्यान, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–डॉ० बी जे सांडेसरा।
४. चान्द्रव्याकरण, आचार्य चन्द्रगोमिविरचित, सम्पा०–श्री बी. डी. दोशी।
५ प्राकृतानन्द, रघुनाथकवि-रचित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
६ कविकौस्तुभ, प० रघुनाथरचित, सम्पा०–श्री एम. एन. गोरे।
७ एकाक्षर नाममाला—सम्पा०–मुनि श्रीरमणिकविजय।
८. नृत्यरत्नकोश, भाग २, महाराणा कुंभकर्णप्रणीत, सम्पा०–श्री आर सी पारिख और डॉ प्रियबाला शाह।
९. इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०–डॉ दशरथ शर्मा।
१०. हमीरमहाकाव्यम्, नयचन्द्रसूरिकृत, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
११ स्थूलिभद्रकाकादि, सम्पा०–डॉ० आत्माराम जाजोदिया।
१२ वासवदत्ता, सुबन्धुकृत, सम्पा०–डॉ० जयदेव मोहनलाल शुक्ल।
१३ आगमरहस्य, स्व० प० सरयूप्रसादजी द्विवेदी कृत, सम्पा०–प्रो० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी।

### राजस्थानी और हिन्दी

१४ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग ३, मुहता नैणसीकृत, सम्पा०–श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया।
१५ गोरा बादल पदमिणी चऊपई, कवि हेमरतनकृत सम्पा०–श्रीउदयसिंह भटनागर, एम ए.
१६ राठौडारी वंशावली, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
१७ सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्यग्रन्थसूची, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
१८ मीरा-बृहत्-पदावली, स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण द्वारा सकलित, सम्पा०–पद्मश्री मुनि श्रीजिनविजय।
१९ राजस्थानी साहित्यसंग्रह, भाग ३, सपादक–श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी।
२० रुक्मिणी-हरण, सायाजी झूला कृत, सम्पा० श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम ए ,सा रत्न
२१ सन्त कवि रज्जब : सम्प्रदाय और साहित्य डॉ० व्रजलाल वर्मा।
२२ पश्चिमी भारत की यात्रा, कर्नल जेम्स टॉड, हिन्दी अनु० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम ए.
२३ बुद्धिविलास, बखतराम शाहकृत, सम्पा०–श्रीपद्मधर पाठक, एम ए.

### अंग्रेजी

24 Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts Part I, R.O.R.I. (Jodhpur Collection), ed, by Padamashree Jinvijaya Muni, Puratattvacharya
25 A List of Rare and Reference Books in the R O R I, Jodhpur, compiled by P D Pathak, M A

विशेष–पुस्तक-विक्रेताओं को २५% कमीशन दिया जाता है।